CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागतरंगिणी

73

डॉ० शशिनाथ झा

आम्नाय-पुस्तकालय,
भरतमिश्र, कचौड़ी
वाराणसी-5

...ालय
...राणसी-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोचनकृता

रागतरङ्गिणी

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

सम्पादक
डा० श्री शशिनाथ झा
व्याख्याता
व्याकरण-भाषाविज्ञान-विभाग
का० द० संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

मैथिली अकादमी
पटना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैथिली अकादमी प्रकाशन—६८

प्रकाशक

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना-८००००१

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

© मैथिली अकादमी, पटना

प्रथम संस्करण—१९८१

प्रति—११००

मूल्य { सजिल्द : १७.५०
साधारण : १५.००

मुद्रक

मुरलीधर प्रेस,

पटना-८००००६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

प्रकाशकीय

लोचनकृत रागतरंगिणी मैथिली गीत सहित एके बेर प्रकाशित भेल छल राज प्रेस, दरभंगासँ १९३४ ई० मे। सेहो चिरकालसँ दुष्प्राप्य भ' गेल छल। मैथिलीक पठन-पाठन ओ अध्ययन-मनन हेतु ई बड़ आवश्यक पुस्तक बूझल जाइत अछि। तहिँ एकर ई सानुवाद सुसम्पादित संस्करण प्रकाशित कयल गेल अछि।

एहि पुस्तकमे, ओ केवल एही पुस्तकमे, संगीतक मैथिल परम्परा वर्णित अछि ओ विविध रागक उदाहरण रूपमे विदित-अविदित अनेक कविक मैथिली गीत देल गेल अछि। अतः ई उचिते मैथिल संगीत तथा मैथिली साहित्यक आकर ग्रन्थ मानल जाइत अछि।

एकर सम्पादक डा० शशिनाथ झा संस्कृत ओ मैथिलीक विद्वान् छथि ओ अल्पे वयसमे अपन प्रतिभा एवं उत्साहसँ साहित्यक क्षेत्रमे अपन स्थान बना लेलनि अछि। एकरा आधुनिक रीतिसँ सर्वावयव-सम्पन्न सुसम्पादित संस्करण बनयबाक हेतु सम्पादकक पूर्ण प्रयास रहल अछि। आशा जे मैथिलीक छात्र समुदाय, विद्वन्मंडल तथा संगीत-रसिक एकर स्वागत करताह।

१५ अप्रैल १९८१

श्रीकान्त ठाकुर

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Colleotion, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपोद्घात

साहित्यं सङ्गीतं च सरस्वत्याः स्तनद्वयम् ॥

मिथिला-देशीय सङ्गीत ओ साहित्यक दृष्ट्या महोपाध्याय लोचनकृत रागतरंगिणी बड़ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अछि। विशेष शास्त्रीय बात नहि उठा' अत्यन्त लोकोपयोगी विषयक प्रतिपादन क' कविवर लोचन साधारण लोकसँ ल' विज्ञ धरिक हेतु स्तुत्य भ' गेलाह। हिनक ई ग्रन्थ केवल रागरागिणिए टाक परिचायक नहि भ' मैथिली साहित्यक एक संग्रह-ग्रन्थ सेहो भ' गेल। प्रत्येक रागक उदाहरण मिथिला-भाषामय गीतक द्वारा प्रस्तुत कयल गेल अछि। सेहो एके कविक नहि, गोड़ तीसेक कविक रचना एहिमे समाविष्ट अछि। एहिमे कुल उपलब्ध गीतक संख्या १०३ अछि जाहिमे केवल विद्यापतिक ५३ गोट गीत अछि। ओ महाकवि विद्यापतिक गीत-संग्रह होयबाक सेहो गौरव एहि रागतरङ्गिणीकें छैक। अतः मैथिली-साहित्यक लेल ई एक अमूल्य निधि थिक। आइसँ तीन सय वर्ष पूर्वक एहि प्रकारक भाषा-साहित्यक संग्रह-ग्रन्थ ई एकमात्र थिक।

मिथिलामे सङ्गीतक प्रचार प्रचुर छल जे एहि ग्रन्थमे सविस्तर वर्णित अछि। एहि ग्रन्थहुक उपयोग केवल रागरागिनीक प्रसंग होइत छल। मैथिली-साहित्यक प्रथम उत्थानकालमे कवीश्वर चन्दाझा प्रभृति विद्वान् लोकनि एकर महत्त्व बुझैत लोकक ध्यान एहिदिस आकृष्ट करओने छलाह। कवीश्वरक लग लोचनक स्वहस्तलिखित रागतरङ्गिणीक[1] पोथी छल। जार्ज ग्रियर्सन साहेब ओ बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त सेहो एहि ग्रन्थक महत्त्व बूझि एकरा देखने छलाह। परन्तु कवीश्वरक स्वर्गवासक बाद पुनः अन्वेषणो भेला पर ई ग्रन्थ दुष्प्राप्य भ' गेल। सर्वप्रथम एकर प्रकाशन बम्बइसँ १९१० ई० मे श्री भालचन्द्र सीताराम सुखथंकर कयलनि। दोसर प्रकाशन[2] पं० दत्तात्रेय केशव जोशी, पूनासँ १९१८ ई०मे कयने छलाह। ओ इलाहाबादसँ एक हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त क' एकर प्रकाशन कयलनि। एहि दूनू संस्करणमे

---

१. रागतरङ्गिणीक प्राक्कथन—राजपण्डित बलदेव मिश्र।

२. हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, भाग-१ (प्रथम संस्करण) पृ० २२९।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतबला अंश नहि अछि। एहि प्रकाशनक सूचना आचार्य क्षितिमोहन सेन १२म अखिल भारतीय प्राच्य विद्यासम्मेलनक अवसर पर विश्वभारती त्रैमासिकी १९४४मे लोचनकवि बंगाली छलाह[1] से सिद्ध करबाक प्रसंग देने छलाह। प्रसिद्ध संगीतशास्त्री भातखण्डे सेहो एकर चर्च कयने छथि। परन्तु प्रयत्न कयलहु पर आइधरि अन्य कोनो विद्वान् उक्त दूनू संस्करण नहि प्राप्त क' सकलाह अछि। बहुत अन्वेषणक बाद एकर एक अशुद्धि-बहुल पोथी (हस्तलिखित) पचहीक बाबू इन्द्रपति सिंहक ओहिठामसँ प्राप्त कयल गेल ओ एही पोथीक आधार पर राजपण्डित बलदेवमिश्र एहि रागतरङ्गिणीक सम्पादन क' १९९१ विक्रम संवत्‌मे राजप्रेस दरभङ्गासँ मुद्रित करओलनि।[2] एहि संस्करणमे रागक उदाहरणमे मैथिली गीत अछि। उक्त संस्करण, संस्करण की भेल कोनहुना छपि गेल, सएह। हम पण्डितजीक अत्यन्त आभारी छी जे हुनके प्रयासेँ एहू रूपमे ई पोथी हमरा लोकनिकेँ प्राप्त भ' सकल। मुदा, उचित छल एहिमे एक-दू सहयोगीसँ परामर्श लेल जाइत, किछु आर परिश्रम कयल जाइत। परन्तु, लोकक आकुलता ओ सहायकक अभाव वा जे कारण हो एहिमे बहुत ठाम पाठ भ्रष्टे रहल। मिथिलाक्षरमे र व, न्द ण्ड, स म इत्यादि वर्ण समानाकारे होइत अछि, ताहिठाम सावधानी नहि कयल गेल। यथा—

गीत सं०	मूल पाठ	उचित पाठ
३१	कुन्दन कन कन्हाइ	कुंन्दल कनक कन्हाइ
१९	जनि हुतवह हरि	जनि हुतवह हवि
२८	सबस करि	सरस कवि
३३	नर कविशेखर	नव कविशेखर
२४	मोहर सुनल	मोहर मुनल

इत्यादि बहुत अछि। दोसर बात जे वर्णविन्यास (हिज्जे) मे बहुतोठाम "शु ठिमरिच"क कहबी चरितार्थ भेल अछि जाहिसँ अर्थ लगितहि ने रहैत छैक। तेसर संस्कृतभाषासम्बन्धी सेहो किछु अशुद्धि छैक। चारिम ई पोथी बहुत पूर्वहि छपल जे आइ अप्राप्य भ' गेल अछि। अतः एहि पोथीक पुनः संस्करण अत्यावश्यक भ' गेल अछि।

---

१. लोचन बंगाली नहि, मैथिल छलाह—डॉ० सुभद्र झा, पटना विश्वविद्यालय जर्नल, भाग १, खण्ड २, पृ० ३८-३९।

२. एही संस्करणक पुनर्मुद्रण १९६६ ई०मे पटना विश्वविद्यालयसँ भेल, मुदा अग्निकांडमे भस्म भ' गेल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंडितजीक उक्त संस्करणमे जे दोष अछि से सहसा हुनकहि पर नहि लादल जा सकैछ। जाहि पोथीसँ ओ एकर प्रतिलिपि कयलनि तकर वर्णन अपन प्राक्कथनमे क' देने छथि। तेहन ठाम ओ जे कयलनि से बहुत थिक। दोसर, प्रेसक दिससँ दू-एक विशिष्ट सहयोगी हुनका देल जइतनि से नहि देल गेलनि। अस्तु, एहि पोथीक जे आइ पुनःसंस्करण होमय जा रहल अछि ताहिमे सबसँ बेशी राजपण्डित बलदेव मिश्रक यश गाओल जाय। केवल हुनके ई छपलहा पोथी एकर आधार थिक, मूल थिक।

आइधरि कोनो दोसर हस्तलेख एकर नहि प्राप्त भेल अछि। पण्डितजी जाहि पोथीसँ कार्य कयलनि से राज पुस्तकालयमे सुरक्षित छल। प्रो० रमानाथ बाबू एकर पुनःसंस्करणार्थ ओ पोथी लेलनि, किछु काजो कयलनि, मुदा हुनका लगसँ ई पोथी लुप्त भ' गेलनि।

मैथिली साहित्यक ई दुर्भाग्य रहल अछि जे एकर प्राचीन-पोथी सभक मूल भोतिआयल जाय रहलैक अछि। वर्णरत्नाकरक मूल अप्राप्त, तरौनी-पदावली बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त हेरओलनि, रामभद्रपुर-पदावली सेहो नष्ट भेल ओ ई रागतरङ्गिणी लुप्त भ' गेल। केवल नेपाल-पदावली एखनहु नेपाल अभिलेखागारमे सुरक्षित अछि, सेहो ओ नेपालमे अछि तेँ बँचल अछि।

अस्तु, ई वर्त्तमान संस्करण पं०जीक संस्करणमात्र पर आधारित अछि। जँ ओ एकरा नहि छपओने रहितथि तँ हमरालोकनिकेँ एहि ग्रन्थ-रत्नसँ हाथ धोअय पड़ितय।

ग्रन्थ-रचनाक उद्देश्य

संगीतशास्त्रक ज्ञान, गान-कला ओ कवित्वशक्ति एकर समन्वय विरले होइछ। जे गायक रहताह तनिका कवित्व-शक्ति नहि, ओ सुन्दर पदक विन्यास नहि क' सकताह। संगीतशास्त्रज्ञो रागक स्वरसम्बन्धी आरोहावरोह भने ढाकीक ढाकी उझिलि देथु, मुदा मनोहर भाव ल' कोमलकान्त-पदावली गढ़ताह से कठिन। अतः कविवर लोचन संगीतशास्त्रक सार ल' रागसभक सामान्य परिचय द' कोन रागमे कोन तरहक गीत उचित होयत तकर विवरण देने छथि। एहिमे सौविध्यक हेतु ओ रागेक नाम पर छन्दहुक नाम राखि देने छथि। एहिसँ ई प्रयोजन सिद्ध भेल जे उत्तम कविलोकनि मात्राक हिसाबसँ प्रत्येक रागक हेतु नीक-नीक गीत गढ़ि सकैत छथि ओ गायक लोकनि ओ लय गाबि सकैत छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोसर बात जे साधारणो लोक मूर्खो तक रागसँ परिचय राखि सकैछ। एहि पोथीमे विशेष झंझटबला नियम नहि, अतः सामान्य जनतामे सङ्गीतक प्रचार हो ई एहि ग्रन्थक दोसर उद्देश्य भेल—

गुणिगण-विनिगूढ़ान् मूढ़लोकेऽपि गम्यान्
कलयितुमिह रागान् सर्वतः कर्णरम्यान्।
विपुल-गुणजनानां संगतो संप्रयुङ्क्तं
मतिमिह हि निबन्धेसज्जनाः सन्तयन्तु ॥

(प्रथम तरङ्ग—१०)।

ग्रन्थक विषय

रागक तरङ्गिणी=(तरङ्गवाली) नदी, एहि व्युत्पत्तिक अनुरूपे ई रागतरङ्गिणी रागक वर्णसँ प्रवाहित भ' रहल अछि। एहिमे पाँच तरङ्ग अछि। पाँचोमे संगीतशास्त्रीय संक्षिप्त विवेचन अछि।

पहिल तरङ्गमे मङ्गलाचरणक बाद अपन आश्रयदाताक वंशकीर्त्तनमे म० म० महेश ठाकुर, म०म० शुभङ्कर ठाकुर, राजा सुन्दर ठाकुर, राजा महिनाथ ठाकुर ओ राजा नरपति ठाकुरक वर्णन कयने छथि। ओ नरपति ठाकुरक आज्ञासँ ई ग्रन्थ बनओने छथि। ततःपर पुरुषरागक स्वरूप कहने छथि।

दोसर तरङ्गमे स्त्रीराग (रागिनी)क स्वरूप वर्णित अछि। तेसर तरङ्ग (१) रागोत्पत्ति (२) गीत तथा (३) मैथिली गीतोत्पत्तिक इतिहासक निरूपण क' मिथिलामे प्रचलित सामान्य ३६ रागक भेदसहित छन्दक नियम ओ तकर मिथिलाभाषामय गीतमे उदाहरण प्रस्तुत अछि।

चतुर्थ तरङ्गमे मिथिलामात्र प्रसिद्ध सङ्कीर्णरागक ९ गोट भेदसहित छन्दक नियम ओ मिथिलाभाषामय गीतमे उदाहरण प्रस्तुत अछि।

पञ्चम तरङ्गमे स्वर-प्रकरण, रागसंस्थिति-प्रकरण, राग-सङ्कर प्रकरण ओ नायक-नायिका-प्रकरण अछि। एहिमे नायक-नायिकाक विस्तृत निरूपण केवल गीतरचनाक दृष्टिएँ कयल गेल अछि।

मैथिली-गीतगतिक उत्पत्ति

मिथिलाक संगीतक एक इतिहास छैक। कविवर लोचन रागतरङ्गिणीक तृतीय तरङ्गमे (श्लोक १२सँ १९) लिखैत छथि जे एक सुब्राह्मण वंशक भव-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूति नामक महापण्डित काव्यके पुराणक रूपमे (गेयता ओ सरलता) प्रकटित करय लगलाह। हुनक चौपाड़ि पर सुमति नामक कायस्थ पढ़िक' हुनक ओ कथा (गेय ओ सरल) राजाकेँ सुनओलनि, तहिआसँ ओ कथक कहुबय लगलाह। सुमतिक बालक उदय ओ तनिकर बालक जयत भेलाह। जयतकेँ राजा शिवसिंह विद्यापतिक सम्पर्कमे द' देल। विद्यापति गीत रचथि ओ तकरा लयबद्ध क' जयत राजसभामे गाबथि। ई लोकनि अपन संगीतक गोष्ठीमे अनेक मिथिलादेशीय रागक नवीन उद्भावना कयलनि। जयतक बालक महागायक कृष्ण ओ तनिक बालक हरिहर मल्लिक भेलाह। तनिका तीन बालक—(१) खड्गराम (२) घनश्याम ओ (३) वल्लीराम भेलथिन, जाहिमे केवल घनश्याम गायक भेलाह। तनिक तीन बालक गायक भेलथिन—(१) लच्छिराम, (२) राघवराम ओ ३) टीकाराम। ई तीनू कविवर लोचनक प्रायः समकालिक छलाह। एही मैथिल संगीत-परम्पराक अनुसार रागतरङ्गिणी बनल।

रागक लक्षण

जे सभक चित्तकेँ प्रसन्न क' देअय से राग कहबैत अछि—ई प्राचीनाचार्यक मत अछि। लोचनक मतेँ एहिठाम केवल चित्तानुरंजके टासँ तात्पर्य नहि अछि, अन्यथा फूल सेहो राग कहावय लागत वा ताहि तरहक चमत्कारी मनुष्योमे ई लक्षण अतिव्याप्त भ' जायत। अतः एहिठाम 'ताल-लयादिसँ युक्त स्वरक समूह जे सभक चित्तकेँ प्रसन्न करय से राग कहबैछ' एहि लक्षणमे प्राचीन आचार्यक अभिप्राय मानक चाही। एहि लक्षणमे जँ चित्तानुरंजक विशेषण नहि देव तँ रागाभासो राग कह'बय लागत। एहि लक्षणसँ एक इहो बूझक चाही जे 'राग' सामान्य पदसँ रागिनियोक ग्रहण होइछ।

रागतरंगिणीमे चर्चित आचार्य

रागतरंगिणी एक संग्रह ग्रन्थ थिक। अतः एहिमे बहुतो संगीत-ग्रन्थसँ आशय वा पाँती लेल गेल अछि। ताहिमे बहुत ठाम तँ लेखक चुप छथि मुदा कतिपय ठाम नाम-निर्देश कयने छथि। एहिमे अधोलिखित आचार्य चर्चित छथि :—

(१) मुनिवर आचार्य भरत—ई नाट्यशास्त्रकार आचार्य भरत थिकाह। नाट्यशास्त्रमे संगीतक तत्व भरल पड़ल अछि। मिथिलेश नान्यदेवक भरत-भाष्य एहि ग्रन्थ पर भाष्य अछि। भरतक चर्चा एहि ग्रन्थमे बहुत ठाम भेल अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२) हनूमान्—हिनको मत अनेक ठाम आयल अछि। "वीर हनुमन्त मुनि" (हिन्दोलक रूपवर्णन), "हनुमन्त हरी" (कामोद रूपवर्णन), "हनुमन्त कवि" (ललिता स्वरूप), इत्यादि रूपें एहि ग्रन्थमे हनुमन्त आचार्यक मत देखाओल अछि।

(३) कवि कोहल—कवि कोहलाचार्यक मत आनो संगीतग्रन्थमे अबैत अछि। हिनक चर्च चारि-पाँच ठाम भेल अछि। यथा—गौरी स्वरूपवर्णन।

(४) दामोदर—'संगीत-दामोदर' नामक महाग्रन्थ-निर्माता आचार्य दामोदर यद्यपि नामसँ कमे ठाम चर्चित भेल छथि, परन्तु एहि ग्रथक मुख्य आधार इएह छथि। पंचम तरंगमे नायक-नायिका वर्णनक अधिकांश पाँती दामोदरेक थिक।

(५) जयदेव—गीतगोविन्दकार जयदेव अनेक ठाम उद्धृत कयल गेल छथि। कतिपय रागक उदाहरणो गीतगोविन्दे सँ लेल गेल अछि।

एहिसँ अतिरिक्त रागक गानकालक निरूपणमे "तुम्बुरुनाटक" सँ किछु पंक्ति उद्धृत कयल गेल अछि। परन्तु एकर रचयिताक निर्देश नहि अछि।

उदाहरणक क्रममे २९ गोट मिथिलाभाषाक कविक गीत नामनिर्देश-पूर्वक लेने छथि, जनिक वर्णन आगू कयल जायत।

रागतरंगिणीक भाषा

एहि ग्रन्थक मुख्य भाषा यद्यपि संस्कृत अछि तथापि तीन भाषाक प्रयोग एहिमे भेल अछि—

(१) संस्कृत—ई ग्रन्थक अभिव्यक्तिक मुख्य भाषा थिक। फलतः सम्पूर्ण ग्रन्थमे ई व्याप्त अछि। लोचन अपन टिप्पणी सेहो एहीमे दैत छथि।

(२) व्रजभाषा (हिन्दी)—राग-रागिनीक मूर्त्तिक लक्षण एहू भाषामे दोहराक' देल गेल अछि। तालक गति अधिक ठाम एही भाषाक माध्यमें देखाओल गेल अछि। कविवर लोचनक कथन छनि जे एहि ग्रन्थक रचना सर्वसाधारण लोकक हेतु भेल अछि। अतः संस्कृतमे कहल विषयकें एक एहन भाषामे कहल जाय जाहिसँ समस्त आर्यावर्तक लोक बूझि सकय। अतः मध्य-देशभाषाकें ओ चुनलनि, एकरा शब्दान्तरसँ 'पुरानो हिन्दी' कहल जाइछ—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इदन्तु सकल - लोक-साधारणझटित्युद्बोधहेतु-मध्यदेशभाषामाश्रित्यापि लिख्यते (पृ० ५) । पाँचो तरङ्गमे ई भाषा पाओल जाइछ ।

(३) मैथिली—रागक उदाहरणमे सकल गीत मैथिलीमे देल गेल अछि । ई तृतीय ओ चतुर्थ तरङ्ग मात्रमे पाओल जाइछ । एकरा कविवर लोचन मिथिलाऽपभ्रंशभाषा कहैत छथि एहिमे गोड़ तीसेक कविक गीत संगृहीत भेल अछि ।

छन्दक विवरण

रागतरंगिणीकार सरल उपायसँ सर्वसाधारणकेँ रागसँ परिचय करावय चाहैत छथि । अतः स्वरक आरोह-अवरोह द्वारा रागक विवरण नहि द' छन्दक आश्रय लैत छथि ओ रागक नामहि पर छन्दक नाम राखि लक्षण दैत छथि । अतः रागक नाम लिखि "एतच्छन्दो-लक्षणम्" (एहि रागक छन्दक लक्षण) एहि प्रकारेँ निर्देश दैत छथि । वस्तुतः संगीत-बोधक दृष्टिएँ रागक नाम पर छन्दक नाम लोचन कवि स्वयं गढ़ि लेलनि अछि । छन्दःशास्त्रदृष्ट्या एहिमे कोनो औचित्य नहि अछि । किएक तँ एके छन्द पर अनेको राग गाओल जा' सकैत अछि ।

स्वयं लोचन एहि नियममे शिथिलता देखबैत छथि :—

भेदवुद्ध्यर्थमेतेषां देशिगीतेषु कल्पितैः ।
छन्दोभिः क्रियते कोऽपि नियमोऽयममानकः ।। (३-२४)

एहि ठाम अमानक शब्दक अर्थ भेल—मान-रहित, जकर व्याख्या ओ आगाँ स्वयं करैत छथि :—

अनेनामानकेनापि नियमेन विभूषितम् ।
एक-द्वि-त्रिकलाहीनम् एक-द्वि-त्रिकलाऽधिकम् ।। (३-३२)

जे लक्षण कहल गेल ताहिसँ वा अमानक नियमसँ युक्त हो अर्थात् एक दू वा तीन मात्रा कम वा वेशी हो तँ ओएह छन्द कहाओत ।

दोसर बात जे लक्षणमे केवल मात्राक निर्देश करैत छथि, क्रम-विन्यासक नहि । ताहिसँ लक्षणक अव्याप्ति अतिव्याप्ति भ' सकैछ । मुदा, एहि प्रसंग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ई सतत ध्यान राखक चाही जे केवल जतबा मात्रा कहल रहय ततबा कोनहुना पुरा दिऐक सएह टा लक्षण नहि भेल, ओहिमे रागात्मक हृदय राखक चाही अर्थात् ओतबा मात्रा पुराय देखिऐक जे गीतक प्रबाहमे बाधा त ने पड़ि रहलैक अछि ?

छन्दक लक्षणक प्रसंग इहो ध्यातव्य जे 'चौदहसँ सत्रह मात्राक पदार्धं' एकर अर्थ ई बूझी जे चौदह मात्रासँ कम नहि, सत्रह मात्रासँ अधिक नहि।

यद्यपि एहिमे सभठाम क्रमविन्यास नहि अछि तथापि जतय आवश्यक बूझि पड़लनि ततय द्विकल, चतुष्कल, पंचकल, षट्कल ओ गणक उल्लेख क' वर्णविन्यासक नियम देनहि छथि। जेना—भोगिनी-आसावरीक लक्षणमे कहल गेल अछि—जे पूर्वार्द्धमे एगारह मात्रा ओ उत्त र्धमे चारि चतुष्कल रहय। एहिमे उत्तरार्धमे चारि मात्राक चारि टा खण्ड आवश्यक अर्थात् एकोटा खण्ड कम वा वेसी मात्राक नहि हो। जेना—'विशाला' एहि शब्दमे १+२+२=५ मात्रा अछि जाहिमे प्रथम भागमे चतुष्कल नहि अछि। उक्त चतुष्कलक उदाहरणमे ई स्पष्ट होइछ —

कनक - लता अरविन्दा।
मदनाँ/माँजरि/उगि गेल/चन्दा॥

एवं प्रकारेँ लक्षणक उपयोग करैत रागात्मक हृदयसँ पढ़क ओ बनाबक चाही।

गुरु-लघु-विचार

तृतीय तरंगमे यद्यपि एकर विचार स्पष्ट आयल अछि तथापि एहू विषय मे इएह कहब जे बहुतो ठाम लक्ष्यानुसार गुरुकेँ लघु ओ लघुकेँ गुरु पढ़क चाही। एकरा हेतु एके बात ध्यान रहय जे हृदय लयात्मक राखी अर्थात् गीतक प्रवाह बनल रहय। ओना एहि विषयक नियम सेहो बनि सकैछ, परन्तु बहुधा नियमक अनुसार एही पर आश्रय पड़त।

गीतकार कविगण

रागतरंगिणीमे कुल १०३ टा गीत अछि जाहिमे ५ गीतक कवि अज्ञात छथि। शेष ९८ गीत २९ गोट कविक रचना थिक। यद्यपि पूर्व-प्रकाशित रागतरंगिणीक प्राक्कथन मे जे कविक नामावली उद्धृत अछि (पृष्ठ ज) ताहि मे ३९ गोट नाम अछि तथापि वास्तवमे २९ नाम उचित। कारण, ओहिमे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किछु नाम दोहरा गेल अछि—(१) कविशेखर, (२) कण्ठहार (दूनू विद्यापतिक उपाधि), (३) कुमर भीषम जे क्रमांक ३ मे अछि, (४) धरणीधर जे क्रमांक १६ मे अछि, (५) कविरतन जे रतनाञ्गीक नामान्तर थिक। ओहि सूचीमे किछु राजाक नाम सेहो सम्मिलित भ' गेल अछि—(१) ग्यासदेव सुलतान आ (२) महलम जुगपति। किछु नाम भ्रमवश आयल अछि—(१) गदाधर, (२) मुकुन्द, (३) हरिनारायण, (४) धैरय सिंह ओ (५) यदुपति सिंह। अन्तिम दू नाम मे केवल 'सिंह' नाम थिक। ई दूनू गीत सिंहभूपतिक थिक। पाँती अछि—

"बड़हि काँ बड़ होए धैरज, सिंहभूपति भान"।
"ओ जे रमनि राधा, रसिक यदुपति, सिंहभूपति भान"।

उक्त सूचीमे (१) दस-अवधान ओ (२) लखनचन्द राएक नाम छुटल अछि। अस्तु।

कवि-परिचय

१—विद्यापति (१३५०-१४५० ई०)—सर्वप्रसिद्ध कवि विद्यापतिक ५३ गोट गीत रागतरंगिणीमे आयल अछि। रागक उदाहरणमे सर्वप्रधान स्थान विद्यापतिएकेँ देल गेलनि अछि। अधिक गीतमे राजा शिवसिंह ओ लखिमाक नाम आयल अछि ओ किछुमे देवसिंह ओ हासिनि देवी, मँति महेस ओ रेनुका देवी, चन्दल देइ पति वैदनाथ (गीत सं० ८९); मलहमजुगपति ग्यासदीन सुलतान (गीत सं० २१), ओ नसरत साहक (गीत सख्या ५) नाम लेने छथि।

एहि गीत सबहुमे विद्यापति अपना हेतु एहि उपाधि सभक प्रयोग कयने छथि—(१) सरसकवि (गीत सं० २८ [केवल उपाधिमात्र], ८४ [सरस-कवि विद्यापति), (२) कविराज (गीत संख्या ३७), (३) सुकवि (गीत संख्या ८७), (४) कविवर (गीत संख्या ६३), (५) कविकण्ठहार (गीत संख्या १६ एवं ६६)। एहिमे केवल कण्ठहारक संग विद्यापतिक नाम नहि आयल अछि।

गीत संख्या ७२ मे शिवसिंहक नामक संग सोरम देवीक नाम आयल अछि। हमरा जनैत ई लेखकक प्रमाद थिक। आगूक गीतमे कंसनारायणक संग हुनक पत्नी सोरम देवीक नाम अछि। प्रायः तकरे सान्निध्यसँ ई शब्द टपकि पड़ल हो। अतः सोरमक स्थानमे लखिमा पाठ उचित बुझाइछ।

गीत संख्या ५८ मे 'कंसदलन नारायण'सँ श्री कृष्ण भगवान् अर्थ अभिप्रेत अछि, कोनो राजा नहि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविवर लोचन विद्यापतिकें कविशेखर कहैत छथि :—

सुमति सुतोदय - जन्मा जयतः शिवसिंहदेवेन ।
पण्डितवर-कविशेखर-विद्यापतये तु संन्यस्तः ॥ (३-१३)

अतः गीत सख्या ५ जे केवल कविशेखर उपाधिक भनितामे अछि तकरा कवि लोचन विद्यापतिक कहैत छथि। परन्तु डॉ० रामदेव झाक मतें ई लोचनक भ्रम थिकनि। नसिरा शाहक समय १५१९ ई० स ँ १५३१ ई० विद्यापतिस ँ सय वर्ष बाद पड़ैत अछि जे कि एहि गीतमे उल्लिखित छथि। अतः ई गीत प्रायः नवकविशेखर यशोधरक थिक। परन्तु लोचनक भ्रमक अपेक्षा हिनका दोसरे 'नसरत शाह' मानी से उचित थिक।[1]

गीत सं० ४७ जे कंसनारायणक थिक भाषा गीत संग्रह (गीत सं० ३१) मे विद्यापतिक कहल गेल अछि। प्रमाणाभावमे निर्णय कठिन अछि।

२—भवानीनाथ (१३७५-१४५० ई०)—एहिमे हिनक एकमात्र गीत (संख्या ७१) आयल अछि। एहि गीतकें तरौनी पदावलीमे विद्यापतिक कहल गेल अछि। परन्तु थिक ई गीत भवानीनाथक। एहिमे नृपदेवक नाम अछि जे ओइनवार वंशीय राजा शिवसिंहक पिना देवसिंह भ' सकैत छथि। एक भवानीनाथ पलिवार हाटीमूलक पल्लवकार पदाङ्कित म० म० भवनाथक पुत्र भेटैत छथि जनिका हेतु स्वयं भवनाथ प्रयोगपल्लव ग्रन्थ (व्याकरणक) बनाय ओकर कल्पलता टीका बनओने छलाह —

"भवानीनाथार्थं करवदरकल्पानकरवम्"

(कल्पलताटीकाक अन्त—हस्तलिखित ग्रन्थ, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

उक्त ग्रन्थ कोटाक महाराज माणिक्यचन्द्रक आज्ञास ँ बनाओल गेल। अतः एकर समय १५०० ई० मानब उचित थिक जे देवसिंहस ँ बहुत बादक थिक। अतः ई कोनो आने भवानीनाथ भ' सकैत छथि।[2]

३—अमृतकर (१४००-१४६०)—हिनक नाम अनेक रूपें पाओल जाइत अछि—अमिअकर, अमिअाकर, अमिओ। ई कायस्थ जातिक छलाह।

---

१. मैथिली प्राचीन गीतावली—प्राक्कथन, पृ० ४९।
२. भवानीनाथक गीत (सं० ७१) मे 'नृपदेव' स ँ 'नृपसिंह' जें अभिप्रेत होथि तँ ई गीत एहि भवानीनाथक भ' सकैछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिताक नाम चन्द्रकर छलन्हि। ई राजा शिवसिंहक मन्त्रीक रूपमे प्रसिद्ध छथि। हिनक गीतमे राजा शिवसिंह ओ लखिमा देवी, वीरेश्वर ओ मधुमति देवी तथा भैरव सिंह प्रभृतिक नाम अछि।

अद्यपर्यन्त उपलब्ध गीतमे अमृतकरक ८ गोट गीत अछि जे मैथिली प्राचीन गीतावली (डा० रामदेव झा) मे संकलित अछि।

४—गर्जसिंह - (१४५०-१५००)—हिनक कुल ३ गीत एहिमे अछि। एवं अन्यो स्रोतसँ कुल ६ गीत उपलब्ध अछि जाहिमे पाँच गोट मैथिली-प्राचीन गीतावलीमे संग्रहीत अछि ओ छठम[1] हमरहि द्वारा मिथिला-विद्यापीठ, दरभंगाक एक हस्तलिखित ग्रन्थसँ ल' सम्पादित भ' मैथिली-अकादमी-पत्रिकाक पहिल अंकमे प्रकाशित अछि। ओतय हिनक जे परिचय देल अछि तकरा आब हमहीँ असम्यक् मानैत छी। कारण बेतियाक राजा गर्जसिंहकेँ राजा महिनाथ ठाकुरसँ युद्ध भेल छलनि। अतः ओ पुरुषोत्तम ठाकुरक आश्रित कवि नहि भ' सकैत छथि। ई (१) नृप पुरुषोत्तम ओ असमति देवी तथा (२) धीर कुमर श्री गर्जसिंहक उल्लेख कयने छथि। नृप पुरुषोत्तम महाराज भैरव सिंहक द्वितीय पुत्र छलाह जनिक उल्लेख म० म० शंकर मिश्र अपन "रसार्णव" नामक काव्य-ग्रन्थमे कयने छथि।

एक आओर पुरुषोत्तम नृप खण्डवला वंशमे भए गेल छथि। गर्जसिंहक दोसर आश्रय धीर कुमर श्री गर्जसिंह प्रायः ओइनवारे वंशक छल होयताह।

गर्जसिंहक वैयक्तिक कोनो परिचय नहि प्राप्त अछि।

५—सिंहभूपति, नृप सिंह (१४५०-१५००)—एहि कविक एतय तीनि गोट गीत अछि। एहि नामक प्रसंग अनेक तारतम्य होइत आयल अछि।

---

१. एहि गीतक, परिष्कृत रूप देल जाइत अछि :—

साजनि ! जनु लेह. तन्हिकर नामे।
अंकुर सञो हम सेओल कलपतरु, फल अवसर भेल वामे ।।ध्रु.।।
दह दिस सुन सन अधिक पिआसलि, भरमलि भमिअ सँसारे।
कते दुखे दैव समुद्रतिर पाओल, सगरेओ जल भेल खारे ।।
आतपे तापित सितल जानि कहु, सेओल मलयगिरि छाहे।
एहन करम मोर मेहओ दगध भेल, कएल दवानल दाहे ।।
एहना अवसर धैरज धए रह, गर्जसिंह कह परमाने।
मन दए सेविअ नृप पुरुषोत्तम, मेदिनि-मदन समाने ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधिक व्यक्ति नरसिंहदेवेक ई संक्षिप्त नाम मानैत रहलाह। परन्तु सर्वप्रथम एहि विषयक तथ्य डॉ० रामदेव झा मैथिली प्राचीन गीतावली प्राक्कथनमे देलनि। तकर सारांश ई थिक—ई नाम चारि प्रकारें भेटैछ—सिंहभूपति, सिंहनृपति, नृपसिंह, नृपति सिंह। एहिमे सर्वत्र सिंहकें देखि निश्चय होइछ जे ई नाम ओही राजाक थिक जनिक नामक मुख्य अंश 'सिंह'[1] हो। आ से नेपालक भगवतीपुर राजवंशक प्रथम राजा सिंहनारायण भेटि जाइत छथि। अतः हिनकहिं ई रचना सभ थिक।

६—चन्द्रकला (१४००-१४७५)—हिनक केवल एक गोट गीतमात्र एतय उपलब्ध अछि। लोचन कविक निर्देशानुसार ई विद्यापतिक पुतोहु छलीहि—"इति विद्यापतिपुत्रवध्वाः"। यद्यपि डा० रामदेव झा प्राक्कथनक समाप्तिक अवसर पर चन्द्रकलाक नामकें नकारि लोचनक उक्तिकें फटकारि एहि गीतकें चन्द्रकवि जयदेवक कहैत छथि। परन्तु भनितामे चन्द्रकलाक स्पष्ट नामोल्लेखकें मेटाओल नहि जा' सकैछ। अर्थक संगति यथाकथंचित् एना बैसाओल जा' सकैछ—''चन्द्रकवि ओ जयदेव कवि (गीतगोविन्दकार) द्वारा प्रकटीकृत (वर्णित) मानकें छोड़ू। चन्द्रकलाक एहि गीतक पाठान्तर कोनो हस्तलिखित पोथीक आधार पर डॉ० जयकान्त मिश्र अपन History of Maithili Literature Vol. I Page 199 मे देने छथि। ओहिमे "चन्द्रकवि-जयदेव-मुदित"क स्थान पर "चन्द्रकवि जयदेव-निर्मित" एहन पाठ देने छथि। अतः तकरा भनिताक पद मानब असंगत थिक।

ई चन्द्रकला विद्यापतिक कोन बालकक पत्नी छलीह से अज्ञात अछि।

(७) कंसनराएन (१४७५-१५२८ ई०)—एहि ठाम हिनक दुइ गोट गीत अछि। एहि नामें हिनक ५ गीत भेटैत अछि ओ लखिमिनाथ नामें ४ गोट। हिनक पूर्णनाम कंसनारायण लक्ष्मीनाथ सिंहदेव थिक। ई ओइनवार-राजवंशक अन्तिम राजा छलाह। ई अपन गीतमे अपन रानीक नाम सोरम देवी देने छथि। हिनक आश्रित गोविन्दकवि 'सोरम-रमन कंसनरायन' तथा "लखिमिनाथ नरेश सोरम देवि नायक जान" (भाषा गीत संग्रह-गीत सं० ५१) एहि प्रकारें उल्लेख क' कंसनारायण ओ लक्ष्मीनाथ दूहू नामक

१. एक आओरो नाम एहि प्रसंग विचारणीय अछि—सिंहभूपालक जे शार्ङ्गधरकृत संगीतरत्नाकरक टीका लिखने छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐक्य प्रकाशित क' देने छथि। ई महाराज भैरव सिंहक पौत्र ओ महाराज रामभद्र सिंहक पुत्र थिकाह। ई अत्यन्त प्रतापी राजा छलाह। हिनक माता अनुमति देवी भगीरथपुर गाममे एक कृष्णमन्दिर बनबओने छलथिन जे सम्प्रति नष्ट भय गेल अछि। ओकर शिलालेख (१५०३ ई०) सम्प्रति चन्द्र-धारी संग्रहालय, दरभंगामे अछि। ओहिमे कंसनरायणकें यवनपतिभयाधायक कहल गेल अछि। मुदा गीतमे ई नसिरा साह सुलतानक उल्लेख करैत छथि। गीत सं० ७३ मे ई अपनाकें नसिरा भूपति कहैत छथि परञ्च एत' नसिराक स्थानमे डा० रामदेव झा 'मिथिला' पाठ सैह कयलनि अछि। यथार्थतः पूर्व-वर्णित 'नसिरा साह सुलताने'क ई नसिरा शब्द बादोमे कूदि पड़ल अछि।

(८) गोविन्द कवि (१४५०-१५३० ई०)—एतय हिनक दुइ गीत अछि। एकठाम सोझे गोविन्द ओ दोसर ठाम दास गोविन्द (गीत सं० ८०) नाम भेटैछ। मुदा, दास पाठ उचित नहि। भाषागीत-संग्रह (गीत सं०-५७ मे दासक स्थानमे 'मँति' (मन्त्री) पाठ अछि। हिनक कुल १९ गीत भेटैत अछि जाहिमे ई कतहु 'दास' नहि छथि आ 'मँति' अनेक ठाम छथि। अतः परवर्त्ती कवि गोविन्द दासक नाम-साम्यें लेखकीय प्रमादें एहिठाम दास जोड़ि देल गेल।

यद्यपि मैथिली प्राचीन गीतावलीक प्राक्कथनमे दूनू गोविन्दकें एके मान-बाक प्रस्ताव राखल गेल अछि तथापि एक नहि थिकाह। अलङ्करविन्यासी भने इहो गोविन्द रहथु, मुदा ओ गूढ़ता हिनकामे कहाँ। दोसरबात हिनक नाम केवल गोविन्द थिकनि, मुदा परवर्त्ती गोविन्ददास थिकाह, सभठाम ओहीरूपमे छथि। गोविन्ददासक पदक मिथिलामे अप्रचलन देखि हिनक अधिक समय वंगप्रान्तमे बीतल से सम्भावना कयल जा' सकैछ। अतः ई आनन्दविजयनाटिकाकार रामदास झाक अग्रज ओ गुरु गोविन्ददास झा छलाह।

प्राचीन गोविन्द कवि दिघबय सन्दहपुर मूलक म० म० कवि गोविन्द रूपें पञ्जीमे उल्लिखित छथि। हिनक पिता सप्रक्रिय कवि रविकर ठाकुर छलथिन। गोविन्द कविक रचित नलचरित नाटक प्रकाशित अछि। ई राजा कंसनरायणक मन्त्री छलाह।

(९) लछमीनराञेन (१५००-१५५० ई०)—हिनक एक गोट गीतमात्र भेटैत अछि जाहिमे ई अपनाकें नृप कहने छथि। ई मोरंगक प्रथम राजा छलाह। हिनक आश्रित गोपीनाथ कवि अपन गीतमे हिनक नामोल्लेख कयने छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ई वंश मैथिली साहित्यक अभिवृद्धिमे प्रचुर योगदान कयने अछि। हिनक वंशावली[1] एहि प्रकारें अछि—लक्ष्मीनारायण—रूपनारायण—वीरनारायण—नरनारायण—जगनारायण—त्रिविक्रम—निर्भय। एहिमे रूपनारायणक आश्रित कवि जीवनाथ, नरनारायण ओ जगनारायणक आश्रित कवि भीषम तथा त्रिविक्रमक आश्रित कवि गङ्गाधर छलाह।

(१०) नवकविशेखर जसोधर (१५००-१५५०ई०)—हिनक एक गीत एहि ठाम अछि। विद्यापति कविशेखर छलाह ओ तें जसोधर नवकविशेखर कहबय लगलाह। कविशेखर उपाधिहिक नामें किछु गीत उपलब्ध होइत अछि से कोन कविशेखरक थिक से स्पष्ट नहि होइत अछि। जशोधर अपन गीतमे शाह हुसेनक उल्लेख कयने छथि जे बंगालक शासक छलाह। हुनक समय १५२५ ई० थिक।

(११) जीवनाथ (१५५० ई०)—हिनक एकमात्र गीत एतय अछि जाहिमे हिन्दूपति रूपनारायणक उल्लेख कयने छथि जनिक पत्नीक नाम मेधा देवी सेहो उल्लिखित छनि। अत: ई रूपनारायण मोरंगक राजा लक्ष्मीनारायणक (लछमीनराञोन कविक) पुत्र थिकाह जे स्वयं मोरंगक द्वितीय राजा भेलाह।

(१२) दस-अवधान (१५५० ई०)—भाषागीत-संग्रहक आधार पर हिनक पूर्णनाम दशावधान ठाकुर छलनि। ई हाजीपुरक आलम शाहक ओ बंगालक राजा चान्द रायक आश्रित छलाह जनिक नामोल्लेख सेहो गीतमे कयने छथि। भाषागीत-संग्रहमे हिनक चारि गोट गीत अछि। हिनक किछु संस्कृत पद्य विद्याकर-साहस्रीमे उपलब्ध होइत अछि। ई वहेराढ़ी मूलक प्रज्ञाकरक[2] पुत्र छलाह।

(१३) सदानन्द (१५५० ई०)—हिनक पाँच गोट गीत उपलब्ध अछि। ई सुकवि विशेषणसँ युक्त अपन नाम कतहु-कतहु देने छथि। शङ्कर ओ दुर्गाक गीत अधिक छनि। ई कायस्थवंशमे उत्पन्न श्रीनारायण ओ अनुमति देवीक पुत्र छलाह। कायस्थ-पञ्जीक अनुसार ई देवीचरण-परायण ओ महाभक्त छलाह।

---

१. (i) मैं० प्रा० गीतावली—प्राक्कथन पृ०३१।
   (ii) मैथिली साहित्यक इतिहास—डा० श्रीश, पृ० ८४।
२. मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ०-७८।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१४) भीषम (१६०० ई०)—एतय हिनक तीनि गोट गीत अछि। गीतमे ई अपना हेतु कुमर विशेषणक प्रयोग कयने छथि जाहिसँ बुझि पड़ैछ जे ई ओइनिवार वंशक छलाह। अपन आश्रयक रूपमे मोरंगक राजा नरनारायण ओ जगनारायणक उल्लेख कयने छथि। उक्त दूनू पिता-पुत्र थिकाह। हिनक गीतमे उर्वशी-विषयक चर्चा देखि तद्विषयक हिनक एक नाटक छल होयत से सम्भावना कयल जा' सकैछ।

(१५) चतुर्भुज (१५७५-१६४० ई०)—ई अपन नाममे चतुर विशेषण लगओने छथि। ई पण्डितराय रघुनन्दनक पुत्र छलाह। हिनक आश्रय मोरंगराज सिंहदलन वीरनारायण ओ भक्तपुरक राजा जगज्ज्योति मल्ल (प्रसिद्ध मैथिली कवि, १६३७ ई०) छलथिन। हिनक बनाओल संस्कृत गीतकाव्य गीतगोपालमे कविक पिता पण्डितराजक[१] पदसँ अकबर द्वारा सम्मानित भेल छलाह तकर सूचना अछि। हिनक गोड़ बीसेक गीत प्रकाशित अछि। विद्याकर-साहस्रीमे एक पद्य हिनक अछि। मिथिलामे अनेक चतुर्भुज भेटैत छथि आ ग्रन्थों चतुर्भुजक नामें बहुत भेटैत अछि। परन्तु ताहिमेसँ कतेक हिनक थिक से कहब कठिन अछि। एक 'अमरुशतक'क टीका अछि जे चतुर्भुज मिश्रक कहल जाइछ, मुदा डा० रामदेव झा एही चतुर्भुजक मानैत छथि। उक्त टीका अद्यावधि अप्रकाशित पं० श्री रविकान्त मिश्र, ग्रा० पो० दीप, जि०-मधुबनीक ओहिठाम छनि। दोसर ग्रन्थ अछि चतुर्भुजकृत "नामलिङ्गानुशासन-वृत्ति" (अमरकोषक टीका) जाहिमे केवल चतुर्भुज शर्मा नाम भेटैत अछि। ई पोथी आद्यन्तखण्डित दीनबन्धु पुस्तकालय, इसहपुर, मधुबनीमे अछि। एहिमे मैथिली शब्दक भरमार अछि।

(१६) श्यामसुन्दर (१५०० ई०)—हिनक एकमात्र गीत भेटैत अछि जाहिमे ई कमलावतिपति कृष्णनारायणक उल्लेख कयने छथि। कवि लक्ष्मीनाथ (कंसनारायण) अपन एक गीतमे कृष्णनारायण ओ देवजना देविक उल्लेख कयने छथि। अतः हिनक समय १५०० ई० मानल जा' सकैछ।

(१७) हरिदास (१६०९-१६५० ई०)—हिनक एकमात्र गीत उपलब्ध अछि। ई आनन्द विजय नाटिकाकार रामदास झाक अग्रज कहल जाइत छथि। तदनुसार हिनक प्रपितामह म० म० शुचिकर झा खण्डवलावंशीय राज्योपार्जक म० म० महेश ठाकुरक गुरु छलथिन। हिनक वंशक्रम एहि रूपें

१. मैथिली प्राचीन गीतावली, प्राक्कथन, पृ० ७६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अछि—शुचिकर—शिवदास—कृष्णदास—हरिदास (गंगादास, गोविन्द दास, हरिदास ओ रामदास चारि भाइ)। ई कुजौली मूलक छलाह। हिनक गुरु काव्यप्रदीपकार म० म० गोविन्दठाकुर छलथिन। ई ल० सं० ५०५मे महाभारतक टीका[1] विमलबोधरचित तालपत्रमे लिखने छलाह। अतः हिनक समय १६१४ ई० निश्चित होइछ।

(१८) गङ्गाधर (१६२५ ई०)—हिनक एकमात्र गीत भेटैत अछि जाहिमे ई त्रिविक्रम नृपतिक उल्लेख कयने छथि। मोरंगक छठम राजा त्रिविक्रम छलाह जे जगनारायणक पुत्र छलाह। तदनुसार हिनक समय १६२५ ई० पड़ैत अछि।

(१९) श्रीनिवास मल्ल (१६४० ई०)—ई नेपालक ललितपुरक राजा छलाह। हिनक पिता छलाह सिद्धहस्त मैथिलीक कवि सिद्धिनरसिंह मल्ल। हिनक एकमात्र अपूर्ण गीत प्राप्त अछि।

(२०, कविराज पूरन मल्ल—हिनक एकमात्र गीत भेटैत अछि। कविराज उपाधिसँ स्पष्ट अछि जे प्रचर गीत रचने होयताह। मल्ल उपाधिसँ लगैछ जे नेपाल-राजवंशक भ' सकैत छथि।

(२२) प्रीतिनाथ नृप—हिनको एकमात्र गीत भेटैत अछि। अपना हेतु नृप शब्दक प्रयोग कयने छथि। अतः ई राजा छलाह। मुदा, कोन वंशक, कतयक, से स्पष्ट नहि अछि।

(२२) चतुरानन—हिनको एकमात्र गीत अछि। अपन विशेषणक रूपमे कवि शब्दक प्रयोग कयने छथि।

(२३) कुमुदी—हिनको एकमात्र गीत उपलब्ध अछि। अपना लेल कविक प्रयोग कयने छथि। कोनो राजाक उल्लेख नहि कयने छथि।

(२४) रतनाञ्जी (रतन)—हिनक केवल दुइ गोट गीत एतहि उपलब्ध अछि। अपना लेल कवि शब्दक प्रयोग करैत एक ठाम 'देवल देवि लखनचन्द राजा'क उल्लेख कयने छथि। स्वयं लखनचन्द राए कवि छलाह। हिनको दू गीत एतय अछि।

(२५) लखनचन्द राए—हिनक दू गोट गीत उपलब्ध अछि। कवि

1. मिथिला तत्त्वविमर्श (अकादामी संस्करण), पृ० १३८।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रतनाङ्गी हिनके आश्रित छलाह। ई कतयक राजा छलाह से अनुसन्धेय अछि।

(२६) जयकृष्ण—हिनक एकमात्र गीत उपलब्ध अछि। हिनक नाम जयकृष्णन भेटैत अछि जे लेखक-प्रमादे थिक।

(२७) धरणीधर—हिनको एके गोट गीत भेटैछ।

(२८) मधुसूदन—हिनको एके गोट गीत भेटैछ।

(२९) लोचन (१६५०-१७२५ ई०)—लोचन कवि स्वयं रागतरङ्गिणीक रचयिता थिकाह। हिनक कुल आठ गोट गीत उपलब्ध अछि जाहिमे ई अपना लेल "सरससुमति" (गीत सं० ४), "कवि" (गीत सं० ४,१४) ओ "सुमति" (गीत सं० ५५) विशेषणक प्रयोग कयने छथि। खण्डवलावंशीय राजा महिनाथ ठाकुर (१६८८-९० ई०) ओ राजा नरपति ठाकुर (१६९०-१७२० ई०) ई दूनू भाइ हिनक आश्रय छलथिन जनिक उल्लेख अपन गीतमे ओ रागतरङ्गिणीक आरम्भमे कयने छथि। रागतरंगिणीमे अपन एक अन्य ग्रन्थ "रागसंगीतसंग्रह"क उल्लेख कयने छथि —

"एतेषां प्रपञ्चस्तु मत्कृत-रागसंगीतसंग्रहऽन्वेष्टव्य:"। (पृष्ठ ६४)।

परन्तु अद्यावधि उक्त ग्रन्थ अनुपलब्ध अछि। नामहिसँ अन्दाज लगाओल जाय सकैछ जे ओहू ग्रन्थमे मिथिलाभाषामय गीत होयबे करत।

रागतरंगिणी राजा नरपति ठाकुरक आज्ञासँ बनाओल गेल (१-८)। राजा नरपति स्वयं संगीतज्ञ छलाह। हुनक पत्नी उर्वशी देवीक उल्लेख लोचनक गीतमे अछि। लोचनकवि उच्च वंशक छलाह (१-८)। हिनक वंश मिथिला पंजीक अनुसार एकहरय [कन्होली मूलक मैथिल श्रोत्रियवंश थिक। पंजीमे हिनका महो लचन कवि[1] कहल गेल अछि अर्थात् ई महोपाध्याय उपाधि प्राप्त कयने छलाह तथा कवि छलाह। हिनक वंशावली एहि रूपें अछि—

वैद्यनाथ झा—परमानन्द झा—महो० बाबू झा—महो० कवि लोचन झा—'बाछ' प्रसिद्ध रत्नपति झा—'झिंगुर' प्रसिद्ध तीर्थदत्त झा—भवदत्त झा—दामोदर झा—गुदरी झा—घुरघुर झा, मुक्तिदत्त झा ओ चक्रदत्त झा। ताहिमे (१) मुक्तिदत्त झाक पुत्र भैरव झा, (२) चक्रदत्त झाक पुत्र लक्ष्मीनाथ झा, तेजनाथ झा, विन्दुनाथ झा, राजनाथ झा तथा (३) भैरव झाक बालक

१. पंजीकार श्री हरिनन्दन झा एक पुरान पाँजिक पोथीक अनुसार महोकवि लोचन नाम देखओलनि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नित्यानन्द झा इत्यादि व्यक्ति सम्प्रति उजान गाममे बसैत छथि।

कवीश्वर चन्दाझाक लग लोचन कविक स्वहस्तलिखित[1] एक पोथी छलनि जाहिमे निम्नलिखित श्लोक छल—

वेद४-बाहु२-रस६-क्ष्माभि१ र्लक्षिते शाकवत्सरे।
बुधे भाद्र-द्वितीयायां जातमेतत्तु पुस्तकम्॥
"उद्यान" - नगरान्तस्य त्वरितस्य विलेखने।
देवाल्लब्धप्रतीकस्य लिपिर्लोचन - शर्मण:॥

एहि श्लोकसँ लोचनक स्थिति शाके १६२४ (१७०२ ई०) मे सिद्ध होइत अछि। एहि श्लोकसँ लोचनक किछु वैशिष्ट्य सामने अबैत अछि—(१) ओ उजानगामक वासी छलाह। (२) शीघ्रता सँ लिखैत छलाह। (३) राजासँ सम्मानित छलाह।

दोसर रागतरंगिणीक पोथी सेहो चन्दा झा लग छल जकर अन्तमे शाके १६०७ छलैक।

तेसर लोचन कविक हाथक लिखल एक नैषधमहाकाव्य श्रीहर्षकृत कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रहमे अछि जकर अन्तमे लिखल अछि :—

शाके १६०३ विजयदशम्यां रैआमग्रामे स्वार्थमलिखत् श्रीलोचनशर्मा एकलांगलवंशीय:।

शाके १६०३ ईस्वी सन् १६८१ मे पड़ैत अछि। उक्त लेख अत्यन्त स्पष्ट ओ सुन्दर अछि। युवा लेखनीक लिपि थिक से स्पष्ट अछि। अतः एहि समयमे लोचन कवि युवक छलाह। ई पोथी रैआम ग्राममे लिखलनि जे हुनक निवासग्राम उद्यान (उजान, लोहना रोड, दरभंगा) सँ दू कोस उत्तर अछि।

उपर्युक्त सन्दर्भसँ एकदम स्पष्ट अछि जे राग-तरंगिणीकार लोचन मैथिल छलाह। अतः हिनक बंगाली होयब वा मानभूमिक होयब बला मत सर्वथा असंगत ओ तथ्यहीन थिक। (एहि हेतु द्रष्टव्य—'पटना-विश्वविद्यालय जर्नल' भाग—१ खण्ड २, पृ० ३८-३९, डॉ० सुभद्र झाक लेख)।

---

२. रागतरंगिणी—राजपण्डित बलदेव मिश्र, प्राक्कथन, पृ० घ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवि लोचन संस्कृतक प्रतिष्ठित पण्डित, संगीतज्ञ ओ व्रजभाषा तथा मैथिलीक साहित्यक महान् वेत्ता छलाह। हिनक एकमात्र उपलब्ध कृति एहि रागतरंगिणीमे संस्कृत, व्रजभाषा ओ मैथिलीक प्रयोग भेटैत अछि। हिनक विशुद्ध मैथिली पदकें देखि के कहि सकैछ जे ई अमैथिल छलाह? दोसर बात मैथिल रागक वर्णनमे बहुशः देशीय राग, देशीय भाषा आदिपदक प्रयोग क' अपनाकें मैथिल कहैत छथि।

अवशिष्ट गीत

रागतरंगिणीमे किछु एहनो गीत अछि जकर कवि अज्ञात छथि। कारण, किछु पद कहि इत्यादि कहिक' छोड़ि देल गेल अछि वा भनितावला पद छुटि गेल अछि। एहन गीत ५ टा अछि :–

(१)	गीत सं०	५३	भनिता नहि अछि।
(२)	,,	६५	दुइये टा पद देल अछि। एकर शैली देखि लगैछ जेना गोविन्द कविक रहय।
(३)	,,	७६	आधे गीत अछि।
(४)	,,	७७	एके पाँती द' इत्यादि कहल अछि।
(५)	,,	१०२	भनिताक पद नहि अछि।

एहिसँ अतिरिक्त ९७ गीतक कवि ज्ञात छथि। किछु गीतक कवि भाषा गीत संग्रहसँ ज्ञात भेलाह अछि।

मैथिली ओ रागतरंगिणी

मैथिली साहित्यक दृष्टिएँ ई ग्रन्थ बड़ मोल रखैत अछि। एतेक प्राचीन कालमे संगृहीत २९ कविक रचना एकत्र कोनो आधुनिक भाषा-साहित्य कें गौरवान्वित क' सकैछ। ई ग्रन्थ मैथिली साहित्यक स्वतन्त्र अस्तित्वकें जगजगार क' देलक। डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखैत छथि :—

"यदि हिनक ई ग्रन्थ उपलब्ध नहि भेल रहितय तँ मैथिली-साहित्य-विरोधी तत्त्व आओर मुखर रहैत तथा षड्यन्त्रक व्यामोह खण्डित नहि भेल रहैत। मिथिलाक स्वतन्त्र संगीत-परम्पराक रूपरेखा प्रस्तुत करबामे ई कतबा महत्त्वपूर्ण अछि, से एही सँ सिद्ध अछि जे संगीतशास्त्रक भातखण्डे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन अधिकारी विद्वान् हिनका मध्यकालीन संगीत-शास्त्रक प्रमुख अधिकारी ओ विशेषज्ञ मानैत छथि।"¹

प्रस्तुत संस्करण

यद्यपि रागतरङ्गिणीक एहिसँ पूर्व चारि संस्करण भ' चुकल अछि :—

(१) बम्बईसँ—१९१० ई०, गीतांश रहित।

(२) पूनासँ १९१८ ई०, ,,

(३) दरभङ्गासँ १९३४ ई०, गीतांश युक्त।

(४) पटनासँ—१९६६ ई०, ,,

परन्तु अत्यन्त प्रयास कयलो पर क्रमांक १,२ तथा ४ नहि प्राप्त भ' सकल। केवल क्रमांक ३ एहि संस्करणक मूल थिक। ई राजपण्डित बलदेव मिश्र द्वारा राजप्रेस दरभङ्गासँ प्रकाशित अछि। जँ क्रमांक १ वा २ भेटितय तँ बहुत उत्तम होइत ओ पाठ-परिष्कारमे अत्यन्त सहायता होइत। मुदा, साध्ये की।

एहि वर्तमान संस्करणमे मूल-पाठमे पर्याप्त संशोधन कयल गेल ओ मैथिलीमे अर्थ सेहो क' देल गेल अछि। क्रमविन्यासमे नवीनता लाओल गेल अछि। एहि संस्करणक विशेषताक सारांश नीचाँ देल जाइत अछि :—

(१) संस्कृत श्लोकक संख्या दहिन भागमे देल गेल अछि। मैथिली गीतक संख्या गीतक उपरेमे पृथक देल गेल अछि।

(२) संस्कृत अंशकेँ व्याकरणानुसार संशोधन ओ अर्थसङ्गत पाठक ऊह कयल गेल अछि।

(३) संशोधनक प्रसङ्ग सतत ध्यान राखल गेल अछि जे ई पोथी मिथिलाक्षरसँ उतारल गेल अछि। अतः मिथिलाक्षर ओ देवाक्षर प्रयुक्त वर्णक सांकर्यक ऊह क' संशोधन कयल गेल अछि। यथा—

१. मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ०-८८।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूल पाठ	संशोधित पाठ	गीत सं०
१—तखने	एखने	१०२
२—हरि	हवि	१९
३—कुन्दन	कुन्दल	३१

(४) छन्दक अनुरोधें ओ अर्थक अनुरोधे यथासम्भव मूलक रक्षा करैत संशोधन कयल गेल अछि।

(५) वर्ण-विन्यास सम्बन्धी व्युत्क्रम सुधारल गेल अछि। कतहु-कतहु एक-दू आखर कमी जानि जोड़लो गेल अछि।

(६) वर्णद्वित्व, परसवर्ण ओ अन्य सन्धि यथोचित सुविधाक हेतु हटाओल अछि, मुदा से ततहि कयल अछि जतय से व्याकरण-सम्मत हो। इत्यादि।

एहि संशोधनक निर्देश टिप्पणीमे क' देल अछि। नीचांमे मूलपाठ टिप्पणी रूपें राखल अछि ओ ग्रन्थमे संशोधित पाठ देल अछि।

यद्यपि हमरा सङ्गीतशास्त्रक अध्ययन तेहन नहि, तथापि मैथिलीक एक प्राचीन ग्रन्थक पाठोद्धार रूप सेवाभावनासँ एहिमे प्रवृत्त भेलहुँ। ओ एहिमे सङ्गीतशास्त्रीय छन्द सम्बन्धीये नियम विशेषत: अछि, स्वरक आरोहावरोह नहि। अत: प्रवृत्त होयबामे विशेष असंगति नहि।

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम एहि कार्यक मूल प्रेरक पूज्यपाद पं० श्री गोविन्द झाक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करब आवश्यक बूझि ज्ञापित करैत छी।

'गीतविद्यापति'—डा० महेन्द्रनाथ दूबे, विद्यापति पदावली—राष्ट्रभाषा परिषद पटना, ओ भाषागीत-संग्रह—प्रो० रमानाथ झा एहि तीनूसँ संशोधनमे प्रचुर सहायता भेटल अछि। अत: हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञ छी।

उपोद्घात लिखबामे (१) मैथिली प्राचीन गीतावली—डा० रामदेव झा, (२) Histry of Maithili Literature—Dr. Jayakant Mishra ओ (३) मैथिली साहित्यक इतिहास – डा० श्रीश पूर्ण सहायक भेल छथि, अत: हिनका लोकनिक आभारी छी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तमे रागतरङ्गिणीक सम्पादक राजपण्डित बलदेव मिश्रकेँ नहि बिसरि सकैत छी जनिक सम्पादित पोथी एहि संस्करणक मूल थिक। हुनक चिरऋणी रहहि पड़त।

आइ संशोधित रूपमे अपन भाषाक एक प्राचीन पोथीकेँ सुधी समाजक समक्ष रखैत अत्यन्त आनन्द भ' रहल अछि, जे चिरकालसँ असंशोधित ओ दुर्लभ छल। हमर ई प्रयास कतेक सफल भेल ताहिमे विज्ञ पाठके प्रमाण। अन्तमे विद्वान लोकनिसँ अपन त्रुटिक हेतु क्षमा मङैत विरत होइत छी।

व्याकरण-भाषाविज्ञान-विभाग
संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा

श्री शशिनाथ झा
२७-४-१९८१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-क्रम

पृष्ठ

प्रथम तरङ्ग : प्रस्तावना ओ राग

मंगलाचरण १

प्रस्तावना १

पुरुषराग सभक स्वरूप वर्णन ५

(१) भैरव— ६, (२) कौशिक—७,
(३) हिन्दोल— ९, (४) दीपक—१०,
(५) श्रीराग— १२; (६) मेघराग —१३ ।

द्वितीय तरंग : रागिनी

१. भैरवक रागिनी १५
(१) बंगाली—१५,(२) मधुमाधवी—१७,(३) बराड़ी—१८,
(४) सिन्धु—२०, (५) भैरवी—२१ ।

२. कौशिकक रागिनी २३
(१) टोड़ी—२३, (२) खम्भावती—२४, (३) गौरी—२६,
(४) ककुभा—२७, (५) गुणकरी—२९ ।

३. हिन्दोलक रागिनी ३०
(१) बेलावली—३१, (२) देशाख—३२, (३) रामकरी—३४,
(४) ललिता—३५, (५) पटमञ्जरी—३६ ।

४. दीपकक रागिनी ३७
(१) केदारा—३८, (२) कानरा—३९, (३) देशी—४०,
(४) कामोद—४२, (५) विहागरा—४३ ।

५. श्रीरागक रागिनी ४५
(१) वसन्ता—४५, (२) मालव—४७, (३) मालस्री—४९,
(४) घनास्री—५० ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ

६. मेघरागिनी ५३
(१) मलारी—५३, (२) देशकारी—५४, (३) भूपाली—५६, (४) टङ्क—५७, (५) दक्षिण गुर्जरी—५८।

तृतीय तरङ्ग : मैथिल राग

नाद-निरूपण ६१
गीत, धातु, ओ मातु ६२
मैथिल संगीत-परम्पराक उद्भव ६५
मैथिलामे प्रसिद्ध ३६ राग ६७
छन्दक लक्षण ६९
रागक लक्षण ७१
७. भैरवी ६७
८. बराड़ी ६६
(१) राघवी—७२, (२) पहड़िआ—७१, (३) देशी—७८, (४) माधवी—८०, (५) भठिआली - ८३, (६) नेपाल बराड़ी—८५।
९. कौशिक ८६
१०. देशाख ८८
(१) जयदेव-देशाख—८८, (२) देशाख-देशाख—८८।
११. रामकरी
(१) जयदेवी—९०, (२) शुद्धा—९०, (३) देशी—९१, (४) प्रीतिकरी—९३।
१२. ललिता ९६
१३. केदारा ९७
(१) शुद्धा—९८, (२) केदारा-केदार—९८, (३) विहागर केदार—९९, (४) मलारी केदार—१०१ (५) पहड़िआ केदार—१०२ (६) कामोद-केदार—१०३ (७) केदार-मालव—१०४।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ

१४. कामोद १०६
(१) कामोद मङ्गल—१०६, (२) देव-कामोद—१०७।

१५. श्रीराग १०८

१६. वसन्त ११०

१७. मालव ११२
(१) वितत-मालव—११२, (२) देश-मालव—११४, (३) श्रीमालव—११५, (४) घनछीमालव—११६, (५) वियोगी मालव—११७, (६) बृहद् वियोगी मालव—११८, (७) पहड़िया-मालव—११९, (८) विजयपुर-मालव—१२०, (९) जोगिया-मालव—१२२, (१०) शारङ्गी-मालव—१२३, (११) प्रियतमा-मालव—१२५।

१८. आसावरी १२५
(१) वितता-आसावरी—१२६, (२) देशी आसावरी—१२७, (३) सिंघली आसावरी—१२८, (४) जोगिआ आसावरी—१३०, (५) सिन्धुला आसावरी—१३१, (६) भोगिनी आसावरी—१३२, (७) सम्भोग आसावरी—१३३, (८) दण्डका आसावरी—१३४, (९) सरसा आसावरी—१३६, (१०) द्राविणी आसावरी—१३७, (११) अभिरामा आसावरी—१३८, (१२) मनोहरा आसावरी—१३९।

१९ मलारी १३९
(१) शुद्धा—१३९, (२) पहड़िया—१४०।

२०. भूपाली १४१

२१. गुर्जरी १४२

चतुर्थ तरंग : मैथिल संकीर्ण राग

२२. विभासी १४३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ

२३. अहिरानी (भीमपलासी) १४५

(१) अहिरानी भीमपलासी—१४५, (२) रम्या भीमपलासी—१४६, (३) धन्या भीमपलासी—१४७, (४) वितता भीमपलासी—१४८।

२४. गोपीवल्लभ १४९

२५. सारङ्गी १५१

(१) शुद्धा—१५१, (२) देशी—१५३, (३) अभिरामा—१५४, (४) शोभना—१५५, (५) अनूपा—१५६।

२६. सूहव १५७

(१) सूहव—१५८, (२) शुद्ध—१५९, (३) काम सूहब—१५९, (४) करुणा—१६१, (५) सुन्दर—१६२, (६) स्मरसन्दीपन कोडार—१६३।

२७. कोडार १६४

(१) वियोगी—१६४, (२) मोरङ्गिआ—१६६, (३) दंण्डक—१६८, (४) शुद्ध—१६९, (५) वितत—१७०।

२८. धनछी १७२

(१) मङ्गली—१७२, (२) पहड़िया—१७३, (३) पञ्चमस्वरा—१७४, (४) श्रीविमिश्रा—१७५, (५) जोगिआ—१७७, (६) शाम्भवी—१७८, (७) शोभना—१७९।

२९. गौड मालव १८०

(१) गौड़ीय—१८०, (२) मैथिल—१८१।

३०. राजविजय १८१

(१) देव-राजविजय—१८१, (२) अलान विमिश्र (अडान)—१८३, (३) देश-राजविजय—१८४, (४) कानरा मिश्र—१८५, (५) मंगल-राजविजय—१८६, (६) मनमोद—१८७, (७) भठिआल-राजविजय—१८८।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ

३१. नाट १९०

(१) शुद्ध नाट—१९०; (२) मलारी नाट—१९१, (३) शंकुक-नाट—१९४, (४) कामोद नाट—१९७, (५) उत्तम-नाट—१९८।

पञ्चम तरंग : स्वर संज्ञा

स्वर, श्रुति आदिक लक्षण २०२

विभिन्न रागक स्वर संस्थिति २०३

(१) भैरवी—२०४, (२) टोडी—२०४, (३) गौरी—२०५, (४) कार्णाट—२०५, (५) केदार—२०५, (६) ईमन—२०५, (७) शारंग—(?, (८) मेघ—२०६, (९) घनास्री—२०६, (१०) पूर्वा—२०७।

स्वरजाति २०८

स्वर-निरूपण २११

राग-संकर २१२

राग-गान-काल २२२

नायक-नायिका भेदवर्णन २२५

(क) नायकभेद—२२५, (ख) नायिकाभेद—२२६।

परिशिष्ट

१. उदाहृत गीतक अनुक्रमणी २३७

२. उदाहृत गीतक कविक अनुक्रमणी २४१

३. राग-रागिनीक अनुक्रमणी २४२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

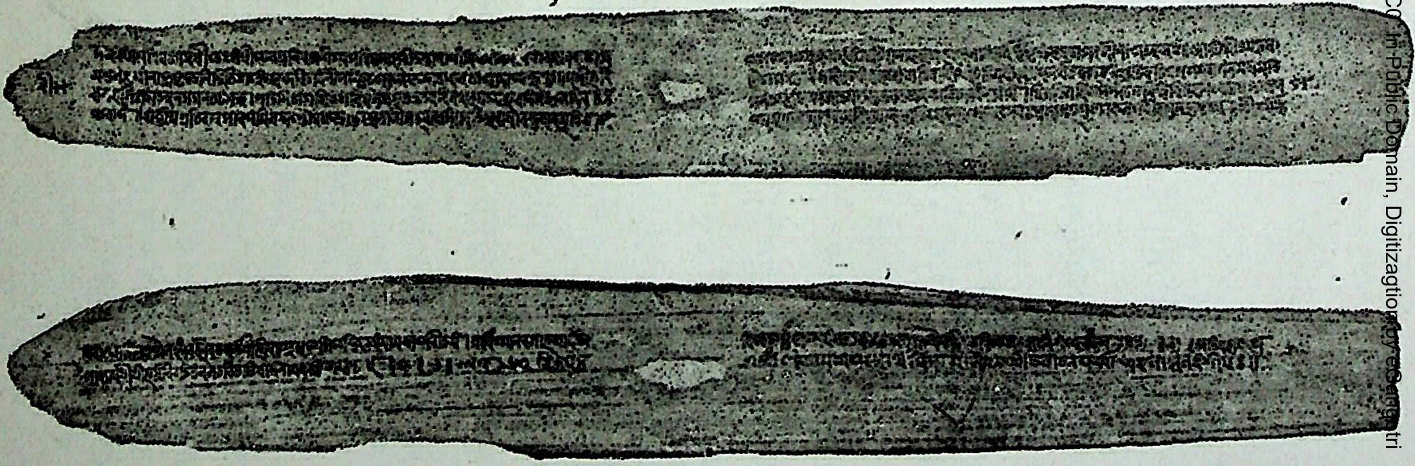

लोचनक हस्तलेख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागतरंगिणी

प्रथमस्तरंगः

चिरतरकृतयोगयोगिवृन्दै-
विपुलहृदि स्थिरचेतसा विमृग्यः ।
शमयतु दुरतानि भावकानां
सुखसदनः कदनोऽसतां मुरारिः ॥१॥

नारदप्रमुखैः सिद्धैर्गीयमानः समन्ततः ।
रागरङ्गः प्रसन्नोऽस्तु शङ्करः किङ्करे मयि ॥२॥

यावच्छास्त्र-विशारदेन शुचिना निश्शेषमध्यापित-
स्तर्काम्भोरुहकाननैकभगवान् भानुर्धराधीश्वरः ।
सामन्त-प्रकरोत्तमाङ्गपटली - नीराजितांऽघ्रिद्वयः
साक्षादत्र महेश एव सुमहानासीन्महेशः कृती ॥३॥

चिरकालसँ योगाभ्यासरत योगीलोकनि अपना विशाल हृदयमे स्थिरचित्तसँ जनिक चिन्तन कय सकैत छथि से सुखदायक दुर्जन-नाशक मुरारि श्रीकृष्ण भगवान् भक्त सभक दुःखकेँ शान्त करथु ।१।

नारद प्रभृति प्रसिद्ध सिद्धलोकनिकसँ सदा स्तूयमान ओ रागरङ्ग (रागमे प्रीति रखनिहार) शङ्कर भगवान दासस्वरूप हमरा पर प्रसन्न होथु ।२।

जे सकल-शास्त्र-पारङ्गत शुचिकर उपाध्यायसँ सकलशास्त्रक अध्ययन कयने छलाह; तर्करूपी कमलवनक हेतु एकमात्र सूर्यस्वरूप छलाह; पृथ्वीपति, सामन्त (अधिकृत राजा) लोकनिक माथक रत्नद्वारा जनिक चरणद्वयक आरती होइत छल से म० म० महेश ठाकुर साक्षात् महेश (शिव) जकाँ महान् भेल रहथि ।३।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूनुस्तस्य सुधासमुद्रलहरीसूक्तिः कलानायको
विख्यातः कवितालताहृदिगतो हारो नरोत्तंसकः ।
आसीच्छाशितदुर्जनः प्रमुदितो नित्यं प्रसन्नेश्वरः
सत्यार्थेन शुभङ्करः कृतिमतां नाम्ना धराधीश्वरः ॥४॥

एतस्याऽपि सुताः सुताश्च बहवो बह्व्यः कनीयान् पुनः
शीलौदार्यवशीकृताऽखिलजनो जीवातुरेकः क्षितौ ।
रामश्यामतराऽभिरामसुमहद्धामैकचित्तोऽभव-
च्छ्रीमत्सुन्दरभूपुरन्दरधराविख्यातकीर्त्तिः सुतः ॥५॥

तस्योल्लासिकलाकुलेन मुदितो नित्योन्नतः सन्नतः
सूनुः सज्जनरञ्जनः प्रतिपलं दुःशीलहृद्गञ्जनः ।
शोभाभिः कुसुमायुधस्य सुमहद्धिक्कारकारीतरां
वीरः श्रीमहिनाथभूपतिलकः शास्तेऽधुना मैथिलान् ॥६॥

तनिक पुत्र, अमृत-समुद्रक तरङ्ग-सन सुन्दर उक्तिसँ युक्त, कलाप्रधान, प्रसिद्ध, कवितारूपी लत्तीकेँ हृदय पर हारस्वरूपेँ रखने, मनुष्यकेँ आनन्दित कयनिहार, दुर्जनक शासक, प्रसन्न, प्रसन्नेश्वर, यथार्थनामा, विद्वान् सभक शुभकारक, म० म० शुभङ्कर ठाकुर नामक राजा भेलाह ।४।

हिनकहु बहुतो पुत्र एवं पुत्री भेलथिन । ताहिमे सबसँ छोट, उत्तम स्वभाव ओ औदार्यसँ सकल लोककेँ वश कयनिहार, पृथ्वी पर एकमात्र प्राण-रक्षक, श्यामल-सुन्दर रामचन्द्रक महान् स्थानक चिन्तन कयनिहार, पृथ्वी भरि विख्यात कीर्त्तिसँ युक्त श्रीमान् सुन्दर ठाकुर नामक पुत्र भेलथिन ।५।

तनिक पुत्र, उत्तम कलासभसँ प्रसन्न, सतत उन्नतिशील, नम्र, सतत सज्जनकेँ प्रसन्न कयनिहार, दुर्जनकेँ गञ्जन कयनिहार, सुन्दरतासँ कामदेवहुक तिरस्कार कयनिहार, वीरवर, राजामे श्रेष्ठ श्रीमान् महिनाथ ठाकुर सम्प्रति मिथिला देश पर शासन करैत छथि ।६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्याऽनुजोऽपि निजवैरिदलोद्भटानां
न्यक्कारकारिधनुरायतपुङ्खकाण्डः ।
चन्द्राननो नरपतिर्ध्वनिगानसिन्धु[1]
राविर्बभूव गुणिराजगणैकबन्धुः ॥७॥

यो जागर्त्ति महीतले निरुपमः सर्वासु पुंसां कला-
स्वासन्नेषु च कल्पपादपवदाऽऽनन्दाय यो नित्यशः ।
तस्य श्रीनृपसुन्दरात्मज-महीनाथाऽनुजस्याऽऽज्ञया
विप्रः कोऽपि सुवंशजो नरपतेः कीर्त्तिं तनोति प्रियाम् ॥८॥

किञ्चित् समाहृत्य कुतश्चिदन्यत्
स्वयं च सम्पाद्य पदप्रबन्धम् ।
वितन्यते लोचन-नामधेय-
द्विजेन सा रागतरङ्गिणीयम् ॥९॥

तनिक छोट भाय सेहो अपन शत्रुदलक योद्धा सभकें धनुष पर बाण चढ़ाय परास्त कयनिहार, चन्द्रमा-सन मुखसँ युक्त, राग एवं गानक समुद्र, गुणवान् सभक एकमात्र अवलम्ब श्रीमान् नरपति ठाकुर नामक भेलथिन ।७।

जे पुरुषक सकल कलामे पृथ्वी पर अनुपम छथि; जे निकटवर्ती लोक सभकें कल्पवृक्ष-समान प्रतिदिन आनन्दित करैत छथि; ताहि श्रीराजा सुन्दर ठाकुरक पुत्र राजा महिनाथ ठाकुरक अनुज श्रीनरपति ठाकुरक आज्ञासँ एक सत्कुल-समुत्पन्न ब्राह्मण हुनक प्रिय कीर्त्तिक विस्तार करैत छथि ।८।

अनेक ठामसँ किछु-किछु संगृहीत क' तथा किछु अपनहुँ बनाक' लोचन नामक ब्राह्मण कवि रागतरङ्गिणी नामक ई प्रबन्ध रचैत छथि ।९।

---

१. ध्रुनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुणिगणविनिगूढ़ान् मूढ़लोकेऽपि गम्यान्
कलयितुमिह[1] रागान् सर्वतः कर्णरम्यान् ।
विपुलगुणजनानां सङ्गतौ सम्प्रयुङ्क्ते
मतिमिह हि निबन्धे सज्जनाः सन्नयन्तु ॥१०॥

इह खलु निखिलशास्त्रैकगरिष्ठ-श्रीमद्भरतादिमुनिप्रयुक्त संगीत शास्त्रोक्तानि रागाणां षोडशसहस्राणि । तथा चाऽभियुक्ताः—

गोपीभिर्गीतमारब्धमेकैकं कृष्णसन्निधौ ।
तेन जातानि रागाणां सहस्राणि तु षोडश ॥११॥
रागेष्वेतेषु षट्त्रिंशद् रागा जगति विश्रुताः ।
कालक्रमेण तत्रापि ह्रास एव हि दृश्यते ॥१२॥

जे राग सभ अर्थात् संगीततत्व केवल गुणी-लोकनिक बीच निगूढ़ (छिपाओल) अछि तकरा मूर्खो लोकक हेतु सुगम्य ओ सर्वसाधारणक हेतु कर्ण-प्रिय बनयवाक निमित्त कवि एहि महागुणवान लोकनिक संगति (गोष्ठी) मे प्रस्तुत करैत छथि । एहि सम्बन्धमे सज्जन-लोकनि अपन ध्यान देथु ।१०।

एतय सकल शास्त्रमे श्रेष्ठ श्रीमद् भरत आदि मुनिक द्वारा प्रवर्तित संगीतशास्त्रमे कहल राग सोलह हजार अछि, जेना वृद्धलोकनिक कथन छनि :—

गोपीलोकनि कृष्णक लगमे एक-एक गीत गायब प्रारम्भ कयलनि । ताहिसँ सोलह हजार राग भय गेल । एहि राग सभमे केवल छत्तीस राग संसारमे प्रसिद्ध अछि । ताहूमे काल-क्रमसँ ह्रासे देखल जाइत अछि ।११-१२।

---

१. कुलयितुम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केचिद् वदन्ति ते सर्वे रागाः सन्तीति निश्चितम् ।
मेरोरुत्तरतः पूर्वे पश्चिमे दक्षिणे तथा ।।
समुद्रकण्ठे ये देशास्तत्राऽमीषां प्रचारणा ।।१३।।

अथाऽत्र पुंरागाः

भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा ।
श्रीरागो मेघरागश्च षडेते हनुमन्मताः ।।१४।।

अथैतेषां मूर्त्तिलक्षणम्

इदन्तु सकललोकसाधारण-झटित्युद्बोधहेतु-मध्यदेशभाषा-माश्रित्यापि लिख्यते ।

दोहा

आदि राग भैरव भनिअ, पुनि कओसिक हिन्दोल[1] ।
दीपक अओ श्रीराग शुभ, मेघराग बहुमोल ।।१५।।

केओ कहैत छथि जे ओ रागसभ निश्चित रूपें अछि। किछु मेरु पर्वतक उत्तरमे, किछु पूबमे, किछु पश्चिममे, किछु दक्षिणमे तथा किछु समुद्रक तट प्रदेशमे प्रचलित अछि।१३।

पुरुषराग

(क) भैरव, (ख) कौशिक, (ग) हिन्दोल, (घ) दीपक, (ङ) श्रीराग ओ (च) मेघराग—ई छओ राग हनुमानक सम्मत अछि।१४।

आब एहि रागसभक मूर्त्तिक (स्वरूपक) लक्षण (ध्यान) कहैत छी। ई लक्षणसभ सभलोकके साधारण रूपें झटदय बोधगम्य होउक तदर्थ मध्यदेशक भाषा (व्रजभाषा)क अवलम्बन क' सेहो लिखल जाइत अछि।

आदि राग भैरव कहबैछ, तकरा बाद कौशिक, हिन्दोल, दीपक, श्रीराग आओर बहुमूल्य मेघराग कहल जाइछ।१५।

१. भैरवक लक्षणसँ पूर्व रागक नामनिर्देश उचित। अतः एहि दोहाक उपन्यास एतहि कयल गेल—सम्पा०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[१] तत्र प्रथमं भैरवः

छप्पए

जटाजूटतट गंग, वसन सित, अङ्ग भुग्रङ्गम,
वरद, करदक्तदेव वरद-वाहन चढ़ि जङ्गम।
आसन गजवरखाल, धवल शशि भाल बिराजइ,
तीनि नयन, चितचञ्चेन जपत, भावक-दुख भाजइ।
करकलित शूल नृकपाल अरु, रागराज अतिमधुररव
भैरव हर दुइ नाहि जग, जेहि गावत सब समञ्न सब।

[अपिच]

शिरहि गंग, अंगहि भुअंग, भूषन, शशि भालहि,
विषम नयन, चित उदित चञ्चेन, आसन गजखालहि।
नरकपाल घर, धवल रूप, कर शूल सुलच्छन,
हरसरूप, सब राग भूप, सित वसन विलच्छन।
जग सकल राग-रागिनि भवन, आदिराग जेहि कहत सब।
सब समए गेय गुन अतिनिपुन, भैरव सुनि सुख देत भुव॥

[१] ताहिमे पहिने भैरव राग

जटाजूटमे गङ्गा, उज्जर वस्त्र, देहमे साप, एहि सभसँ युक्त, वरदाता, ज्ञानदाता, देवस्वरूप जङ्गम (चलनिहार) बड़दवाहन पर चढ़ल, उत्तम हाथीक खोलक आसन पर बैसल, स्वच्छ चन्द्र कपार पर रखने, तीनि आँखिवाला, एकाग्रचित्तेँ जप करैत, भक्तक दुःखनाशक, हाथमे त्रिशूल ओ मनुष्यक खप्पर लेने, रागराज, मधुर स्वरवाला 'भैरव' ओ महादेव जी एहि संसारमे दू नहि थिकाह, अपितु एके थिकाह, जनिका सब समयमे सब केओ गाबि सकैत अछि।

आओरो—

माथ पर गङ्गा, देहमे सापक गहना, कपार पर चन्द्रमा, विषम (तीन टा) आँखि, एकाग्र चित्त, हाथीक खालक आसन, मनुष्यक खप्पर हाथमे, गौर वर्ण, हाथमे सुन्दर शूल—एहि सभसँ युक्त महादेव स्वरूप, रागराज, सुन्दर उज्जर वस्त्रसँ सुशोभित, संसारमे सभ राग-रागिणीमे आदिराग रूपेँ लोकमे प्रसिद्ध, सभ समयमे गयवायोग्य, अति गुणशाली 'भैरवराग'केँ सुनि संसारकेँ सुख प्राप्त होइत छैक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च —

ललाटे शीतांशुः किल जटिलमूर्ध्नि त्रिपथगा
विभूषा भौजङ्गी वपुषि सितकान्तिर्विजयते ।
सदा यस्य श्वेतं वसनमशनीयञ्च विजया
जयत्येवंभूतः सततमतिपूतश्च भसितैः ॥१५॥

अपिच

त्रिनेत्रस्तच्चैकं वहति किल भाले तु दहनं
परे घूर्णत्तारे करतलकपाली च शिवदः ।
त्रिशूली दान्तेयाजिनमधिगतः सर्वजगतां
समाराध्यो रागो जगति कथितो भैरव इति ॥१६॥

[२] अथ द्वितीयः कौशिकः

पीत वसन, सित दसंन[1], हेम सम रूप मनोहर
वीर-सिरोमय माल गरे गहि होत भयंकर ।
करतल कलित कराल काल करवाल कृतादर,
वीर वीरकृतसेव, वीरसञो करत युद्धवर ।

संस्कृत पद्यहुमे —

कपार पर चन्द्रमा, जटायुक्त-माथ पर गङ्गा, सापक गहना, देहमे उत्कृष्ट गोर कान्ति, सतत उज्जर वस्त्र, भोजनमे भाङ, भस्मसँ अतिपवित्र एहि प्रकारक भैरव' राग सर्वोत्कृष्ट अछि ।१६।

आओरो —

तीन आँखि, जाहिमे कपार परक एक आँखिमे आगि, शेष दूनू आँखि तीक्ष्णरूपेँ घुमैत, तरहत्थी पर कपाल, त्रिशूल, हाथीक चाम—एहि सभसँ युक्त, कल्याणदायी सम्पूर्ण संसारक आराधनीय ई राग संसारमे 'भैरव' कहबैछ ।१६।

[२] कौशिक राग

पीयर वस्त्र, उज्जर दाँत, सोनसन वर्ण, वीरसभक माथक माला गरामे पहिरि भयाओन बनल, हाथमे कठोर कालस्वरूप तरुआरिकेँ आदरपूर्वक लेने, वीरस्वरूप, वीर सभसँ सेवित, वीरसभसँ युद्ध करैत, अत्यन्त सुन्दर गानसँ

१. दमन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतिललित गान विबुधाऽधिपति-सदसि बीनपरवीन जन,
गावत बजाए जेहि सकल सुर, 'कौसिक'नाम सो रागभन[१] ॥

[अपिच]

मानो सुवर्ण तनुवर्ण, वैरिखण्डनविधि पण्डित,
वीरपुरुष रनधीर, दन्त उज्जल करें मण्डित ।
बहुल वीर परिवार कलित, करवाल सङ्गचर,
वीरविषञ्ञो सञ्चरत, वीर सञ्ञो करत युद्धवर ।
वीरातिवीर बहुरसिक जन कण्ठमाल छवि नवि लहत[२],
संगीतसार सुविचारि उर एग्रासञ्ञो कवि 'कग्रोसिक' कहत ॥

पद्यञ्च

कृत्वा मुण्डालिमालामुरसि धवलिमोत्कृष्टदन्तः समन्ताद्
वीरः, संसेव्यमानः समरभुवि करन्यस्तशस्त्रैः प्रवीरैः ।

भूषित, इन्द्रक सभामे वीणावादनमे प्रवीण लोक सभ द्वारा सकल स्वरमे गीय-मान 'कौशिक' नामक उत्तम राग थिक ।

[दोसर तरहे —]

मानू सोन सनक देहक वर्ण छनि, शत्रुकें परास्त करबामे पटु, वीर, रणमे स्थिर रहनिहार छथि, हाथमे उज्जर दाँत रखने छथि, बहुतो । वीर-परिवारसँ युक्त छथि, तरुआरिकें सतत संगमे रखैत छथि, वीरक काजमे पहुँचनिहार, वीरसँ युद्ध कयनिहार, महान् वीर छथि, अनेक रसिक सभक कण्ठलहरीक माला बनल संगीतक नव छवि पबैत छथि, तत्त्वरूपें विख्यात छथि, एहन जे राग तकरा कवि-लोकनि कौशिक कहैत छथि ।१७।

संस्कृत पद्यहुमे :—

छाती पर मुण्डमाला छनि, सर्वतः उज्जर दाँत छनि, वीरस्वरूप छथि,

१. सो कौशिकनामा रागरमन । २. कविन बिलहत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शस्त्राऽस्त्रत्यागदक्षः प्रतिसुभटदलैयुद्ध्यमानः किलाऽयं
हेम्ना तुल्यांगकान्तिर्जगति कविवरैर्वर्णितः 'कौशिका'ख्यः॥१७॥

[३] अथ हिन्दोलः

रूपगर्वयुत, खर्वपर्व, हिमधामसमानन,
गन्धर्वाधिक सर्वकला विद्याकुलकानन।
नटवर, कलितसुवेश, विमल पारावत सुन्दर।
कुण्डल ललित कपोल लोल हिन्दोल पुरन्दर।
करें पकरि नारि, उर आनि, मुख निरखि निरखि मुसुकाय पुनि,
बहुरास करत लघु-लोलगति सो कह्यो वीर हनुमन्त मुनि।

[अपिच]

खर्वरूप गुनगर्व गहत, सर्वाधिक सुन्दर,
तन कपोतसम वरन, करन कुण्डल कामुक वर।

युद्धभूमिमे शस्त्रधारी महान् वीर सभसँ सेवित छथि, अस्त्र-शस्त्र चलयबामे पटु छथि. प्रतिद्वन्द्वी महायोद्धा सभसँ युद्ध करैत छथि, सोनासन कान्ति छनि एहन ध्यानबाला जे राग से संसारमे कवि द्वारा कौशिक कहि वर्णित छथि।७।

[३] हिन्दोल राग

रूपक गर्वसँ युक्त छथि भुट्ट छथि हिमालय-सन स्वच्छ मुँह छनि सकल कलामे गन्धर्वहुसँ श्रेष्ठ छथि विद्या सभसँ परिपूर्ण छथि, नर्तकमे श्रेष्ठ छथि, स्वच्छ परबा सन सुन्दर वर्ण छनि, गाल पर सुन्दर कुण्डल डोलैन छनि, इन्द्र-स्वरूप हिंडुला पर झलैत छथि से अपन नारी (रागिणी) केँ हाथसँ पकड़ि छाती लगाय मुँह देखि बिहुँसिक' मन्द-मन्द चञ्चल गतिए रास करैत छथि। एहन ध्यानबला रागकेँ हनुमान मुनि मन्तमुनि हिन्दोल राग कहने छथि।

आओर—

देखबामे भुट्ट छथि गुण-सँ गर्वित छथि सबसँ बेसी सुन्दर, लगैत छथि, देहक वर्ण परबा-सन छनि, कानमे कुण्डल छनि, अत्यन्त कामुक, छथि नव कामिनीकेँ छाती लगाय मुँह देखि मन्द-मन्द झुलैत केलि-सुख करैत छथि,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवल नितम्बिनि अङ्क-अङ्क भरि, निरखि-निरखि मुख,
थोर-थोर हिन्दोल चलत हाँ करत केलि सुख।
सब राग राग राजत रमन, गाबत जेहि गन्धर्वजन।
लघुलोलगमन बहुमोल मह, कह हिन्दोल जहि जतिअजन ॥

पद्यञ्च

खर्वंगन्धर्वगर्वः स्वगुण-गणजित-प्रायसर्वः, कपोतैः
तुल्यः सर्वाङ्गदीप्त्या दिवि च दिविषदां गीतिगोष्ठीगरिष्ठः ।
अङ्काऽऽनीतोत्तमाङ्गीं सुखमहह समुद्वीक्ष्य कुर्वन् स रासं
श्रीमान्हिन्दोलरागःस्मितकुसुमरुचिर्मन्दमन्दं प्रयाति ॥१८॥

[४] अथ दीपकः

कुन्द धवल अभिराम धाम परजङ्क सुशोभन,
सुती तामें, नकताए दिआ, गहि मौन महाधन।
रमनिहुती जेहि ठओर तहा पलिकामे समागम,
रतिपति आतुर, चतुर चारुगति गीति महातम।

सभ रागमे विराजमान छथि, जनिका गन्धर्व सभसँ गबैत छनि किछु चञ्चल गतिए चलैत छथि, एहन ध्यानवाला बहुमूल्य रागकेँ विद्वान् लोकनि 'हिन्डोल' कहैत छथि।

संस्कृत पद्यहुमे—

भृङ्ग, गानक गर्वसँ युक्त, उत्तम गुणसँ युक्त, गुणासँ सभकेँ जितने जकाँ, परवाक समान सम्पूर्ण अङ्गक कान्तिबाला, स्वर्गमे देवतालोकनिक संगीतगोष्ठी श्रेष्ठ, हृदयमे परम सुन्दरीकेँ सटओने, अहा ! सुखसँ ओकरा देखि रास करैत, श्रीमान् हिन्दोलराग अर्धविकसित फूल-सन सुन्दर नहूँ नहूँ चलैत अछि।१८।

[४] दीपक राग

कुन्दक फूल-सन उज्जर मनोरम भवनमे सुन्दर पलंग अछि ताहि पर रमणी दीप मिझाय चुप्पी लधने पड़लि छथि। ताही पलंग पर कामातुर चतुर, सुन्दर चालिमे चलैत, गीतिविद्यामे श्रेष्ठ नायकक (दीपक रागक) समागम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीप रुचिर जसु मुकुटमनि, अन्धकार परिहार तह ।
लाजमन्ति तिअ ताहिसञो, कवि दीपक हनुमन्त कह ।।
धवल धाम अभिराम वाम जामिनि जहँ जागति,
पओढ़ि परम परजङ्क निन्द नओनन्न नहि लागति ।
दिआ दए नकताए पिआ किछु बोलत नाहिन,
रति[1] आतुर अतिचतुर नाह आयो तेही छन ।
पिअ मौलि रतनरुचि दीपदुति, अन्धकार[2] परिहार किअ,
तब लाजमन्ति रागिनि रहिअ एआसञो कवि दीपक कहिअ ।।

पद्यञ्च

क्षिप्रं निर्वाप्य दीपान् वचनमपि चिरं सन्नियम्योपविष्टा
सौधे पर्यङ्कसुप्त-प्रणयवरवशप्रेयसी तामसीषु ।
तत्रोपेतस्य यस्याऽस्मरविशिखशर[3]स्वान्तवेधात् कुतश्चि-
च्चूड़ारत्नप्रदीपात् सपदि समभवद् व्रीड़ितो दीपकः सः ।।१९।।

होइत अछि। हिनक मुकुटक मणि दीप जकाँ चकचकाइत ओतयक अन्हारकेँ हरि लैछ एहन लजाइलि नायिकाक संग जे नायक रूपी राग छथि, ताहि रागकेँ हनुमन्त कवि 'दीपक' कहैत छथि ।

(दोसर प्रकारेँ)

उज्जर सुन्दर भवनमे सुन्दरी रातिभरि जगैत उत्तम पलंग पर पड़ि रहै छथि, मुदा आँखिमे निन्द कहाँ ? दीपकेँ मिझा दैत छथि । प्रिया किछु बजितहुँ नहि छथि कामातुर चतुर प्रियतम ताही छन आबि जाइत छथि । प्रियतम माथ परक रत्नक दीपक प्रकाशसँ अन्हारकेँ हटा दैत छथि ताहिसँ ओ ललना रागिणी लजाय जाइत छथि एहन ध्यानवला राग 'दीपक' कहबैत अछि ।

संस्कृत पद्यहुमे :—

झटसँ दीपकेँ मिझाय, वचनकेँ बड़ीकालधरि रोकने चुप भेलि, कोठामे बैसलि, प्रेम-भरल प्रेयसी अन्हारमे पलङ्गपर पड़ि रहलि । ओतँ कामदेवक शरसँ विद्ध नायक कतहुसँ अयलाह जनिक मुकुटक रत्नक प्रकाश प्रेयसीसँ तत्क्षण लजा गेलि । एहन ध्यानवाला राग दीपक थिक ।१९।

१. 'वति' । २. 'अन्धकार' नहि अछि । ३. 'विशिषसर' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[५] अथ श्रीराग:

तुरए कन्ध पर हत्थ, सत्थ वृषभादिक सुरगन,
रुहिर[1] अरुण-तन तेज रङ्गमूरति, रिङ्गत रन।
दर्प्पमन्त, रिपुदर्पदमन, कन्दर्प-दमन-दुति,
वसन सोँन धर, धीर वीर, पल्लव सोहत स्रुति।
सिरिराग रागभूपतिरमन, नृपतिरूप जग विदित अति,
सँगीतसार सुविचारि उर जेहि भनन्त हनुमन्त जति॥

अपिच

रुधिर रंग सब अंग, जंग रिंगत जिमि पारथ,
वसन सोँन जगमगत, सतत संगी सुरसारथ।
तुरए कन्ध कर बाम, कामकमनीय कलेवर,
पल्लव कलित वतंस, हंसगामी गुनसागर।
नाद-नागर वर[2] वीनधन, मगन होत जेहि जगत जत,
रागरमन सिरिराग जग, नृपतिरूप हनुमन्त मत॥

[५] श्रीराग'

घोड़ाक कान्ह पर हाथ रखने छथि, संगमे बसहा आदि सेवक देवगण अथिन्ह, रक्त सन लाल देहक रंग छनि, युद्धमे साकार रंग-सन कुदैत छथि, अहंकारी, शत्रुक दर्पकेँ दमन कयनिहार, ओ कान्तिसँ कामदेवहुकेँ हरओनिहार छथि, स्वर्ण-जटित (जरीदार) वस्त्र पहिरने, गम्भीर ओ वीर छथि, कानमे पल्लव शोभायमान छनि, एहन सुन्दर राजाक रूपमे संसार भरि ख्यात जे रागराजतनिक संगीतक तत्त्वज्ञाता हनुमन्त यति(संन्यासी) श्रीराग कहनेछथि।

(दोसर प्रकारेँ—)

सर्वांग रक्त-सन लाल, युद्धभूमिमे पार्थ (अर्जुन) जकाँ घुमैत, सोनसँ युक्त (जरीदार) वस्त्र चकमक करैत, संगमे हरदम देवता लोकनि, घोड़ाक कान्ह पर वामा हाथ, कामदेव सन सुन्दर देह, पल्लवसँ शोभित कान, हँस-सन गमन, गुणक सागर नादमे प्रवीण (नागर) उत्तम वीणा सँ र धन छनि, जाहिमे सम्पूर्ण संसार मग्न भऽ जाइत अछि,—एहन रागवर श्रीराग हनुमानक मतेँ एहि संसारमे राजाक रूपेँ प्रसिद्ध अछि।

---

१. एहि। २. नगर हर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च

रक्ताऽरक्ताऽनुरक्तः सदलनदलनः सङ्गरे रङ्गमूर्त्तिः
कामी कामोपमेयः कनकमयपरिस्फीतवासाः सुवेशः।
वाजिस्कन्धैकहस्तः प्रमथपतिपतिप्रीतदेवैः परीतः
श्रीमान् श्रीरागराजोजयति किसलयैर्भूषिताऽभूष्यकर्णः॥२०॥

[६] अथ मेघरागः[1]

नील विमल दल कमल देह दीपति अति सुन्दर,
वसन पीत जगमीत सीतकर शुभ्र हृदञ्ने धर।
चातकचय करि विनय प्यासत्रासित जेहि आरत,[2]
मन्द हास मधुमधुर वाम वनमध्य विराजत।
वरवीर तरुन रनविषय महँ, लहत चहत जेहि सकल जन,
सबरागरमन तिहुभुवन जन मोहत सुनि धुनि मेघरव॥

संस्कृत पद्यहुमे :—

रक्त सदृश लाल वर्णवाला शरीर, युद्धमे शत्रुकें खेहाड़िकं मारनिहार लाल वर्णक मूर्तिवला, कामदेव-सन सुन्दर, सोनासँ जटित वस्त्र पहिरने सुन्दर वेश बनओने घोड़ाक कान्ह पर एक हाथ देने, महादेवक प्रियपात्र देवता लोकनिसँ परिवेष्टित, नवपल्लवसँ कानकें विभूषित कयने एहन ध्यानवाला रागराज श्रीर म म० कहवैत छथि।

[६] मेघराग

विमल नीलकमल-सन श्याम रंगक अति सुन्दर देह छनि, पीयर वस्त्र पहिरने छथि संसारक मित्र स्वच्छ चन्द्रमाकें हृदयमे रखने छथि पियासें विकल चातक सभ जकर विनय करैछ, मन्द-मन्द मधुर मुस्कान छनि वनमे रहैत, वीरमे श्रेष्ठ, युद्ध करबामे युवक, सबलोकक प्रिय, सभरागमे सुन्दर जे मेघराग तकर ध्वनिकें सुनि तीनू लोक मोहित होइछ।

---

१. मेघरागक नामनिर्देश एक पद्य बादमे छल। २. आरत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[अपिच]

नीलकमलदल विमलनील, नोलिम गुनसागर,
हास कुसुमरुचि रुचिर चारु नारीवरनागर।
पीत वसन रन मगन जोवि जीवन धन दानी,
नारि नगर चहुओर कबहु कामिनि वनमानी।
चातक चाहत चोंचभरि नीर जासों करि काकु कत।
नाद नगर मनमाद घन, चन्द हृदए हनुमन्त मत॥

पद्यञ्च

असितकमलकान्तिः पीतवासाः स्मितास्यः
समदयुवतियूथान्तर्गतश्चन्द्रहृत्कः।
विरति किल लोके जीवनं यः स्वभावात्
स जयति समुपास्यश्चातकैर्मेघरागः॥२१॥

इतिश्रीरागतरङ्गिण्यां पुंरागरूपवर्णनं नाम प्रथमस्तरङ्गः।

(दोसर शब्दमे)

विमल नीलकमलक पात सन सुन्दर नीलवर्ण देह छनि, गुणक सागर छथि, फूलसन सुन्दरि मुस्कान छनि, सुन्दरि नारी सभ प्रेम करैत छनि, पीयर वस्त्र पहिरने छथि, युद्धमे मग्न रहैत छथि, —जीव धारी सभके जीवन धनक दान करैत छथि, नारीक नगरक चारू भर रहैत, कहुखन कामिनीसँ मान कय वनमे रहैत छथि? जकरासँ अनेक व्यंग्य करैत चातक चोंच भरि जल मङैत रहैछ से नादक नगरमे उन्मत्त रहैत, हृदयमे चन्द्रमाकें रखने मेघराग कहबैछ—ई हनुमानक मत थिक।

संस्कृत पद्यहुमे :—

नीलकमल-सन कान्ति, पीयर वस्त्र पहिरने, मुसुकाइत, मदसँ भरलि युवतिगणक वीचमे विराजमान, हृयमे चन्द्रमाकें रखने, अपन जीवनकें स्वभावतः लोकमे वितरण करैत, चातक सभसँ पूजित ई मेघराग थिकाह।२१।

एहि प्रकारें रागतरंगिणीमे पुरुपरागक स्वरूप वर्णन नामक पहिल तरङ्ग समाप्त भेल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीयस्तरंग:

[१] अथ भैरवरागिण्य:

दोहा

बंगाली मधुमाधवी अग्रोर बराड़ भानि।
सुघर भैरवी सेन्धवी भैरम्रो की तिम्र जानि॥

[पद्यञ्च]

बंङ्गाली मधुमाधवी बराड़ी भैरवी तथा।
सिन्धुरेतास्तु पञ्च स्युर्भैरवस्य वरस्त्रियः ॥१॥

(१.१) तत्र प्रथमा बंङ्गाली[1] यथा

कवित्त

तरुन तरनि अएसो तनके वरन जाके
तापर विभूति अति उज्जल विराजई।
सघर अधारी वाम्रे बगल मे धरै वीर
तैसो वाम्रे करमे त्रिशूल वर छाजई।

[१] भैरवक रागिणी

(१) बंगाली, (२) मधुमाधवी, (३) बराड़ी, (४) भैरवी आओर (५) सैन्धवी ई पाँचो भैरवरागक पत्नी (रागिणी) थिक ?

(१.१) बंगाली

मध्याह्नकालक सूर्य-सन देहक वर्ण छनि आ ताहि पर स' अत्यन्त उज्जर विभूति शोभित, छनि-शस्त्रक आधार (तसकर) के' जेना वीर-गण वामा भाग मे रखैत छथि तहिना ई वामा हाथमे त्रिशूल रखने छथि, जटाकें दृढ़कय (कसिकें) वन्हने, रेशमी वस्त्र पहिरने, जनिक तप ओ तेजस' दैविक, दैहिक

१. एकर नामनिर्देश एक पद्यक वादमे छल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिढ़ करि बाँध जटाजूट, पट पाटहीके,
जाके तप-तेजतें त्रिविध ताप भाजई।
जगमे प्रमोद होत सीचत सुधाके स्रोत;
भैरव की भारजा बंगाली जब बाजई।

[अपिच]

कुण्डल करन, रविमण्डल वरन तन,
तामे नित लेपित विभूति सित छार हए।
वामे कर कलित[1] त्रिशूल करमूल तल,
लम्बित अधारी वरनारि शिव-दार हए।
जटाजूट राजए कुच कुट से विराजय, एहि
बीच बाजा बाजए तब आनन्द अपार हए।
सोहत सुघाट पटपाटके, विराग रति,
रागिनि बंगाली भाम भैरओ भरतार हए।

पद्यञ्च

मार्त्तण्डद्युति-दीप्ति-पुतभसिताऽऽलेपालि-पट्टाम्बरैः
पातिव्रत्य-विराग-पिङ्गलजटाजूटैः स्फुरन्तीराम्।

ओ भौतिक तीनू ताप (दुःख) शांत होइछ – एहन जे भैरव रागक पत्नी बंगाली रागिणी जखन बजैत अछि तँ संसार आनन्दित भय जाइछ ओ अमृतक स्रोत प्रवाहित भय जाइछ।

कानमे कुण्डल छनि, सूर्यमण्डल-सन देहक कान्ति छनि, ताहिमे प्रतिदिन उज्जर विभूति लेपै छथि, वामा हाथमे त्रिशूल शोभै छनि हाथतक तरकस लटकल, दिव्यस्त्री शिवक पत्नीस्वरूपा जटाक श्रेणी स्तनक बीच होइत लटकल शोभै छनि, बाजा बजबैत आनन्दविभोर (लोकके) करैत, सुन्दर पाढिबला पाठक साड़ी पहिरने, रतिसँ रखैत बंगाली रागिनी भैरवीक पत्नी कहबैत अछि।

संस्कृत पद्यहुमे—

सूर्यक कान्ति सन वर्ण छनि, पवित्र भस्म लेपने छथि, पाटक वस्त्र पहिरने छथि, पातिव्रत्य ओ वैराग्यक कारण पिरोंछ जटासँ भूषिता छथि, प्राप्त शत्रुकेँ कठोरतापूर्वक कटबामे पटु तीक्ष्ण त्रिशूल धारण कयने छथि, एहन ध्यानबाली शिवक पत्नी बंगाली रागिणी थिकीह।

---

१. कीलित। २. शिर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्फूर्जद्धूर्जटिवल्लभा वरतनुः सेयं बंगाली मिलद्
द्वेष्टुर्निष्ठुरखण्डने पटुतरं यस्यास्त्रिशूलं करे ॥२॥

(१-२) द्वितीया मधुमाधवी यथा

सवैआ

कञ्चन-सी तन की छवि छाजति
तापर कुंकुम खओरि करी हए।
लोचन-कञ्ज विशाल बनें,
लखि लालन की सुधरी उघरी हए॥
काम-कलोल ते लोल भए,
हँसिकए करि चुम्बन अङ्क भरी हए।
एआसञो कहए मधुमाधओ सवए,
जग भैरव में तन आध धरी हए।

कवित्त

कुन्दन कनक रस रूप तन, तामें घन-
केसरि रगरि भरि किओ अङ्गराग हए।
नीरज-रुचिर दृग देखि रस बस होए,
चँवी[1], भरि अंक एतओ भैरओ के भाग हए।

(१-२) मधुमाधवी

सोन-सन देहक कान्ति छनि, ताहि पर कुंकुमलेप लगओने छथि, कमल सन पैघ-पैघ आँखिकें देखि पति विह्वल भ' जाइत छथि तथा कामक वेगसँ चंचल भ' हँसिक' चुम्बन करैत छाती लगा लैत छथिन, एहन ध्यानबाली रागिनीकें मधुमाधवी कहैत छैक, जे भैरवरागक अर्धांगिनी थिकीह।

दोसर प्रकारें —

शुद्ध कयल सोन-सन देह छनि, ताहि पर सघनरूपें केसरि घसिक' अङ्गराग लगाओल छनि, कमलसन सुन्दर आँखिकें देखि रसमे डूबि हुनकर पति चुम्बन क' भरि पाँज क' पकड़ि लेने छथिन। ई तँ भैरव रागक भाग्य थिकनि। जे आजन्म-योगी चित्रहुमे नारीक मुह नहि देखने छथि तनिका मनमे राग उत्पन्न भेल। एहन रसवाली मधुमाधवो रागिनी अछि जकरा नहि सुनने लोकक जीवन व्यर्थ (जन्म लेब कलंक थिक)।

---

१. 'चूँवी' सँ पूर्व 'कय' अधिक पाठ अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चित्रहूं में मूरति विलोकि जिन कबहूं नाहि,
जनमु के जोगी तिनहूं को अंगराग हुए।
अएसी मधुमाधवी रसीली जिन सुनी नाहि,
अएसे जन जवीन जनम ही कों घाग हुए।

पद्यञ्च

संदीप्त-स्वर्णवर्णे वपुषि परितरद्घृष्ट काश्मीररागा-
मालोक्याऽऽपन्नकामस्सपदि निजपुमान् भैरवो यां चुचुम्ब।
आदाय क्रोड़मध्ये रुचिरतररवा मोदमासादयन्ती
मध्वादिर्माधवीयं समद-गजगतिर्गीयते गीतमुख्यैः ॥३॥

(१.३) तृतीया वराड़ी यथा

सुख देति सुखासन मों पति को
वर चअोर डोलाए डोलाए सुकेसी।
कर-पंकज में वर कंकन राजत
रूप तिअा की दिअादुति जएसी।
स्रओननि में कलपद्रुम के दल
फूल धरै तन दामिनि तअएसी।

संस्कृत पद्यहुमे--

चमकैत सोन सनक देहमे घसल केसरि लगऔने छथि, से देखि काममोहित भ' अपन पति भैरवराग हुनक चुम्बन क' कोरमे ल' लेने छथिन, एहन सुन्दर स्वर वाली आनन्ददायिनी मत्तहाथीक तुल्य गतिवाली रागिनीकें गीतविशारद लोकनि मधुमाधवी कहैत छथि।३।

(१.३) वराड़ी

सुखासन पर पति (भैरवराग) कें बैसाय चामर डोलबैत सुख दैत छथि, कमल रूप हाथमे नीक कगना पहिरने छथि, हुनक वर्ण दीप-सन छनि, कानमे कल्पवृक्षक टुस्सा ओ देहमे फूल लगैछ जेना बिजलोका चमकय। एहन

१. कए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भएरव की घरनी बर नारि
वरारि विचारि बखानिग्र[1] श्रएसी ।

[अपिच]

कलधौत कंकन कलितकर तामरस
चामर करति पतिराग सिरदार सञो,
लतिका-सी कासीपति पतिका सहासी गीत (?)
गतिका विराजए बरनारी उरहार सञो ।
रागिनि बराड़ी सुरपादप-सुमन स्रञोन
भूषन बनाए बनी सोरह सिंगार सञो,
दामिनी सी कामिनी कला में काम-भामिनी सी
जामिनी में देति सुख भैरश्रो भरतार सञो ।।

पद्यञ्च

सुरतरुसुमनोभिः पल्लवैरेतदीयैः
श्रवणकृतविभूषा भैरवं[2] स्वासनस्थम् ।
स्वपतिमनुनयन्ती चामराऽऽन्दोलनैर्या
तड़िदिव कथितेयं दीपदीप्तिर्बराड़ी ।।४।।

भैरव रागक स्त्री सुन्दरि नारी बराड़ी रागिनीक एहन ध्यान कहल गेल अछि ।

दोसर शब्दें —

सोनक कगना करकमलमे छनि, ताहिसँ श्रेष्ठ रागस्वरूप पति भैरवकें चामर डोलबैत छथि, लत्तीसन पातरि-छीतरि श्रो श्रेष्ठा नारी काशीपति शिवक""हृदयक हार सन लगैत छथि। एहन बराड़ी रागिनी कल्पवृक्षक फूलकें कानमे गहना जकाँ लगाय सोलहो सिङ्गार कयने, बिजलोका सन चमकैत, कामदेवक पत्नी सन कलावती, रातिकें अपन पति भैरवरागक संग सुख दैत अछि ।

संस्कृत पद्यहुमे —

कल्पवृक्षक फूल ओ तकर पल्लवसँ कानकें सजओने छथि, अपन आसन पर विराजमान अपन पति भैरवकें चामर डोलाय मनबैत छथि, बिजलोका ओ दीप जकाँ चमकैत छथि, एहन ध्यानबाली रागिनी बराड़ी कहबैत अछि ।४।

१. विचारि क । २. भैर-स्वासनस्थम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१-४) चतुर्थी सिन्धुर्यथा

करपंकज सों धरे तीष त्रिशूल
सदाशिव के पगु पाग पगी हए,
अम्बर लाल विराजत लालहिं
माल बन्धूकमयी हि लगी हए।
कोप प्रचण्ड उदण्ड भुजा
रविमण्डल सी जाकि जोति जगी हए,
सिन्धु सबए गुनसिन्धु कही
कवि वीररसा सबरंग रंगी हए।।

अपिच

कोप परचण्ड, रविमण्डल विजित जोति
जामें भुजभीषन, सुमेरु सम छाती हए,
तीषन त्रिशूल कर-वारिज विराजए जेहि
शम्भुपग पागी जगजागी तिरजाति हए।
लोहिंत[१] वसन, लाल माल मधुरी की उर
वीर रसमाती नित रंगरति राती हए,
सिन्धु गुनसिन्धुबन्धु बन्धुर बजाय जब
गाबत प्रवीन तब किन्नर सँघाती हए।।

(१-४) सिन्धु

करकमलमे तेज त्रिशूल रखने छथि, भगवान सदाशिवक चरणमे अत्यन्त भक्ति रखैत छथि, लाल वस्त्र पहिरने छथि, मधुरी फूलक माला धारण कयने छथि, प्रचण्ड क्रोधसँ बाँहिकें उत्तेजित करैत छथि, देहसँ सूर्यमण्डल-सन ज्योति जगमगा रहल छनि, एहन ध्यानवाली रागिनीकें गुणवान् कविलोकनि सिन्धु रागिनी कहैत छथि, जे वीररसमयी होइतो सब रङमे रङलि छथि।

प्रचण्ड क्रोधसँ पूर्ण छथि, अपन ज्योतिसँ सूर्यमण्डलक ज्योतिकें जितने छथि, भुजा भयानक छनि, छाती सुमेरु पर्वत सन छनि, करकमलमे तीक्ष्ण त्रिशूल छनि, महादेवक चरणमे लागलि जगत-विदित ललना छथि, लाल वस्त्र छनि, मधुरीक लाल माला छाती पर छनि, वीररसमे मातलि सदा रंग-रतिमे

१. 'लोहित' क बाद 'र' अधिक अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च

कोपाऽऽबद्धोग्रवेश-भ्रुकुटिसहचरा रक्तनेत्राम्बुजा तत्-
प्राप्तश्रीमत्प्रकाश-प्रखरदिनकरप्राय-कायप्रदीप्तिः ।
हस्ते यस्यास्त्रिशूलं भुजग-भुजयुगाऽऽसक्त-रक्ताऽम्बरश्रीः
सिन्धुर्बन्धूकमाला-कलित-कुचरुचिर्भैरवस्यैव सेयम् ॥५॥

(१-५) पञ्चमी भैरवी यथा

रमनीय राजत अचल के शिखर पर
पीठवर फटिक रचित रुचि भाओ सओ,
विकच कमल-दल लए-लए कर-अम्बुज में
पूजए पारवतीपति जूकों चितचाओ सओ।
मंजुल मजीरा कर लओ पीतवरन हुए
कवनलओ[1] नओ न वरनिन जाति हाओ सओ[2]।
इहए भाग भएरवी रसीली जगसुखदाई
भएरव की भारजा सुनी हुए कविराओ सओ।

रतलि रहैत छथि, एहन सिन्धुरागिनी जखन गुणी लोकनि सुन्दर वाद्य बजाय गबैत छथि, तखन किन्नरो सभ छकि जाइत अछि ।

संस्कृत पद्यहुमे —

क्रोधसँ प्रचण्ड वेश धारण कयने छथि, भौंहक संग आँखि लाल कयने छथि, अपन ज्योतिसँ सूर्यक प्रकाशसदृश लगैत छथि, हाथमे त्रिशूल रखने, दूनू बाँहिमे साप लपेटने ओ लाल वस्त्र पहिरने छथि, मधुरीक माला स्तनक शोभा बढ़बैत छनि, एहन ध्यानवाली भैरवक पत्नी सिन्धु नामक रागिनी कहबैत छथि ।५१।

(१-५) भैरवी

पहाड़क सुन्दर शिखर पर स्फटिकक चबुतरा पर भावमय बैसलि, फुलायल कमल पत्ती हाथमे लय प्रसन्न मनसँ शिवक पूजा करैत, पीयर स्वरूप धारण करैत सुन्दर मजीरा हाथमे लय बजबैत, आँखिक हाव-भाव अद्भुत रखैत ई

१. करन लओ । २. हार सओ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपिच)

पीरी करजोरि, भरि नीरज, रुचिरपात
लए-लए मनभाओन मनाइवे को भाओ सञो।
रजताचल माथी मनि-मन्दिर फटिक-पीठ
तामे त्रिपुरारि पद पूजए चितचाओ सञो।
भैरव से भरतार जासञो बस अएसी वाम
भैरवी की कीरति सुनी हए कविराओ सञो।

पद्यञ्च—

रम्ये राजत-मेदिनीधरवरे श्रृङ्गे मणेर्मन्दिरे
स्फीतस्फाटिक-वेदिकोपरि कराम्भोजे निधायाम्बुजे।
श्रीकण्ठस्य पदद्वयं वरतनुस्सम्पूज्य मञ्जीरक-
द्वन्द्वं पाणिसरोजयोः कृतवती तन्नादमातन्वती ॥६॥

इति भैरवरागिणी कथिता

ककरासँ वर्णित भय सकैछ ? एहन भागमन्त रसवाली भैरवी थिक जे संसार मे सुखदायी भैरवक पत्नी थिक, जकर वर्णन कविराज सभसँ सुनल जाइछ।

(आभोर)

पीयर वर्णक भैरवी आँजुर भरि कमलक पात ल' क' अपन प्रियतमकेँ भावसँ मनयबाक हेतु चानीक पहाड़क चोटी पर मणिक मन्दिरक स्फटिकक चबुतरा पर महादेवक चरणकेँ प्रसन्नतापूर्वक पूजैत अछि। जकरा भैरव-सन पति वशमे छथिन एहन सुन्दरी भैरवी रागिनीक कीर्त्ति कविराजसँ सुनल अछि।

संस्कृत पद्यहुमे—

रमणीय चानीक पहाड़क चोटी परक मणिक मन्दिरमे फैल स्फटिकक चबुतरा पर कर-कमलमे कमल ल' क' महादेवक चरणकेँ पूजि कोमलाङ्गी एक जोड़ मजीरा ल' आकरा बजाय रहलि छथि।६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[२] अथ कौशिकरागिण्यः

टोड़ो ओ खम्भावती गओरी गुन की थारि।
ककुभ गुनकरो कवि कही कओोसिक तीअ्र बिचारि।

पद्यञ्च—

टोड़ी खम्भावती गौरी ककुभा गुणकर्यपि।
एतास्तु पञ्च रागिण्यः कौशिकस्य वरस्त्रियः ॥७॥

(२-१) तत्र प्रथमा टोड़ी यथा

चन्द की मन्दकरी तनकी छवि, तासें पुरेनिअ ओलिअ ओड़ी
केसरि के घनसार मिलाए मिलाए विलेपन कए तन थोड़ो।
कानन में करि तान घनो सुख देति कुरंगन कों करि कोड़ी
रागिनि वीन धरै विलसय, सबतें सरसए, सो कहै कवि टोड़ी।

(अपिच—)

विपिन-समीप करि[1] तान परिवादिनी सञो
छक्यो वनचर वन-वन तें कढ़ाओो हए,
अंकुर देखाए कर कोमल कञोल ही के
तातें मृग-छञोना ञानि अंक में बढ़ाओो हए।

(ग) कौशिक रागक रागिणी

टोड़ी, खम्भावती, गुणक आश्रय गौरी, ककुमा तथा गुणकरी एहि पाँचो के कविलोकनि बिचारि क' कौशिकक स्त्री कहने छथि।७।

(२-१) टोड़ी

चन्द्रमाकें मन्द करयबाला देहक कान्ति, ताहि पर कमलक फूल लगओने, केसरिमे कपूर मिला क' देहमे लगओने, वनमे स्वरकें तनैत, हरिण सभकें सुख दैत, वीणा लय सभसँ विलास करैत एहि रागिणीकें कवि टोड़ी कहै छथि।

दोसर शब्दमे—

वनक लग वीणा लय तान भरैत (स्वर लहरबैत) वन-वनसँ वनचर (मृग आदि) कें आकृष्ट करैत, अपना हाथें कोमल कमलक अंकुर देखाक' हरिणक बच्चाकें आनि कोरामे रखैत, नील कमलक माला सन सुन्दर श्यामल अपन

---

१. कवि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन्दीवर श्याम राम साम से सरीर तामें
कुंकुम मिलाए चारु चन्दन चढ़ाम्रो हए,
चौसठि कला लए कामी कौशिक मनाइवेको
मानो मृग[1]नञ्जिनी मनमथे पढ़ाम्रो हए ॥

पद्यञ्च—

मलयज-परिमृष्टोत्कृष्ट-काश्मीररागात्
पिहित-सित-तनुश्रीः कानने कञ्जदामा ।
करकमल-विलुब्ध-क्रोड़-सम्बद्धवीणा-
रणित-हृत[2]-कुरङ्गी-शावका काऽपि टोड़ी ॥८॥

(२-२) द्वितीया खम्भावती यथा

कुन्द-द्युति सुन्दर शरीर सित वास, मुख-
हास, कल कोकिल कलाप तुल नाद हए,
चोंप चित किन्नर समान करि तान जेहि
गावत बजाए नट-नाही अवसाद हए ।

शरीरमे कुंकुम मिलाओल चानन कयने, चौंसठि कला ल' क' अपन प्रियतम कौशिकके मनबैक हेतु ओ मृगनयनी (टोड़ी रागिनी) कामदेवक पाठ पढ़ि रहलि छथि ।

संस्कृत पद्यहुमें—

श्रीखण्ड चाननक सङ्ग कुंकुमक घँसल लाल लेपसँ देहक उज्जर कान्तिके झँपने, कमल सन शोभावाली, वनमे हाथरूपी कमलसँ लोभा क' कोरामे आयल तथा वीणाक झङ्कारसँ हरण कयल हरिणक बच्चाके रखने ई रागिनी 'टोड़ी' कहबैत अछि ।८।

(२-२) खम्भावती

कुन्दक फूल सन चमकैत देह, उज्जर वस्त्र, हँसैत मुँह, सुन्दर कोइलीक सन बोल, शान्त चित्तसँ किन्नरक सदृश तान कय नट जकाँ बाजा बजाय भावपूर्ण गबैत इएह खम्भावती थिकीह। हिनका भरत मुनि नटनारायण कृष्णक

१. दृग । २. हृत्कुरङ्गी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भरत कहत नटनारायण-नारी जेहि
नाहीं हनुमन्त एम्राते जामे नित वाद हए,
सेवित विरञ्चि कत गीत में विराजए नित
लोचन रसीली-पति होना परमाद हए ॥

(अपिच—)

कोकिल के तुल नाद प्रियंवद
सुन्दरता हद हए सुखदाई।
जान प्रवीन रसीलि हँसए
बस होत सबए लखि जाकि लोनाई।
जाहि कहए कवि जं हथभारति
भावति हए नटको सुठिभाई।
कौशिक की कुल बालिक ही इह
जानहु जान सुजान जनाई ॥

नारी कहैत छथि। मुदा हनुमन्त से नहि स्वीकार करैत छथि। एहिमे नित्य वाद-(विवाद) अछि। ई विरंचि (ब्रह्मा) सँ सेवित भ' कतोक गीतमे नित्य विराजमान रहैत छथि अर्थात् एकर थाह पओनाइ कठिन। अतः लोचन कहैत छथि जे अत्यन्त रसभरलि नारीक पति अपनाकेँ माननाइ एक प्रकारक भ्रम थिक।

दोसरा शब्दमे—

कोइलीक समान सुन्दर (मधुर) स्वर तथा सुन्दरता अत्यन्त सुखदायक छैक। ज्ञानसँ युक्त, पटु रसवाली जखन हँसैत अछि तखन एकर लावण्य देखि सभ केओ वशीभूत भ' जाइत छथि। एकरा कविलोकनि सरस्वतीक हाथ (?) कहैत छथि। ई नटकेँ अत्यन्त प्रिय लगैत अछि। ई खम्भावती रागिनी कौशिकक बुझू बालिके (कुलदीपक) थिक। ई विद्वान लोकनि जना गेल छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च—

सुसित-वसन-हासोत्कृष्ट-देहादिदीप्तिः
कलकलित-निनादैः कोकिला बालतुल्या ।
नटनटन-मनोज्ञा कौशिकस्यैव वामा
समुदित-गुणयोगा काऽपि खम्भावतीयम् ॥६॥

(२-३) तृतीया गौरी यथा

दूषन-विहीन नव पल्लव रसाल ही के
कान में कमलनञ्चिनी कियो हुए बनाए कए,
सजल जलद श्याम सोहत शरीर धीर
बोलति बचन पिक-कूजित जनाए कए।
रागिनो लिखी हुए मत मत्त के विवेक कवि
कोहले पुरातन के संगीत गनाए कए।
गौरीवर वाम किल कौशिक किओ हुए वश
लोचन सुमति मानो मन्मथ मनाए कए ॥

[संस्कृत] पद्यहुमे—

खूब उज्जर वस्त्र पहिरने, हँसैत देहक कान्ति चमकैत, कलकल शब्दसँ बच्ची जकाँ वा कोइली जकाँ लगैत, नाट्यवेत्तालोकनिकेँ प्रिय लगैत कौशिक रागक सुन्दरी (पत्नी. सभ गुणसँ युक्त ई खम्भावती नामक रागिनी थिक ।९।

(२-३) गौरी

दोषसँ रहित नवीन आमक पल्लवकेँ ई कमलनयनी कानमे गहनाक रूपमे पहिरने अछि। जल भरल नील मेघ सन स्थिर पुष्ट शरीरवाली ई कोइलीक कू-कू सन वचन बजैत अछि। कवि कोहल विचारि-बिचारि क' प्राचीन संगीतक गणनाक्रममे एहि उन्मत्ता एवं विवेकशालिनी रागिनीक उल्लेख कयने छथि। गौरीपति (महादेव) क स्त्री एहि गौरी रागिनीकेँ कौशिक राग वशमे कयने अछि। लोचन कहैत छथि जे निश्चय ई कामदेवकेँ मना लेने अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपिच—)

सुन्दर स्रब्नोन में रम्य रसाल के पल्लव लाल भए पिकवानी
श्याम शरीर सुधानिधि से मुख बारि कए बात कहै मधुसानी।
जानि पुरातन के सत मीत संगीतन में कवि कोहलें भानी
होत सुनें जन चञ्चोन घने मन गोरिए कओशिकके पटरानी।

पद्यञ्च—

सङ्गीते कवि-कोहलेन कथिता कर्णाऽवतंसीकृत-
श्रीमत्सत्सहकार-पल्लवदला लावण्य-कल्लोलिनी।
गौरी कौशिककामिनी कलरवैः केकेव कादम्बिनी-
कान्तिः काऽपि मनोरमा मृगदृशामेषैव लेख्या पुरः ॥१०॥

(२-४) चतुर्थी ककुभा यथा

अंगन अंग रचञो विधिसञो रति
मण्डन-मण्डित वाम विराजति।
सोम सुभाल[1] सुशोभित आनन
चम्पक-दामन की छवि छाजति।

दोसरा प्रकारें—

सुन्दर कानमे सुन्दर आमक लाल पल्लव खोंसने, कोइली सन बजैत, श्यामल शरीरबाली, चन्द्रमासँ मुँह फेरि क' मधुभरल बात कहैत अछि। एकरा पुरातन संगीतमे कवि कोहल कहने छथि आ लोक सुनैत देरी अत्यन्त आनन्दित भय जाइछ। से ई गौरी नामक रागिनी कौशिकक पटरानी थिक।

संस्कृत पद्यहुमे—

संगीतमे कवि कोहल द्वारा वर्णित, कानक गहनामे सुन्दर आमक पल्लव खोंसने, सुन्दरतासँ भरलि गौरी रागिनी कौशिकक प्रिया, मयूरक वाणीसन बोल बजैत मेघसन कान्ति धारण कयने, सुन्दरी तथा हरिणनयनी सभमे अग्रगण्या अछि।१०।

(२-४) ककुभा

विधिपूर्वक शृंगारबाला गहना सभ सजओने सुन्दर लगैत अछि। चन्द्रमा सन कपारसँ सुशोभित मुह, चम्पाक लावण्य सन कान्ति लगैत अछि। भयानक

१. सुमाल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीषन तीख कटाछ छुटा बरिसए
सरिसए पति सञो रति छाजति।
दानवती ककुभा कहिअए जग
जाहि सुने सब रागिनि लाजति ॥

(अपिच)

कौशिक-कमलञोन की रती सी रति
रीति की ततीसी[1] कुच-कोरक तनाई हुए,
चम्पक पुहुप दाम वाम; हिमधाम[2] मुख
तीखन कटाछ पति प्रीति कए मनाई हुए।
कामी कमनीय अंग अंग में अनंग-सुख
भूषन-कला में किअ काम की बनाई हुए,
दीनजन दानि, नित साजति सुरत ही को
कामिनि ककुभ कवि-कोविद जनाई हुए ॥

पद्यञ्च—

रम्या रम्यविभूषणैर्वरतनुः काम्या कलाकौशलैः
श्यामश्रीः कबरीषु चम्पक-चलद्दामाभिरामद्युतिः।

तेज कटाक्ष बरसबैत पतिक संग रसपूर्ण रति करैत अछि। दानशीला एहि रागिनीकें 'ककुभा' कहल जाइछ जकरा सुनितहि सभ रागिनी लजा जाइछ।

दोसर प्रकारें—

कौशिक रागरूपी कमलक रतिरूपा (प्रेमस्वरूप) छथि। प्रेमक ढंग रखने प्रेम रीतिक ढेर लगओने छथि। स्तन कमलक कली सदृश छनि। कान्ति चम्पाक फूल सन सुन्दर छनि। मुह हिमधाम (चन्द्रमा) सन छनि। तीक्ष्ण कटाक्ष कय प्रेम करैत पतिकें मनबैत छथि। रसिक लोकनिक प्रिय छथि। हिनक अंग-अंग कामदेवक सुख दैत अछि। शृंगारसज्जा लगैछ जेना कामदेव साकार बना देल गेल होथि। गरीबक हेतु दानिनी छथि। नित्य केलिक सज्जा करैत छथि। एहन ध्यानवाली कामिनीकें कवि विद्वान् लोकनि 'ककुभा' कहैत छथि।

[संस्कृत] पद्यहुमे—

सुन्दरी, सुन्दर गहनासँ सुन्दर लगैत, कला-कौशलसँ कमनीय लगैत, श्यामल कान्तिसँ युक्त केशपाश लटकओने, चम्पाक चंचल माला सन सुन्दर

---

१ एहि वाक्यक पाठ गड़बड़ लगैछ, भाव अस्पष्ट। २ वाम। ३ बजार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दात्री दीनजनेषु पीनकुचयोः शैलोपमेया परं
सज्जा कौशिकसङ्गमाय ककुभा नेत्राज्जलं[1] मुञ्चति ॥११॥

(२-५) पंचमी गुणकरी यथा

सालस नञोनन लाल वियोगतें दृष्टि दया तन दुःख भरी हुए,
आनन-कञोल नमाञो रहुए एसु सुन्दरिकी नखओरि करी हुए।
छूटि लुरए कबरी प्रियसंगमकों घन ज्वाल विशाल जरी हुए,
नेहुत अओ करुनाकृशदेह गुनंकरि कों करतार करी हुए[2] ॥

(अपिच—)

कामिनि मुरुझि मुरुझाए मारै मेटतिहु
एहिते[3] अरुनाहि नित प्रीतम सुदूर हुए।
वाउरी की नाञी धूरि धूसर मलीन, मन
भाञोन-वियोग दशा वाम तन झूर हुए।
चौदिसउ बन्ध चारु चामर चिकुर लट
छूट्यो दुरवार निशिवासर विसूर हुए।
लोचन सिनेह रस किकरि गुनंकर में
करुना-विहीन विधि कौशिक से कूर हुए।

कान्तिवाली, दीनजनक हेतु दानिनी, पुष्ट स्तन पर्वत सन लगैत, कौशिकक सङ्गमक लेल सज्जिता ई ककुभा रागिनी आँखिसँ नोर बहैत अछि।११।

(२-५) गुणकरी

आलस भरल आँखि वियोगसँ लाल भेल छनि। दृष्टिमे दया भरल छनि। शरीरमे दुःख भरल छनि। वदन-कमलकेँ झुकओने छथि। सुन्दरीक नह सजाओल छनि (?)। केशक लट नमड़ि क' लोटाइत छनि। प्रिय-सङ्गमक बिना तीव्र विरह ज्वालामे जरैत छथि। स्नेह तथा करुणासँ देह दुबरायल छनि। एहन ध्यानवाली गुणकरी रागिनीकेँ ग्रन्थकार लोकनि वर्णित कयने छथि।

दोसर शब्देँ—

कामिनी वियोगेँ मुरुझाइलि छथि। मुरुझाकेँ बूझि पड़ैछ जे समाप्त भय जइतीह। प्रियतम एतय नहि, बहुत दूरमे छथिन। तेँ बताहि जकाँ धूरासँ

१ नेत्राञ्चलं। २ कतोक अंशक अर्थ अस्पष्ट अछि। ३ एहि तू।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च—

धूलीभिः परिलिप्त-काय-लतिकाऽऽकीर्णा कचानां चयैः
खेदात् सालसलोचना वरतनुर्नम्रानन बिभ्रती ।
तन्वी स्नेहसरोवरे निपतिता कान्तस्य मूर्त्ति हृदि
ध्यायन्ती किल कौशिकस्य विरहान्मध्ये चिरं रोदिति ।।१२।।

[३] अथ हिन्दोलस्य

दोहा—

बेलाओल देशाख अरु रामकरी सुविशाल ।
ललिता अओ पटमञ्जरी हुए हिन्दोल की बाल ।।

(पद्यञ्च—)

वेलावली च देशाखी[1] रामकयुंत्तरा ललित् ।
पटमञ्जरी च पञ्चैता हिन्दोलस्य वरस्त्रियः ।।१३।।

धूसर भेलि मलिन छथि । मनभावन (प्रियतम)क वियोगसँ सुन्दरीक सुन्दर देह झूर (झामर) भ' गेल छनि । बान्हल केश सभ आइ चारू दिस फूजि क' दिन राति अशोभनीय लगैत अछि । लोचन कवि कहैत छथि जे स्नेह रसक दासी एहि गुणकरी रागिनीक प्रति करुणा-हीन कौशिकहुसँ अधिक क्रूर विधाता छथिन ।

संस्कृत पद्यहुमे—

देहलता धूरासँ भरल छनि । छिड़िआयल केशसँ देह झाँपल छनि । दुःखसँ आँखि अलसायल छनि । सुन्दरी मुहकें नीचा लटकओने छथि । कोमलांगी स्नेहक पोखरिमे डूबलि प्रियतमक आकृतिक हृदयसँ ध्यान करैत कौशिकक विरहसँ चिरकाल धरि कनैत छथि ।१२।

[३] हिन्दोलक रागिनी

बेलावली, देशाख रामकरी, ललिता तथा पटमञ्जरी ई पाँच रागिनी हिन्दोलक स्त्री थिक ।

बेलावली, देशाख, रामकरी, ललिता ओ पटमंजरी ई पाँच हिन्दोलक रागिनी थिक ।१३।

---

१ 'देशाखो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३-१) तत्र प्रथमा बेलावली यथा

नील-सरोरुह-सी तनकी छवि
छाजति हए जेहि छएल छबीली,
भूषन भाँतिन भाँति बनावति
हए नखसञो सिखलओं जो रसीली।
दए अभिसार के मन्त सुकन्त को
काम के तन्त को जान रसीली,
इष्ट मनमम्मथ कों सुमिरए
हनुमन्ते वेलाओल कए कहि कीली।।

(अपिच—)

संगम-संकेत तन्त्र-मन्त्र कही बालम को
वनिता-रतन दिन पूछति सखीन सञो,
भूषन बनाए सुख-साधन शरीर करि
अंजन करति किल लोचन सुमीन सञो।
नील-दल-कमल विमल दल दुति देह
[1]मच्यो हए सिनेह तिन मन्मथ विहीन सञो
इष्ट निज देवता मदन ही को चिन्तति हए
सत्वर न जात एआते शाप देति दीन सञो।

(३-१) बेलावली

नील कमल सन देहक कान्तिसँ शोभायमान छथि। अनेक तरहक गहना नखसँ शिखा धरि पहिरने छथि। अपन प्रियके अभिसारक सङ्केत दय काम-तन्त्रके जनैत इष्टदेव कामदेवक स्मरण करैत छथि। हिनका हनुमन्त कवि बेला-ओल कहैत छथि।

संकेत स्थानक हेतु प्रियतमसँ कनफुसकी कय नारी-रत्न वेलावली सखीसँ पूछैत छथि जे कतेक दिनमे पति अओताह? सुखक साधन रूप गहना बना क' देहमे पहिरि अपन माछ सनक आँखिमे आँजन कयने छथि। नीलकमल सन सुन्दर देहक कान्ति छनि। कामक अज्ञानावस्थाहिसँ स्नेह बढ़ओने छथि। अपन इष्ट देवता कामक ध्यान करैत छथि आ पतिक शीघ्र नहि अयला पर कातर भय शाप दैत छथि।

---

१. एहिसँ पूर्व "तेहि" अधिक पाठ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च —

श्रीमन्नील-सरोज-सुन्दरतनुस्सङ्केतदीक्षां प्रिये
दत्त्वा मण्डनमातनोति वपुषः स्वीयेष्टदेवं स्मरम्[1] ।
ध्यायन्तीं प्रियसङ्गमाय दयितानेतान्नुतानुत्तमा[2] ।
हिन्दोलस्य हनूमता निगदता वेलावेली निर्दिशेत् ॥१४॥

(३-२) द्वितीया देशाखनाम्नी यथा

सूरवीर-सेवक समूह सदा सेवए जाहि
राजए रोमहरख विशाल बाहुदण्ड हए;
रोस रसभरी रहए, भृकुटी तरंग लसए
जाको वीर भाव सब ठग्रोर में ग्रखंड हए
ऊंचे तन ऊँचे मन प्राकृत-प्रचंड पुनि[3]
निविल निखाद सदा नाद कलचंड हए
जाके रूप सुनेतें ग्रबलऊ सबल होत
रागिनि हिन्दोल की देसाख वरिवंड हए।

संस्कृत पद्यहुमे —

नील कमल सन सुन्दर देह छनि। प्रियकें अभिसारक संकेत दय शरीरकें सजबैत छथि। अपन इष्टदेव कामक ध्यान करैत छथि। प्रियसङ्गमक हेतु आबि क' नत भेल (प्रार्थना करेत) प्रियतमक ध्यान करैत छथि। ई हिन्दोलक उत्तम रागिनी वेलावली हनुमन्तसँ कहलि गेलि छथि। एकर निर्देश (वर्णन) एही रूपक करक चाही।१४।

(३-२) देशाख

अनेक शूर वीर सभ सेवा करैत छनि। रोमांचसँ भरल बाँहि छनि। रस भरल रोष (तामस) कयने छथि। भौंहक भङ्गिमा तरंगित छनि। सर्वत्र वीर भाव भरल छनि। उच्च शरीर, उच्च मन, उग्र स्वभाव तथा तेजसँ पूर्ण घन निषाद-स्वर सतत करैत छथि। ध्यान सुनि क' निर्बलो व्यक्ति सबल भय उठैछ। एहन देशाख नामक रागिनी हिन्दोलक मदमत्त (पत्नी) थिकीह।

१. स्मरन् । २. मुत्तमा। ३. पुलिन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[अपिच]

ऊँचे तन तामे दुति कुन्दन कनक सम
सेवि सुर वीर रन बाहु जमदण्ड हए
समर प्रवीन तुल ताल के मचाए जेहि
उन्नत उदण्ड रोम-मंडल घमण्ड हए।
लोहित-नयन रोस रस के सरूप सुर
वृन्द मे निखाद रतिरागिनि प्रचंड हए
लोचन देशाख जगती नति प्रताप तति
रागिनि हिन्दोल वनिता मे वरिवण्ड हए।

पद्यञ्च—

प्रांशुः सन्नद्धबाहुः प्रति-सुभट-रणद्वन्द्वयुद्धाय चञ्च
ल्लोमाञ्चा धीरवीरैः समरभुवि सदा सेविता ताम्रचक्षुः।
सन्तप्तस्वर्णवर्णा वपुषि वरतनुः काऽप्यपर्णेव[1] मल्लै-
स्तुल्या हिन्दोलभर्त्तुः पदकमलरतिः सा तु देशाखनाम्नी॥१४॥

दोसर शब्दमे—

उच्च देह; ताहिमे शुद्ध सोन सन कान्ति छनि। युद्धमे अनेक शूर वीरसँ सेवित छथि। विशाल बाँहि मानू यमदेवकदण्ड (लाठी) थिक। युद्धमे कुशल जकाँ ताल मचबैत प्रचण्ड रोमाञ्चित ओ घमण्डसँ युक्त छथि। आँखि लाल कयने तामसो रस-भरल छनि। स्वर समूहमे निषाद रूपमे प्रचण्ड रागिनी बनल अछि। लोचन कवि कहैत छथि जे ई रागिनी देशाखनामक संसारमे अत्यन्त प्रतापसँ युक्त अछि। ई हिन्दोलक रागिनी सभ नारीमे महाजब्बरि अछि।

संस्कृत पद्यहुमे—

अतितेजस्विनी, प्रतिद्वन्दीसँ युद्धक हेतु बाँहिकेँ कसने, रोमांचित होइत, ताम-सन लाल आँखि कयने, युद्धमे अनेक धीर-वीरसँ सेवित, तपाओल सोना सन वर्णवाली, देहक कान्तिसँ पार्वतीजकाँ लगैत, योद्धा सन लगैत, अपन स्वामी हिन्दोलरागक चरण-कमलमे प्रीति रखैत ई देशाखनामक रागिनी थिकीह।१४।

---

१. काप्यपर्णेविमल्लै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२-३) तृतीया रामकरी यथा

नीरद से नव नील निचोल
लसए तन दामिनि सी दमकए
कल कोकिल सी कमनीय कलध्वनि
अओ छवि भूषन की चमकए।
प्रीतम ही के समीप रहए
न हसए कटुतानन ते तमकए
चित होत हुलास सुने जन मे
जब एआ छवि रामकरी जमकए।

(अपिच—)

भूषण रुचिर छवि[1] सञ्चित तपस्या फल
फली हुए कमलनञ्जिनी हेमरुचि देह की
सुन्दर विविध गुन मन्दिर सरीर तेहि
राजत निचोल समता हुए जेहि नेह की।
पवन चलाञ्चे जब अम्बर चलत तब
गोरी दुति होति जएसी दामिनी की रेह की
मानिनि मनाइबेको बालम परत पगु
ललना न मनाए बलिहारी उन नेह की।

(३-३) रामकरी

मेघक समान नवीन नीलवर्णक साड़ीसँ सुशोभित देह बिजुली सन चमकैत, कोइली सन मधुर बोल बजैत, चमकैत गहनासँ सुसज्जित, प्रियतमैक लग रहैत, एको बेर हँसैत नहि, तामसेँ पक्पक् करैत, जखन रामकरी रागिनीअपन कान्ति प्रकटित करैत अछि तँ प्रत्येक व्यक्तिक चित्त आनन्देँ मुग्ध भ' जाइछ।

दोसर शब्दें—

गहनासँ शोभित कान्ति ओ देहक सोन-सनक सौन्दर्य एहि कमलनयनीक चिरकालसँ सज्जित तपस्याक फल थिक। अनेक गुणक समूहसँ सुन्दर एकर देहमे स्नेहक मूर्तिभूत साड़ी शोभित अछि। हावाक झोंकमे जखन साड़ी उधिया जाइछ तँ एकर गोर वर्ण बुझाइछ जेना बिजुली चमकि गेल हो। एहन रमणीक मनाओन लेल प्रियतम पयर पर पड़ैत छथि, मुदा ओ रमणी नहि मनाओल भय रहलि अछि। एहन स्नेहोकेँ धन्ये कही।

1. मूल मे 'छवि' नहि अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३-४) चतुर्थी ललिता[1] यथा

सपत पलाश फूले फूल तन, तामरस
लोचन अलस रस-भिने असमान हुए
जा के गृह तेजि अति प्रीतम हिन्दोल अति-
प्रातहि जे होत जात कातर मलान हुए।
एआ सञो हनुमन्त कवि ललिता कह्यो हुए अति
ललिता विलासी पिअ देति जिअ दान हुए।

(अपिच—)

फूल[2] धरैं विषमच्छद के अति-
ज्वाल अओ गान-गुमान गहें हुए
लाल से लोल विशाल विलोचन
आलसमन्त सनेह सने हुए।
आ छवि जात प्रभात मे जा पति
जा सुधतें सुख लाख लहें हुए
ता सञो हिन्दोलन की वनिता
ललिता ललिता हनुमन्त कह्यो हुए।

(३-४) ललिता

छेतमनक फूल सनक देह ओ कमल सनक अलसायल आँखि रसभरल मेघक समान लगैछ। जकरा घरमे छोड़ि प्रियतम हिन्दोल अहलभोरे चल जाइत छथि ओ दीनहीन सन भय जाइछ। तकरा हनुमन्त कवि ललिता कहैत छथि, जे अत्यन्त कलावती विलासिनी होइतो प्रियतमकें जयबाक अनुमति दैत अछि।

दोसर शब्दें—

छेतमनक फूल रखने, अत्यन्त तेज ओ गर्वसँ युक्त, लालवर्णक चंचल विशाल आँखि अलसायल स्नेह प्रदर्शित करैत एहि सुन्दरीक पति प्राते चलि दैत छथि, जनिका ध्यान करैत अनन्त सुख पबैत अछि। एकरे हनुमन्त कवि हिन्दोलक पत्नी ललिता कहैत छथि।

---

१. ललिताक नाम निर्देश मूलमे नहि अछि। एहिसँ पूर्व रामकरीक वर्णन संस्कृत पद्यमे नहि अछि जे क्रम संगत नहि लगैछ। ललितामे सेहो दू पंक्ति कम अछि। २. एहि पद्यकें पटमञ्जरीक वर्णनक बीचमे राखल गेल छल जे असङ्गत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च—

प्रफुल्ल-सप्तच्छद-पुष्पगुच्छैः
स्वच्छाय-कायः सुविलासिवेशः ।
यस्याः पतिः प्रातरपैति गेहाद्
विनिद्रचक्षुर्ललिता तु सैव ॥१५॥

(३-५) पंचमी पठमंजरी यथा

चकित चकित चहुओर चितवति पति
नाहिन देखति प्रतिथकित सरीर हए
सखी कमला सी कत करति प्रबोध तउ
दामिनि समान कुल कामिनि न धीर हए ।
सबए निरवारि वर भूषन विनोदी कन्त
गुथी उरमाल वाल सुषन समीर हए
प्रीतम हिन्दोल परि दीन तन छार भरे
रागिनि विषिन्न मनकेहूँ कए न थीर हए ॥

संस्कृत पद्यहुमे —

फुलायल छतिबनक फूलक गुच्छा सन छविमान् देहवाला विलासीक वेश धारण कयने जनिक पति घरसँ प्राते चलि देलनि अछि सएह निन्नेँ माँतलि ललिता रागिनी थिकीह ।१५।

(३-५) पटमञ्जरी

चौंकि चौंकिक' चारूभर मनस्विनी पतिकेँ तकैत अछि मुदा देखि नहि रहल छनि । ओकर शरीर अत्यन्त थाकि गेल छैक । लक्ष्मीसनक सुन्दरी सखी बहुत बुझबैत छैक मुदा बिजुरी सनक ई कुलवधू धैर्य नहि धय रहलि अछि । उत्तम गहना सभकेँ छोड़ि प्रियतमक गाँथल मालाकेँ हृदयमे लटकओने अछि जे ओकरा सुखद बसात सन लगैत छैक । प्रियतम हिन्दोलक प्रतीक्षामे शरीर दीन एवं मलिनी भय गेल छैक, मुदा ई रागिनी अपन विखिन्न मनकेँ स्थिर कयने अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपिच —

बाल वियोगिनि दीपतिमन्त
विसीरन देह सनेहें सने हुए
कामके झार ह्वै सीन भए अति
फूलके माल गले मे बने हुए।
प्रान समान विधान धरें
सखिआ समधान करें जो घने हुए।
छारभरे तन ठओर नहीं
एआ पटमञ्जरि भाओ भने हुए।

पद्यञ्च —

हिन्दोला पटमञ्जरी विरहिता तप्ता तनुज्वालतः
कृत्वा सा हृदि वल्लभेन रचितां[1] मालामथो रोदिति।
त्वाश्वस्ता शतशः श्रिया करुणया सख्या तथापि प्रिय
स्नेहाऽम्भोधि-विलीन-दीनमनसा तं सर्वतः पश्यति ॥१६॥

[४] अथ दीपक रागिण्यः

केदारा कानरा चैव देशी-कामोदके तथा।
विहागरा इति ख्याता दीपकस्यैव वल्लभा ॥१७॥

दोसरा शब्दें —

बाल्यावस्थहिसँ वियोगमे पड़लि कान्तीमती ई रागिनी अपन अत्यन्त दूबर (विशीर्ण) देहकें स्नेहसँ भरने अछि। कामसँ तप्त भय मुरझायल (शीर्ण) फूलक मालाकें गरामे पहिरने अछि। प्राण सनक सखी सभ सकल सामग्री लय उपचार (प्रबोध) क हेतु तैयार रहैत छैक तथापि छाउर भरल देहमे शान्ति नहि। एहन रागिनी कें पटमञ्जरी कहैत छैक।

संस्कृत पद्यहुमे —

हिन्दोलरागक पत्नी पटमञ्जरी विरहिणी भेलि देहक ज्वालासँ तप्त छथि। ओ अपन प्रियतमक द्वारा रचित मालाकें हृदयमे राखि कनैत छथि। दयालु सुन्दरी सखी सभ अनेक बेर आश्वस्त करैत छनि तथापि प्रेमक सागरमे निमग्न दीन मनसँ चारूमर पतिकें तकैत छथि।१६।

---

१. रचिता वाला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपिच—

केदारा अरु कानरा, देशी अरु कामोद।
बनी विहागर रागिनी, दीपक की मनमोद ॥

(४-१) तत्र प्रथमा केदारा[1] यथा

शिर सोहत जाके जटाजूट सुन्दर
चन्द्रकला विलसन्तु उदारा
नादमयी उपरैना धरें अब
ध्याननि में लगि लोचनतारा।
सोग हरैं जोग पट्ट धरे
जो दुनी पर दीपति दीपक-दारा
तासऊो कहै कवि जूह विचारि
विचारि वियोगिनि बाज केदारा ॥

अपिच—

गैरि सुरंगवर अम्बर-युगल, शिर
जटिल ललाट कला राजए हिमधाम की
जोगिनि पिनाको ध्यानधारना निरति एआतें
लोचन नलिन तारा मूंदी कुलवाम की

[६] दीपक रागिनी

केदारा, कानरा, देशी, कामोद तथा विहागरा एहि नामें प्रसिद्ध पाँच रागिनी दीपकक प्रियतमा थिकीह।१७।

(४-१) केदारा

जकर माथ पर सुन्दर जटा शोभित छैक ओ चन्द्रमाक सुन्दर कला विराजित छैक, जे नादस्वरूपा............आँखिकें ध्यानमे लगओने, सभक शोककें हरैत, जोड़ भरि रेशमीक वस्त्र पहिरने, द्विगुण प्रकाशित होइत दीपकक रागिनी कहबैत अछि, तकरा कवि लोकनि विचारि कें केदारा कहैत छथि।

दोसरा शब्दें—

जड़ीदार लालबुन्द सुन्दर जोड़भरि वस्त्र पहिरने, माथ पर जटा बढ़ओने, कपार पर चन्द्रमाक कला धारण कयने, योगिनीक वेशमे महादेवक ध्यानमे रत भेलि सुन्दर आँखिक पुतरीकें बन्द कयने, भयानक सापकें भयानक अपन शरीरमे लपेटने जे मणिक समान चमकैत अछि, एहन रागिनी दीपकक

१. एकर नामनिर्देश एक पद्यक बाद मूलमे कयल गेल अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीषन भुअङ्ग भए भाजन सरीर तेहि
लपटन्हें दिसाति कत हाटक उपाम की
दीपक की दारा जग रागिनी केदारा नीकी
फीकी अओर रागिनी जगत केहि काम की।

पद्यञ्च

जटाः शिरसि योगिनी शशिकलाङ्कपाले विशुग्
विषोल्वण-भुजंगमान् वपुषि सर्वतो बिभ्रती।
सुगैरिक-विलोहिते विमलवाससी, दीपकाद्
गता बत ! विहागरा, रहसि शङ्करं ध्यायति ॥१८॥

(४-२ द्वितीया कानरा यथा

दच्छिन - पानि कृपान धरें, कर
बाञे विराजत दन्तिक दन्ता।
किन्नर चारन जक्ष अओ रक्ष
विलच्छन अस्तुति कएक कहन्ता।
जानत जाहिन को जग में जन
जीव-समान करी जेहि कन्ता।
बूझि विचारि कही मुनि वृन्दनि[1]
कानर कानन के रसमन्ता॥

पत्नी संसारमे केदारा रागिनीक नामें प्रशस्त अछि जकर सोझाँ आन सभ रागिनी हीन भय कोनो कर्मक नहि लगैत अछि।

संस्कृत पद्यह्नु मे—

योगिनी अपन माथ पर जटाकें, कपार पर चन्द्रमाक कलाकें तथा देहमे शोकरहित विषवमन करैत साप सभकें धारण कयने छथि। गेरु-सन लाल वस्त्र पहिरने छथि। दीपक रागसँ दूर भेलि (विरहिणी) दुःखी विहागरा रागिनी एकान्तमे महादेवक ध्यान करैत छथि।१८।

(४-२) कानरा

दहिना हाथमे तरुआरि ओ वामा हाथमे हाथीक दाँत रखने, किन्नर, चारण (भाँट), यक्ष, राक्षस, सभसँ उत्तम स्तुति कयल जाइत, संसार मे सभ सँ ज्ञात ओ पतिसँ प्राण समान आदर कयल जाइत, एहि रागिनीकें कानक रसिक मुनि लोकनि बिचारि क' कानरा कहैत छथि।

१. वृन्दनिकावर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपिच)

वाञ्चे गजदन्त कर, दाहिने कृपान करि
कामिनि निरन्तर रहत वन-बीच हए।
जामिनि जमकि जब बाजा में बजति तब
रसन के बहि बहि जात महि कीच हए
जाकी कल कीरति करत सुरलोक, सोक
नेकुन रहत तिग्रनाद ही तें नीच हए
दीपक रसीली रसभीनी बनी कानरा ए
भावति न जाहि सो तग्रो मानुषो न चीच हए॥

पद्यञ्च

करे वामे स्तम्बेरम-दशन-शुभ्रासिमपरे
वहन्ती सङ्गीते कथित गतिरङ्गीकृत-रतिः।
पतिर्यस्याः सेयं विपिननिरता दीपकजनी
जनानां जीवातुः कवि-निगदिता कानर इति ॥१९॥

(४-३) तृतीया देशीया यथा

सोग्रतु जगाबए नित प्रीतम १करि ग्रापु
काम की पुजारी वरनारी निसि जागई

दोसरा शब्दें—

वामा हाथमे हाथीक दांत ओ दहिनामे खड्ग राखि ई कामिनी वनक बीच मे सतत रहैत अछि। राति मे जखन उत्साहित भय ई बाजामे बजैत अछि तँ रसक प्रवाहक अन्त नहि लैछ। एकर स्वरक प्रशंसा देवतो करैत छथिन, तथा सभक शोक हरण करैछ से केवल स्त्रीस्वरक न्यूनता मात्रसँ न्यून अछि। दीपकरागक प्रिया रस-भरलि रागिनी कानरा कहबैत अछि। ई जकरा नहि नीक लगैछ से मनुक्ख नहि पशु थिक।

संस्कृत पद्यमे—

वाम हाथमे हाथीक दांत, दोसर हाथ मे खड्ग लेने छथि। संगीतमे परम अनुराग छनि। एहन जनिक पति छथिन से दीपकक पत्नी वनमे विलाप करैत छथि। ई संगीत रसिक लोक सभक जीवनौषध (अमृत) सदृश छथि। कवि लोकनि हिनका 'कानरा' कहैत छथि।

(४-३) देशी

सूतल अपन प्रियतमकें प्रतिदिन पकड़ि क' जगबैत कामदेवक पूजा कय-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कन्त को नचाए रति-सङ्गर मचाए कत
तीख़ नख - रेख - दन्त - घात करि दागई।
पहिरे सुरङ्गवर अम्बर हरीत सारी
नारी की नाहिन जाहि[1] नयन मन लागई
दीपक कलित - रति देसी भरी भाव ही ते
रागिनि सुनत दुख देह तेजि भागई॥

(अपिच)

गोरि सो अङ्ग अनङ्ग - भरी रति -
आतुर सोअत कन्त जगावए
सोछ दुकूल सुआ के सो पोछति
आ पहिरें जो तिआ मन भावए।
जानत जाहि सबए जग में
रस - पूरन तूरन भाव बुझावए
देसिए दीपक की दयिता
जेहि जोहि सदा सुरवृन्दइ गावए॥

निहारि ई श्रेष्ठ महिला रतिमे जगैत अछि, प्रियकें नचबैत रति-युद्ध करैत अनेको तीक्ष्ण नहक रेखा ओ दन्तक्षतसँ चिह्नित करैत अछि, सुन्दर हरियर रङ्क साड़ी पहिरैत अछि जे देखि सभ नारीक मन मोहित भय जाइछ। दीपक रागकें रतिसँ प्रसन्न कयनिहारि भावपूर्ण एहि देशी रागिनीकें सुनितहि दैन्य दुःख भागि जाइछ।

दोसरा शब्दें—

जे गोर देह कामसँ भरल रतिक हेतु विकल भेल अपन सूतल प्रियकें जगबैत अछि, सूगाक पाँखि सन निर्मल वस्त्र पहिरने अछि, जे नारीक मनकें मोहि लैछ, जकरा संसारमे सब क्यो जनैत छैक ओ रससँ ओतप्रोत भय झट दय भावकें बुझा दैत अछि से दीपक रागक प्रिया देशी थिक जकरा देवता-लोकनि सतत ठेकान कय गबैत छथि।

संस्कृत पद्यहुमे—

१. मूलमे 'जाहि' नहि अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च

उन्निद्रा मदनज्वरेण रमते निद्रागतं कैतवाद्
उत्थाप्य प्रमदाऽऽतुरा स्मरपराऽधीनञ्च कृत्वा पतिम् ।
गौरी भार-[1]विभङ्गुराऽङ्गलतिका कीराच्छ-पक्षद्युति-
स्वच्छाऽऽडम्बरमम्बरं विदधती देशी तु वेशाऽधिका ॥२०॥

(४-४) चतुर्थी कामोद-नाम्नी यथा

झामर झीन मलीन शरीर में
सोहत लाल पटम्बर सारी
कोकिल के छल नाद किञ्जे कत
रोअति[2] कानन में वरनारी ।
भीति दसओ दिश देखति हुए
नहि देखति बालम वाम विहारी ।
पीर परी सिर पीटति हुए सो
कामोद कही कवि दीपक-प्यारी ॥

कामज्वरसँ आँखिमे नीन नहि छैक। छलसँ सूतल पतिकेँ कामसँ आतुर भेलि ई तरुणी कामदेवक पराधीन क' हुनक सँ रमण करैत अछि। गोर वर्ण छैक। (स्तनक) भारसँ लचकैत देहलता छैक। सूगाक निर्मल पाँखिक चमक सन निर्मल वस्त्र पहिरने अछि ओ उत्तम वेश बनओने अछि। एहन ध्यानवाली रागिनी 'देशी' कहबैत अछि।२०।

(४-४) कामोद

मुरुझाक' मलिन भेल दुब्बर देह मे लाल पाटक साड़ी शोभित छैक, कोइली सनक मधुर स्वर कय ई रमणी-रत्न वनमे कनैत अछि, डेराय केँ चारूभर तकैत अछि, मुदा अपन सुन्दररूपेँ विहार करयबाला प्रियकेँ नहि देखि रहलि अछि, पीड़ा (दुःख) मे पड़लि कपार पीटि रहलि अछि—एहन रागिनीकेँ कविलोकनि दीपकरागक प्रेयसी कामोद रागिनी कहैत छथि।

१. भाव। २. कतरो अति।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपिच)

पहिरे वर अम्बर पीत पटम्बर
अओ जे वएरि करए विपरी
कल-कोकिल से कमनीय कलध्वनि
रोअति हए वन माह खरी।
भए भीति दशओ दिश देखति हए
पिअ की सुधि आउति जाति जरी
जग जाहि सुने मन मोहत हए
सो कामोद कहा हनुमन्त हरी॥

पद्यञ्च—

नादैः सा कलकण्ठिकेव, दधती पीताम्बरं सुन्दरी
भीता दिक्षु विदिक्षु दत्तनयना नाथं तु नो पश्यति।
तिष्ठन्ती बत! कानने वनचरीवाऽन्तः - कृतान्तोपम-
श्रीमत्कान्त-वियोग-शोकखचिता हा सुस्वरं रोदिति ॥२१॥

(४-५) पञ्चमी विहागरा यथा

आनन चन्द सों, मन्द गहे गति
हए अति सूरति की अधिकाई

उत्तम रेशमी वस्त्र पहिरैत अछि जे वैरी सभके विपरीत (क्रोधित) कय दैत छैक, मधुर कोइलीक-सन सुन्दर कोमल स्वर कय वनक बीचमे ठाढ़ि भेलि कनैत अछि, डेराय कें चारूभर तकैत अछि, पतिक स्मरण होइतहि (विरहें) जरय लगैत अछि, जकरा सुनितहि लोक मोहित जय जाइत अछि—तकरा हनुमान जी हरि (वानर) कामोद कहैत छथि ॥

संस्कृत पद्यहुमे—

ई सुन्दरी रागिनी नादसँ कोइली-सन अछि। पीयर वस्त्र पहिरने अछि। डेरायलि जेकाँ चारूभर आँखि पसारैत अछि, मुदा पतिकें नहि देखैत अछि। वनमे वनचरी जकाँ रहैत हृदयमे यमराज-सदृश प्रियक वियोगक शोकसँ जकड़ल घओना क' क' कनैत अछि।२१।

(४-५) विहागरा

चन्द्रमा सन मुह, मन्द-मन्द चलैत, अत्यन्त सुन्दरि लगैत अछि. लाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लाल पटम्बर बाल बड़े ते
बड़इ बड़े कुच चाह उचाईं।
नञोन बने वनिता सिरदार
बने विधिसञो विधिना ने बनाईं
नारद तुम्बुरु सारद आदि कए
बीन बजाए विहागर गाईं॥

(अपि च) —

चामर चिकुर, हिमधाम मुख, धनु भौंह
लोचन सो मीन, नासा केसु अनुरूप हए।
दन्त दाना दालिम के, विद्रुम अधर, कर
कोकनद, कुच कुम्भ, नाभी अन्धकूप हए।
वेदी की सी त्रिक, सानु-सुन्दर नितम्ब, जंघा
थम्भ, पद पल्लव, नख किंशुक सरूप[1] हए
पाटम्बर लाल जेहि गअोन गजराज के से
विहागर वानी अएसो दीपक सो भूप हए॥

पाटक वस्त्र पहिरने, पैघ पैघ केश तथा पैघ-पैघ स्तन आओरो ऊँच होमय चाहैत छैक। आँखि उत्तम छैक ओ नारी सभक बीच ई अतिसुन्दरी अछि किएक तँ विधाता एकरा विधिपूर्वक (मन लगा क') बनओने छथि। नारद, तुम्बुरु (गन्धर्वकुलक गुरु), सरस्वती आदि गानकलावेत्ता लोकनि वीणा बजा क' एहि विहागरा रागिनी कें गबैत छथि।

दोसरा शब्दें—

चामर (चओर) सनक केश, चन्द्रमा सनक मुह, धनुष-सनक भौंह, माछ सनक आँखि, पलासक फूल सनक नाक, दाड़िमक बीया सनक दाँत, मूड़ा सनक ठोर, लाल कमल-सनक हाथ, घैल सनक स्तन, गहीँर कूप सनक ढोँढ़ी, वेदी सनक त्रिवली, पर्वत-शिखर सनक पोन, कड़रीक थम्भ सनक जाँघ, पल्लव सनक पयर ओ पलाशक फूल-सनक नह छैक। जे लाल रेशमीक वस्त्र पहिरने हार्थीक समान चालि चलैत अछि से विहागरा रागिनी कहबैत अछि जकर पति दीपक-सनक छथिन।

---

१. किंशुक उड़ूप।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पद्यञ्च)

शैवालोपम - लम्बमान - कबरीभारा मुखेन्दुद्युतिः
दृग्भ्यां खञ्जन-गञ्जिनी गजगतिः शैलाग्र-तुङ्गस्तनी ।
रक्ता पट्टपटाद् विहागर इति ख्याता महीमण्डले
श्रीमद्दीपक-पुण्यपुञ्ज-रुचिरा मूर्त्तिर्जगन्मोहिनी ॥२२॥

[५] अथ श्रीरागिण्यः

ऋतुपति, मालओ, मालस्री, धन्य धनास्री जान ।
आसावरी भरी रसन, श्रीके पाँचओ प्रान ॥

(पद्यञ्च)

वसन्ता मालवा चैव मालस्री च धनासिरी ।
आसावरी च पञ्चैताः श्रीरागस्य वरस्त्रियः ॥२३॥

(५-१) तत्र प्रथमा वसन्तो[1] यथा

मोर के पच्छ सो बाँधे विलच्छन
जा सिर सोछ सो बाल विराजत

संस्कृत पद्यहुमे—

सेमार-सन लटकैत केशक भारसँ युक्त अछि। मुहमे चन्द्रमाक कान्ति छैक। खंजनकेँ तिरस्कृत करयवाला आँखि छैक। हाथी सनक चालि छैक। पहाड़क शिखरक अग्रभाग सन उच्च स्तन छैक। पाटक वस्त्रसँ लाल भेलि ई रागिनी पृथ्वी पर विहागरा नामेँ प्रसिद्ध अछि, जे दीपक रागक पुण्य-राशि (प्रभा) सँ सुन्दर लगैत संसारकेँ मोहित करयवाली अछि।२२।

[५] श्रीरागक रागिनी

वसन्ता, मालवा, मालश्री धनाश्री तथा आसावरी—ई पाँच रागिनी श्रीरागक स्त्री थिक।२३।

(५-१) वसन्ता

मयूरक पाँखि उत्तम रूपेँ बान्हल जकर माथ पर स्वच्छ केश विराजमान

१—एहिसँ पूर्व आ पर वसन्ताक पद्य छल जकरा एहिसँ परे राखब उचित बुझल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लाल रसालन के अवतंस
प्रसंसति आनत अंस में छाजत।
नील सरोज समान सरूप
विलास हुलास सबए जेहि गाजत
रागिनि - राज वसन्त कही इह
जाहि सुने तन तें दुख भाजत॥

(अपि च)
चामर चारु शिरोरुह माँह
लसए सिखि - पिच्छ हुलासमयी हए
स्रव्नोन में रम्भ रसाल के पल्लव
तातें विलासिनि वेस भई हए।
नील सरोरुह - सी छवि छाजति
गाजति हुए, वर वएसें नई हए
लोचनें अएसि वसन्त कही
सिरिराग सोहागिनि दैअ दई हए॥

छैक, लाल आमक पातक कानमे गहना बनाय प्रशंसा कय कान्ह तक लटकओने अछि, नील कमल सनक रूपसँ शोभित, प्रसन्नतापूर्वक विलास करैत सभक द्वारा प्रशंसित होइत अछि, तकरा लोक रागिनीक रानी वसन्ता कहैत छैक जकरा सुनितहिँ देहसँ दुःख भागि जाइत छैक॥

दोसरा शब्दें—

चओर सनक सुन्दर केश माथ पर शोभित छैक ओ मयूरक पाँखि सेहो शोभित छैक तथा उल्लासमय रहैत अछि, कानमे सुन्दर आमक पल्लव लगओने अछि ओ ताहिसँ विलासिनीक वेश भय गेल छैक, नील कमल सनक देहक कान्ति छैक ओ प्रसन्न अछि तथा अवस्था एकदम नवीन छैक, एहन रागिनीकेँ लोचन कवि वसन्ता कहैत छथि जे श्रीरागक सौभाग्यवती भाग्य सँ प्राप्त छैक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च

चूत - प्रसूत-नव - पल्लव - कर्णपूर -
संशोभिता विमल-नील-सरोज-दीप्तिः ।
बर्हप्रवेश - वर-चामर - चारुकेश -
वेशा विलास-परिहास-रसा वसन्ता ॥२४

(५-२) द्वितीया मालव नाम रागिनी यथा

कुण्डल - मण्डित हुए श्रुतिमडण्ल
कीर - तनूरुह से तनु सुन्दर
आनन कञ्जोल विलासिनि चुम्बित
नओल नितम्बिनि से मद मन्दर।
लाए गले मनिमाल विशाल
प्रदोष समञ्चे वसि वास के अन्दर
गाओत जाओत बीन बजाओत
राजत मालव राग - पुरन्दर ॥

संस्कृत पद्यहुमे—

आमक पल्लवकेँ कर्णभूषण वनओने अछि। निर्मल नीलकमल सन देहक कान्ति छैक। मयूरक पाँखि खोँसल सुन्दर चामर सन केश-विन्यास कयने अछि। विलास एवं परिहासमे रुचि रखैत अछि। एहन ध्यानवाली ई रागिनी वसन्ता रागिनी थिक।२४।

(५-२) मालवा

कुण्डलसँ शोभित कान छैक, सुगाक केश सन सुन्दर देह छैक, कमल समान मुह विलसिनी (सखी) क द्वारा चुम्बित छैक, नूतन नितम्बनी (नितम्बक भारसँ युक्त) मदसँ मन्दगति भेलि अछि, गरामे विशाल मणिक माला लय साँझुक वेरमे वास-भवनमे बैसि गबैत वीणा बजबैत रागक अधिपति मालव शोभित भय रहल अछि।

१—एहि पद्यक पूर्व ओ पश्चात् मालवक वर्णन छल जकरा पश्चाते राखब उचित बुझल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपि च)

गण्ड - घमण्ड किञ्जे नव कुण्डल
मण्डल मण्डित हुए अनुपामा
तोतन सी तनुकान्ति लसए
लखि होत महामुनि ह्वै मन वामा।
साँझ समञ्जो वसि वास विनन्दि में
वास करै पति सञ्जो [1]रति - धामा
जोबन भार गुमान - भरी
सिरिराग-नितम्बिनि मालव नामा ॥

पद्यञ्च

कान्तिः कीरतनूरुहप्रतिमतां धत्ते समुल्लासकृत्
लावण्यं मणिमालया श्रुतितटी यस्यास्तु ताटङ्किनी।
सायं तत्परिहासवेश्म रुचिरं गत्वा नताङ्गी मुहुः
श्रीरागेण विनोदमेति मनसः सेयं मता मालवा ॥२५॥

दोसरा शब्दें —

गण्ड स्थल (कानक नीचा) कें भरियबैत नवीन कुण्डलसँ युक्त अपूर्व लगैत अछि, सुगा सनक देहक कान्ति छैक जकरा देखि महामुनिहुक मन विचलित भय जाइत छनि, साँझुक बेरमे वासभवनक भीतर पतिक संग वास करैत रतिक धाम (वास) भय गेल अछि, यौवनक भारसँ गर्वित होइत ई श्रीरागक प्रेयसी मालव नामक थिक।

संस्कृत पद्यहुमे—

देह-कान्ति सूगाक पाँखिक सदृश छैक। उल्लास देमयबाला सौन्दर्य छैक। मणिक मालाक वीड़ छैक। साँझखन केलिगृह जाय देह झुकओने वारंवार श्रीरागक संग मनोविनोद करैत अछि। एहन ध्यानबाली रागिनी मालवा कहबैत अछि।२५।

१. 'वतिधामा'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(५-३) तृतीया मालस्री यथा

बएठि बनी सहकार महातरु
छाँह लिग्रे वर वाम बिराजए
सूध सुधारस सी बिहुसी
मुख-पङ्कजमे दसनच्छद छाजए।
दूनमना मनही मे गनए
कर वारिज-पत्र पवित्र तें लाजए
मालसिरी सिरिरागवधू
सुर राजत ही जिय तें दुख भाजए॥

(अपि च)

लाल सरोरुह बाल धरें
कर, रम्भ रसाल बएठि कए छाहन
पङ्कज-पत्र गनए[1] मनही मन
दूबर देह-लता चित चाहन।
आनन चन्द सो मन्द लसए
बिहुसी नव अमृत के मद वाहन[2]
पञोन-तनय[3] मत सम्मत कए
उरमाल सिरीवरजी कवि-नाहन॥

(५-३) मालस्री

आमक विशाल गाछक छाहमे बैसि क' (मनमे) वरकें लय सुन्दरी विराजित अछि, शुद्ध अमृत-रस जकाँ विहुँसि दैत अछि जाहि सँ कमल सनक मुहमे अपूर्व ठोर शोभित छैक। दु.खी मने मनहि मन पवित्र कमलक पातकें हाथमे लय गनैत लजाइत अछि, एहन श्रीरागक वधू मालस्री अछि जाहिसँ इन्द्रहुक हृदयसँ दुःखक नाश होइत अछि।

दोसरा शब्दें—

कोमल लाल कमल हाथमे लेने मनोहर आमक छाहमे बैसि कमलक पत्तीकें मनहि मन गनैत अछि, देह दुवरायल एवं मनमोहक छैक। मुह चान सन छैक; मन्द मुसुकान भरल छैक जे नवीन अमृत-सन मादक अछि। एहन रागिनी पवन-तनयक (हनुमानक) मतें श्रीरागक हृदयक माला (मालस्री) कवि जनमे प्रसिद्ध अछि।

१, 'गतए'। २. चाहन। ३. 'तनये'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पद्यञ्च)

सस्मेराननवक्र[1]चन्द्ररुचिरोरष्कुम्भयुग्मानमत्
तन्वङ्गी हृदयेन हन्त! गणयत्यम्भोज-पत्रावलीम्।
गौराङ्गी सहकार-सार-सघनच्छाया-निषण्णा परं
श्रीरागेण विनोदमेति मनसः सेयंमता मालस्री ॥२६॥

(५-४) चतुर्थी धनास्री यथा

जौवन ही तन दूब-दलद्दुति
दूबरि हुए अतिशय[2] तउ दीपति
कएसे सकए सहि ओए विरहज्जर
ता तें लिखए पट प्यारे की सूरति।
छीन-कपोल धरैं कपिलच्छवि
नञोन के नीर छपी कुच मूरति
रागिनि-रागिनि में अतिगन्य हुए
धन्य धनासिरि बएठि बिसूरति॥

संस्कृत पद्यहु मे—

मुसुकाइत मुह टेढ़ (द्वितीयाक) चन्द्रमा सन सुन्दर लगैत छैक। घैल सन दूनू स्तनक भारसँ झुकि गेलि अछि। एहन कोमलांगी हृदय सँ दुःखी होइत कमलक पत्ती सभकेँ गनैत अछि। गौरवर्ण कोमलाङ्गी आमक सघन छायामे बैसलि श्रीरागक सङ्ग मनोविनोद करैत अछि—सएह रागिणी 'मालस्री' कहबैत अछि।२६।

(५-४) धनास्री

युवावस्थहिमे दूबिक पात सनक हरियर देह अत्यन्त दुबरा गेल छैक तथापि कान्तिसँ युक्त छैक। कोना ई एहि विरह-ज्वरकेँ सहि सकैत, तेँ वस्त्र पर प्रियक चित्र लिखैत अछि। क्षीण गाल पिरोछ लगैत छैक। आँखिक नोर स्तन पर खसैत छैक। रागिनी सभमे प्रमुख स्थान रखैत ई रागिनी धनास्री धन्य होइतो विवर्ण भेलि बैसलि अछि।

---

१. वक्त्र। २. 'शय' मूलमे नहि अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपि च)

झीन - पटम्बर - लीन मनोहर
दूबर देह-लता झलकए
कपिल-च्छवि छीन कपोल लिग्ने
उर लोचन नीर नरी छलकए।
दूब-सिरी सि घनासिरि - स्त्री
बिलखए विरहज्जर तें दलकए
सिरिराग - वियोगिनि जोगिनि सी
जेहि देखत हो हिअरा हलकए ॥

(पद्यञ्च)

सजल - धरणि - दूर्वा-दीप्तिरुद्वेग - मूर्त्तिः
करकलित[1] शलाका कान्तमूर्त्तिं लिखन्ती ।
बत कपिल - कपोला सावसन्ना घनास्त्री
विरह-दहन - दूना वाष्पधारां जहाति ॥२७॥

दोसरा शब्दें—

पातर पाटक वस्त्रमे रहैत सुन्दर दुबरायल देहरूपी लत्ती झलकि रहलैक अछि। पिरोंछ एवं क्षीण गाल तथा छाती पर आँखिसँ नोर छलकि पड़ैत छैक। दूबिक शोभा सन एहि धनासिरी रागिनीक सौन्दर्य पसरि रहल छैक, मुदा ई विरहक ज्वरसँ काँपि रहलि अछि। श्रीरागक ई वियोगिनी प्रिया योगिनीक सन लगैत अछि जकरा देखितहिँ हृदय पघिलय लगैत छैक।

संस्कृत पद्यहु मे—

हलगर धरती पर जनमल दूभि सन कान्ति छैक। उद्विग्न भेलि हाथमे काठी लेने प्रियक मूर्त्ति लिखैत अछि। पिरोंछ गाल छैक। विरहक ज्वालासँ विकल ओ अत्यन्त खिन्न ई धनास्री रागिनी नोरक धार बहा रहलि अछि।२७।

१. कलकलित ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(५-५) पंचमी आसावरी यथा

मलयाचल के वर शृङ्गनि मे
रङ्ग-रङ्गन भातिन-भाति करए
तब मोर के पिच्छ परिच्छद कए
गज-मोतिम हार हिञ्ञे में धरए।
हरिचन्दन तें फनिराए लगाए
किञ्ञे करकंगन रूप हरए
सुर सारि संगीत विचारि असावरि
अएसी कही जग प्रीति करए॥

(अपि च)

रङ्ग रङ्गी मलयाचल सृङ्ग मे
सएल करए कत भाँति बनाई
चन्दन तें फनि ज्ञानि महामनि
कङ्कन कए तनु मांह तनाई।
माल गले गज मोतिन के
सिखि-पिच्छ लिञ्ञे कविजू हैं जनाई
बीन प्रवीन बजावत हए
जग अएसि असाबरि मान मनाई॥

(५-५) आसावरी

मलय पर्वतक उत्तम चोटी पर अनेक प्रकारक रङ्ग-रभस करैत अछि। देह पर मयूरक पाँखि सजाक' गजमुक्ताक हार हृदयमे धरैत अछि। हरिचन्दन (देववृक्ष) स' फणिराज (साँप) आनि हाथमे लपेटि कँगनाक रूप हरैत अछि—एहन रागिणीकें सकल देवता सङ्गीत विचारि असावरी कहैत छथि, जे लोकके प्रसन्न करैत अछि।

दोसरा श दें—

मलय पर्वतक शृङ्ग पर आसक्त भेलि अनेक प्रकारें विहार करैत अछि। चाननक गाछ पर स' साप आनि तकर महान् मणिसँ कँगना बनाय अङ्गमे लगबैत अछि। गरामे गजमोतीक हार लटकओने अछि। मयूरक पाँखि लेने एकरा कविलोकनि वर्णन कयने छथि, कुशतापूर्वक वीणा बजबैत अछि— एहन रागिनीकें लोक आसावरी कहैत अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पद्यञ्च)

विषधर-करभूषा सञ्चरन्ती सुतुङ्ग-
मलय-शिरसि पिच्छैर्लक्षिता दीप्तमूर्त्तिः।
सुललित-बहुमूल्यस्थस्थूल - मातङ्ग - मुक्ता
विमल-हृदय - हाराऽऽसावरीयं विभाति ॥२८॥

अथ मेघरागिण्यः

मलारी देशिका चैव भूपाली टंकके तथा।
दक्षिणा गुर्जरी चैव वारिदस्य वरस्त्रियः ॥२९॥

(६-१) तत्र प्रथमा मलारी यथा

आनि बनी जब जोबन तें
तब कामिनि के ढिग नाहि पिमा
तेहि कारण ते मन ही मन खीन
मलोनि भञी मति-हीन तिम्रा।
बीन लिञो कर राग किञो
करुन-स्वर गाउति जोति दिम्रा
नव नीरद की बरनारि मलारि
बिलोकत ही दलि जात हिम्रा॥

संस्कृत पद्यहुमे—
हाथमे सापक गहना पहिरने अछि। उच्च मलय पर्वतक शिखर पर विचरण करैत अछि। मयूरक पाँखिक चकमक रूपसँ युक्त अछि। सुन्दर बहुमूल्यवान् पैघ-पैघ गजमोतीक हार हृदयमे लटकओने अछि। एहन ध्यानवाली ई रागिनी आसावरी थिक।

[६] मेघरागक रागिनी

मलारी, देशिका, भूपाली, टंक तथा दक्षिण-गुर्जरी—ई पाँचो टा मेघरागक रागिनी थिक। ९।

(६-१) मलारी

जबानी आनिक' जखन युवती भेलि तँ एहि कामिनीक लग प्रिय नहि रहलथिन। ताहि कारणसँ मनहि मन खिन्न एवं मलिन भेलि ई नारी मति-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यञ्च —

प्रथम-वयसि तादृक्-प्रेम्णि पत्युर्वियोगात्
मलिन - वसनवेशा पाण्डुगण्डाननश्रीः ।
स्मरति विधृत-वीणा कामिनी कान्तमारात्
सकरुणमतिदीप्ति गीतसत्कैतवेन ॥३०॥

(६-२) द्वितीया देशकारी यथा

पीन पयोधर, बञ्नेन सुधाकर
कुंकुम के छवि देह धरे हुए
अंगन अंग बनी तरुनी
दृग वारिज से, वर वेस करे हुए।
केलिकला अतिप्रीतिमती
पति के नित ही नित चित्त हरे हुए
बूझि विचारि कही देसकारि ए
मेघ प्रिया सब-राग - परे हुए ॥

हीन (बुद्धिशून्य) भ' गेलि अछि। हाथमे वीणा ल' क' राग बजबैत करुण स्वरमे गाबि ज्योति प्रकट करैत अछि। एहन नवीन मेघक श्रेष्ठ पत्नी मलारी कें देखितहि हृदय हहरि जाइत छैक।

संस्कृत पद्यहुमे —

पहिले वयसमे ताहि तरहक प्रेम रहलो पर पतिक वियोग भ' गेल छैक। मलिन बस्त्र पहिरने अछि। गाल पिअरायल छैक। वीणा धयने ई कामिनी दूरहिसँ अत्यन्त करुण स्वरमे गीतक छलें पतिक स्मरण करैत अछि।

(६-२) देशकारी

पुष्ट स्तन, चन्द्रमाक सन वदन, देहमे कुंकुमक छटा, अङ्ग-अङ्गमे तारुण्य भरल, कमल सनक आँखि, सुन्दर वेश, केलिकलामे अत्यन्त प्रीति रखैत, नित्य पतिक चित्तकें हरण करैत एहि रागिनीकें लोक बिचारिक' मेघरागक प्रिया देशकारी कहैत छथि जे सभ रागसँ उपर अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपि च)

कुंकुम की दुति-दीपित देह-लता
नित ही नित कन्त - रता हुए
नञ्नेन बने वर वारिज से
जेहि चन्दमुखी नव कुन्द-दता हुए।
वेस बनी, गिरिराज उरोज
लसए रति सी रति रीतिरता[1] हुए
वारिद की दयिता देसकारि ए
अएसी कही हतुमन्तमता हुए॥

पद्यञ्च

कान्ता कुंकुमलेपतः स्मितसुधा-निष्यन्दि-चन्द्रानना
सत्प्रत्यङ्ग - विभूषणाऽम्बर - वलन्नेत्राऽरविन्दद्युतिः।
शैलप्राय - पयोधरा रतिकला - चातुर्य - धैर्यादिभिः
श्रीमत्कान्तघनस्य मानस-गता सेयन्तु देशी मता॥३१॥

दोसरा शब्दें—

लत्ती जकाँ पातर देह कुंकुमक कान्ति सन लोकैत छैक। सतत प्रियमे रत रहैत अछि। आँखि कमल सन छैक। चन्द्रमा सन मुह छैक। कुन्द सन दाँत छैक। देहकें सजओने अछि। पहाड़ सन स्तन छैक। रति (कामदेवक पत्नी) सन सुन्दरी अछि। कामक कलामे रत रहैत अछि—एहन रागिनीकें हनुमन्तजी मेघरागक पत्नी देशकारी कहैत छथि।

संस्कृत पद्यहुमे—

कुंकुमक लेपसँ सुन्दरि लगैत अछि। मुस्कानसँ मुह अमृत बरिसबैत चन्द्रमा-सन लगैत छैक। प्रत्येक अङ्गमे गहना एवं सुन्दर वस्त्र पहिरने अछि। आँखिमे कमल सन कान्ति छैक। स्तन पहाड़ जकाँ ऊँच छैक। रतिकला, चतुरता, धैर्य आदिसँ अपन प्रियतम मेघ-रागक मनमे पैसि गेलि अछि—एहन रागिनी देशी कहबैत अछि।३१।

१. रीति तहा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(६-३) तृतीया भूपाली यथा

गोरे सो अङ्ग, सुधानिधि सो
मुख, तुङ्ग उरोज धराधर तें
करें कुंकुम के तनु में अनुलेपन
पीर परी विरहज्जर तें।
हर-ध्यान-रता ममता रस ताहि
मनोहरता - विरताऽधरतें
बरनी वनिता वर वारिद की
ए भूपालि भलें सुर-सागर तें॥

(अपि च)

कन्त-वियोग वेआधि ते धाधि
बरए, जेहि शम्भु-समाधि लगी हए
लोचन साओन में मन-भाओन
वारिद के पग पाग पगी हए।
आनन सोम-समान सुशोभित
केसर अंग में रंग रंगी हए
कुञ्जर चालि भुपालि कही
जेहि गोर पयोघर जोति जगी हए॥

(६-३) भूपाली

गोर-सन देह, चन्द्रमा सन मुह, पर्वत सन उच्च स्तन, देहमें कुंकुमक लेप, विरह-ज्वरसँ पीड़िता अछि। महादेवक ध्यानमे रत, ममताक रसमे लिप्त अछि, ठोर परसँ सौन्दर्य समाप्त भ' गेल छैक। एहन रागिनी मेघरागक उत्तम स्त्री थिक जे मानू स्वरक समुद्र थिक।

दोसरा शब्दें—

स्वामीक वियोगक व्याधिसँ जरैत महादेवक ध्यान लगओने अछि। आँखि साओन मासमे प्रिय मेघक पयरमे लिप्त छैक। मुह चन्द्रमा सन सुन्दर छैक। देह केसरक लेपसँ रङायल छैक। हाथी सन चालि (गति) छैक ओ गोर स्तन जगमगा रहल छैक—एहन रागिनीकेँ भूपाली कहैत छैक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पद्यञ्च)

काश्मीराऽरुण-कान्ति - कायलतिका लावण्य-कल्लोलिनी
पर्वेन्दुप्रतिमाऽऽनना हरिणदृक् शैलाधिराजस्तनी ।
गौरांग्याः किल वारिदस्य विरहात् खेदं वदामः कियत्
कुत्राऽपि प्रियसङ्गमाय गिरिजा-कान्तं हृदि ध्यायति ॥३२॥

(६-३) चतुर्थी टंकनाम्नी यथा

नलिनी-दल की अतिशीतल सेज में
सोअति वाम-वियोगिनि ता लखि
काकु सुनो बहु तए सुनि कए अति
व्याकुल-चित्त ओए चित्र भए जखि ।
सोन के रङ्गसि अंगसिरी उह पाए
कहूं तं अओ अङ्क लई कखि
एआ सञों कहए कविकोविद टङ्क
मयङ्कमुखी सन बात कही सखि ॥

संस्कृत पद्यहुमे —

लत्ती सन पातर देह, केशर सन लाल कान्ति, सौन्दर्यक धार जकाँ लगैछ । पूर्णिमाक चन्द्रमा-सनक मुह छैक । हरिण सन आँखि छैक । पर्वतराज सन स्तन छैक—एहन गोरवर्णा भूपाली रागिनीकें मेघरागक विरहसं जे दुःख छैक तकर कतेक व नि हो । ओ तं कतहु बैसलि प्रियक सङ्गमक लेल केवल हृदय मे महादेवक ध्यान करैत अछि ।

(६-४) टङ्क

कमलिनीक पातक अत्यन्त ठण्ढा ओछाओन पर सुन्दरी वियोगावस्थामे सुतैत (अकस्मात्) अपना पतिकें देखि हुनक आक्षेपकें बहुतो खेप सुनिकं अत्यन्त व्याकुल चित्तें मूर्त्तिवत् भ' जाइत अछि। सोनाक रङ सन देहक शोभा कें पाबि ओ (पति) भरिपाँजक' कोरमे बैसाय लैत छथि - एहन रागिनीकें कवि वरलोकनि टङ्क कहैत छथि जकरासं चन्द्रमुखी सखी सभ गप्प करैत रहैत छथि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अपि च)

पूरन - चन्द - मुखी विदुषी
तन सोन-सिरी सि सिरी छुटकए
नलिनीदल सीतल सेजें सुती
कत रोवति बालम की रटकए।
वारिद वाम-वियोगिनि ता लखि
आए गए तबहीं झटकए
भरि अङ्क विलोकि कए टंक तिरी
फिरि नाह लई हिअरा तटकए ॥

पद्यञ्च

रमण-घन-वियोगात् कुत्रचित् पद्मिनीनां
दलविरचिततल्पे सुन्दरी रोदिति स्म।
पतिरपि किल दैवादागतोऽस्यास्तदानीम्
अहह! विमलमङ्कं वल्लभामानिनाय ॥३३॥

(६-५) पञ्चमी दक्षिण-गुर्ज्जरी यथा

घाम किञ्चे मलयाचल में
तन श्याम सुशोभित वार वने हुए

दोसरा शब्दें—

पूर्णचन्द्रमा-सन मुहबाली, विदुषी, देहसँ सोनक शोभा सन छिटकैत, कमलिनीक पातक ओछाओन पर सुतलि, बहुत कनैत प्रियक हेतु रकटल (लालायित), बाल्यावस्थहिसँ वियोगमे पड़लि—एहि रागिनीकेँ मेघराग (वारिद) देखि झटदय आबि गेलाह। टंक स्त्री (रागिणी) हुनका देखि भरि पाँजेँ पकड़ि अपन पतिकेँ लय हृदयकेँ जुड़बैत अछि।

संस्कृत पद्यहुमे—

अपन प्रिय मेघरागक वियोगसँ कतहु कमलिनीक पत्तीक ओछाओन पर पड़लि सुन्दरी कनैत अछि। संयोगवश पतियो तहिखन आबि जाइत छथिन आओर पवित्र कोरमे प्रियाकेँ समेटि लैत छथिन।

(६-५) दक्षिण-गुर्जरी

मलय-पर्वत पर बास कयने, श्यामल देह अत्यन्त शोभित भेल, पल्लवक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पल्लव की सुख सेज विछाए
ओछाइ सञ्ञा बेलि के तम्बू तनी हुए।
वीन धरें लघुराग बजए
बहु तान स्त्रुति-स्वन भेद भनें हुए
दच्छिन - गज्जरि उज्ज़ल वेस़
संगीतन में जाके गान गने हुए॥

(अपिच)

प्रीति - दुखी हिमधाम - मुखी
मलयाचल धाम में वाम विराजति
वीन लिञ्नें कर राग किञ्नें वर
तान-तरंग को कामिनि साजति।
बेलि-विलच्छन तम्बुरिश्रों तहाँ
पल्लव-सेज सुती नित गाजति
दच्छिन - गुज्जरि अएसी कहीं
कविश्रों तन-रूप सुनी रति लाजति॥

(पद्यञ्च)[1] —

यस्याः श्रीमलयाचले विचकिलैरावास-वेश्माऽरुण-
श्रीमत्पल्लवतल्पभाग वितनुते वीणाधुरीणा ध्वनिम्।

सुखदायक ओछान ओछाक' नीक जकाँ बेलीक (?) तम्बू (वस्त्रक घर) तनने अछि। वीणा धयने मन्द-मन्द राग ब्ॅजैत अनेक तान जे कानक लेल मधुर स्वरक भेद प्रदर्शित करैत अछि तकरा प्रकट करैत, उज्ज्वल वेश धारण कयने दक्षिण गुर्जरी कहवैत अछि जकर संगीतमे गण्यमान गीत होइत अछि।

दोसरा शब्दें —

प्रेमवश दु:खी चन्द्रमुखी मलयपर्वत परक घरमे विराजमान अछि। ई कामिनी हाथमे वीणा लेने राग बजवैत तानक तरंग कें सजा रहलि अछि। बेलीक (?) बिलक्षण तम्बू मे पल्लवक ओछाओन पर सुतलि नित्य दु:खी होइत अछि — एहन रागिनीकें दक्षिण-गुर्जरी कहैत छैक जकर देहक रूप सुनिक' रति (कामक पत्नी) सेहो लजाय जाइत छथि॥

संस्कृत पद्यहु मे —

मलय पर्वत पर विलक्षण आवास-गृह छैक; लाल मनोहर पल्लवक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सद्वेशा घन-कामिनी कचरुचिः संगीत-संख्यावतां
मूर्द्धन्या किल किन्नरीव भुवने सेयं मता गुर्जरी ॥३४॥

इति श्रीलोचनशर्म-विरचितायां रागतरङ्गिण्यां
रागिणी-मूर्त्ति-निरूपणन्नाम द्वितीय-
स्तरङ्गः समाप्तः ॥

ओछाओन छैक, वीणा बजयबामे पटु मनोहर ध्वनि करैत अछि। सुन्दर वेश बनओने अछि—एहन मेघ-रागक प्रिया केशविन्यासें सुन्दरि लगैत संगीतवेत्ता लोकनिक हेतु उत्कृष्ट गुर्जरी रागिनी एहि संसारमे किन्नरी (देवगण विशेष) जकाँ प्रसिद्ध अछि।३४।

एहि प्रकारें श्री लोचन शर्मा द्वारा विरचित रागतरंगिणी मे रागिणीक मूर्त्ति निरूपण नामक द्वितीय तरंग समाप्त भेल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ तृतीयस्तरंगः

अथैषाम् उत्पत्ति-निदानं नादो निरूप्यते । तत्राऽभियुक्ताः :—

नाभेरूर्द्ध्वं हृदिस्थानान्मारुतः प्राणसंज्ञकः ।
नदति ब्रह्मरन्ध्रान्ते तेन नादः प्रकीर्त्तितः ॥१॥
आकाशाऽग्नि-मरुज्जातो नाभेरूर्द्ध्वं समुच्चरन् ।
मुखेऽतिव्यक्त[1]मायाति यः स नाद[2] इतीरितः ॥२॥

स च प्राणिभवः, अप्राणिभव, उभयसम्भवश्च[3] ।
आद्यः कायभवो वीणादिभवस्तु[4] द्वितीयकः ।
तृतीयोऽपि च वंशादिभव इत्थं त्रिधा मतः ॥३॥

तृतीय तरङ्ग

आब राग सभक उत्पत्तिक कारण रूप नादक वर्णन कयल जाइत अछि । एहिठाम माननीय आचार्य लोकनि कहैत छथि—

नाभिक ऊपर हृदसँ प्राण नामक वायु ब्रह्मरन्ध्रक अन्तमे आबाज करैत अछि, तेँ ओ आबाज नाद कहबैत अछि ॥१॥

आकाश, अग्नि ओ वायुसँ उत्पन्न भ' नाभिसँ ऊपर उच्चारणक हेतु प्रस्थान क' मुहमे आबि जे अत्यन्त स्पष्ट भ' जाइछ सएह नाद कहबैछ ॥२॥

ओ (नाद) तीन प्रकारक होइत अछि :–(१) प्राणिभव (जीवसँ उत्पन्न), (२) निर्जीव वस्तुसँ उत्पन्न, (३) दूनूसँ उत्पन्न जाहिमे पहिल शरीरसँ दोसर वीणा आदिसँ तथा तेसर बाँस आदिसँ उत्पन्न होइत अछि ॥३॥

---

१. मुखेतिव्यक्ति । २. यः स नादस्स ईरितः । ३. स च प्राणिभवोऽप्राणिभवश्चोभयसंभवः—शब्दकल्पद्रुम । ४. वीणादिसम्भवस्तु द्वितीयः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदुक्तं ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मग्रन्थिश्च यो मतः ।
तन्मध्ये संस्थितः प्राणः प्राणाद् वह्निसमुद्भः ।
वह्नि-मारुतसंयोगान्नादः समुपजायते ।।४।।
न नादेन विना गीतं, न नादेन विना स्वरः ।
न नादेन विना ज्ञानं, न नादेन विना शिवः ।।५।।

एतादृश-नादमय-स्वर-मूर्च्छनाऽधीना च रागोत्पत्तिः । तदुक्तम्—

स्वरः सम्मूर्च्छते यत्र रागतां प्रतिपद्यते ।।६।।

मूर्च्छना च गीयमान-गीते क्वचिज्जायत इति गीतं निरूप्यतेः—

धातु-मातु - समायुक्तं गीतमित्युच्यते बुधैः ।
तत्र नादात्मको[1] धातुर्मातुरक्षर-संचयः ।।७।।

जे ब्रह्मक स्थान कहबैछ तथा जे ब्रह्म-ग्रन्थि कहबैछ, तकरा बीचमे प्राण रहैत अछि ओ प्राणसँ वह्नि (आगि)क उत्पत्ति होइत अछि। वह्नि ओ मारुत (प्राण)क संयोगसँ नाद उत्पन्न होइत अछि ।।४।।

नादक बिना गीत नहि भ' सकछ, नादक बिना स्वर नहि भ' सकैछ नादक विना ज्ञान नहि भ' सकैछ ओ नादक विना शिव (ईश्वर वा कल्याण) नहि प्राप्त भ' सकैछ ।।५।।

एहि प्रकारक नादसँ व्याप्त जे स्वर तथा मूर्च्छना तकरे अधीन रागक उत्पत्ति होइछ। जेना कहल गेल अछि :—

जत' स्वर मूर्च्छनाकेँ प्राप्त करैछ तत' ओ रागस्वरूप भ' जाइत अछि ।।६।।

से मूर्च्छना गाओल जाइत गीतमे कतहु-कतहु उत्पन्न होइत अछि। अतः गीतक निरूपण कयल जाइत अछि। एहि विषयमे अभियुक्त मान्य विद्वान् लोकनिक कथन छनि—

धातु ओ मातुक संयोगकेँ पण्डितलोकनि गीत कहैत छथि। ताहिमे नाद-स्वरूप धातु कहबैछ ओ अक्षरक समुदाय (गेय पद्य) मातु कहबैत अछि ।।७।।

१. नादात्मको ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतएव केवलाक्षरसंचये गीतव्यवहारस्तु भाक्त इति मन्तव्यम् । तच्च गीतं द्विविधम् :—

गीतन्तु द्विविधं प्रोक्तं यन्त्र-गात्रविभेदतः ।
यन्त्रं स्याद् वेणु-वीणादि, गात्रं तु मुखमुच्यते ॥८॥

इत्युक्तेः । प्रत्येकमेतदपि द्विविधम् :—

निबद्धमनिबद्धञ्च गीतं द्विविध[1]मुच्यते ।
अनिबद्धं भवेद् गीतं वर्णादिनियमैर्विना ॥९॥
यद्वा गमक-धात्वङ्ग-वर्णादि-नियमैर्विना ॥१०॥
निबद्धं च भवेद् गीतं ताल-मान-रसाञ्चितम् ।
छन्दो-गमक-धात्वंग-वर्णादि-नियमैः कृतम् ॥११॥

अतः केवल अक्षरक संचयमे जे गीत शब्दक प्रयोग होइछ से भाक्त (लाक्षणिक) थिक, ई बुझबाक चाही ।

से गीत दू प्रकारक कहल गेल अछि :—

गीत दू प्रकारक अछि—(१) यन्त्रसँ उत्पन्न ओ (२) गात्र (शरीर) सँ उत्पन्न । यन्त्र भेल बाँसुरी, वीणा इत्यादि ओ गात्र भेल मुख ॥८॥

एहूमे प्रत्येक दू-दू तरहक होइत अछि :—

निबद्ध ओ अनिबद्ध भेदेँ गीत दू प्रकारक होइत अछि। अनिबद्ध गीत ओ भेल जाहिमे वर्ण आदिक नियम नहि रहय (छन्द नहि हो) अथवा गमक धातु, अङ्ग, वर्ण इत्यादिक नियमक विना जे गीत हो से अनिबद्ध कहबैत अछि ॥९-१०॥

निबद्ध गीत ओ कहबैत अछि जाहिमे ताल, मान ओ रस स्पष्ट रूपेँ हो तथा छन्द, गमक, धातु, अङ्ग, वर्ण इत्यादिक नियम रहय ॥११॥

(उपर्युक्त पद्यमे) गमकक तात्पर्य भेल कम्पित इत्यादि, धातुक अर्थ भेल नाद, अङ्ग भेल पद, ताहिसँ विरुद आदि गृहीत होइत अछि। ताल चच्चत्पुट,

१. द्विविधि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गमकाः कम्पितादयः, धातुर्नादः, अंगानि पदानि, तेन बिरुदादीनि। तालाः चच्चत्पुट-चाचपुटादयः,[१] मानं[२] तु प्रसिद्धम्, रसाः शृंगारादयः, छन्दांसि एला-झूम्ब-तालादीनि। एतेषां प्रपञ्चस्तु मत्कृत-रागसंगीत-संग्रहेऽन्वेष्टव्यः।

तादृशमपि गीतं द्विविधं, "मार्ग-देशीविभेदेन गीतं तु द्विविधं मतम्"[३] इत्युक्तेः। मार्गास्तु गन्धर्वादि-गीतगतयः। देश्यश्च तत्तद्रागाश्रिताः[४] तास्ताः तत्तद्देश-गीतगतयः।

इह तु मार्गाऽभावान्नोदाहृताः ते, अग्रे तु क्वचिद् उदाहर्त्तव्याः। देश्यामपि स्वदेशीयत्वात् प्रथमं मिथिलाऽपभ्रंश-भाषया श्रीविद्यापति-कवि-निबद्धाः तास्ता मैथिल-गीत-गतयः प्रदर्श्यन्ते।

चाचपुट इत्यादि कहल जाइत अछि, मान प्रसिद्धे अछि, रस शृंगार इत्यादि होइत अछि, छन्द भेल एला, झूम्ब, ताल इत्यादि। एहि सभक विस्तारपूर्वक वर्णन हमर (लोचन कविक, बनाओल 'रागसङ्गीत-सङ्ग्रह' नामक ग्रन्थमे देखक चाही।

एहू प्रकारक गीत निबद्ध ओ अनिबद्ध) दू प्रकारक होइत अछि। जेना कहल गेल अछि—(१) मार्ग ओ (२) देशी एहि भेदसँ गीत दू प्रकारक होइत अछि॥

मार्ग गन्धर्व आदि गीतक गति (लय) केँ कहैत छैक। देशी तत्तत् राग पर आश्रित तत्तत् देशक गतिकेँ कहैत छैक। एतय तँ मार्गक अभावेँ ओकर उदाहरण नहि प्रस्तुत कयल गेल, आगाँ कतहु प्रस्तुत कयल जायत। देशियहु मे अपन देशमे प्रचलित रहबाक कारणेँ पहिने मिथिला देशक अपभ्रंश भाषा द्वारा श्री विद्यापति कविक रचित तत्तत् मैथिल-गीत प्रदर्शित कयल जाइत अछि॥

---

१. तालाश्चच्चपुटादयः। २. मत। ३. तद्रागा। ४. एहिठाम 'स्वदेशीयत्वात्' पाठ उचित प्रतीत होइछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र प्रथमं तदुत्पत्ति-प्रदर्शनम्

विख्यात-भूदेव - सुवंशसूति-
विद्याविभूतिर्भवभूतिरासीत् ।
स देवतायाः किल सिद्धियोगात्
काव्यं पुराणप्रतिमं चकार ॥१२॥
अधीत्य तत्संसदि पार्थिवेभ्यः
कथास्तदीयाः कथयाम्बभूव ।
अतस्तदानीं सुमतिः कलावान्
कायस्थसूनुः कथको बभूव ॥१३॥
सुमति-सुतोदय-जन्मा जयतः शिवसिंहदेवेन ।
पण्डितवर-कविशेखरविद्यापतये तु संन्यस्तः ॥१४॥
एतैः सङ्गीतविद्भिः सुरनिकर-सरित्कान्तमन्तर्विगाह्य
प्रोन्मीलत्सुस्वरौघ-प्रवितत-गतिकाः कल्पिताः केऽपि रागाः ।
तज्ज्ञानार्थं तु विद्यापति-कवि-कृतिना कल्पितास्तु ध्रुवा याः
तासामेकोऽग्र-गाताऽभवदिह जयतः संसदि श्रीनृपस्य ॥१५॥
पितुरन्यूनगुणः किल कलाभिरानन्ददः प्रथितः ।

ताहिमे पहिने मैथिल गीतक उत्पत्ति प्रदर्शित करैत छी ।

प्रसिद्ध ब्राह्मण-वंशमे उत्पन्न, विद्यासँ अलंकृत 'भवभूति' नामक एक विद्वान् छलाह । ओ देवताक सिद्धि प्राप्त क' पुराणोपम काव्यक रचना कयलनि । से काव्य पढ़िक' कायस्थवंशक 'सुमति' नामक कलाविद् हुनक बनाओल कथासभ राजालोकनिकेँ कह थिन । अतः ओ (सुमति) ओहिसमयमे 'कथक' कहाबय लगलाह ।१२-१३।

सुमतिक पुत्र 'उदय' भेलाह । तनिक बालक 'जयत'केँ महाराज शिवसिंह पण्डितवर कविशेखर विद्यापतिक लग राखि देलथिन ।१४।

ई संगीतवेत्ता लोकनि स्वरसमूहरूपी समुद्रक भीतर पैसिक' जागृत सुन्दर स्वरक समूह द्वारा विकसित अनेक रागक कल्पना (उद्भावना) कयलनि । ओहि गानक हेतु कविश्रेष्ठ विद्यापति द्वारा जे ध्रुवपद बनाओल गेल, ताहि पदक राजाक सभामे एकमात्र अग्रगायक जयत भेलाह ।१५।

जयतकेँ 'कृष्ण' नामक पुत्र छलथिन जे पिताक समान गुणवाला, कलासँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जयतादजनि वितृष्णः कृष्णो निजदेशिगायकः सदसि ।।१६।।

ततश्च—

विमलमतिरतीश - प्रायकायः कथायाः
सदसि कथनकारी गीतगानैर्गरिष्ठः ।
सफल जनिरनन्य - ज्ञान-सामान्य - विद्या-
विदित-हरिहराऽऽख्यो मल्लिकः प्रादुरास ।।१७।।
खड्गराम-घनश्याम-वल्लीरामास्त्रयः सुताः ।
एतस्य बत तेष्वेको घनश्यामस्तु गायकः ।।१८।।
रामान्ता लछि-राघव-टीकाख्याः शीलसम्पदः ।
स्वदेशिगायकास्ते तु घनश्याम - सुतास्त्रयः ।।१९।।
श्रीमद्विद्यापतिकवयितुः काव्यवर्णाऽनुबद्धाँ-
स्तत्तत्प्रायानथ तदनुग - ख्यातगीतैर्निबद्धान् ।

आनन्ददायक, प्रसिद्ध ओ निर्लोभ छलाह। ई राजाक सभामे अपना देशक गायक भेलाह।१६।

हुनकासँ हरिहर मल्लिक उत्पन्न भेलाह जे निर्मल बुद्धिवाला, कामदेव-सन देहवाला, सभामे कथाक प्रवचनकर्त्ता, गीत गयबामे श्रेष्ठ, उत्कृष्ट ज्ञानवान ओ विद्यावान छलाह।१७।

हिनका तीन बालक भेलथिन खड्गराम, घनश्याम तथा बल्लीराम। ताहिमे एक घनश्याम गायक भेलथिन।१८।

घनश्यामकेँ तीनि बालक भेलथिन जे स्वदेशी रागक गायक भेलाह लच्छिराम, राघवराम ओ टीकाराम।१९।

श्रीमान् विद्यापतिकविक काव्य रचनामे गीतमे निबद्ध तथा तनिक अनुगमन करैत लिखल गेल तत्सदृश प्रसिद्ध गीत सभमे निबद्ध राग सभकेँ ओहि सभ ठामसँ जेना-तेना एकत्रित क' राजा नरपतिक स्नेहपात्र पण्डित लोचन कवि प्रेमपूर्वक लिखलनि। ओ राग सभ निर्दिष्ट कयल जाइत अछि :—भैरवी, बड़ारी, कनिकहु मतेँ कौशिक, देशाख, सुखदायक रामकरी, ललिता, केदार,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागानेभ्यः कथमपि तथा वर्तुलीकृत्य धीमान्
प्रेम्णा श्रीमन्नरपति-रतो लोचनस्तांल्लिलेख ॥२०॥

तेच—

भैरव्यथ बराड़ी च कौशिकः कस्यचिन्मतः ।
देशाखः सुखदा रामकरी च ललिता तथा ॥२१॥

केदारश्चाऽपि कामोदः श्रीरागोऽथ मधुस्तथा ।
मालवश्चाऽऽशावरी च मलारी मदिरेक्षणा ॥२२॥

भूपाली गुर्जरी चैव षट्त्रिंशद् रागमध्यगाः ।
तीरभुक्तौ विजातीयां गतिमासाद्य संस्थिताः ॥२३॥

तीरभुक्त्यन्यदेशेभ्यस्तीरभुक्तौ विलक्षणाः ।
स्वरभेदात् परं नाम्ना तेन तेनैव विश्रुताः ॥२४॥

[७] तत्र प्रथमा भैरवी

इयं तु भैरवभार्या । रूपमुक्तं प्राक् । एतस्यास्तु गीतोत्पत्तिकत्वान् तदुदाह्रियते[६] तत्र जयदेवः—

कामोद, श्रीराग, वसन्त, मालव, आशावरी, मदमातल आँखिवाली मलारी, भूपाली तथा गुर्जरी ई सभ छत्तीस रागक अन्तर्गत अछि, जे तिरहुतमे विजातीय (खास तरहक) गतिकें प्राप्त कयने अछि ।२०-२२॥

यद्यपि ई सभ तिरहुतसँ भिन्न देशसँ तिरहुतमे भिन्न लय वाला होइत अछि, तथापि एकर नाम एतहु ओएह सभ प्रसिद्ध अछि ।२३।

[७] । ताहिमे पहिल भैरवी ।

ई भैरवक पत्नी थिक । एकर रूप पहिनहि कहल गेल अछि ।

एहि रागिनीक उत्पत्ति गीतसँ होइत अछि । अतः गीत उदाहृत कयल जाइत अछि । ताहिमे जयदेवक गीत देखू—

६. 'उदाहृयते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रजनि-जनित-गुरुजागर-राग-कषायितमलस-निमेषम् ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदित-रसाभिनिवेशम् ॥
हरि हरि
याहि माधव ! याहि केशव ![1] मा वद कैतव-वादम् ॥
तामनुसर सरसीरुहलोचन ! या तव हरति विषादम् ॥
(गीतगोविन्दे अष्टमे सर्गे) इत्यादि सुप्रसिद्धम् ॥

अथाऽत्र द्रुत - लघु-गुरु-प्लुतघटितान् चच्चत्पुट-चाचपुटादि - तालान् विहाय, तत्र तत्र अव्युत्पन्नानाम् अलसानामपि झटिति तालगति-ज्ञानार्थं सत्वर-मध्यम-विलम्बितत्वेन सकल - सिद्धान्तान् आदाय तालगतयः प्रदर्श्यन्ते :—

दोहा—

दोए सत्वर अरु मध्य दोए, एआ मे चारिए ताल ।
एआतें बहि बहि जात सुर, तब रागिनि होत विहाल ॥

इति मिथिलाऽनुसारेण भैरव्युदाहरणम् ।

हे हरि, रातुक जगरनासँ लाल भेल एवं अलसायल ओकर आँखि स्पष्टतया रसमय अनुराग प्रकट करैत अछि। हे हरि, हे माधव ! जाउ। हे केशव ! जाउ। अधिक छिड़िआउ जनु, अगराउ जनु। हे कमलनयन, ओकरा लग जाउ जे अहाँक दुःख दूर क' अहाँकेँ प्रसन्न कय दैत अछि ॥..........इत्यादि अतिप्रसिद्धे अछि।[2]

आब एहिठाम द्रुत, लघु, गुरु एवं प्लुत एहिसँ चारि गतिसँ युक्त चच्चत्पुट प्रभृति ताल सभकेँ छोड़ि, ओहि ताल सभक अनभिज्ञ मन्दबुद्धियोकेँ झटदय तालक गतिक बोध करयबाक हेतु, सत्वर, मध्यम ओ विलम्बित एहि तीनू रूपमे सकल सिद्धान्तकेँ समेटि तालक गतिकेँ प्रदर्शित करैत छी।

दूटा सत्वर एवं दूटा मध्यम, एहितरहेँ एहि (भैरवी)मे चारि ताल होइत अछि। जँ एहि चारू तालसँ स्वर बहकि जाइत अछि तँ ई रागिणी बेहाल (विकृत) भ' जाइछ।

ई मिथिलादेशक अनुसारेँ भैरवीक उदाहरण भेल।

---

१. केशवऽ। २. गीतगोविन्दक आठम सर्ग।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[८] अथ द्वितीया भैरवरागिणी बराड़ी

इयं तु राघवी, पहड़िआ, देशी, माधवी
भठिआली, नेपाली चेति मिथिलायां षड्भेदवती ।

भेदबुद्ध्यर्थमेतेषां देशिगीतेषु कल्पितैः ।
छन्दोभिः क्रियते कोऽपि नियमोऽयममानकः ॥२५॥

छन्दसां तु गुरु-लघुघटितत्वेन तद्व्यवस्था :—

दीर्घो, दीर्घेण संयुक्तो, बिन्दुभाक्, सविसर्गकः ।
संयुक्तादिरिह प्रोक्तो गुरुरन्यो लघुः स्मृतः ॥२६॥
एकारश्च तथोकारः शुद्धो वर्णयुतस्तथा ।
रहयुक्पूर्वको लः स्यात् पदान्तो वा लघुर्मम ॥२७॥

[८] अतः पर भैरवक दोसर रागिनी बराड़ी

ई राघवी, पहड़िया, देशी, माधवी, भठिआली, ओ नेपाली एहि तरहें छओ प्रकारक अछि ।

एहि राग-रागिनी सभमे परस्पर भेद जनबाक हेतु देशी गीतमे रचित छन्द द्वारा किछु नियम कहल जाइत अछि जे अमानक अछि, अर्थात् जतबा मात्रा कहल रहय ताहिमे दू-एक मात्रा कमी-बेशी सेहो रहि सकैत अछि। अमानक = अल्प मानक, जाहिमे मात्राक गिनती कतहु शिथिलो भ' जाय ।२५।

छन्दमे गुरु ओ लघुक विचार होइछ । अतः ओकर व्यवस्था देल जाइछ :—

(१) दीर्घ वर्ण, (२) दीर्घसं युक्त वर्ण, (३) बिन्दु (अनुस्वार) वाला वर्ण (४. विसर्गवाला वर्ण, (५) संयुक्त वर्णसँ पूर्वक वर्ण, ई पाँचो वर्ण एहिठाम गुरु मानल जाइत अछि । एहिमें भिन्न (ह्रस्व) वर्ण लघु कहाओत ।२६।

शुद्ध (स्वतन्त्र) वा व्यंजन वर्णसँ युक्त एकर तथा ओकार, र एवं ह वाला संयुक्ताक्षरसँ पूर्व (यथा-प्र ह्र सँ पूर्व) वर्ण तथा पदक (पादक) अन्तिम वर्ण हमरा (लोचन कविक) मतेँ विकल्पसँ लघु होइछ ।२७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथात्र गणज्ञानार्थं प्रस्तारः

अधस्तादाद्य-गस्य स्याल्लघुः शेषं समं गलैः ।
पूर्वंगैरुद्धरेन्मात्रा गैस्तु वर्णान् प्रपूरयेत् ।।२८।।

सर्वत्राऽत्र त्रिवर्ण-प्रस्तार-गणानेवाऽऽदाय सदसत्फलादि-कथनमिति ते प्रदर्श्यन्ते :—

त्रितयार्ण-प्रस्तारे भूदक-शिखि-काल-ख-रवि-चन्द्रा हि सुराः ।
म-य-र-स-त-ज-भ-नसंज्ञा गणास्तु निजदेवतुल्यफलदानपराः

गणक ज्ञानक हेतु प्रस्तार

आदि ग (गुरु)क नीचाँ लघु राखी, बाँकीक नीचाँ ऊपरक समाने गुरु-लघु दी आ आदिगुरुसँ पूर्वके गुरु .ग) सँ पूर्ति करी ।२८ ।यथा—

मगण—SSS—तीनू गुरु ।

यगण—ISS—आदि गुरुक नीचाँ-लघु ओ बाँकी समाने, आदि सँ पूर्व किछु नहि ।

रगण—SIS—ऊपर पहिल गुरु बीचमे अछि, तकर नीचाँ लघु, तकर बाद गुरु से समाने राखल गेल । आदि गुरुसँ पूर्व गुरुए देल गेल ।

सगण—IIS—आदि गुरुक नीचाँ लघु, शेष उपरक समाने ।

तगण—SSI—ऊपर गुरु तेसर अछि, तकर नीचाँ एहिमे लघु देल गेल । तकर बाद किछु नहि अछि । ओहि गुरुसँ पूर्व दूनू गुरु देल गेल ।

जगण—ISI—ऊपरक आदि गुरुक नीचाँ लघु दय आगूक शेष समाने देल गेल ।

भगण—SII—गुरुक नीचाँ लघु दय आगूक समाने उतारि, पूर्वमे गुरु दय देल गेल ।

नगण—III—आदि गुरुक नीचाँ लघु दय शेष समाने राखल गेल ।

एहि पोथीमे सभठाम त्रिवर्ण (तीन अक्षरक) प्रस्तार (विस्तार-विन्यास) बाला गणसभहिके लय नीक-अधलाह फल कहल जायत । अतः ओ (त्रिवर्ण-प्रस्तार बाला गण सभ) प्रदर्शित करैत छी—

त्रिवर्ण-प्रस्तारमे पृथ्वी, जल, अग्नि, काल (वायु), आकाश, सूर्य, चन्द्र, सर्प देवतावाला क्रमशः म य र स त भ ज न नामक आठ टा गण होइत अछि,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ रागसामान्य लक्षणम् ।

तत्राऽभियुक्ताः—

यैस्तु चेतांसि रज्यन्ते जगत्त्रितयवर्त्तिनाम् ।
ते रागा इति कथ्यन्ते मुनिभिर्भरतादिभिः ॥३०॥

तथा च—चित्ताऽनुरञ्जक-तालाद्यप्रच्युत - स्वरसमूहत्वं रागत्वमित्यत्र अभियुक्ततात्पर्यम् । चित्तं तु सचेतसां, नाऽतः पामराद्यननुरञ्जक-सद्रागेऽप्यव्याप्तिः ।

जे अपने देवताक समाने फल दैत अछि ।२९।

गणचक्र

गण	प्रस्तार	उदाहरण	देवता	फल
मगण—	ऽ ऽ ऽ—	काली मा—	पृथ्वी—	शुभ
यगण—	। ऽ ऽ—	विधाता—	जल—	,,
रगण—	ऽ । ऽ—	भारती—	अग्नि—	अशुभ
सगण—	। । ऽ—	प्रभुता—	काल—	,,
तगण—	ऽ ऽ ।—	पाषाण—	आकाश—	,,
जगण—	। ऽ ।—	विवेक —	सूर्य—	,,
भगण—	ऽ । ।—	मानव—	चन्द्र—	शुभ
नगण—	। । ।—	कमल—	नाग—	,,

रागक सामान्य लक्षण

एहिठाम मान्य आचार्यलोकनिक उक्ति छनि—जाहिसँ तीनू लोकक व्यक्ति सभक चित्त (मन) रंजित (आह्लादित) भय जाय तकरा भरत आदि मुनि लोकनि राग कहैत छथि। अर्थात् 'रज्यन्ते इति रागा.' ई रागपदक व्युत्पत्ति भेल। मनकेँ रंजित करयबला ध्वनि रागसामान्य भेल ।३०।

एहिसँ फलितार्थ भेल जे मनकेँ आह्लादित कयनिहार ताल-मात्रा इत्यादि सँ अच्युत (चयुत नहि अर्थात् समन्वित) जे स्वरक समूह से राग थिक—इएह मान्यलोकनिक तात्पर्य छनि।

एहि लक्षणमे चित्त पदसँ बुद्धिमानक चित्त अभिप्रेत अछि। अतः पामर (मूर्ख) क चित्तकेँ आह्लादित नहि कयनिहार उत्तमो रागमे अव्याप्ति नहि भेल !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अत्र च चित्ताऽनुरञ्जकत्वमात्रोक्तौ तादृङ्‌मनुष्यादावव्यतिव्याप्तिरिति विशेष्यदलम्। विशेष्यदलमात्रोक्तौ च चित्ताऽनुरञ्जक-रागाभासाऽतिव्याप्तिरिति पूर्वदलम्। तालाद्यप्रच्युनत्त्राऽप्रवेशे च प्रच्युत-तत्कुराग एवाऽतिव्याप्तिरिति। एतेन रागिणीष्वपि राग-पदप्रयोगः साधुः। अतएव "मालाधरो मालवरागराज" इति जयदेवप्रयोगः, "देशाखरागः किल मल्लमूर्त्तिरि"ति दामोदरप्रयोगोऽपि संगच्छते।

(८-१) अथ बराड़ी-प्रथम-प्रभेदभूता राघवी

एतदादि - तत्प्रभेद - रागरागिणीनां विशेषलक्षणं च

एहि रागक लक्षणमे जँ केवल चित्तानुरञ्जकत्वमात्र कहि दी (चित्तानुरञ्जकत्वं रागत्वम्) तँ चित्तानुरंजक मनुष्य, पशु आदि सेहो राग कहाबय लागत, तेँ अतिव्याप्ति दोष। अतः लक्षणमे विशेष्य दल 'स्वरसमूह' शब्द देल अछि। जँ केवल विशेष्यदले (तालाद्यप्रच्युतस्वरसमूहत्वं रागत्वम्) कही तँ चित्तकेँ आह्लादित करबामे असमर्थं रागाभासमे रागक लक्षण अतिव्याप्त भय जायत। रागक लक्षणमे 'तालाद्यप्रच्युतत्व' नहि कही तँ तालसँ च्युत कुराग (निन्दित ओ निषिद्ध राग) मे अतिव्याप्ति होयत। एहि लक्षणसँ रागिनियहुमे रागपदक प्रयोग संगत थिक। ई लक्षण राग-रागिनी सामान्ये थिक। अतः "मालाधरो मालवरागराजः" (माला पहिरने ई 'मालव' नामक रागराज थिक) ई महाकवि जयदेवक प्रयोग तथा 'देशाख राग पहलमानक रूप धारण कयने अछि' ई महासंगीतज्ञ दामोदरक प्रयोग सेहो संगत होइत अछि। अन्यथा मालव (श्रीरागक रागिनी) ओ देशाख (हिन्दोल रागक रागिनी) राग कोना कहबैत।

(८-१) बराड़ीक पहिल भेद राघवी

एहि बराड़ी प्रकृतिक ओ तकर प्रभेद अनेक राग-रागिनीक खास-खास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्तच्छन्दोघटित-गीतोत्पत्तिकत्वमिति। यदि चाऽन्योऽपि रागस्तत्रोत्पद्यते तदा तदन्यत्वमपि तद्रागलक्षणे देयमिति।

राघव्यां च राघवीय-वराड़ीयं छन्दः

लक्षणम्

सप्तविंशतिमात्राभिः पदस्य प्रथमार्धकम्।
द्वितीयार्धे तु विन्यस्ता त्रिंशन्मात्रास्तु यद्गताः ॥३१॥

ध्रुवकं नवमात्राभिरर्धमर्घं तदन्तिमम्।
चतुर्दशमिताभिस्तु विरतौ बहुधा गुरुः ॥३२॥

अनेनाऽमानकेना पि नियमेन विभूषितम्।

लक्षण भेल—ओहि-ओहि छन्दसँ युक्त जे गीत ताहिमे उत्पन्न भेनिहार ताहि-ताहि नामक राग थिक। अर्थात् एहि पोथीमे रागक नामहि पर छन्दहुक नाम अछि अतः ओहि छन्दमे बनल गीत पर ओएह राग उत्पन्न होयत। जँ आनो राग ओहि गीत पर उत्पन्न होअय तँ ताहि रागसँ भिन्न होयब सेहो ओहि रागक लक्षणमे निवेश करक होयत। (जेना—वराड़ीक भेद राघवीक लक्षण भेल—राघवीय बराड़ी छन्दसँ युक्त जे गीत ताहिमे जे राग उत्पन हो से राघवी रागिनी कहाओत। एहि गीत पर जँ आन कोनो राग गाओल जा सकय तँ राघवीक लक्षणमे ताहिसँ भिन्नत्व कहय पड़त)।

राघवीमे राघवीय बराड़ीय छन्द होइत अछि। ओकर लक्षण :—

जाहिमे पदक पहिल अर्धक सत्ताइस मात्राक हो तथा दोसर अर्धकमे तीस मात्रा विन्यस्त हो।३१। आधा ध्रुवपद नओ मात्राक तथा अन्तिम आधा चोदह मात्राक हो एवं बिरति (अन्तिम वर्ण) मे सामान्यतः गुरु वर्ण हो।३२।

एहि नियमसँ वा 'अमानक' नियमसँ युक्त हो अर्थात् अमानक=अल्प मानक। मात्राक गणनामे किछु शैथिल्यो भय सकैत अछि। एक दू वा तीनि मात्रा कमो रहि सकैत अछि वा ओतबेक बेशियो रहि सकैत अछि—एहन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक द्वि त्रिकलाहीनमेकद्वित्रिकलाऽधिकम् ।
राघवीय-बराड़ीयं छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ॥३३॥

उदाहरणम् [गीत संख्या १]

साँझक बेराँ, जमुनाक तीराँ,
कदंबेरि वन तरुतराँ ।
अकमि कानरा, कि कहब काला,
सोझाँहि जुझल सखि ! कुसुमसरा ॥
मोहि भेटल कान्हू, अनतए कहिनी कहह जनू ॥ध्रु०॥
उर चिर हरी, करें कच धरी,
अधर पिबए मख हेरी ।
पुनु पुनु भोरा, परस कुच मोरा,
निधने पाओल जनि कनअ-कचोरा ।
अरे रे जुवती, बुझलि जुगती,
दोसर मधुप मधुपुरपती ।
तोरे अनुमाने, विद्यापति भाने,
राए शिव सिंह लखिमादेइ रमनें ॥
—इति विद्यापतेः ।

मम तु (गीत सं० २)

आनन्द - कन्दा, पुनिमक चन्दा,
सुमुखि - वदन तह मन्दा ।

जें छन्द से राघवीय बराड़ी कहबैत अछि । एहि छन्द पर ओहि रागिनी (राघवी) कें सम्यक् रूपेण लय जाइ अर्थात् गाबी ।३३।

उदाहरण

[गीत संख्या १]

मुग्धा नायिका सखीसँ कहैछ । अकमि = आलिंगन क' । कानरा = कृष्ण । काला = काल, ओहि क्षणकें कोना कहब । जुझल = लड़ल, आक्रमण कयलक । कुसुमशरा = कामदेव । कहिनी = हमर उक्ति । भोरा = भोला, अज्ञानी सन भेल । निधने = निर्धन । कनय = कनक, सोना । कचोरा = कटोरा । जुगुती = युक्ति, अभिप्राय । मधुपुरपती = कृष्ण ।

—ई विद्यापतिक गीत थिक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधरे मधुरी, सामरि सुन्दरी,
बिहुसि जिनए सित-कुसुम - सिरी ॥
पथ मिललि धनी, दामिनि सनि व्रजराज-जनी ॥ध्रु०॥
चिकुर चामरा, मुदिर सामरा,
नलिन नयन सुखकरा।
कामरमनी, जहिनि तहिनी,
दसन चमक जनि हीरकनी ॥
उकुति बेकती बुझलि जुगुती,
कामिनि मनवति पती
हरि अभिमानी मन ओनुमानी,
मिलए चलिल रसे रासवनी ॥
बिजुरि उजरी, रजनि गुजरी,
दूति दोसर अगुसरी।
'लोचन' वानी, सुतनु सयानी,
कन्त भजलि जलराजगनी ॥

(८-२) अथ पहाड़िया

अत्र तु पर्वतीय-बराड़ीयं छन्दः। लक्षणम्—
ग-द्वयान्ताश्चतु-र्मात्रा यद्[1]ध्रुव-प्रथमार्धके।

हमरो गीत एहि प्रसंग देखू—

[गीत संख्या—२]

आनन्दकन्दा = अतिशय आनन्ददायी। सुमुखि-वदन तह = सुमुखीक मुहसँ। सित-कुसुम-सिरी = उज्जर फूलक शोभाके। दामिनि सनि = बिजलोका सनक। व्रजराज-जनी = कृष्णक प्रेमिका। चिकुर चामरा = चामर-सन कोमल केश। मुदिर सामरा = मेघ सन श्याम। काम रमनी = जेहनो तेहनो वेषमे स्वतः (विनु सिङार पटारक) सुन्दरी। हीरकनी = हीराक कणा। उकुति बेकती = उक्तिसँ व्यक्त। जुगुति = युक्ति, अभिप्राय। ओनुमानी = अनुमान कय। बिजुरि उजरी = बिजलोकासँ प्रकाशित (वा इजोरिया विद्युत सन)। दूति दोसरि = दूतीक सङ्ग। अगुसरी = (चन्द्रमाक अस्त भेला पर) आगू बढ़लि।

(८-२) पहड़िया

एहिमे पर्वतीय बराड़ीय छन्द होइत अछि। एकर लक्षण— जाहि छन्दक

---

१. यद्ध्रुव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तद्[१]द्वयान्तास्तदन्तार्धे द्वादश-प्रमिताः पुनः ॥३४॥
मात्राषोडशकैर्बद्धं पदस्य द्वितयं भवेत् ।
चतुर्दश-मिताभिर्वा मात्राभिः कुत्रचिद् भवेत् ॥३५॥
त्रयोदश भवेयुर्वा यत्र मात्राः पदार्धके ।
पर्वतीयबराड़ीयं छन्दस्तत्र तु तां नयेत् ॥३६॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३]

ससधर सहस सार बटुराब ।
तैअओ न वदन पटन्तर पाब ॥
देख देख आई,
सरगक सरवस उरवसि जाई ॥ध्र०॥
विविध विलोकन अति अभिराम ।
मनहु न अवतर नयन - उपाम ॥
निक-निक मानिक अरुनिम जोति ।
सहजे धवल देखिअ गजमोति ॥
ज्ञातर रात मजलें अति सेत ।
ऐसन दसन तुलना के देत ॥

ध्रुवपदक पूर्वार्द्धमे अन्तिम दू वर्ण गुरु तथा चारि मात्रा हो—४+२+२= ८ मात्रा (४+ऽ+ऽ)। ओकर उत्तरार्धमे अन्तमे दू गुरु तथा बारह मात्रा हो, अर्थात् १२+ऽ+ऽ=१६ मात्रा हो। ततःपर दू-दू पद सोलह-सोलह मात्राक हो (एकरो अन्तिम दू वर्ण गुरु चाही। कतहु-कतहु चौदह मात्रा सेहो होइछ। कतहु पदक आधाभागमे तेरह मात्रा सेहो होइछ। ई पर्वतीय बराड़ीय छन्द कहबैत अछि। एहि छन्दमे पहड़िया रागकें गयबाक चाही।३४-३६।

उदाहरण [गीत सं० — ३]

ससधर=चन्द्र। सहस=सहस्र। बटुराब=बटोरब, एकत्रित करब। पटन्तर=परतर, सादृश्य। सरगक=स्वर्गक। सरबस=सर्वस्व। उरवसी=

१. तद्वया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काँचि करुचि रोमावलि भास।
उपरें तरल हरावलि फास॥
कर कौशल मनमथ मन लाए।
कुच-सिरिफल नहि होअए नबाए॥
करि-कर उरु उपमा नहि पाब।
अपनहि लाजें संकोचि नुकाब॥
हरिहर प्रनयिए भीषम भान।
प्रभावति - पति जगनराएन जान॥

मम तु [गीत संख्या ४]

चामर चिकुर, वदन सानन्द।
सरवस सनि जनि पुनिसक चन्द॥
चंचल विमल विलोचन - मीन।
अंजन परिचित खंजन जान॥

विधि निधि साँइ,
तिला एक मीललि कहि नहि जाइ। ध्रु०॥

दसन दालिम - दुति, भौंह कमान।
कुटिल विलोकन तिष बिष वान॥
नासा दसन-वसन बहुमूल।
तिलफुल फुल्लल मधुरिफुल तूल॥

उर्वशी। विलोकन = दृष्टि। अवतर = अबैत अछि। नयन-उपाम = आँखिक उपमा। सहजे धवल = स्वाभाविक उज्जर। सेत = श्वेत, उज्जर। दसन = दाँत। कुच-सिरिफल = वेल सदृश स्तन। करिकर = हाथीक सूँढ़। उरु = जाँघ।

हमरो गीत — [गीत संख्या ४]

चामरचिकुर = चामरसन कोमल केश। सरबस — सर्वस्व। विलोचन मीन = माँछ सन आँखि। खञ्जन जीन = खञ्जनकेँ जीतैत अछि। दालिम-दुति = दाड़िमक दाना सन चमकैत। कुटिल विलोकन — कटाक्ष। दसन-वसन — ठोर। (नाकक उपमा तिलक फूल सँ ओ अधरक उपमा मधुरीक फूलसँ)। कम्बुगिम — — शङ्खक सदृश गरदनि (घेँट)। मोतिम पाँति — मुक्ता पंक्ति। बाहुलता — बाँहिरूपी लत्तीमे हाथ रूपी पल्लव। कुचयुग — दूनू स्तन। जमज-कमल —

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुचिर कम्बु - गिम, मोतिम दाँति ।
बाहु लता, कर पल्लव काँति ।।

कुचयुग जमज कमल सिरेमाल ।
निविल रोमावलि समुचित नाल ।।

नाभि मण्डल करिकुम्भ नितम्ब ।[1]
जंघकदलि भेलि तसु अवलम्ब ।।

उरु - युग युगल - करभ अनुमान ।
पद पङ्कज, नख केतु[2] समान ।।

कुल गुन गौरव विनय विवेक ।
बुझल विनोदिनि सबे अतिरेक ।।

सरस-सुमति-कवि 'लोचन' भान ।
एहन रमनि रुकुमिनि - पति जान ।।

(८-३) अथ देशी

अत्र देशीय-बराड़ीयं छन्दः । लक्षणम्—

मात्रा-द्वादशकैर्बद्धं यद्ध्रुवप्रथमार्धकम् ।
सप्तभिर्दशयुक्ताभिर्मात्राभिस्तु तदन्तिमम् ।।३७।।

एक संग जनमल दू कमल । निविल रोमावलि—सघन रोमावली नाभिसँ स्तनक दिस जाइत रोम-रेखा कमलक नाल जकाँ लगैछ । मण्डल—गोलाकार कूपवत् । करिकुम्भ—हाथीक मस्तक सन पुष्ट । उरुयुग—दूनू जाँघ । करभ—कनगुरिया आङुर सँ नीचाँ गट्टा धरि हाथक पँजरबाहि (करभक आकार ऊपर उच्च ओ क्रमशः उतार तत्सदृश) । केतु—पताका ।

(८-३) देशी

एहिमे देशीय बराड़ीय छन्द होइछ । लक्षण—

बारह मात्रा सँ युक्त जकर ध्रुवक पूर्वार्ध हो तथा सत्रह मात्राक उत्तरार्द्ध हो, अथवा एतबे (सत्रहे) मात्राक पूर्वार्द्ध हो एवं अन्य पद-रचना पर्वतीय

१. निलम्ब । २. 'केशु' ई पाठ उचित जकर अर्थ होयत पलाशक फूल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतत्तुल्य-पदार्घं वा कुत्रचिद् यत्र जायते ।
अन्यत्तु पदनिर्माणं पर्वतीयसमं भवेत् ।
देशीयं तद् बराड़ीयं छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ॥३८॥

उदाहरणम् [गीत संख्या ५]

आनन लोनुअ वचने बोलए हँसि ।
अमिअ बरिस जनि सरद पुनिमा ससि ॥
अपरुब रूप रमनिआ,
जाइते देखलि गजराज-गमनिआ ॥ ध्रु०॥
काजरें रंजित धवल नयन वर ।
भमर मिलल जनि अरुन कमल दल ॥
भान भेल मोहि माँझ खीनि धनि ।
कुच-सिरिफल भरें माँगि जाति जनि ॥
कविशेखर भन अपरूब रूप देखि ।
राए नसरद साह भजलि कमल मुखि ॥
इति विद्यापतेः ।

मम तु [गीत संख्या ६]

साँनद वदन बिहुँसिआ,
मधुवन जाइतें मिलल तोर रसिआ ॥ध्रुव॥
कोटि मदन-रुचि रुचिर कलानिधि,
अतनु सुतनु सनि तोंहुं सबहि विधि ।[1]

वराड़ी छन्दक सदृश हो, से देशीय बराड़ीय छन्द कहबैछ । एहि छन्द पर ओहि रागिनी (देशी) कें गयबाक चाही । ७-३८।

उदाहरण [गीत संख्या ५]

लोनुअ -- सुन्दर । अमिअ = अमृत । रमनिआ = रमणी । माँझ खीनि— मध्यभागमे क्षीण (पातर कटि) । कुच-सिरिफल-भरें = वेल सन स्तनक भार सँ । भाँगि = लचकि रहलि ।

ई उदाहरण विद्यापतिक भेल । हमरो देखू—

[गीत सं० ६]

सानंद—सानन्द । कोटि-मदन रुचि—कामदेवहुक सौन्दर्यसँ करोड़ोबर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाँद धवल ऋतुराज - रजनिञा।
हरि निधुवन मने चललि सजनिञा॥

कुसुमित वन घनसार समीरन।
विविध विहङ्ग-निनाद मदन-घन॥

सुनसि न मधुर मधुर मुरली-रव।
सुकृत सफल कर सबे समुचित तव॥

लोचन भन बुझ सरस विमलमति।
मधुमति-पति महिनाथ महीपति॥

एआ मे परगट होत हुए, ताल चलनिमे तीनि।
ताते चुकि सुर चलत तब, रागिनि होत विहीनि॥

(८-४) अथ माधवी

अत्र माधवीय-बराड़ीयं छन्दः। लक्षणम्—

त्रयोविंशति-मात्राभिर्द्वाविंशतिभिरेव वा।
एकविंशतिभिर्वाऽपि किं वा विंशतिभिर्भवेत्॥३९॥
पदार्धमवसानञ्च द्वादशाक्षरके भवेत्।
त्रयोदशेऽथ दशमे क्वचिदेकादशाक्षरे॥४०॥

•

वेसी सुन्दर। कलानिधि—सकल कलाकेँ जननिहार वा चन्द्रमासनक। अतनु—कामदेव। सुतनु—सुन्दर। हरि-निधुवन-मने=हरि निधुवनमे छथि एहि मनसँ। घनसार—सुगन्धित। विहङ्ग-निनाद—पक्षीक कलरव। मदनधन—पूर्वोक्त सभटा वस्तु कामदेवक धन थिक। सुकृत—पुण्य।

एहिमे तीन ताल देल जाइत अछि, एहिसँ विचलित भेला पर रागिनी बिगड़ि जाइत अछि।

(८-४) माधवी

एहिमे माधवीय बराड़ीय छन्द होइत अछि। लक्षण—

जतय तेँस मात्रा वा बाइस मात्रा वा एकैस मात्रा वा बीस मात्राक पदक अर्धक हो, बारह अक्षर पर वा तेरह अक्षर पर वा दस अक्षर पर वा कतहु एकारहे अक्षर पर अवसान (यति) होइछ, सामान्यतः ध्रुवपदक अपेक्षा नहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुवापेक्षाबहिर्भूतमेतत् सन्दृश्यते बहु ।
माधवीयबराड़ीयं छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ।।४१।।

उदाहरणम् [गीत संख्या ७]

ससन - परसें खसु अम्बर रे
देखल धनि - देह ।
नव जलधर तर चमकए रे
जनि बीजुरि रेह ।।
आज देखलि धनि जाइतें रे
मोहि उपजल रङ्ग ।
कनक - लता जनि संचर रे
महि निरअवलम्ब ।।
ता पुनु अपरुब देखल रे
कुच - युग अरविन्द ।
बिगसित नहि किछु कारन रे
सोंझा मुखचन्द ।।
विद्यापति कवि गाओल रे
बूझए रसमन्त ।
देवसिंह नृप नागर रे
हाँसिनि देवि कन्त ।।

—इति विद्यापतेः ।

रहय, से माधवीय बराड़ीय छन्द कहबैत अछि । एहि छन्द पर माधवी रागिनी कें गाबी ।४०-४१।

उदाहरण [गीत संख्या ७]

ससन = श्वसन, वायु । परसें = स्पर्शसँ । अम्बर = वस्त्र, आँचर । जलधर = मेघ । रेह = रेखा । रङ्ग = विस्मय । महि = पृथ्वी । सोंझाँ मुखचन्द = सामनेमे मुखरूपी चन्द्रमा (चन्द्रक सोंझाँ कमल विकसित नहि होइछ । उत्प्रेक्षा ध्वनि) ।

ई विद्यापतिक गीत थिक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मम त्तु [गीत संख्या ८]

मलिन - वसन बिसमादलि रे
देखलि धनि खीनि।
नयन नीरें परिपूरलि रे
चित चिन्तालीनि।
पास बैसि कत पूछलि रे
सतभाँति बुझाए।
तैअग्रो रहलि तेहि भाँतिहि रे
मरमसि सिर नाए॥
सुमुखिक सुख न सम्भाषन रे
मुख नहि परगास।
अनुखने बिखिनि सोहागिनि रे
तेज दीघ निसास॥
कमलवदनि मनिमानिक रे
धनि धीर सयानि।
तोरित गइए परिबोधिए रे
हरि ऐसनि जानि॥
लोचल भन मन जानक रे
मधुमति देवि कन्त।
बुझ महिनाथ महीपति रे
विरहिनि - मन तन्त॥

सत्वरोऽत्र त्रिसंख्यातस्तालस्तु गुणिनां मतः।
तद्-भ्रष्ट-स्वरताचेत्स्याद्रागिणी खण्डिता भवेत् ॥४२॥

हमर [गीतसंख्या ८]

मलिन-वसन = मैल नूआ पहिरने। बिसमादलि = विखिन्न भेलि। खीनि = क्षीण। सत भाँति = अनेक प्रकारें। तेहि भाँतिहि = ओहिना। मरमसि सिर नाए = अप्रतीकार भय मूड़ी झुकाय। परगास = प्रकाश, प्रसन्न। तेज दीघ निसास = दीर्घ निश्वास छोड़ैछ। तोरित = त्वरित, झटदय। गइए = जाक'।

एहि माधवी रागिनीमे तीन सत्वर (द्रुत) ताल देल जाइत अछि, ई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(८.५) अथ भठिआली

अत्र तु भठिआल-बराड़ीयं छन्दः। लक्षणम् -

रगणोऽथ विरामश्च यगणो लादिको गुरुः।
नगणौ सगणो लश्च यत्पदार्धात्मक-ध्रुवे ॥४३॥
सप्तविंशतिमात्राभिः षड्विंशतिभिरेव वा।
पञ्चविंशतिभिर्वाऽपि पदानां दलनिर्मितिः ॥४४॥
दलोपान्ते गुरुर्गाने क्वापि वर्णंगतागतम्।
भठिआल-बराड़ीयं छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ॥४५॥

उदाहरणम् [गीत संख्या ९]

नन्दक नन्दन कदम्बक तरुतरें
घिरें घिरें मुरलि बोलाव।
समय संकेत - निकेतन बैसल
बेरि बेरि बोलि पठाव ॥
सामरि तोरा लागि अनुखने विकल मुरारि ॥ध्रु०॥

विद्वान् लोकनिक मत थिक। एहि तीनू तालसँ विचलित भेलापर ई रागिनी खण्डित भय जाइत अछि।४२।

(८.५) भठिआली

एहिमे भठिआल बराड़ीय छन्द होइत अछि। लक्षण – जतय रगण (SIS) पर विराम (यति) हो, तकर बाद यगण (ISS), लघु गुरु (IS), रहय, ततः पर दू टा नगण (III + III), सगण (IIS) तथा लघु (I) एहि तरहक ध्रुवक अर्धक हो, सत्ताइस मात्रा वा छब्बीस मात्रा वा पच्चीस मात्राक आन चरण (पदार्ध) हो, दलक (पदार्धक) अन्तिमसँ पूर्व वर्ण गुरु हो तथा कतहु-कतहु गानमे विपरीतो हो, से भठियाल बराड़ीय छन्द कहबैत अछि। एहि पर ओहि रागिनी (भठिआली) केँ उपस्थापित करी।४३-४५।

उदाहरण [गीत संख्या ९]

नन्दक नन्दन = कृष्ण। संकेत-निकेतन = मिलनक हेतु संकेतित स्थान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जमुनाक तीर उपवन उदबेगल
फिरि फिरि ततहि निहारि।
गोरस-बिकेनिकें अबइतें जाइतें
जनि-जनि पुछ बनभारि॥
तोहें मतिमान सुमति मधुसूदन
वचन सुनह किछु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन वर यौवति
बन्दह नन्दकिशोरा॥
—इति विद्यापतेः।

मम तु—[गीत संख्या १०]

रितुपति रितु, रतिपति तह उनमति
पुनमति तेजि निजधाम।
बिजुवन घन उपवन निधुवन-मनें
तोहें जोह मोहें सबठाम॥
सामरा सुवदनि कि तोरि घनि विषम विषाद।
जहिनि देखलि हेनि कहहि न परिस्र
के जान जिउति परमाद॥ध्रु०॥
चन्दन चन्द, मन्द मलयानिल
मुदिर मयूर - निनाद।
इ सबे समन सम सुतनु-तनु, सुतनु(?)
कत-कत कर अवसाद॥

सामरी = श्यामा, युवती। उदवेगल = उद्विग्न भेल। गोरस-बिकेनिकें = दही वेचय।

ई उदाहरण विद्यापतिक थिक। हमर—

[गीत संख्या १०]

रितुपति रितु = वसन्त ऋतु। रतिपति तह = कामसँ। उनमति = उनमत्त भेलि। पुनमति = पुण्यवती। बिजुबन = एकान्त बन। निधुवन = रतिक्रीड़ा। सामरा—कृष्ण। विषम विषाद—बहुत दुखमे। इ सबे समन सम—चन्दन,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवगुन कओन ओहन तसु जसु बस
पिअ न वचन कर कान।
पिअतम तेहन, तोहर सन से ओकर
सहचरि परम निदान॥
अबहु बिसरि दोस, रोस निराकरि
करिअ सुमुखि समधान।
लोचन भन उरवसि मन-रंजक
नृप नरपति रस जान॥

सस्वरो मध्यमश्चैव तालस्त्रिय-संख्यकः।
महिनाथ-महीपालाऽनुजेन तु निरूपितः ॥४६॥

(८.६) अथ नेपाल बराड़ी

अत्र तु नेपाल-बराड़ीयं छन्दः। लक्षणम्—

यत्र विंशति-मात्राभिध्रुवस्य प्रथमार्धकम्।
पञ्चविंशतिभिस्ताभिस्तदन्तार्धमुपान्त्यगम् ॥४७॥
सप्तविंशतिभिस्ताभिर्यत्पदार्धं समं भवेत्।
तन्नेपाल-बराड़ीयं छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ॥४८॥

चन्द्र इत्यादि अतिशय कष्टदायी (मृत्यु सन)। समन—शमन, यमराज। अवसाद—पीड़ा। तसु—ओकर। जसु—जकर। निदान—असहाय। रोस निराकरि—रोष (क्रोध) केँ हटाय। समधान करब—प्रसन्न होयब।

एहि रागिनीमे द्रुत ओ मध्यम तीन ताल होइ जे राजा महिनाथ ठाकुरक छोट भायक (राजा नरपति ठाकुरक) द्वारा देखाओल गेल अछि।४६।

(८.६) नेपाल बराड़ी

एहिमे नेपाल बराड़ीय छन्द होइत अछि। जकर लक्षण—

जाहिमे वीस मात्रासँ ध्रुवपदक पूर्वार्ध हो तथा पचीस मात्रासँ उत्तरार्ध हो, अन्त्यसँ पूर्वक वर्ण (उपान्त्य) गुरु हो, सत्ताइस मात्रासँ समक पदार्ध (अर्धक) हो, से नेपाल बराड़ीय छन्द कहबैत अछि। एहि पर ओहि (नेपाल बराड़ी) रागिनीकेँ उपस्थापित करी।४७-४८।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत संख्या ११]

उपमिग्र ग्रानन नीरज पङ्कज,
ससधर दिवस मलीनें :
भौंह ग्रनूपम, ग्रधर सोहाग्रोन
नव पल्लव रुचि जीने ॥
सुन पेग्रसि की मोर
पड़ल गरुग्र ग्रपराधे ।
वह मलयानिल जार कलेवर
न कर मनोरथ बाधे ॥

इत्यादि—राज्ञः श्रीनिवासमल्लस्य

इति बराड़ीभेदाः कथिताः ।

[९] अथ कौशिकः

ग्रत्र तु कौशिकमेव छन्दः । लक्षणम्—

चतुष्कल-गणानां तु त्रयं शिष्टत्रिमात्रकम् ।
अवशिष्ट-द्विमात्रं वा पदार्धे यत्र जायते ॥४९॥
सकलं यद्ध्रुवापेक्षा-बहिर्भूतं तु दृश्यते ।
कौशिकाख्यं तु तच्छन्दः कौशिकेनैव गीयते ॥५०॥

उदाहरण [गीत सं० ११]

उपमिअ—उपमा दिऐक । ग्रानन—आनन, मुख । नीरज पङ्कज—कमल तँ पांकसँ उत्पन्न अछि । व्यतिरेकालंकार । नव पल्लव रुचि जीने—नवीन पल्लवक शोभाकें जितने अछि । पेअसि—प्रेयसी । गरु—विषम स्थिति । जार कलेवर—शरीरकें जराय रहल अछि ।

इत्यादि सम्पूर्ण गीत, जे राजा श्रीनिवास मल्लक थिक ।

एवं प्रकारे बराड़ीक भेद कहल गेल ।

[९] कौशिक

एहिमे कौशिके छन्द होइत अछि । लक्षण—

चारि मात्राक तीन गण एवं तीन मात्रा वा दुइ मात्रा अधिक जकर अर्धकमे हो, ध्रुवपदक अपेक्षा नहि रहैक, से कौशिक नामक छन्द कौशिके रागमे गाओल जाइत अछि ।४९-५०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत संख्या १२]

लता तरुअर मण्डप दीअ,
निरमल ससधर भिति धवलीअ।
पौञ्ञा-नाल ऐपन भल भेल,
रात परीहन पल्लव देल।
गावह माइ हे मंगल आए,
वसन्त विआह वने पए जाए।
मधुकर रमनी मंगल गाव,
दुजवर कोकिल मन्त्र पढ़ाव।
करु मकरन्द हथोदक नीर,
विधु बरिआती, धीर समीर।
कनए केआसुति तोरन तूल;
लाबा बिथरल बेलिक फूल।
केसु - कुसुम करु सिन्दुरदान,
जौतुक पाओल मानिनि - मान।
केलि कुतूहल नव पंचबान
विद्यापति कवि दिढ़ कए भान।
अभिनव नागर बुझ रसवन्त,
मन्ति महेस रेणुकादेवि - कन्त।

उदाहरण [गीत सं० १२]

लता तरुअर—लत्ती एवं गाछ सभ मण्डप देलक (मड़बाक काज कयलक)। ससधर—चन्द्रमा। भिति धवलीय—देबालकें ढौरलनि। पौञ्ञानाल—पद्म-नाल, कमलक डंटी। ऐपन—अरिपन। रात परीहन—रक्त परिधान। पल्लव देल—पल्लव लाल वस्त्र देलक। आए—आबिकं। मधुकर-रमनी—भ्रमरी रूपी स्त्री। दुजवर – द्विजवर, पक्षी वा ब्राह्मण। पक्षिश्रेष्ठ कोइली अपन शब्द द्वारा मन्त्र पढ़ाय रहल अछि। मन्त्र ब्राह्मणे पढ़बैत छथि, अतः श्लेष द्वारा दूहू अर्थ भासित होइछ। उत्प्रेक्षाध्वनि। मकरन्द—पुष्पधूलि। हथोदक—हस्तोदक (दानकालमे हाथसे जे जल लेल जाइछ)। विधु—चन्द्रमा। धीर—विद्वान्। समीर—वायु। कनए—कनक, सनहुला। केआसुति—एक प्रकारक फूल जकर मेहराब बनाओल जा सकैत अछि। तोरन-तूल – तोरण (द्वार) क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरो मध्यमश्चैव तालस्त्रितयसंख्यकः ।
श्रीमान् नरपतिस्तस्य ज्ञाता संगीत-कोविदः ॥५१॥

[१०] अथ देशाखरागिणी

अत्र तु जयदेवदेशाख, देशाख-देशाख इति भेदद्वयम् ।

(१०.१) जयदेवदेशाखे तु श्रीजयदेवः

"स्तन-विनिहितमपि हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरति भारम् ॥
राधिका विरहे तव दीना केशव····· ।"

—इत्यादि सुप्रसिद्धम् (गीतगोविन्दे चतुर्थसर्गे)

(१०.२) देशाखदेशाखे तु तन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम्

चतुर्मात्र-गणानां तु कलाहीन-चतुष्टयम् ।
चतुष्टयं कलाशेषं तद् वा प्रतिपदार्धके ॥५२॥

तुल्य । लाबा बिथरल - लावा छिड़ियाओल गेल । केसु—किंशुक, पलाश । पलाशक फूल लय सिन्दूरदान भेल । जौतुक माने—बिदाइमे प्राप्त भेल मानिनीक मान । दिढ़कए—दृढ़ कय, निश्चय । मन्ति महेस—मन्त्री महेश ।

एहिमे सत्वर ओ मध्यम ताल तीन टा होइत अछि । तकर ज्ञाता संगीत-विशारद श्रीमान् नरपति ठाकुर छथि ।५१।

[१०] देशाख रागिनी

एकर दू भेद अछि—जयदेव-देशाख ओ देश-देशाख ।

(१०.१) ताहिमे जयदेव-देशाखक उदाहरणमे श्री जयदेव कविक गीत—

स्तनपर पड़ल प्रशस्त हारहुकें ओ दुर्बला राधा भार बुझैत छथि । हे केशव, राधिका अहांक विरहमे विकल छथि । इत्यादि सुप्रसिद्ध अछि ।

(१०.२) देश-देशाख

एहिमे एही नामक छन्द होइछ । लक्षण—

एकमात्रा कम चारिटा चतुष्कल वा एक मात्रा बेसी चारि चतुष्कल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तमे सप्तमे वर्णे विरामो विगतध्रुवम् ।
देशदेशाख इत्याख्यं छन्दस्तत्र तु तां नयेत् ॥५३॥

उदाहरणम् [गीत संख्या १३]

मान परीहर हे करु वचन मोरा,
मार मनोभव हे धरु सरन तोरा।
न कर न कर हे मोहि विमुख आजे,
अपुरुब पेमे हे पुनु भेल समाजे।
कमल-वदनि हे करु आकम दाने;
विनञो के नहि हे जग तेजए माने ॥
—इतिं विद्यापतेः ।

मम तु [गीत संख्या १४]

नीरज-नयनि हे गिरिराज-उरोजे ।
तोहँ न करह हे (खिन) मुख सरोजे ॥
अमिञो माखलि हे करु मधुरी बानी ।
कीदहु पड़लि हे मोहि विनय हानी ॥
हरषि हेरह हे किछ विहसि गरासे ।
न कर न कर हे निञ मन उदासे ॥
अबुझ न बुझ हे तोहें तेहिनि नही ।
तोहरि सरिसि हे नहि देखिअ मही ॥

प्रत्येक अर्धकमे हो, सातम वर्ण पर विराम हो एवं ध्रुवपद एहीमे गतार्थ हो से देश-देशाख नामक छन्द कहबैत अछि। एहि पर ओहि रागिनी (देश-देशाख) कें गाबी।५२-५३।

उदाहरण [गीत सं० १३]

मान परीहर—मानकें छोड़ू। मार मनोभव—कामदेव मारि रहल छथि। पेमे—प्रेमसँ। आकम—अङ्कमे आयब, आलिङ्गन।

ई गीत विद्यापतिक थिक। हमर—

[गीत सं० १४]

नीरज-नयनि—कमल सन आँखिबाली। गिरिराज-उरोजे—पर्वत सन उन्नत स्तनबाली। अमिञो माखलि—अमृतमे बोड़लि। निञ—निज।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोस बिसरिए हे निग्र पाअसु जानें।
भजलि पेअसि हे कवि लोचन भाने॥
उरवसि बस हे रस - राग-निवेसे।
ई रस - विन्दक हे नरपति नरेसे॥

तालः प्रागिव। देशाखभेदावुक्तौ।

[११] अथ हिन्दोलस्यैव रागिणी रामकरी

आकृतिरुक्ता प्राक्। इयन्तु जयदेवी, शद्धा, देशी, प्रीतिकरी चेति भेदचतुष्टयवती।

(११.१) जयदेव्यां श्रीजयदेवः—

'वयसि यदि किंचिदपी'त्यादि सुप्रसिद्धम्।

(११-२) अथ शुद्धा

अत्र तु शुद्धरामकरीयं छन्दः। लक्षणम्—

पञ्चविंशतिमात्राभिः षड्विंशतिभिरेव वा।
सप्तविंशतिभिस्ताभिः अष्टविंशतिभिर्भवेत् ॥५४॥

अबुझ—अज्ञानी। सरिसि—सदृश, समान। मही—पृथ्वी पर। पाअसु (?)। भजलि—मिलिलि। पेअसि—प्रेयसी। उरवसि—राजा नरपति ठाकुरक पत्नी उर्वशी।

एहिमे ताल पूर्ववत् (कौशिक जकां) देल जाइत अछि। देशाखक दुनू भेद कहल गेल।

[११] हिन्दोलैक रागिणी रामकरी॥

एकर स्वरूप पूर्वहि कहल गेल अछि। ई (१) जयदेवी, (२) शुद्धा, (३) देशी ओ (४) प्रीतिकरी एहि भेदसँ चारि तरहक होइत अछि।

(११·१) जयदेवीमे श्री जयदेवक गीत—

वयसि यदि किंचित·······इत्यादि [गीत गोविन्द सर्ग १०] सुप्रसिद्ध अछि।

(११·२) शुद्धा

एहिमे शुद्ध रामकरीय छन्द होइत अछि। लक्षण—

पचीस वा छब्बीस, सत्ताइस वा अट्ठाइस मात्रासँ जकर अर्धक हो एवं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदीय-चरणध्रुं तत् शुद्धरामकरीयकम् ।
शुद्धरामकरीयेण गायेदेतद् गतध्रुवम् ॥५५॥

उदाहरणम् [गीत संख्या १५]

सा जयति सुरसरिदमर - दानव - नाग - नर - वरदायिनी
कास कुसुम मृणाल[1] मुकुता धवल धार प्रवाहिनी ॥
तिल-तुलित तण्डुल कुसुम चन्दन विबुध-पूज्य सुधाविनी ।
सुर - नगर - वीथी.................... ब्रह्म हस्त निवासिनी ॥
पुरमथन - मस्तक कलित-शोभा, कृष्ण-चरण तरंगिणी ।
जग-धम्म-सरसिज सोम-भासा सलिल रासि सोहाञ्नी ॥
जह्नु - कन्या भीष्म-जननी धरणि-मध्य विभूषिनी ।
कविराज पूरनमल्ल भाषित पतित-पामर पाविनी ॥

(११.३) अथ देशी

अत्र तु देशरामकरीयं छन्दः । लक्षणम् —

एकविंशतिमात्राभिर्द्वाविंशतिभिरेव वा ।

ध्रुवपद एहीमे गतार्थं हो से शुद्ध रामकरीय छन्द कहवैत अछि। एकरा शुद्ध-रामकरीय रागमे गावक चाही ।५४-५५।

उदाहरण [गीत सं० १५]

ओहि गङ्गाक जय हो, जे देवता, दैत्य, नाग ओ मनुष्यके वर देनिहारि छथि, कासकफूल, मृणाल (कमलक डंटी), मोति एहिसभसन धवल (उज्जर) धारामे बहैत छथि । तिल-तुलित तण्डुल—तिल मिलाओल अच्छत । विबुध—देवता वा विद्वान् । सुधाविनी –सुन्दर रूपें प्रवाहित भेनिहारि । सुरनगर-वीथी—स्वर्गक गली । पुरमथन-मस्तक-कलित शोभा—महादेवक माथ पर शोभित होइत । कृष्ण चरण तरङ्गिनी—कृष्ण भगवानक चरणमे तरङ्गित भेनिहारि । जगधर्म्म—संसारमे धर्मस्वरूपा । सरसिज सोम-भासा—कमल ओ चन्द्रमाक सन भासमान। सलिल-रासि सोहाञ्नी—जलराशिसँ शोभित । जह्नु-कन्या—जह्नु मुनिक पुत्री ।

(११·३) देशी

एहिमे देशरामकरीय छन्द होइछ । लक्षण—

---

1. मृडाल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रयोविंशतिभिः किंवा चतुर्विंशतिभिर्भवेत् ॥५६॥
पञ्चविंशतिभिर्यद् वा मात्राभिर्यत्पदार्धकम् ।
देश-रामकरीयं तद् अध्रुवं तेन गीयते ॥५७॥

उदाहरणम् [गीत संख्या १६]

कुसुम-बान - विलास - कानन केस सिन्दुर रेह ।
निविल नीरद रुचिर दरसए अरुन जनि निञ देह ॥
आज देखु गजराज-गति परजुअति त्रिभुवन सार ।
जनि कामदेवक विजयवल्ली बिहलि बिहि संसार ॥
सरद - सरधर सरिस सुन्दर वदन, लोचन लोल ।
विमल कंचन-कमल चढ़ि जनि खेल खंजन - जोर ॥
अधर नव - पल्लव मनोहर, दसन दालिम जोति ।
जनि निविल विद्रुम-दले सुधारसें सीचि धरु गजमोति ॥
मत्त - कोकिल बेनु बीना नाद तिहुअन भास ।
जनि मधुर हाक पसाहि आनन करए वचन विकास ॥
अमर - भूधर सम पयोधर महघ मोतिम हार ।
हेम - निर्मित शम्भु शेखर गंग - निर्मल - धार ॥

जतय एकैस, वाइस, तैंस, चौबीस वा पचीस मात्रा बाला अर्धक हो, तथा ध्रुव नहि हो से देशरामकरीय छन्द कहवैछ। एहिसँ देशरामकरीय राग गाओल जाइत अछि।५६-५७।

उदाहरण [गीत सं० १६]

कुसुम-बान विलास कानन—कामदेवक क्रीड़ाक उपवन। सिन्दुर रेह—सिन्दूरक रेखा। निविल नीद-रुचिर—सघन मेघ सन सुन्दर। अरुन—सूर्य (उदय कालक)। निञ—निज। केसक बीच सिन्दूर लगैछ जे कारी मेघक फाँकसँ प्रात:कालीन सूर्य झाँकि रहल होथि। उत्प्रेक्षा। गजराजगति—मत्ता हाथी सन चालि वाली। विजयवल्ली—विजयक लत्ती वा पताका। बिहलि—रचलनि। बिहि—विधाता। सरद ससधर सरिस—शरदक चन्द्र सदृश। कंचन—स्वर्ण। दालिम—दाड़िम। निविल विद्रम-दलें—सघन मूँगाक पातसँ (ठोरक उपमामे)। लाल ठोर ओ स्वच्छ दाँत लगैछ जेना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करम कोमल कर सुशोभन जंघ-युग आरम्भ।
जनि मदन-मल्ल वेआम कारने गढ़ल हाटक-थम्भ॥
सुकवि एह[1] कण्ठहारे गाओल रूप सकल सरूप।
देवि-लखिमा-कन्त जानए सिरि सिवए सिंह भूप॥

[११.४] अथ प्रीतिकरी

अत्र तु सुप्रियं नाम छन्दः। लक्षणम्—

त्रयोविंशतिभिः किंवा[2] चतुर्विंशतिभिः पुनः।
पञ्चविंशतिभिर्वाऽपि षड्विंशतिभिरेव वा ॥५८॥
सप्तविंशतिभिर्वाऽपि मात्राभिर्यत्पदार्धकम्।
षट्कल-द्वितयं यत्र द्विमात्र ध्रुवकार्धके ॥५९॥
ध्रुवेण ध्रुवकाभ्यां वा ध्रुवैः किं वा विभूषितम्।
सुप्रियं नाम तच्छन्दः प्रीति[3]कर्या तु गीयते ॥६०॥

मूङाक पात पर अमृतसँ धोक' गजमुक्ता राखल हो। मत्त कोकिल·······
विकास—अर्थ अस्पष्ट। भूधर सम—पहाड़ सनक। पयोधर—स्तन। हेम-निर्मित—सोनाक शिवलिंग पर निर्मल गंगाक धार। करभ-कर कोमल—हाथीक बच्चाक सूढ़ सन कोमल। मदन-मल्ल—कामदेव-रूपी पहलवान। वेआम—व्यायाम। हाटक थम्भ—सोनाक खम्हा।

(११·४) प्रीतिकरी

एहिमे सुप्रिय नामक छन्द होइत अछि। लक्षण—

जतय तैस, चौबीस, पचीस, छब्बीस वा सत्ताइस मात्राक अर्धक हो, ध्रुवक अर्धकमे दूटा षट्कल (छओ मात्राक टुकड़ा, अर्थात् १२ मात्रा) तथा ततःपर दू मात्रा रहैक, एहन एक, दू वा अनेक ध्रुवपद रहय से सुप्रिय नामक छन्द कहबैत अछि। ई प्रीतिकरी रागिनीमे गाओल जाइत अछि।५८-६०।

१. एहू। २. किम्बा। ३. प्रीतिकार्यान्तु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत संख्या १७]

स्निग्ध-कुंचित-कोमलं कुच[1]-गण्ड-मण्डित कुन्तलम् ।
अधर बिम्ब समान सुन्दर सरद-चन्द्र - निभाऽऽननम् ।।
जय कम्बु-कण्ठ[2] विशाल लोचन सारमुज्ज्वल-सौरभम् ।
बाहुवल्लि मृणाल, पङ्कज हार शोभित ते शुभम् ।।
शोभय सुन्दरि मम हृदयम् ।
गद्गद-हास-सुदति निपुणम् ।।ध्रु० ।।१।।

उर पीन कटिन विशाल कोमल याति युग्म निरन्तरम् ।
श्रीफला कमला विचित्र - विधा तु निर्मल - कुचवरम् ।।
श्यामा सुवेषा त्रिवलि रेखा, जघन - भार विलम्बिते ।
मत्त-गज-कर जघन - युगवर, गमन गति वरटा-जिते ।।
सुललित मन्द गमन करइ ।
जनि पति-संग वरटा भमइ ।।ध्रु० ।।२।।

उदाहरण [गीत सं० १७]

चिक्कन औंठिया कोमल केश (खूजल केश) लटकि स्तनक उन्नत भागकें शोभित करैत, तिलकोड़क फड़ सन अधर, शरदक चन्दमा सन मुह, शंखाकार कण्ठ, पैघ-पैघ आँखि, स्वच्छ एवं सुगन्धित कमलक नालक हार सन शोभित बाहुलता । ते – तोहर । हे सुन्दरि, हमर हृदयकें शोभित करह । गद्गद् हास सुदति – प्रसन्नताक हँसीसँ स्पष्ट सुन्दर दाँत वाली । निपुणम् – नीक जकाँ । उर—छाती पर । पीन—पुष्ट । युग्म – जोड़ा । श्रीफला''' कुचवरम्— अस्पष्ट । विचित्र-विधा श्यामा – षोडशवर्षीया । मत्त''''''युगवर—मत्ता हाथीक सूँढ़ सनक दूनू जाँघ छैक । गमन''''जिते – गमन (चालि)क ढंगसँ हंसिनीकें जितनिहारि । भमइ—भ्रमण करैत अछि । अतिरूप''' प्रिये—रूप एवं यौवनक प्रारम्भक विशेष वर्णन की करू । चिन्तित-चिन्तये—चिन्तित

१. कच गण्ड मण्डित कोमलम्—एहि गीतक एक पाठ कोनो हस्तलिखित प्राचीन पोथीक आधार पर डा० जयकान्त मिश्र अपन History of Maithili Literature Vol. I पृष्ठ १२९ पर देने छथि । ताही आधार पर ई युक्त पाठ ऊपर देल अछि ।
२. जय कम्बुकण्ठ—एहिठाम 'जय' फाजिल प्रतीत होइछ—अर्थानुरोधेन ओ छन्दोऽनुरोधेन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अति रूप-यौवन प्रथम सम्भव किं वृथा कथया प्रिये।
तेजह रूप विमोह परिहर शोक चिन्तित चिन्तये॥
उपयात मदन व्याधि दुःसह दहए पावक सेवनम्।
पवन दिसें दिसें दहए पावक युग्म[1] दारुमम्बरम्॥
श्यामा स [रस-जन] वन्दिते।
अति समय गीत सुशोभिते॥ध्रु०॥३॥
आत्मदान[2] समान सुन्दरि धार वर्षति सिंचये।
सिञ्चह सुन्दरि मम हृदयम्।
अधर सुधा मधुपानमियम्॥ध्रु०॥४॥
चन्द्रकवि-जयदेव मुद्रित[3] मान तेज तोहें राधिके।
वचन मम धर कृष्ण अनुसर किं नु कामकला शुभे॥
चन्द्रकला हे वचन करसी।
मानिनि माधव अनुसरसी[4]॥ध्रु०॥५॥
—इति विद्यापति-पुत्रवध्वाः।

सत्वरत्रय एवात्र तालस्तु परिनिष्ठतः।
तद्विहीनः स्वरश्चेत्स्याद् रागिणी याति हीनताम्॥६१॥

बुझाइत छह। उपयात—प्राप्त। पावक-सेवनम्—अग्निक सेवन सदृश। जेना सूक्ष्म सुन्दर लकड़ी कें जराय दैत अछि (सूक्ष्म दारु यथा वरम्। श्यामा-सवन्दिते—एहि ठाम छन्दोऽनुरोधेन तथा अर्थानुरोधेन किछु पाठ भ्रष्ट बुझाइत अछि, अतः "श्यामास [रसजन] वन्दिते" इएह निर्धारित बुझाइछ। अधर सुधा—अधररूपी अमृत। मधुपानम्—मद्यपान। मुद्रित—मूनिक' राखल। किन्नु—कियेक ने।[1]

ई विद्यापतिक पुतोहुक गीत थिक।

एहिमे सत्वर ताल तीन टा होइत अछि। ताहि सं चुकला परई रागिनी हीन भय जाइत अछि।६१।

१. डा० जयकान्त मिश्र "सुखम दारु वयावरम्" एहन पाठ पओने छथि। अर्थानुरोधेन दुनूक तुलनासें "सूक्ष्म दारु यथा वरम्" एहन पाठक कल्पना कयल जाय सकैछ।
२. एतय तीनि चरण आओर होयबाक चाही।
३. डॉ० जयकान्त मिश्र "निर्मित" पाठ पओने छथि।
४. गीतक वहुत चरणक भाव अस्पष्ट अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[१२] अथ हिन्दोल-रागिणी एव ललिता

रूपम् उक्तं प्राक्। अस्यास्तु भेदान्तरं नास्ति। ललितम् अत्र छन्दः। लक्षणम्—

चतुष्कल-गणानां तु सप्त शिष्टत्रिमात्रकम्।
शिष्टद्विमात्रमथवा क्वचिच्छेषैकमात्रकम् ॥६२॥
यत्पदार्धे पदार्धात्मा ध्रुवस्त्रिंशद्[१]द्विमात्रकः।
यत्र तल्ललितं छन्दो ललितायां तु गीयते ॥६३॥

उदाहरणम् [गीत संख्या १८]

सपने देखल हरि, गेलिहुँ पुलकेँ पुरि,
जागल कुसुम - सरासन हे[२] ॥
आरे की सखि! पओलह, सुतलि जगओलह,
सपनहुँ संग छड़ओलह हे ॥ध्रु०॥
सामर सुन्दर हरि रहल आचर धरि,
फोइतें किङ्किणि डोरा हे।

[१२] हिन्दोलक रागिनी ललिता

एकरो रूप पहिनहि कहि आयल छी। एकर अन्य भेद नहि होइत अछि। एहिमे ललित नामक छन्द होइत अछि। लक्षण—

जतय अर्धकमे चारि मात्राक सात टा गण (२८ मात्रा) तथा ओहिसँ अतिरिक्त तीनि मात्रा (२८+३=३१ मात्रा) वा दू मात्रा (२८+२=३० मात्रा) वा एक मात्रा (२८+१=२९ मात्रा) हो, तथा अर्धकतुल्य ३२ मात्राक ध्रुवपद हो, से ललित नामक छन्द होइछ जे ललिता रागिनीमे गाओल जाइत अछि।६२-६३।

उदाहरण [गीत सं० १८]

सपने—स्वप्नमे। गेलिहुँ पुलकेँ पुरि—रोमांचित भय उठलहुँ। कुसुम-सरासन--कामदेव। फोइतें किङ्किणि-डोरा—डँड़कसक बन्धन खोलैत। गोआरा—गोआर (गमार--अपटु) के कहैछ जे कृष्ण गमार छथि? शयन-

१. ध्रुवस्त्रिशद्द्विमात्रकः। २. एकर दोसर चरण ओ गीतक अन्तिम दू चरणक अभाव अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्रोर कहब कत रस उपजल जत,
के बोल कान्ह गोआरा हे ॥
ससरि शयनसिम, हरि गहलिहु गिम,
मुखे मुखे भमर कमल मिल हे ।
पुरलि मनक सिधि, आनि देहलि बिहि
तोरे दोसे दैवे अछोरि लेल हे ॥
[—इति विद्यापतेः[1]]

सत्स्वरत्रितयस्यैव तालस्य गतिरीदृशी ।
यामवाप्य स्वरः शीघ्रं मोहमातनुते हृदि ॥६४॥

[१३] अथ दीपकदारा केदारा

एतस्या एव केदार इत्यपि नाम । एतस्यास्तु—(१) शुद्धकेदार, (२) केदाराकेदार, (३) विहागरकेदार (४) मलारीकेदार, (५) पहड़िया-केदार, (६) कामोद-केदार, (७) केदारमालव इति सप्त भेदाः ।

सिम—ओछाओनसँ । गिम—गरदनि । भमर कमल मिलु—भौंरा कमलसँ मिलि गेल । सिधि—सिद्धि । आनि देहलि बिहि—विधाता आनि देलनि । अछोरि—छीनि ।

सत्स्वर द्रुत ताल तीनिटाक ई गीत होइछ ।...........शीघ्र मूर्छित भय जाइत अछि ।

[१३] केदारा

दीपक रागक रागिनी केदारा । एकरे नामान्तर केदार थिक । एकर सात भेद अछि (१) शुद्ध केदार, (२) केदार केदार, (३) विहागर केदार, (४) मलारी केदार, (५) पहड़िया केदार, (६) कामोद केदार, ओ (७) केदार मालव ।

१. तरौनी पदावली गीत सं०—५८, तथा भाषा गीत संग्रहक अनुसार ई विद्यापतिक थिक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१३-१) तत्र प्रथमं शुद्धा । लक्षणम्—

अष्टाविंशति-पर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ।
स्युः पदार्धे पदार्धात्मा सैकस्त्रिंशत्कलो ध्रुवः ।
यत्र तच्छुद्ध-केदारं छन्दः, सा चाऽत्र गीयते ॥६५॥

उदाहरणम् [गीत संख्या १९]

जनि हुतवह हवि[1] आनि मेराओल ता सम भेल विकार ।
दुअओ नयन तोर विषम मदन-सर सालए हृदय हमार ॥
हरि ! हरि ! कां लागि सुमुखि बिहुँसि हँसि हेरलह,
जीवन पड़ल सन्देह ॥ध्रु०॥
पीन पयोधर अपरुब सुन्दर ऊपरँ मोतिम - हार ।
जनि कनकाचल उपर विमल जल दुइ बह सुरसरि धार ।
भनइ विद्यापति सुनु वर नागर सबहुँ होएत परकार ।
राजा शिव सिंह रूपनराएन[2] लखिमा देवि उदार ॥

मध्यमः सत्वरश्चैव तालत्रय उदीरितः ।
एतस्मादपयातस्तु स्वरोऽपस्वर ईरितः ॥६६॥

(१३-२) अथ केदारकेदारः । लक्षणम्—

षट्कल-द्विकमुद्धृत्य द्विमात्रं यत्र जायते ।

(१३.१) ओहिमे पहिल शुद्धा । लक्षण—

जकर पदार्धमे पचीससँ अट्ठाइस मात्रा धरि होइछ तथा एक अर्धक रूप एकतीस मात्राक ध्रुवपद होइछ, से शुद्ध केदार छन्द कहबैत अछि। एहिमे ई रागिनी गाओल जाइत अछि ।६४।

उदाहरण [गीत सं० १९]

हुतवह—आगि। मेराओल —मिलाओल । ता सम—तत्सदृश । मदनसर—कामदेवक बाण । कां लागि—कथी लय । कनकाचल—सोनाक पहाड़ ।

एहिमे तीनि टा मध्यम एवं सत्वर ताल होइत अछि। एहिसँ रहित स्वर अपस्वर कहबैत अछि ।६५।

(१३'२) केदाराकेदार । लक्षण—

दूटा षट्कल (छओ मात्राक गण) तथा तीन मात्रा आओर अर्थात् १५

१. हरि । २. गाओलएन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पदार्धं तत्तु केदारा-केदारं तत्र गीयते ॥६७॥

उदाहरणम् [गीत संख्या २०]

आँचरे वदन झपावह गोरि,
राज सुनै छिअ, चाँदक चोरि।
घरे घरे पहरि[१] गेल अछ जोहि,
एखने दूषन लागत तोहि।
बाहर सुतह हेरह जनु काहु,
चान भरमे मुख गरसत राहु।
निरभि निहारि फाँस गुन तोलि,
बान्हि हलत तोहं खंजन बोलि।
भनहि विद्यापति होहु निशङ्क,
चाँदहुकाँ किछ लागु कलङ्क।

ताल होति एहि रागिनी सत्वर मध्यम तीनि।
जओं चुकिहए तेहि नेकु तब रागिनि होएहए खीनि ॥

(१३-२) अथ विहागर-केदारः

[अत्र त]न्नामकमेव छन्दः। लक्षणम्—

षट्कलानां चतुष्केन यत्पदार्धंव्यवस्थितिः।

मात्रा द' जकर अर्धक वनय से केदाराकेदार छन्द कहवैछ। एहि पर ई रागिनी गाओल जाइत अछि।६६।

उदाहरण [गीत सं० २०]

राज—राज्यमे। पहरि—प्रहरी, चौकीदार। जोहि—खोजि कय। दूषन—दोष, चोरिक अपराध। चान भरमे—चन्द्रक भ्रमसँ। गरसत—ग्रसित करत। निरभि—निर्भय भय वा 'निरवि' ई पाठ उचित। फाँस-गुन तोलि—फँसरी लगाय। खंजन बोलि—खंजन बूझिक'।

एहि रागिनीमे सत्वर ओ मध्यम तीन ताल होइत अछि। एहिसँ जँ च्युत होयत तँ ई रागिनी क्षीण भ' जायत।

(१३·३) विहागर केदार

एहिमे विहागरकेदार नामक छन्द होइत अछि। लक्षण—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उद्धृत[1] द्वित्रिमात्रं वा समुद्धृते[2]कमात्रकम् ॥६८॥
चतुष्कलचतुष्केन यद्ध्रुव-प्रथमार्धकम् ।
सप्तसंख्यचतुर्मात्रि-गणैरन्त्य-ध्रुवार्धकम् ॥६९॥
तद् विहागरकेदारं छन्दस्तत्र तु गीयते ।
स रागो गीतितः सम्यगिति लोचन-भाषितम् ॥७०॥

उदाहरणम् [गीत संख्या २१]

उधसल केस कुसुम छिड़िआएल खण्डित दशन अधरे ।
नयन देखिअ जनि अरुन-कमल-दल मधुलोभे बैसल भमरे ॥
कलावति ! कैतव न करह आज ।
कओोन नागर संग रजनि[3] गमओलह ॥
कह मोहि परिहरि लाज ॥ ध्रु०॥

पीन पयोधर नख-रेख सुन्दर करें बाँधह काँ गोरि ।
मेरु शिखर नव उगि गेल ससधर गुपुति न रहलिए चोरि ॥
वेकतेओ चोरि गुपुतकर कतिखन विद्यापति कवि भान ।
महलमजुगपति चिरें जिवें जीवथु ग्यासदीन सुरतान ॥

जतय छओ मात्राक गण चारि टा (६×४=२४) लयकें आधा पद बनय, चारि मात्राक चारि गण (४×४=१६ मात्रा) सँ ध्रुवपदक पहिल अर्धक बनय आ चारिये मात्राक सात टा गण (४×७=२८ मात्रा) सँ ध्रुवपदक दोसर अर्धक बनय, से विहागरकेदार छन्द कहबैत अछि। एहि पर लयपूर्वक ई राग गाओल जाय सकैछ —ई लोचन कविक कहल अछि ।६८-७०।

उदाहरण [गीत सं० २१]

उधसल— इतस्ततः भय गेल । केस-कुसुम- केसमे लगाओल फूल । दशन —दाँत । अरुन-कमल —जेना मधुक लोभ सँ लाल-कमल पर भ्रमर बैसल हो । उत्प्रेक्षा । कलावति —चतुरा । कैतब – लाथ । रयनि- रजनी—राति । परिहरि—छोड़ि के' । नख-रेख – नहसँ कयल रेखा, नखक्षत । ससधर—चन्द्रमा । गुपुति—गुप्त । वेकतेओ—व्यक्तो, प्रत्यक्षो ।

१, उद्वृत्त । २, समुद्धृत्तैक । ३. रयनि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोए सत्वर अरु मध्य दोए एआ मे चारिए ताल।
एआतें चूकत सुर जबहिं तब रागिनि होति बेहाल ॥

(१३-४) अथ मलारी-केदारः

अत्राऽप्येतन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम्—

पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्धे दशपञ्चात्मिकाः कलाः ॥
तन्मलारीय-केदारं छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ॥७१॥

उदाहरणम् [गीतसंख्या . ३२]

कीर कुटिल-मुख[1] न बुझ वेदनदुख, न बोल वचन परमाने।
विरह-वेदने दह कोक करुन सह, सरुप कहत के आने ॥
हरि हरि मोरि उरवसि की भेली।
जोहइत धावञो कतहु न पावञो मुरुछि खसञो कत बेरी ।ध्रु.व०।

एहिमे दू सत्वर (द्रुत) एवं दू मध्यम एहि तरहें चारि तल होइत अछि। एहिमे जखने कम होयत तखनहि तें रागिनी विकल भय जायत।

(१३.४) मलारी केदार

एहूठाम एही नामक छन्द होइत अछि। लक्षण—

जकर अर्धकमे २५ सँ लय ३० मात्रा धरि रहय आ ध्रुवपदक आधा भागमे १५ मात्रा रहय सें मलारी केदार नामक छन्द कहबैत अछि। एहि रागिनीकें एहिपर गाबी ।७१।

उदाहरण [गीत, सं०-३२]

कीर कुटिल-मुख—सुग्गा तें कुटिल मुख (टेढ़ लोल वा टेढ़ स्वभाव) वाला होइछ। परमाने—यथार्थ। विरह-वेदने—चकबा तें विरह-वेदनामे जरि रहल अछि। चकबा पक्षीक विलाप जकाँ। सरुप—सत्य। ठीक-ठीक हाल

1. एतय सँ ई पंक्ति खण्डित छैक। 'भाखागीत-संग्रह' (गीत सं० ११३) प्रो० रमानाथ झा सम्पादित द्वारा त्रुटि पूर्ति भेल अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गिरि नरि तरुअर कोकिल भमरवर हरिन हाथि हिमधामा ।
सबक परञो पैञा सबे भेल निरदय केअओ न कहए तसु नामा ॥
मधुर मधुर धुनि नेपुर-रव सुनि भमञो तरंगिनि-तीरे ।
मोरे करमें कलहंस-नाद भेल नयन विमुंचञो नीरे ॥
हरिहर[1] [पअ परि जगत] साखि धरि कवि भीषम एहो भाने ।
प्रभावति देइ पति मोरंग-महीपति नृप जगनराएन जाने ॥

सत्वरद्वितयं मध्य-द्वितयं चैव जायते ।
तालानां तानवाप्येयं रागिणी चित्तमोदिनी ॥७२॥

(१३-५) अथ पहाड़िया-केदारः

एतन्नामकमेवाऽत्रापि छन्दः । लक्षणम्—

आद्यर्धे पञ्चमे षष्ठे वर्णे तु विरतिः पुनः ।
चतुर्थे[2] पञ्चमे चैव द्वितीयार्धे तु तद् भवेत् ॥७३॥

आन के कहत । उरवसि—उर्वशी नामक अप्सरा (नायिका)। धावञो—दौड़ैत छी । पावञो—पबैत छी । गिरि—पहाड़ । नरि—नदी । हिमधामा—चन्द्रमा । पैञा—पाथर पर । तसु—ओकर (नायिकाक)। रव—शब्द । भमञो—भ्रमण करैत छी । तरंगिनी—नदी । करमे—भाग्यें । कलहंस—पक्षि विशेष । नाद—शब्द । विमुञ्चञो—छोड़ैत छी । साखि=साक्षी ।

[दू सत्वर ओ दू मध्यम एहि चारि] तालकें प्राप्तक' ई रागिनी प्रसन्न भ' जाइत अछि ।७२।

(१३-५) पहड़िया-केदार

एहूठाम एही नामक छन्द होइछ । लक्षण—

प्रथम अर्धकमे पाँचम ओ छठम दूहू वर्ण पर विराम हो, द्वितीय अर्धकमे चारिम ओ पाँचम दूनू वर्ण पर विराम हो, प्रत्येक अर्धक दस ओ आठ (=१८) मात्रासँ बनल हो, से पर्वतीय केदार छन्द कहबैछ । एहि रागिनीक हेतु ई उदाहृत अछि ।७३-७४।

---

१. कोष्ठान्तर्गत पाठ मूलमे खण्डित छैक । भाषागीतसंग्रहक आधार पर त्रुटिपूर्त्ति कयल अछि । २. चतुर्थपञ्चमे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशाष्ट-कलिका-बद्धा यत्पदार्धं-व्यवस्थितिः ।
पर्वतीयं तु केदारं तदेतत् समुदाहृतम् ॥७४॥

उदाहरणम् [गीत संख्या २३]

बिसरल ओ रे. तैसन सिनेही पिअ मोरे ।
की परदेश भए रहलाह पिआ परवस ॥
अब ' गए ओ रे, अनुभवि भल कए जानल ।
की निरदए, पुरुष जाति केर हिरदए ॥
पिअ सखि ओ रे, भलि कए बिनति बझाउबि ।
की हमरे ओ,[1] जीव लइए पिआ मोर जीवओ ॥
गुनमय ओ रे, धीर कुमर सिरि गर्जसिंह ।
की रस जाने, गुनमय कवि गर्जसिंह भाने ॥

तालत्रितय-सम्पन्ना गतिरेषा विराजते ।
राजते तैर्विना रागः कदापि न महीतले ॥७५॥

(१३-६) अथ कामोद-केदारः

अत्रापि तन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम्—

आचतुर्दशकात् सप्तदशपर्यन्तकाः कलाः ।

उदाहरण [गीत सं० २३]

अनुभबि = अनुभव कय । भल कय = नीक जकाँ । जिव लए — हमरो आयु ल' ।

तीन तालसँ युक्त ई रागिनी शोभित होइत अछि । तकर विना ई कदापि एहि संसारमे शोभित नहि भय सकैछ ।७५।

(१३·६) कामोद-केदार

एहूमे एही नामक छन्द होइत अछि । लक्षण—

जाहिमे नियमक बिना चौदहसँ सत्रह धरि मात्रा दूनू अर्धकमे समान होइछ तकरा सङ्गीत-विशारद लोकनि कामोद-केदार कहैत छथि ।७६।

१. की हम ओ रे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नियमेनोज्झिता यत्र पदानां दलयोः समाः ॥
तं तु कामोदकेदारमाहुः सद्गीति-सत्तमाः ॥७६॥

उदाहरणम् [गीत संख्या २४]

अबला अंशुक बालभु लेला,
पानि - पलव धनि आतर देला।
हठ न करह कान्हु न पुरत कामे,
प्रथमक रभस विचारक ठामे।
आबे नव - जौवन समय निहारी,
अपनहि बेकत होएत परचारी।
मदन भँडारक सुरत रस आनी,
मोहर मुनल[२] अछ असमय जानी।
मुकुलित लोचन नहि परगासे,
काँप कलेवर हिरदय तरासे।
भनइ विद्यापति नव अनुरागी,
सहिअ पराभव पिआ-हिआ लागी।

(१२-७) अथ कामोद-मालवः

अयमेवात्र छन्दः। लक्षणम्—

उदाहरण [गीत सं० २४]

अबला = मुग्धा नायिका। अंशुक = वस्त्र। बालभु = वल्लभ, प्रिय (पति)। पानि-पलव = पाणि पल्लव। आंतर = अन्तर, व्यवधान, आवरण। प्रथमक रभस = पहिल दिनक विलास। वेकत = व्यक्त (प्रकट)। मदन-भँडार = कामदेवक भण्डारमे सुरत रूपी रस मोहर लगा वन्द कयल अछि, किएक तँ एखन समय नहि आएल छैक। मुकुलित लोचन = आँखि मुनल छैक, लाजेँ नहि तकैत अछि। कलेवर = देह। तरासे = त्रास, डर। पराभव = कष्ट।

(१२·७) केदार-मालव

एहिमे एही नामक छन्द होइछ। लक्षण—

१. भँडारक सुरत सयानी। २. मुनल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षड्विंशति-कलाभिर्यत्पदान्तार्ध-व्यवस्थितिः ।
क्वचिदेक-कलाहीनाः क्वचित् पूर्णास्तु यद्गताः ॥७७॥
षट्कलात्म-गणानां तु चत्वारः प्रथमार्धके ।
केदारमालवः सोऽयं दलोपान्त्य-गुरुर्मतः ॥७८॥

उदाहरणम् [गीत संख्या २५]

गौर देह सुढार सुवदनि स्यामसुन्दर नाह ।
जनि जलद ऊपरं तलित संचर सरुप ऐसन आह ॥
पीठि परु घनश्याम वेनी देखि ऐसन भान ।
जनि अजर हाटक-पाट करें गहि लिखनि लिखु पचवान ॥
सघन संचर खन न थिर रह मनिक मेखल राव ।
जनि मदन राए दोहाए दए दए जघन तसु जस पाव ॥
रमनि नहि अवसाद मानए रयनि वरु अवसान ।
ओ जे रमनि राधा रसिक यदुपति, सिंह भूपति भान ॥

जकर पदक अंतिम अर्धक छब्बीस मात्रासँ बनय, कतहु-कतहु एक मात्रा कम वा कतहु अधिक रहय, तथा प्रथम अर्धकमे छओ मात्राक चारि टा गण (६×४=२४ मात्रा) हो आ पदक अन्तिमसँ पूर्ववर्ण गुरु हो से केदार मालव छन्द कहैत अछि ।७७-७८।

उदाहरण [गीत सं० २५]

गौरदेह=सुमुखीक देह सुडौल-एवं गोर छनि । नायक श्यामल ओ सुन्दर छथिन । जलद=मेघ । तलित=तड़ित्, विद्युत् । उत्प्रेक्षा । वेनी= वेणी (जुट्टी) । अजर=सदाक लेल नव रहयबाला जे हाटक : पाट=सोनाक पाटी (=पीठ ताहि पर । करें गहि लिखनि=हाथमे कलम पकड़ि । पचवान=कामदेव लिखि रहल होथि । सघन संचर=तेज गतिए चलायमान अछि । मेखल= डँड़कस) । राव=शब्द करैत अछि । मदनराए=राजा कामदेव । दोहाए=बाहु-वाही । अवसाद=हारि । रयनि=रजनी, राति । अवसान=अन्त । यदुपति=कृष्ण ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चारि ताल की रागिनी ता मे सत्वर दोए।
दोए मध्यम तेहि चूकि चल[1] राग अपस्वर होए॥
केदारः सङ्करोत्पन्नो विहागर-मलारयोः।
केचिदाहुर्न केदारः परनामा मतस्तु सः॥७६॥

[१४] अथ कामोदः

इयमपि दीपकभार्या। रूपमुक्तं प्राक्। इयमपि—(१) कामोद-मंगल—(२) देवकामोद इति भेदद्वयवती।

(१४.१) अथ कामोदः-मङ्गल[2]

अत्र तु तन्नामकमेव छन्दः। लक्षणम्—

द्वित्रिमात्रा-विशेषोऽपि क्वचित् प्रायः पदार्धयोः।
सप्तविंशतिमात्राः स्युर्ध्रु वार्धं-द्वितये पुनः॥८०॥
सप्त सप्तैव कलिकाश्चा[3]न्तिमोपान्त्यवर्णयोः।
गुरुत्वं प्रायशो यत्र तत् तु कामोदमङ्गलम्॥८१॥

ई रागिनी चारि तालक होइत अछि। ताहिमे दू सत्वर ओ दू मध्यम होइत अछि। एहिसँ च्युत (हीन) भय राग अपस्वर (विकृत) भ' जाइत अछि।

विहागर ओ मलार रागक मिश्रण (मेल) सँ केदार राग बनैत अछि। कनिको मतेँ ई केदार नहि दोसरे नामे कहल जाय।७९।

[१४] कामोद

इहो दीपक रागक रागिनी थिक। एकर स्वरूप पहिनहि कहि आयल छी। इहो दू प्रकारक अछि (१) कामोद-मङ्गल ओ (२) देवकामोद।

(१४.१) कामोद मङ्गल

एहिमे एही नामक छन्द होइछ। लक्षण—

जतय कतहु-कतहु दू वा तीनि मात्रा अधिको रहए, दूनू अर्धकमे सत्ताइस-सत्ताइस मात्रा रहय; ध्रुवपदक दूनू अर्धकमे सात-सात मात्रा हो एवं अन्तिम ओ ताहिसँ पूर्वक वर्ण प्रायः गुरु रहय, से कामोद-मङ्गल कहबैत अछि।८०-८१।

१. चल तव राग। २. कामोदमंगले तु तन्नामकमेव छन्दः।
३. कालिका तान्तिमो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत संख्या २६]

जयमङ्गला जयमङ्गला ।

होहु परसनि देवि तोरित-बला ॥ध्रु०॥

मधु कैटभ महिषासुर अतिबल धूम्रलोचन खयकारी ।
शुभ निशुम्भ देव-कंटक रन खनहि महाबल देल बिदारी ॥

जैसे सुरगन देलह अभय बल सकल असुरगन मारी ।
तैसे आस पुरह जगमाता रिपुगन हलह संभारी ॥

जे अभिमत कए जे नर चिन्तए, से नर से फल पावे ।
सर्वकाज सिधि करह भवानी, कवि चतुरानन गावे ॥

सत्वरांत्रितयं त्वत्र तालानां तु व्यवस्थितम् ।
तावद्भिः कृतसारथ्यो रागोऽयमनुरञ्जकः ॥८२॥

(१४.२) अथ देवकामोदः

अत्राप्येतदेव छन्दः । लक्षणम्—

अङ्कोत्तर-महादेवनेत्रतश्चरणार्धयोः ।

उदाहरण [गीत सं० २६]

जय-मङ्गला—जये (जितवे) मंगल (शुभ) छनि जनिका एहन भगवती । परसनि—प्रसन्ना । तोरितबला—त्वरित (शीघ्र) बल छनि जनिका । खय-कारी—क्षय (नाश) कयनिहारि । देव-कंटक—देवतालोकनिक हेतु काँट ।

एहिमे तीन टा सत्वर (द्रुत) ताल नियत अछि । ओहि पर चलैत ई ताल चित्तकें प्रपन्न क' दैत अछि ।८२।

(१४-२) देवकामोद

एहू ठाम एही नामक छन्द होइछ । लक्षण —

दूनू चरणार्धमे सोलह-सोलह मात्रा (अंक ९+महादेव ५+नेत्र २=१६ मात्रा), दू मात्रा धरि अनियत रूपें रहय, से छन्द देवकामोद नामक थिक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्विरङ्कावधि यत्र स्युः कलिका नियमोज्झिताः ।
वृत्तं तद् देवकामोद-नाम तत्रैव गीयते ॥८३॥

उदाहरणम् [गीत संख्या २७]

देखहो गे माइ हे जोगि एतए कतए
फिरए गोरी रंगे जतए ततए॥
सिंगी भरि पुरलन्हि मधुरिमि वानी ।
भिखिग्रो न लेग्र जोगी माँगइ भवानी ॥
जहाँ जहाँ सखि संग गोरि खेलाए ।
तहाँ तहाँ नाचए जोगी डामरू बजाए ॥
जोगिग्रा रंगिग्रा निते निते ग्राव ।
परतह कह जोगि गोरि देखाव ॥
भन हरिदास महादेव भेस ।
गोरी भाग गंगाराम महेश ॥

[१५] अथ श्रीरागः

ग्रयमुक्तः प्राक् । ग्रत्रापि रागनामैव छन्दः । लक्षणम्—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ।
पदार्धे वीतनियमा ध्रुवसाधारणी स्थितिः ॥८४॥

एहीमे ई रागिनी गाओल जाइत अछि ।८३।

उदाहरण [गीत सं० २७]

गोरी रंगे—गौरीमे आसक्त भेल । सिंगी—दीर्घ ध्वनिकारक एक बाजा जकरा बाबाजी सभ फूँकि बजबैत छथि । मधुरिमि वानी—मधुर-स्वर । परतह – प्रत्यह, नित्य दिन ।

[१५] श्रीराग

ई पूर्वहि वर्णित भय चुकल अछि । एहू ठाम रागक नामहि पर छन्दोक नाम अछि । लक्षण—

पचीस मात्रा सँ अट्ठाइस मात्रा धरि पदक आधा भागमे हो, नियमक शिथिलता रहय, ध्रुवपद सामान्य पदक तुल्ये रहय तथा अन्त्य वा ताहिसँ पूर्वक-अक्षर गुरु हो से रागक नामहि सँ प्रसिद्ध श्रीरागछन्दक द्वारा गाओल जाइत अछि ।८४-८५।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पदार्धोपान्त्य अन्त्यो वा वर्णस्तु नियमाद् गुरुः।
यत्र तद् रागनामैव श्रीरागेणैव गीयते ॥८५॥

उदाहरणम् [गीत सं० २८]

कुन्द-भमर संगम सम्भाषब, नञोने जगाओब अनङ्गे।
आशा दए अनुराग बढ़ाओब, चङ्गिम अङ्ग विभङ्गे॥
सुन्दरि हे उपदेश धरिए धरि, सुन-सुन सुललित बानी।
नागरिपन किछु कहबा चाहों, कहलहु बुझए सयानी॥
कोकिल-कूजित कण्ठ बैसाओब, अनुरंजब रितुराजे।
मधुर हास मुखमण्डल मण्डब, घड़िएक तेजब लाजे॥
कैतव कए कातरता दरसब[1], गाढ़ आलिंगन दाने।
कोप कँए परबोधल मानब, घड़िएक न करब माने॥
सम-पसेद-नीसह तनु दरसब[2] मुकुलित लोचन हेरी।
नखें हनि पिआ मनिधाम छड़ाओब, सुरत बढ़ाओब केली॥
जूझल मनमथ पुनु जे जुझाबए, बोलि वचन परचारी।
गेल भाव जे पुनु पलटाबए, सेहे कलावति नारी॥
रस-सिंगार सरस[3] कवि गाओल, बुझए सकल रसमन्ता।
राजा शिवसिंह[4] रूपनरायन लखिमा देविक कन्ता[5]॥

उदाहरण [गीत संख्या २८]

सखीक उपदेश। कुन्द-भमर-संगम सम्भाषब—कुन्द फूल पर बैसि जेना भौंरा बजैत अछि तहिना बजिहह। चंगिम अंग विभङ्गे—सुन्दर देहक चेष्टा सँ। नागरिपन—नायकक संग व्यवहारमे चतुराइ। कहलहुं बुझए सयानी—कहनहु पर बुझनुके बुझि सकैछ। कोकिल-कूजित—कोइलीक शब्द सनक स्वर कण्ठमे धय लेब। अनुरञ्जब रतिराज—ताहिसँ वसन्त नायक कें प्रसन्न करिहह। मधुर हास……मण्डब—मधुर मुसुकान सँ अपन मुहकें सुशोभित करब। घड़िएक—किछुए कालक हेतु। कोप कँए—कोप करब, किन्तु नायक मनाबथि तँ मानि जायब। समपसेदनीसह—रतिश्रसजन्य प्रस्वेद (घाम) सँ निस्पन्द। मनिधाम—गट्टा। जूझल—जे युद्ध (रति) क' एक बेर समाप्त विरत भेल मन-मथ—कामकें।

१. कातर नागर सब। २. समय से व निसह तनु चांद न। ३. सबस करि। ४. सिंघ। ५. नेपाल पदावली पृ० ८३ क अनुसार ई विद्यापतिक गीत थिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरो मध्यमश्चैव तालत्रय उदीरितः ।
रागस्यास्य तु तावद्भिः सम्यग् गनं प्रजायते ।।८६।।

[१६] अथ वसन्तः

अत्राप्येतन्नामैव छन्दः । लक्षणम्—

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
चरणार्धे तु, तद् वृत्तं वसन्तस्तत्र नीयते ।।८७।।

उदाहरणम् [गीत सं० २९]

(स्वरः पञ्चमः)

माघ मास सिरिपञ्चमि गँजाइलि नवम[1] मास हरु आइ ।
अतिघन पीड़ा दुख बड़ पाओल वनसपती भेलि[2] धाइ हे ।।
सुभ खन बेरा सुकुल पख हे दिनकर उदित समाइ ।
सोलह संपुने[3] बत्तिस लखने जनम लेल रितुराइ हे ।।
नाचए जुवतिगन अति हरखित मन जनमल[4] बाल मधाइ ।

एहिमे सत्वर (द्रुत) ओ मध्यम तीन ताल लगैत अछि । ताहिसँ एहि रागक गान नीक जकाँ होइत अछि ।८६।

[१६] वसन्त

एहूमे एही नामक छन्द होइछ । लक्षण—

जकर आधा चरणमे पचीससँ तीस धरि मात्रा होइछ, अर्थात् पचीस मात्रासँ कम नहि ओ तीससँ अधिक नहि, से वसन्त छन्द कहबैत अछि । एहिमे वसन्त राग गाओल जाइत अछि ।८७।

उदाहरण [गीत सं० २९]

पंचम स्वरमे ई गीत गाओल जाइछ ।

माघमासक श्रीपंचमी (वसन्त-पंचमी) गर्भवती भेलि । ई नवम मास आबि गेलैक । प्रबल प्रसव-वेदना भेलैक । वनस्पति ओकर धात्री (नर्स) भेलैक । शुभ घड़ी शुक्ल पक्ष सूर्योदय कालमे सोलहो कलासँ युक्त तथा बत्तीसो लक्षण (राजयोगक बत्तीसो लक्षण) सँ युक्त ऋतुराज वसन्त जन्म

१. माँस पंचम हरुआइ । २. के बधाइ । ३. सँ पुने ।
४. नाचए जुवतिगन हरखित जनमल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुर महारस मंगल गाबए मानिनि मान उड़ाइ हे ।।
बह मलयानिल ओोत उचित हे वन घन भउ उजिआरा।
भल माधवि फूल गजमुकता-तुल तें देल वन्दनेवारा।।
पीअरि पाँड़रि महुअरि गाबए काहरकार - धुथूरा।
नागेसर कलि संखधूनि पुर, तगर ताल समतूला।।
मधु लए मधुकरे बालक दए हलु कमल पखुरिआ झुलाइ।
पौञनाल तोरि कटि-सुत बाँधल केसु कइलि बघनाइ।।
नव नव पल्लव सेज ओछाओल सिर दहु कदंबेरि माला।
बैसलि भमरी हरउद[१] गाबए चक्का चन्द निहारा।।
कनए केआसुति पत्र लिखिए हलु रासि नछत्र कए मेला।[२]
कोकिल गनित[३] गुनित भल जानए ऋतु वसन्त नाम देला[४] ।।
दखिन पवन घन आँग उगारए कुवलए कुसुम परागे।
सुललित हार मंजरि, घन कज्जल आँखि तञो अंजन लागे ।।
बाल[५] वसन्त तरुन भए धाओल बेढ़ए सकल संसारा।

लेलनि। श्रीपंचमी माय भेलथिन ओ तनिकर बालक भेलाह वसन्त। मधाइ—माधव, वसन्त। वसन्तमे युवतीक उल्लास ओ मानक अल्पता स्वाभाविक। ई उल्लास वसन्तेक जन्मक उपलक्ष्यमे थिक, ई कविक उक्ति उत्प्रेक्षा-ध्वनि थिक। ओत—ओट, अढ़। वाल-वसन्तकें अढ़ करब उचित जानि वनमे मेघ पसरि गेल। तें देल वन्दनेवारा—ताहिसँ मेहराब सजाओल गेल। महुअरि—वाद्यविशेष, तूंबी। काहर—सहनाइ। कारधुथूरा—करिया धुथूर। धुथूरक फूलक आकार सहनाइ सन होइछ। तगर ताल समतूला—तगरक फूल झालिक समान काज कयलक। बालक वसन्तकें भौंरा मधु देलक, कमल अपन फूलक पत्ती पर झुलओलक ओ कमल अपन नाल तोड़िक' डाँड़मे गहनाक रूपमे बान्हि देलक वा डँड़ाडोरि देलक। कटिसुत—कटिसूत्र। पौञ—पद्‌म। केसु—किंशुक, पलाश। वच्चाकें बाघक नह पहिराओल जाइत अछि से काज पलाशक फूल कयलक। बच्चाक शान्तिक हेतु हरउद (लोरी) गाओल जाइछ जे भमरी गओलक। ओ शिशु कें चन्दा देखाय परतारलक। कनए केआसुति—एक प्रकारक सोनहुला फूलसँ जन्म-पत्र (टिपोट)

१. हर उदगारए। २. लोला। ३. गणित गुणित। ४. थोएला।
५. ई पंक्ति एहि सँ दू पाँती ऊपरे मूलमे अछि। एकर उत्तरार्ध सेहो नहि अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नव वसन्त ऋतु अनुसर जौवति विद्यापति कवि गाया ।
राजा सिव सिंह रूपनराएन सकल कला मन भाया ।।

जयदेवादिपरिगृहीता देशीयाश्च एतद्भेदान्तरिता एवेति न लिख्यन्ते ।

[१७] अथ मालवः

अत्र च वितत-मालव, देश - मालव, श्रीमालव, घनछी - मालव, वियोगि-मालव, बृहद् पहडिया-मालव, विजयपुरी-मालव, जोगिश्रा-मालव, शार्ङ्गी-मालव, प्रियतमा मालव इति एकादश भेदाः ।

(१७-१) तत्रादौ विततारव्यः

विततमेवात्र छन्दः । लक्षणम् —

आदिभूतं तृतीयं च चरणं तु चतुष्कलैः ।
चतुर्भिः कलिकाहीनैस्त्रिभिस्तैर्द्विचतुर्थकम् ।।८८।।

बनल । राशि ओ नक्षत्र टिपलक । द्विज कोइली गणित क' वसन्त नाम रखलक । मलय-पवन कमलक पराग ल' क' बच्चाक आङ उँगारलक । पराग भेल उबटन । मजर (आमक) हार रूपमे सुशोभित भेल । मेघ काजर कयलक ।

जयदेव आदि आचार्य द्वारा वर्णित तथा देशमे प्रचलित एहि रागक सकल भेदक एहीमे अन्तर्भाव भ' जाइछ । अतः ओ भेद सब नहि लिखल जाइछ ।

[१७] मालव

ई एगारह प्रकारक अछि—वितत-मालव, देश-मालव, श्रीमालव, घनछी-मालव, वियोगि-मालव, बृहदवियोगि-मालव, पहड़िया-मालव, विजयपुरी-मालव, जोगिआ-मालव, शार्ङ्गी-मालव ओ प्रियतमा-मालव ।

(१७.१) ताहिमे सर्वप्रथम वितत-मालव ।

एहिमे वितते छन्द होइत अछि । लक्षण —

पहिल ओ तेसर चरण चारि चतुष्कल (१६ मात्रा) सँ तथा दोसर ओ चारिम चरण एक मात्रा कम तीनि चतुष्कल (११ मात्रा) सँ होइत अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुवात्म-चरणावेतद् वैपरीत्येन यद्गतौ ।
विततारव्यं तु तद्वृत्तं विततेनैव गीयते ॥८६॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३०]

विकट जटा चय किछ न लोकभय हे,
उर फनिपति, दिगवास[1] ॥
कञोन पथ भेटताह हे,
आगे माइ जाइत उमत हमार ॥ ध्रु० ॥
त्रिपुर दहन करु, छारे छाल भरु हे
बसह चढ़ल वर बूढ़ ।
तीनि नयन हर, एक अनल वर हे
सिर सुरसरि जलधार ॥
भनइ विद्यापति गोरि विकलमति हे,
ओहि उमताक उदेस ॥

सत्त्वरत्रितयञ्चात्र तालत्रयमुदीरितम् ॥९०॥

ध्रुवपदमे एकर विपरीत अर्थात् पहिल खण्ड ११ मात्राक ओ दोसर १६ मात्राक हो, से वितत नामक छन्द थिक जे वितत रागमे गाओल जाइछ ।८९।

उदाहरण [गीत सं० ३०]

उर फनिपति—हृदय पर सर्पराज छनि । दिगवास—दिगम्बर, नाङट । उमत—उन्मत्त, बताह । जे तीनू लोक कें जरा क' भस्म क' दैत छथि से छाल (वघछाला) पहिरने वूढ़ बसहा पर चढ़ल छथि । हर (महादेव) कें तीन टा आँखि छनि । ताहिमे एकटामे आगि छनि । ओहि उमताक उदेश (खोज) मे गौरी विकल छथि ।

एहिमे तीन सत्वर (द्रुत) ताल कहल गेल अछि ।९०।

---

१ एकर उत्तरार्ध नहि अछि । ई गीत अपूर्ण ओ इतस्ततः भय गेल अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१७.२) अथ देशमालवः, लक्षणम्—

चतुष्कल[1]गणाः पञ्च एक-द्वि-त्रिकलाऽधिकाः ।
पदार्धे यत्र तद् देशी देश-मालवगा भवेत् ॥६१॥

उदाहरम् [गीत सं० ३१]

कुन्दल[2] कनक कन्हाइ, हमहु कसौटी तूल ।
निञ हिअ[3] कसल बालंभ, गुन बूझल बहुमूल ॥
ए सखि सुपहु समागम, सुख कहहि न जाए ।
मनकर मनाञोन छाड़िअ, राखिअ हिअ लाए ॥
पुरब गौरि हम पूजलि, पुनें परिनत नेह ।
जीव एक कए मानल, कि जञो दुह देह ॥
लछमिनराएन नृप कह, तोहें गुनमति नारि ।
जासञों नेह बढ़ाबह, सेहे देब मुरारि ॥

त्वरितत्रय-तालोऽत्र दातव्यो राग-पारगैः ॥६२॥

(१७-२) देश-मालव । लक्षण—

जकर अर्धकमे पांच टा चतुष्कल (५×४=२० मात्रा), एक, दू वा तीन मात्रा अधिक रहय से देशी मालव छन्द कहवैत अछि। ई देशमालव रागमे गाओल जाइत अछि।९१।

उदाहरण [गीत सं० ३१]

कृष्ण शुद्ध कयल सोन थिकाह आ हम कसौटी थिकहुँ । अपना हृदयमे प्रियकें कसलहुँ तँ हुनक बहुमूल्य गुण बुझलहुँ । मनाञोन—मनाओन, मान । पूर्वमे हम गौरीक पूजा कयने छी, ताही पुण्यें ई स्नेह भेटि रहल अछि। हमर प्रियतम हमरा अपनासँ अभिन्न मानैत छथि, केवल दू देह अछि, जीव (प्राण) एके अछि ।

रागवेत्ता लोकनि एहि रागमे तीन टा द्रुत ताल दैत छथि ।९२।

---

१. गणानाञ्च चैकद्वित्रि। २. कुन्दन कन कन्हाई । ३. हिञ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१७.२) अथ श्रीमालवः

श्रीरेवात्र छन्दः। लक्षणम्—

चतुर्भिः सममेव स्याद् यत्पदार्धं चतुष्कलैः।
गणैः क्वचिन्न्यूनकलैस्तच्छ्रीस्तत्रैव गीयते ॥६३॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३२]

यदि तोरा नहि खन नहि अवकास।
परकें जतने ककें देल विसवास॥
विसवास दए ककें सुतह निचीत।
चारि पहर राति भम तसु चीत॥
कर जोरि पैञा परि कहबि विनती।
बिसरि न हलविए पुरुब पिरिती॥
प्रथम पहर राति रभसें बहला।
दोसर पहर परिजन नीन्द गेला॥
नीन्द निरुपइतें भेलि अधराति।
तखने उगल चाँदा परम कुजाति॥
भनइ विद्यापति तखनुक भाव।
जेहे पुनमत सेहे जन पए पाव॥

(१७.२) श्रीमालव

एहिमे श्रीछन्द होइत अछि। लक्षण—

जकर अर्धक चारि चतुष्कल (१६ मात्रा)क हो, कतहु गोटेक मात्रा कमो हो, से श्रीछन्द कहबैत अछि। ई श्रीरागमे गाओल जाइत अछि।६३।

उदाहरण [गीत सं० ३२]

कके—किएक। रातिक चारू पहर ओकर चित्त घुरिआइत रहलैक। बिसरि न हलविए—बिसरि नहि जाउ। पुरुबि पिरिती—पूर्वक प्रीति। रातुक पहिल पहर तँ इष्ट-मित्रक गप्पेमे वीति गेल। दोसर पहर परिवारक लोक सभ सुतल। लोक जागल रहैत तँ कोना अबितहु? लोक सभक निन्द पड़बाक बटावटी देखैत आधा राति बीति गेल। तखन जा कि बिदा होयबाक उपक्रम कयल कि चन्दा उगि गेल। कुजाति विशेषणसँ इष्टसिद्धिमे हानिकारक ई व्यंग्य होइछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोए सत्वर अरु मध्य दोए, एआ मे चारिए ताल।
एआतें चुकि सुर चलत तब, रागिनी होत बेहाल॥

(१७.४) अथ धनछीमालवः

अत्राप्येतन्नामैव छन्दः। लक्षणम्—

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिशदन्ताः[1] कलाः किल।
यत्पदार्धे, ध्रुवाद्यर्धे चतुष्कल-चतुष्ककम्॥
धनछो-मालवं चैतद् धनछी-मालवं नयेत्॥९४॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३३]

तोहँ हम पेम जते दुरे उपजल, सुमरबि से परिपाटी।
आबे पररमनि रंग-रस भुललाहे, कओन कला हमे घाटी॥
भमर-वर मोरे बोलें बोलब कन्हाइ।
विरह-तन्त जदि जान मनोभव, की फल अधिक जनाइ॥ध्रु०॥
सुनिअ सुमेरु साधुजन तुलना, सबकाँ महिमा घने।
तन्हि निअ-लोभें ठाम जदि छाड़ब, गरिमा गहबि कओने॥
पुरुष-हृदय जल दुअओ सहजें चल, अनुबँधे बाँधे थिराइ।
से जदि न थिर रह सहसें धारें बह, उचेओ नीच पथे जाइ॥

एहि रागमे दूटा द्रुत ओ दूटा मध्यम ताल होइत अछि। एहिसँ चुकलापर रागिनी बिगड़ि जाइछ।

(१७-४) धनछी-मालव

एहूमे एही नामक छन्द होइछ। लक्षण—

जकर अर्धकमे पचीससँ तीस धरि मात्रा रहय, ध्रुवपदक पूर्वार्द्धमे चारि चतुष्कल (१६ मात्रा) रहय, से धनछी-मालव छन्द कहबैछ। एहि पर एहि रागके लाबी।९४।

उदाहरण [गीत सं० ३३]

कृष्णक प्रति स्वीया नायिकाक सन्देश। मनोभव—कामदेव। सुमेरु पर्वतसँ महापुरुषक तुलना होइछ। महिमा घने—महिमे धन थिक। गरिमा—

1. विंशदन्ताः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भनइ जसोधर नव-[1] कविशेखर, पुहवी तेसर काँहाँ।
साह हुसेन भृङ्ग सम नागर, मालति सेनिक ताँहाँ॥

सत्वर-द्वितयं मध्य-द्वितयं तावता पुनः।
चतुष्टयं तु तालानां जायते रागमध्यगम् ॥९५॥

(१७.५) अथ वियोगिमालवः

अत्राप्येतन्नामैव छन्दः। लक्षणम्—

षट्कल-द्वन्द्वमुद्वृत्त-कलाद्वन्द्व-विभूषितम्।
पदाद्यर्धे तदन्तार्धे रसमात्र-गणद्विकम्॥
कला-समधिकं तच्च तत्र स्याद् यत्र कुत्रचित्।
वियोगिमालवे गेयं छन्दस्तन्नामकं भवेत् ॥९६॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३४]

जतनहुँ जतेओ न रे रे निरबह।
ए कान्हु ततेओ अँगिरलह॥

पँघत्व। पुरुषक हृदय ओ जल स्वभाववश चल होइछ। दीपक अलङ्कार। एक अनुबन्ध (प्रेम)सँ ओ दोसर बन्हलासँ स्थिर होइछ। पुहवी — पृथ्वी।

एहि रागमे दू टा द्रुत ओ दू टा मध्यम चारि टा ताल होइत अछि। ।९५।

(१७-५) वियोगि-मालव

एहूमे एही नामक छन्द होइछ। लक्षण—

जकर चरणक पूर्वार्धमे दू मात्रा अधिक दू षट्कल (२ + १२ = १४ मात्रा रहय तथा उत्तरार्धमे छओ मात्राक दू गण (= ६ × २ = १२ मात्रा) तथा कतहु-कतहु एक मात्रा अधिक रहय से वियोगि-मालव छन्द थिक। ई एहि रागमे गयबाक थिक।९६।

उदाहरण [गीत सं० ३४]

हे कृष्ण, यत्नो कयला पर जे बात नहि निमहि सकैत छहु ततेक तोँ गछि गेलह। प्रथम दर्शनक दिनसँ एको दिन आबिक' बजितह तँ तोरासँ

---

१. नर कविशेखर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरसन दिन सञो रे रे बोलितह ।
नयन जुड़ाइत तोंह तह ॥
हमे अबला बलि रे रे दए जिव ।
तरबि दुसह नरि शिव शिव ॥
से सबे बिसरु आबे रे रे की हेतु ।
मरओ मधथ हे मकर केतु ॥
कवि कुमुदी कह रे रे थिर रह ।
सुपुरुष - वचन पसान रेह ॥

तालद्वितयमेवात्र सत्वरो मध्यमस्तथा ॥९७॥

(१७.६) अथ बृहद्वियोगिमालवः

लक्षणम्—

अष्टाविंशति-पर्यन्तं यत्र विंशतितः कलाः ।
पदार्धे तद् बृहत्खेद-मालवस्तत्र गीयते ॥९८॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३५]

एत दिन हृदय हरष छल, आबे सबे दुर गेल रे ।
राँकक रतन हेराएल, जगतेउ सुन भेल रे ॥

हमर आँखि जुड़ाइत । हम तँ अबला छी, अपन प्राण द' कोनहुना जीवन-रूपी नदी (नरि)कें पार करब । परन्तु तों पूर्वक प्रेमकें किएक बिसरि देने छह । एहिसँ बरु हमरा-तोरा बीच सम्पर्क करओनिहार मध्यस्थ कामदेव (मकरकेतु) मरि जाओ । कवि कुमुदी नायिकाकें सान्त्वना दैत कहैत छथि जे तों स्थिर रहह, कलावान् चतुर पुरुषक वचनकें पाषाण-रेखा बुझह जे अमिट होइत अछि । ओ अयबे करथुन ।

एहिमें सत्वर ओ मध्यम दुइये ताल होइत अछि ।९७।

(१७-६) बृहद्वियोगिमालव । लक्षण—

जकर अर्धक्रमे बीससँ अट्ठाइस धरि मात्रा रहय से ई बृहद्वियोगिमालव छन्द थिक आ' एहि रागपर गाओल जाइत अछि ।९८।

उदाहरण [गीत सं० ३५]

राँकक रतन = रङ्कक (दरिद्रक) रतन । जगतेउ = संसारो । बिहि =

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विहि निरदए[1]
कोने दोसें दहु हरलक, कोर सञो मोरि कमलमुखि रे ॥
मन कर गरल गरासिअ, पाप आतम-वध रे।
जीवन लाग मरन सन, मरन सोहाञोन रे।
गर्जसिंह कह दुख छाड़त सुनह बिरहि-जन रे।
नृप पुरुषोत्तम सहि रह तेहिं दयाञो मिलु रे॥

दोए सत्वर अरु मध्य दोए एआ मे चारिए ताल॥

(१७.७) अथ पहड़ियामालवः

छन्दोलक्षणम्—

सप्तविंशतिपर्यन्तं द्वाविंशतितमात् कलाः।
यत्पदार्धे, ध्रुवो यत्र कलिका-पंचकात्मकः।
पर्वतीयस्तु विख्यातः स भवेदिह मालवः ॥६९॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३६]

धवल जामिनि धवल हर रे धवल चाँदन चीर।
निफल-जनक विहार भेल रे गिरिसँ बिसरु पिअ थीर॥
सजनिञा॥ ध्रु० ॥

विधाता। गरल गरासिअ=विष खाय ली। एहि गीतमे नायिकाक हरण प्रयुक्त नायकक विलाप अछि।

एहिमे चारि ताल होइत अछि—दू टा द्रुत ओ दू टा मध्यम।

(१७.७) पहड़िया मालव। छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे बाइस सँ सत्ताइस धरि मात्रा रहय ओ पाँच मात्राक ध्रुवपद रहय से पर्वतीय मालव कहबैत अछि। एहि राग पर ई गाओल जाइत अछि।९९।

उदाहरण [गीत सं० ३६]

राति उज्जर अछि (इजोरिया)। निफल-निष्फल। विहार—प्रेमलीला। गिरिसँ—पहाड़-परसँ। प्रियतम स्थिर भय बिसरि गेलाह। नायक कोनो पर्वत

१. ई चरण अपूर्ण लगैछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवक यौवन नवक अनु रे, नवक नव अनुराग।
सारि खेत समेत हेमत, पिआ नहि, मोर अभाग॥
बारिसँ बरिसए गगन जल रे, परसें पंचसर सोस।
गरजें चओकलि काहि आलिङ्गओ, पाउस निअ नहि दोस॥
धैरज धर घनि कन्त आओत, कुमर भीषम भान्।
ई रस विन्दक नरनराएन, धरमा देइ रमान[१]॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालगतिस्त्वियम्।
तया तु हरते सेयं रागिणी महतां मनः॥१००॥

(१७.८) अथ विजयपुरमालवः

ए० छन्दोलक्षणम्—

क्वचित् तैर्मात्रया हीनैर्बहुधा वेदषट्कलैः।
यदर्ध-घटनं तादृक्-पदेनोत्थायि सुस्वरम्॥१०१॥
चतुर्भिः कलिका-हीनैस्तैः कदाचिच्चतुष्कलैः।
यदर्धघटनं तादृक्पदे विश्रान्तसुस्वरम्॥१०२॥

पर डेरा देने छथिन। एहि प्रकारें शरद सेहो वितल। हेमन्त आयल। सर्वत्र नवीनता आयल, सभक अनुराग नव नव भेल। धानक (सारि) खेत धरि हेमन्त ऋतु पहुँचि गेल, मुदा हमर प्रिय नहि अयलाह, ई हमर अभाग्य थिक। एहिना समय वितैत वर्षा ऋतु सेहो आकाशसँ जल बरिसावय लागल। कामदेव पँचसर छूबिक' हमरा शोखि रहल छथि। मेघक गर्जनसँ चौंकि हम ककर आलिङ्गन करू। पाउस=वर्षा ऋतु। निअ=अपन। अपन दोष नहि ई तँ भाग्यक दोष थिक। विन्दक=पओनिहार।

एहिमे दू सत्वर ओ दू मध्यम ताल होइत अछि। एहिसँ ई रागिनी महान् व्यक्तिक मन मोहि लैछ।१००।

(१७.८) विजयपुर मालव। एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकक रचना कदाचित् एक मात्रा कम चारि षट्कल (छओ मात्राक गण)सँ होअय अर्थात् ६×४=२४ मात्रासँ हो, तथा एक पद समाप्त भेला पर ओकर अन्तिम पदक समाने पदसँ दोसर पद सुन्दर स्वरमे उठय

१. ईस विन्दक नरनराएन पति धरमा देइ रमन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजयाख्यपुरी-पूर्वं-मालवीयमिदं भवेत् ।
वृत्तं तन्नामकं तत्र गीयते गीतिसत्तमैः ॥१०३॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३७]

कुण्डल-तिलकें विराज मुख, शोभित सीदुर विन्दु ।
हेमलतामे समारु विधि कवि रवि तारा इन्दु ॥

इन्दु - वदनि घनि नयन विशाला ।
कमल - कलित जनि मधुकर माला ॥
देखलि कलावति अपरुब रमनी ।
जिनए आइलि सुरपुर गजगमनी ॥

बेनी विमल विराज तसु, लस कुसुमावलि हार ।
स्याम भुअङ्गम देखि कहु, किओ काम परहार ॥

करु परहार मदन सर बाला ।
कुटिल कटाख बान कनिआरा ॥

कम्बु कण्ठ, मृणाल भुज, बलित पयोधर भार ।
कनक कलस रसें पूरि रहु सञ्चित मदन भण्डार ॥

एहि दोसर पदक आधा भागक रचना कतहु एक मात्रा कम चारि चतुष्कल (४×४=१६ मात्रा)सँ ओहने पदमे सुस्वर भय विश्राम लेअय, से ई विजय पुरी मालव नामक छन्द कहबैछ । ई राग एहीपर गाओल जाइछ ।१०१-१०३।

उदाहरण [गीत सं० ३७]

हेमलता = नायिका । कुण्डल = शुक्र । सिन्दूर विन्दू = सूर्य । तिलक = तारा, वदन = चन्द्रमा । उत्प्रेक्षा ध्वनि ।

इन्दुवदनि—चन्द्रमुखीक पैघ पैघ आँखि देखि लगैछ जेना कमलक फूल पर भम्हरा बैसल हो । सुन्दर जुट्टी लटकि रहलैक अछि ओ सुन्दर फूलक माला सेहो पहिरने अछि । से लगैत अछि जे कारी सांपकें देखि कामदेव प्रहार कय रहल होथि । वेणी भेल साप ओ फूल कामक बाण । बाला (नायिका) सेहो काम-बाण प्रहार करैत छथि । हुनक बाण छनि कुटिल कटाक्ष रूपी कर्णिकार पुष्प । कम्बु कण्ठ—शंख सन कण्ठ । मृणाल (कमलक नाल)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मदन भण्डार पयोधर गोरा।
जनि उलटाओल कनय कचोरा ॥
स्यामा सुलोचनि सुरति रति, अपुरुब भूषन भार।
विद्यापति कविराज कह सुफलें करथु अभिसार ॥
करु अभिसार मदन सर बाला।
कुटिल कटाख बान कनिआरा ॥

तालगतिः पूर्ववत्।

(१७.९) अथ जोगिआ मालवः

एतन्नामकमेव छन्दः लक्षणम्—

आ चतुर्दशकात् सप्तदश-पर्यन्तकाः कलाः।
यत्पदार्धे पदार्धात्मा ध्रुवोऽपि स्याच्चतुष्कलै ॥१०४॥
कलिका-द्वितयोपेतैः त्रिभिरुत्सर्गतः किल।
जोगिआ-मालवः सोऽयं गीतिभिः समुदाहृताः ॥१०५॥

उदाहरणम् [गीत सं० ३८]

कतन वेदन मोहि देहे मदना।
हर नहि, बाला मोञे जुवति-जना ॥

सन बाँहि। बलित—वेष्टित। कामदेवक भण्डार स्वरूप स्तन गोर अछि जे लगैछ जेना उनटाओल (औन्हल) सोनाक बाटी हो। कनय=सोन। कचोरा=कटोरा।

एहिमे ताल पूर्ववत् होइछ अर्थात् दू सत्वर ओ दू मध्य।

(१७.९) जोगिआ मालव

एहिमे एही नामक छन्द होइछ। लक्षण—

जकर अर्धकमे चौदहसँ सत्रह धरि मात्रा रहय ओ अर्धकक तुल्य ध्रुवपद दू मात्रा अधिक तीनि चतुष्कल (चारिमात्राक गण) सँ हो अर्थात् २+(३×४;=१४ मात्राक हो, से संगीतवेत्ता लोकनिक द्वारा जोगिआ मालव कहल गेल अछि।१०४-१०५।

उदाहरण [गीत सं० ३८]

हे मदन, हमरा कतेक दुःख दैत छह। हम तोहर शत्रु महादेव नहि छी, हम तँ युवती छी। हमरा माथ पर ई जटा नहि थिक, ई तँ जुट्टी थिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहि मोहि जटा जूट, चिकुरक बेनी।
सिरें सुरसरि नहि, कुसुमक सेनी॥
चाँद-तिलक मोहि, नहि इन्दु छोटा।
ललाट पावक नहि, सिन्दुरक फोटा॥
कण्ठ गरल नहि, मृगमद चारु।
फनिपति मोराँ नहि मुकुता-हारु॥
भनइ विद्यापति सुन देव कामा।
एक दोस अछ ओहि नामक वामा॥

सत्वरत्रिकतालस्य गतिरत्र व्यवस्थिता ॥१०६॥

(१७.१०) अथ शारङ्गीमालवः

एतन्नामैव छन्दः। लक्षणम्—

ऊनविंशति-पर्यन्ताः चतुर्दशतमात् कलाः।
यत्पदार्धे समाख्याताः शारङ्गी-मालवः स तु ॥१०७॥

माथ पर ई उज्जर गंगा नहि, फूलक पाँती थिक। कपार पर ई चन्द्राकार ठोप थिक, द्वितीयाक चन्द्रमा नहि। माथ पर ई पावक (आगि) नहि, ई तँ सिन्दूरक रेखा थिक। कण्ठमे ई विष नहि, कस्तूरी लगाओल अछि। गरामे साँप नहि मोतिक हार थिक। विद्यापति कहैत छथि – हे कामदेव, सुनू, ओकर दोष एकमात्र ई छैक जे ओकर नाम वामा सुन्दरी) थिकैक। आ महादेवोक नाम वाम (वामदेव) छनि।[१]

एहिमे तीनटा सत्वर तालक गति मानल गेल अछि।१०६।

(१७.१०) शारंगी मालव

एहिमे एही नामक छन्दो होइत अछि। लक्षण—

जकर अर्धकमे चौदहसँ लय उनैस तक मात्रा हो से शारंगी मालव कहबैत अछि।१०७।

---

१. एहि आशयक एक पद्य संस्कृतमे प्रसिद्ध अछि :—

जटा नेयं वेणी, कृत-कच-कलापो, न गरलं
गले कस्तूरीयं, शिरसि शशिलेखा, न कुसुमम्।
इयं भूतिर्नाङ्गे प्रियविरहजन्मा धवलिमा
पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर, किं मां प्रहरसि॥

(कुवलयानन्द, कारिका २९क उदाहरण, भ्रान्तापह्नुति)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत सं० ३९]

गमन-दिवस सञो तिथि लेखि लेखी।
परतह भीति भरिए गेलि रेखी॥
सेहे रे मेटिए मेटि ञून पुरावे।
वदन सिचए लागि जल लए धावे॥
काहुकाँ नलिनि दल, काहुकाँ चाँदने।
केओ बोल आएल नन्द-नन्दने॥
मधुकर-धुनि सुनि केओ मुँद काने।
करतल ताले कोकिल खेद आने॥
कि होइति आगे सखि ! कमलमुखी।
जतने जिआबह सबहु सखी॥
अबुझ सखीजन न बुझए आधी।
आन औषध कर आन बेआधी॥
सितल पओनारि हृदय धरु धोइ।
चान-किरन केओ करें धरु गोइ[1]॥

उदाहरण गीत संख्या ३९]

जहिआसँ नायक परदेश गेलथिन अछि तहिआसँ दिनक लेखामे प्रतिदिन रेखा लिखैत-लिखैत भीत (देवाल) भरि गेल अर्थात् बहुत दिन भय गेल। नायिकाकें सान्त्वना देबाक हेतु ओहि रेखाकें सखी सभ मेटा क' कम क' दैत छथि। ञून = ऊन, कम। मुह पर पानि देबाक लेल पानि लय केयो सखी दौड़ैत छथि। केयो कमल अनैत छथि तँ केयो चानन घसि अनैत छथि। केयो सान्त्वना देबाक हेतु बाजि उठैत छथि जे इएह नन्द-नन्दन (कृष्ण) अयलाह। भौंराक शब्द सुनि सखी सभ नायिकाक कान मुनि दैत छथि जे कामक ताप आर ने बढ़ि जाइक। केयो सखी थपड़ी पाड़ि कोइलीकें भगबैत छथि। एकर की दशा होयतैक से ने जानि, हे सखी, यत्न क' क' एकरा जियाबह। अबोध सखी सभ ओकर दुःखक कारण नहि बुझि व्याधि कोनो आ औषध कोनो द' रहलि छथि। शीतल कमलक नाल हृदय पर थोपि दहक आ चन्द्रमाक किरणकें केओ नुका राखह।

---

१ ई गीत विद्यापतिक थिक। देखू भाषागीत संग्रह गीत सं० ३ तथा प्राचीन मैथिली गीत (मैथिली-अकादमी) गीत सं० २८।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वर-द्वितयं मध्यद्वयं तालगतिस्त्वियम् ॥१०८॥

(१७.११) अथ प्रियतमा-मालवः

करुनामालव-नामकमत्र छन्दः। लक्षणम्—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः।
यत्पदार्धे तु स भवेत् करुणामालवाभिधः ॥१०९॥

उदाहरण [गीत सं० ४०]

युगल शैल-सिम हिमकर देखल एक कमल दुइ जोति रे।
फुलल मधुरि फुल सिन्दुरे लोटाएल पाँति बैसलि गजमोति रे॥
आज देखल जत के पतिआएत अपरुब बिहि निरमान रे।
विपरित कनक-कदलि तरें शोभित थलपङ्कज के रुप रे॥
गजसिंह भन एहु पूरुब पुन-तह ऐसनि भजए रसमन्त रे।
बुझए सकल रस नृप पुरुषोत्तम असमति देइ केर कन्त रे॥

[१८] अथ आसावरी

इयन्तु श्रीरागरागिणी। रूपमुक्तं प्राक्। इयमपि विततासावरी, देशासावरी, सिंघासावरी, जोगियासावरी, सिन्धुलासावरी, भोगिन्या-

एहिमे दू टा द्रुत ओ दू टा मध्य ताल लगैत अछि।१०८।

(१७ ११) प्रियतमा-मालव

एहिमे करुणा-मालव नामक छन्द होइत अछि। लक्षण—

जकर अर्धकमे पचीससँ अठ्टाइस धरि मात्रा रहैक से करुणा मालव कहबैत अछि।१०९।

उदाहरण [गीत सं० ४०]

दू पहाड़क सीमा पर चन्द्रमा (हिमकर) देखलहुँ। एक कमलमे दू ज्योति (आँखि) देखलहुँ। प्रफुल्ल मधुरीक फूल (अधर) सिन्दूरमे लोटायल अछि ओ ताहिमे गजमोतीक पाँती (दाँत) बैसा देल गेल अछि। अपरुब = अपूर्व। बिहि निरमान = विधाताक रचना। उनटा सोनाक केराक थम्भक (जांघ) नीचाँ थलकमल (पयर) देखि पड़ल। आ पूरुब पुन तह = पूर्वक पुण्यसँ।

[१८] आसावरी

ई श्रीरागक रागिनी थिक। रूपक वर्णन पहिनहि भ' गेल अछि। ई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सावरी, सम्भोगासावरी, दण्डकासावरी, सरसासावरी, द्राविण्या-सावरी, अभिरामासावरी, मनोहरासावरी [चेति द्वादश भेदवती ।]

(१८.१) तत्र वितता यथा

वृत्तं तन्नामकमेव । लक्षणम् –

पदाद्यर्धं भवेद् यत्र चतुष्कलगणैस्त्रिभिः ।
तदन्तार्धं च यत्रस्याच्चतुर्भिश्च चतुष्कलैः ॥११०॥
कदाचित् कलिकाहानिरर्धयोर्गणनिर्मितौ ।
विततासावरीयं तद् वृत्तं तन्नामकं भवेत् ॥१११॥

उदाहरणम् [गीत सं० ४१]

कामिनि करए सनाने ।
हेरितहिं हृदय हनए पचवाने ॥
चिकुर गरए जलधारा[1] ।
मुखससि डरें[2] जनि रोअए अधारा ॥

बारह प्रकारक अछि—विततासावरी, देशासावरी, सिंघासावरी, जोगिआ आसावरी, सिन्धुलासावरी, भोगिन्यासावरी, सम्भोगासावरी, दण्डकासावरी, सरसासावरी, द्राविणी आसावरी, अभिरामासावरी ओ मनोहरासावरी।

(१८. .) वितता

छन्द एही नामक होइछ । लक्षण—

जाहिमे पदक पूर्व खण्ड तीन चतुष्कल गणसँ (३×४=१२ मात्रासँ) ओ उत्तर खंड चारि चतुष्कलसँ (४+४=१६ मात्रासँ) हो, कतहु-कतहु दूनू खंडमे एक मात्रा कमोक गण रहय, तँ से विततासावरी नामक छन्द होइत अछि ।१११।

उदाहरण [गीत सं० ४१]

कामिनी स्नान कए रहलि अछि। ओकरा देखितहिँ कामदेव हृदयमे प्रहार करय लगैत छथि। केशसँ पानिक धार चूबि रहलैक अछि, से लगैछ जेना

१. जलधारा । २. तरें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तितल वसन तनु लागू ।
मुनिहुँक मानस मनमथ जागू ।।
कुचयुग चारु चकेबा ।
निञ कुल मिलत, आनि कोने देबा ।।
तें सङ्काञो भुज - पासे ।
बान्धि धरिअ उड़ि छाएत अकासे ।।
—इति विद्यापतेः ।

(१८.२) अथ देशी

ए० छन्दोलक्षणम्—

चतुर्विंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
पदार्धे यत्र सा देशासावरी तद्गता भवेत् ।।११२।।

त्वरितः प्रथमोऽन्यश्च मध्यमस्तालजालकः ।
जायते द्विविधस्तेन रागिणी तु व्यवस्थिता ।।११३।।

उदाहरणम् [गीत सं० ४२]

माँसे पखें उगए कलानिधि, लैए सकल निञ साज ।
तुअ मुख सम नहि देखिअ, तें खिन मने गुनि लाज ।।

मुहरूपी चन्द्रमाक डरें अन्धकार कानि रहल हो। भीजल वस्त्र देहमे सटि गेल छैक से देखि वीतराग मुनियो लोकनिक मनने काम जगैत छनि। दूनू स्तन सुन्दर चकवा पक्षी थिक, से अपन दलमे जें जा क' मिलि जायत तें के आनि देत ? ताही शंकासँ ओकरा बाहुपाशमे बान्हि रखने अछि जे आकाशमे उड़ि नहि जाय।

ई विद्यापतिक गीत थिक ।

(१८.२) देशी आसावरी

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एकैससँ चौबीस धरि मात्रा हो से देशासावरी कहबैछ। एहि रागकें एही छन्द पर गाबी। एहिमे पहिल ताल द्रुत ओ दोसर मध्यम एहि तरहें दू ताल लगैछ ओ ताहीसँ ई रागिनी व्यवस्थित होइत अछि।११३।

उदाहरण [गीत सं० ४२]

चन्द्रमा (कलानिधि) मास ओ पक्ष भरि अपन सकल साज-सज्जाक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहदहु कञोन पुरुष धनि, जाहि कर रह अनुराग।
के अछ एहि महितल, जे, अरजल एहन भाग॥
सामर चामर निन्दए, कोमल केस कलाप।
भौंह मनोहर कि कहब, कामे तेजल सर-चाप॥
[गिम[1] रुप रमनि कहब कत, कम्बु कएल जलझाँप।]
पवन-चलित नव पल्लव, कुच कोरक तरें काँप॥
धके धाओल नहि पाओल, आशा लुबुधल लोभ।
ञोहनि रमनि नृपसिंह कह, हरिहि निकट पए सोभ॥
तालः पूर्ववत्।

(१८.३) अथ सिंघली

ए० छन्दो लक्षणम्—

एकविंशतिमारभ्य षड्विंशति-कलावधिः।
पदार्ध-कलिका सिंघासावरी तद्गता भवेत्।११४॥

उदाहरणम् [गीत सं० ४३]

सबहु सखि परबोधि कामिनि ञानि देलि पिअ-पास।

संग पूर्णिमा दिन उगैत छथि, तथापि तोहर मुहक समान नहि देखाइत छथि। तें लाजे दुखी भ' जाइत छथि। कोन एहन पुरुष छथि जनिका प्रति तों अनुराग रखैत छह, के एहन भाग्यवान एहि पृथ्वी पर अछि। तोहर कोमल केशराशि करिया चामरकें निन्दित क' दैछ। गिम = गरदनि। कम्बु = शंख।
ताल पूर्ववत्।

(१८.३) सिंघली

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एकैससँ छब्बीस धरि मात्रा हो से सिंघासावरी कहबैत अछि। ई एही रागमे गाओल जाइत अछि।११४।

उदाहरण [गीत सं० ४३]

मुग्धा नायिकाक प्रथम मिलनक वर्णन। सब सखी बुझासुझा क' नायिका

---

१. ई पंक्ति भाषा गीत संग्रह (गीत सं० ५०)सँ मिलाओल अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनि बाँधि व्याधाञ्नो विपिनसञ्नो मृग, तेजय तीख निसास ।।
बैसलि शयन - समीप सुवदनि, जतने समुहि न होए।
भेल मानस बुलए दहोदिस, देल मनमथ फोए ।।
सकल गात दुकूल दृढ़ अति, कतहु नहि अवकास।
पानि - परसें परान परिहर, पुरति की रति - आस ।।
निविल निवि[१]-बंध कठिन कञ्चुक, अधरें अधिक निरोध।
कठिन काम, कठोर कामिनि, मान नहि परबोध ।।
करब की परकार आबे हमे, किछु न पर अवधारि।
कोपें कौसलें करए चाहिए, हठहि हल हिअ हारि ।।
दिवस चारि गमाए माधव, करति रति समधान।
बड़हि काँ बड़ होए धैरज, सिंह भूपति भान ।।

तालः पूर्वतुल्यः।

कें प्रियक लग पहुँचा देलथिन। व्याधा द्वारा वनसँ आनलि हरिण जेकाँ तेजीसँ निःश्वास लैत अछि। सुन्दरी ओछाओनक लग बैसलि अछि किन्तु नायकक यत्न कयलहु पर सम्मुख नहि भ' रहलि अछि। मन दहोदिस बौआ रहल छैक — मनमे विविध भाव भरि रहलैक अछि। कामदेव जेना बान्हल मनकें खोलि देने होथि। सम्पूर्ण शरीरकें वस्त्रसँ नीक जकाँ झँपने अछि, कतहु उघार नहि छैक। नायक जखन हाथसँ स्पर्श करैत छथिन तँ ओकर प्राण जाय लगैत छैक, एहना स्थितिमे रतिक आस की पुरतैक? डाँड़क वस्त्रक बंधन खूब कसने अछि, कञ्चुक (चोली) कसने अछि, ओ ठोरकें बचा क' रखने अछि। एम्हर नायकके काम कठोरतासँ तबाह कयने छथिन, मुदा ई कामिनी परतारलो पर नहि मानैत छथि। अतः विकल नायक किंकर्तव्य-विमूढ़ भ' जाइत छथि। अवधारि = बुझि। कोन कौशल कयल जाय। नायक सहसा धैर्य हारि बैसि गेलाह।

ताल पूर्वहि जकाँ होयत।

---

१. निबन्ध।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१८.४) अथ जोगियासावरी

ए० छन्दोलक्षणम्—

सप्तविंशतिपर्यन्तं त्रयोविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे, ध्रुवाद्यर्धे दशसंख्यकलाऽन्विताः ॥११५॥
आदित्य·संख्यका यत्र ध्रुवान्तार्धं-कलाः किल ।
जोगियासावरीं तां तु जोगियासावरीं नयेत् ॥११६॥

उदाहरणम् [गीत सं० ४४]

कालि कहल पिआओ साँझहि रे, जाएब मोञे मारुअ देश ।
मोञे अभागलि नहि जानल रे, सँगहि जैतहुँ सेह देश ॥
[मोर] हृदय बड़ दारुण रे, पिया बिनु बिहरि न जाए ॥ ध्रु० ॥
एकहि सयन सखि सूतल रे, अछल बालँभ निसि मोर ।
न जानल कतिखन तेजि गेल रे, बिछुरल चकेबा-जोर ॥
सून तेज हिअ सालए रे, पिआओ बिनु मरब मोञे आजि ।
विनति करओो सहि लोलिनि रें, मोहि देहे अगिहर साजि ॥
विद्यापति कवि गाओल रे, आए मिलत पिअ तोर ।
लखिमा देइ वर-नागर रे, [राए] सिवसिंह नहि भोर ॥

मध्यम-त्रिकतालेन गतिरेषा विराजते ॥११७॥

(१८.४) जोगिआ आसावरी

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे तैसँ सत्ताइस धरि मात्रा रहय, ध्रुवपदक आदिम आधा भागमे दस मात्रा हो तथा अन्तिम आधा भागमे बारह मात्रा हो, से जोगिआ आसावरी छन्द कहबैत अछि। एहि पर जोगिआ आसावरी राग गाबक चाही ।११५-११६।

उदाहरण [गीत सं० ४४]

कालि—काल्हि । पिआओ—प्रियतम । मोञे—हम । मारुअ—मयुरा वा मालवा। अछल—छल। बालँभ—वल्लभ, प्रिय। चकेबा—चक्रवाक पक्षी। सहिलोलिनि—सरचरी । देहे—दएह । अगिहर—अग्निगृह, चिता । भोर—भोला, लपटु ।

एहिमे तीन मध्यम ताल लगैत अछि ।११७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१८.५) अथ सिन्धुलासावरी

ए० छन्दोलक्षणम्—

पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्धे मात्रा पञ्चदशान्विता ॥११८॥
अन्तार्धं-ध्रुवके यत्र पदार्धान्तरवत्[1] स्थितिः ।
सिन्धुलासवरी सा तु सिन्धुलासावरी मता ॥११९॥

उदाहरणम् [गीत सं० ४५]

आज पुनिम तिथि जानि मोञे ऐलिहुँ
उचित तोहर अभिसार ।
देह - जोति ससि - किरन समाइति
के बिभिनाबए पार ॥
सुन्दरि, अपनहुँ हृदय विचार ॥ ध्रु० ॥
तोहें जनु तिमिर हीत कए मानह
आनन तोर तिमिरारि ।
सहज विरोध दूरें परिहर, बनि
चल उठि जतए मुरारि ॥

(१८.५) सिन्धुला आसावरी

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे पचीससँ तीस धरि मात्रा रहय, ध्रुवपदक पहिल आधा भागमे पन्द्रह मात्रा, तथा अन्तिम आधा भागमे सामान्य पदक अर्धकक समान मात्रा हो से सिन्धुलासावरी कहबैत अछि। एहि पर ई रागिनी गाओल जाइछ।११८-१९।

उदाहरण [गीत सं० ४५]

दूतीक उक्ति। आइ पूर्णिमा तिथि जानिक' हम आइलि छी, तोहर अभिसार उचित थिकहु। तोहर देहक प्रकाश चन्द्रमाक किरणमे मिलि जयतहु; एहि दूनूक विभिन्नता प्रकट करबामे (बेकछयबामे) के समर्थ होयत।

---

१. पदार्द्धान्तरवस्थितिः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूती - वचन हीत कए मानल
चालक भेल पचवान।
हरि अभिसार चललि वर कामिनि
विद्यापति कवि भान॥
दोए सत्वर अरु मध्य दोए, चारि ताल एहि भाँति।
गाएक - गन मे होत हए, एआतें उदीपित काँति॥

(१८.६) अथ भोगिन्यासावरी[1]

ए॰छन्दोलक्षणम्—

चतुष्कल-चतुष्कान्ता रुद्र-संख्य-कलादिकाः।
कला अनियता यत्र पदार्धे सा तु भोगिनी ॥१२०॥

उदाहरणम् [गीत सं० ४६]

कनक - लता अरविन्दा।
मदनाँ माँजरि उगि गेल चन्दा॥
केओ बोल भमरा भमरा।
केओ बोल नहि नहि चलए चकोरा॥

हीत—हितकारी। आनन—आनन, मुह। तिमिरारि—अन्धकारक शत्रु; चन्द्रमा। परिहरि—छोड़ि। चालक—प्रेरक।

एहिमे दू टा द्रुत ओ दू टा मध्य ई चारि ताल होइत अछि। एहि सँ गायक गानमे प्रखर कान्तिक भ' जाइत छथि।

(१८-६) भोगिनी आसावरी

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे अनियत रूपेँ एगारह मात्रा सहित चारि चतुष्कल (४×४—१६ मात्रा) हों से भोगिनी कहवैत अछि।१२०।

उदाहरण [गीत सं० ४६]

नायिका-वर्णन—सोनाक लत्तीमे कमल फुलायल, दओना फूलक मज्जर पर चन्द्रमा उगलाह। इत्यादि रूपेँ नायिकामे विभिन्न अतिशयोक्ति अछि।

---

१. भोगिन्यसावरी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केओ बोल सँवालें वेढ़ला ।
केओ बोल नहि नहि मेघ मिलला ॥
संशए परु जन मही ।
बोल तोर मुख सम नही ॥
कवि रतनाञ्ची भाने ।
सङ्क कलङ्क दुअओ असमाने ॥
मिलु रति - मदन - समाजा ।
देवल देवि लखनचन्द राजा ॥

लघु मध्यम तिनि ताल एहि, रागिनि देत गुनीस ।
तातें वञ्चित होत हए, गोरि सहित जगदीश ॥

(१७.७) अथ सम्भोगिनी

ए० छन्दोलक्षणम्—

चतुष्कल-त्रतुष्केन प्रायः सम-दल-द्वयम् ।
कुत्रचित् कलया क्वापि कलाभ्यामूनतुर्यकैः ॥१२१॥

केयो कहैत अछि जे भौंरा बुलैत अछि—नायिकाक आँखि भ्रमर थिक । केयो कहैत अछि जे चकवा पक्षी चलैत अछि । सँवाल—सेमार (केशरूपी)सँ मुहरूपी चन्द्रमा वेढ़ल छथि । अथवा केश मेघ थिक ताहिमे चन्द्रमा मिलि गेलाह । पृथ्वी पर लोक सन्देहमे पड़ि गेल अछि । मुदा तोहर मुह सन कोनो वस्तु नहि अछि । चन्द्रमा सांक छथि, मुख अकलङ्क, अतः दूनूमे कनेको समानता नहि ।

एहि रागिनीमे गुणवान गायक लोकनि लघु ओ मध्यम तीन ताल दैछ छथि । जँ से नहि देबैक तँ एकर सरसतासँ गौरीशंकर वञ्चित भ' जाइत छथि ।

(१८-७) सम्भोगिनी

एहि छन्दक लक्षण—

जतय चारि चतुष्कल (४×४—१६ मात्रा) बाला प्रायः दूनू अर्धक समान हो, कतहु एक मात्रा ओ कतहु दू मात्रा कमो चारि टा चतुष्कल हो,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुष्कल-गणैर्बद्ध-दलयुग्मं भवेत् पदम् ।
सम्भोगासावरी सा तु सम्भोगासावरी गता ।।१२२।।

उदाहरणम् [गीत सं० ४७]

तन सुकुमार पयोधर गोरा ।
कनक-लता जनि सिरिफल जोरा ।।
देखलि कमलमुखि बरनि न जाई ।
मन मोर हरलक मदन जगाई ।।
भौहाँ धनुष धएल तसु आगू ।
तीष कटाख मदन - सर लागू ।।
सबतरु सुनिअ ऐसन बबहारा ।
मारिअ नागर उबर गमारा ।।
कंसनराएन कौतुक गावे ।
पुनफले पुनमत गुनमति पावे ।।

मध्यम तीनञो ताल एहि, रागिनि होत प्रगास ।
तातें चूकत सुर तबहिं गुनी होत उपहास ।।

(१८.८) अथ दण्डकासावरी

एतच्छन्दोलक्षणम्—

पञ्चाशदूनपञ्चाशदथवा यत्पदार्धयोः ।

से सम्भोगासावरी छन्द कहवैछ । ई सम्भोगासावरी रागमे गाओल जाइछ ।१२१-२२।

उदाहरण [गीत सं० ४७]

कनक-लता—सोनाक लत्ती (नायिकाक शरीर) ताहिमे जनु एक जोड़ श्रीफल — बेल (स्तन) फड़ि गेल अछि । ओकर भौंह धनुष थिक ओ ताहिमे तीक्ष्ण बाण कटाक्ष, ताहिसँ नागर तँ घाइल होइछ, परन्तु गमार (रसानभिज्ञ जन) उबरि जाइत अछि । सवतरु—सर्वत्र । पुनफले पुण्यक फलेँ । पुनमत —पुण्यवान् ।

एहिमे तीन मध्यम ताल होइत अछि । ताहीसँ ई रागिती स्पष्ट होइछ । एहिसँ रहित भ' गओला पर गुणवानो लोकनि उपहास पबैत छथि ।

(१८·८) दण्डक आसावरी

एहि छन्दक लक्षण—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कला: साऽऽसावरी, तां तु दण्डकासावरीं नयेत् ॥१२३॥

उदाहरणम् [गीत सं० ४८]

जय[1] देवि दुर्गे दनुज-दारिनि
भक्तजन - सन्ताप - हारिनि
प्रबल - दनु - मुण्डालि - मालिनि
चण्ड - दारिनि हे।

मत्त - महिषासुर - गरासिनि
शंख - चक्र - कृपाण - पासिनि
चकित - वृन्दारक - विलासिनि
समर-हासिनि हे॥

श्री त्रिविक्रम - नृपति - नागर
ममल - कीर्त्ति - कदम्ब - सागर
महित - कैरव - वन - विभाकर
मिति समाचर हे॥

रचित गङ्गाधर सुगीते
धरणि - पालक - रक्षिणीते
सकल सुर नर सिद्धि ललिते
वेद - चरिते हे॥

जकर अर्धकमे पचास वा उनचास मात्रा हो ताहि आसावरीकें दण्डकासावरी रागमे लावी।१२३।

उदाहरण [गीत सं० ४८]

दनुजदारिनि—दैत्यकें मारनिहारि। गरासिनि—खा गेनिहारि—नाशिका। वृन्दारक—देवता। समर—युद्ध। अमल कीर्त्ति......निर्मल यश: समूहक समुद्र। अहित-कैरव......—शत्रुरूपी कुमुदिनी (कैरव) वनक हेतु सूर्य बनाय दिऔन। सूर्यक आगू कुमुदिनी हतप्रभ भ' जाइछ।

१. जय जय देवि। (द्रष्टव्य दण्डक-कोडार)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वर-द्वय एवात्र तालस्तु गुणिसम्मतः।
तद्-विहीनः स्वरश्चेत् स्यात् तदाऽपस्वरता भवेत् ॥१२४॥

(१८.९) अथ सरसासावरी

एतद्वृत्तलक्षणम्—

चतुष्कल-चतुष्कान्तं सैकं तत् त्रितयावधि।
पदार्ध-कलिका यत्र सरसाऽऽसावरी तु सा ॥१२५॥

उदाहरणम् [गीत सं० ४९]

चल चल सुन्दरि शुभकर आज।
ततमत करइते नहि होए काज॥

गुरुजन परिजन डर कर दूर।
बिनु साहसें सिधि आस न पूर॥

बिनु जपलें सिधि केअओ नहि पाब।
बिनु गेले, घर निधि नहि आब॥

ओ पर-वल्लभ तोहें परनारि।
हम पए मध्य दुहू दिस गारि॥

तोहँ हुन्हि दरसन ई हम लाग।
तत कए देखिअ जेहन तुअ भाग॥

भनइ विद्यापति सुन वरनारि।
जे ञगिरिअ ताँ न गुनिअ गारि॥

एहिमे दू द्रुत ताल गुणी लोकनिक सम्मत अछि। एहिसँ हीन जँ स्वर होयत तँ अपस्वर (विकृत) भ' जायत।१२४।

(१८-९) सरसा आसावरी

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे चारि चतुष्कल हो, अन्तिम चतुष्कल एक मात्र कम हो, अर्थात् कुल मिलाय १५ मात्रा हो से सरसा आसावरी कहबैत अछि।१२५।

उदाहरण [गीत सं० ४९]

ततमत—तारतम्य। निधि—धन। मधथ—मध्यस्थ, दूती। हुन्हि—हुनक (नायकक)। ञगिरिअ—अङ्गीकार, स्वीकार करी। ताँ—ताहिमे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं ताल-चतुष्टयम् ।
एतद्रागगतं भाति गुणिभिः प्रकटीकृतम् ॥१२६॥

(१८ १०) अथ द्राविणी

ए० वृत्त लक्षणम्—

आचतुर्दशकात् सप्तदश-पर्यन्तकाः कलाः ।
यत्पदार्धे समाख्याताऽऽसावरी द्राविणी तु सा ॥१२७॥

उदाहरणम् [गीत सं० ५०]

जौवन रूप अछल दिन चारि ।
से देखि आदर कएल मुरारि ॥
अब भेल झाल कुसुम, सबे छूछ ।
वारि-बिहुन सर केओ नहि पूछ ॥
हमरि ओ विनति कहब सखि रोए ।
सुपुरुष - वचन अफल नहि होए ॥
जाबे रहए धन अपना हाथ ।
ताबे से आदर कर संग साथ ॥
धनिकक आदर सबतहु होए ।
निरधन बापुर, पुछ नहि कोए ॥
भनइ विद्यापति राखब सील ।
जओ जग जिविअ नवो निधि मील ॥

एहि रागमे चारि ताल होइछ—दू द्रुत ओ दू मध्य ।१२६।

(१८.१०) द्राविणी

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे चौदहसँ सत्रह तक मात्रा हो से द्राविणी आसावरी कहबैत अछि ।१२७।

उदाहरण [गीत सं० ५०]

अछल—छल । दिन चारि—थोड़बे दिनक हेतु । झाल—झड़ल । वारि-बिहुन सर—विनु पानिक पोखरि । बापुर—वेचारा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मध्यम-त्रिकमादाय तालानां गतिरत्र तु ॥१२८॥

(१८ ११) अथाभिरामासावरी

छन्दोलक्षणमस्याः—

चतुष्कल-गणद्वन्द्वमेक - द्वि - त्रिकलाधिकम् ।
यत्पदार्धेऽभिरामा साऽऽसावरी द्विकल-ध्रुवा ॥१२९॥

उदाहरणम् (गीत सं० ५१)

बारि बएस तेजि गेह ।
पिआ मन ओहे संदेह ॥ ओ रे ॥ ध्रु० ॥
तन्हि मन अछ ओहे भान ।
एतए समए भेल आन ॥
तोरित पठाओब सँदेस ।
आबे नहि उचित बिदेश ॥
जौबन रूप सिनेह ।
सेहे सुमरि खिन देह ।
प्रीतिनाथ नृप भान ।
अचिरे होएत समधान ॥

ई रागिनी तीनि मध्यम ताल लय चलैत अछि ।१२८।

(१८.११) अभिरामा आसावरी

एहि रागिनीक छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एक दू वा तीन मात्रा अधिक दू चतुष्कल (४×२=८ मात्रा) हो से अभिरामा आसावरी कहबैत अछि ।१२९।

उदाहरण [गीत संख्या ५१]

प्रियतम जहिआ गेलाह तहिआ हम बालिका रही । एखनहु प्रियतमक मनमे एहन सन्देह छनि जे हम तरुणी भेलि होयब वा नहि । शीघ्र संवाद दिऔन जे आब विदेशमे रहब उचित नहि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वर-द्वितयेनैव तालस्य गतिरत्र च ॥१३०॥

(१८.१२ अथ मनोहरा

एतच्छन्दोलक्षणम्—

अष्टाविंशति-पर्यन्तां चतुर्विंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे ध्रुवा सा तु समाख्याता मनोहरा ॥१३१॥

उदाहरणम्

× × ×

(१९) अथ मलारी

इयं तु मलार-भार्या । रूपमुक्तं प्राक् । अस्यास्तु शुद्धा पहड़िआ इति भेदद्वयम् ।

(१९.१) तत्र शुद्धा

एतच्छन्दोलक्षणम्—

चतुष्कल-चतुष्कान्तां यत्र तत् त्रिकलावधि ।
कलाः पद-दलद्वन्द्वे सा तु शुद्धमलारिका ॥१३२॥

एहिमे दूटा द्रूत ताल होइत अछि ।१३०।

(१८.१२) मनोहरा आसावरी

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे चौबीससँ अट्ठाइस धरि मात्रा रहय से निश्चय मनोहरा कहबैत अछि ।१३१।

[१९] मलारी

ई मलार रागक पत्नी थिक । रूप पहिनहि कहल गेल । एकर दू भेद होइत अछि । (१) शुद्धा ओ (२) पहड़िआ ।

(१९-१) ताहिमे शुद्धा

एहि छन्दक लक्षण—

जकर प्रत्येक अर्धकमे तीनसँ चारि धरि चतुष्कल हो, से शुद्ध मलारी कहबैत अछि ।१३२।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत सं० ५२]

रोपलह पहु लहु लतिका आनि।
परतह जतने पटबितह पानि॥
तें अरथित उपचित भेलि से।
तोहें बिसरल भल बोलत के॥
माधव, बुझल तोहर अनुरोध।
हेरितहु कएलह नयन-निरोध।
एकहु भवन बसि दरसन-बाध।
किछु न बुझिअ पहु की अपराध॥
सुपरुष वचन सबह्न विधि फूर।
अमरखें विमरख न करिअ दूर॥
भनइ विद्यापति एहु रस जान।
राए सिवसिंह लखिमा देइ रमान॥

सत्वरद्वितयं मध्य-द्वयं तालचतुष्टयम्।
चतुष्टयेन तेनेयं रागिणी रसभाग्भवेत् ॥१३३॥

(१९.२) अथ पहड़िआ मलारी

एतच्छन्दोलक्षणम्—

अष्टाविंशति-पर्यन्तां चतुर्विंशतितः कलाः।
यत्र तादृक् पदं प्राप्य पदं तु प्राप्यते पुनः ॥१३४॥

उदाहरण [गीत सख्या ५२]

लहु = लघु, छोट। परतह = प्रत्यह प्रतिदिन। जतने = यत्नसँ। अरथित = गरजू। उपचित = विकसित, वढ़ल। नयन-निरोध = आँखि फेरब। अमरखें = अमर्ष (क्रोध) सँ विमर्श (विवेक) कें दूर नहि करी। फूर = सत्य।

दू टा द्रुत ओ दू टा मध्य एही चारू तालसँ ई रागिनी रस-युक्त होइत अछि।१३३।

(१९.२) पहड़िआ मलारी

एहि छन्दक लक्षण—

जाहिमे चौबीससँ अट्ठास धरि मात्रा रहय, (चारू) चरणक अन्तमे जे शब्द आवय सएह शब्द पकड़ि' तुक दैत ध्रुवक रचना हो जाहिमे एक मात्रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्र सैक-चतुर्मात्रा-त्रिगणार्धंद्वयाऽन्वितम् ।
त्रिकलात्म-ध्रुवोपेतमेव स्यादुत्तरोत्तरम् ॥
पर्वतीय-मलारीति गीयते गीतिसत्तमैः ॥१३५॥

उदाहरणम [गीत सं० ५३]

अनवरत दादुर सोर घन भुवि, तलित दह दिगं सोहई ।
जलद जालहिं गगन मण्डित, मोर घुनि सुनि मोहई ॥
नीप चम्पक केतकी मधु, पीबि मधुकर मातहीं ।
अषाढ़ निञा घर सुमरि-सुमरि सुपथिक चौदिक धावहीं ॥
आ रे ॥ ध्रु० ॥
निञा घर सुमरि पथिक धाव ।
कतहु न बालभ मोर आव ॥ इत्यादि ।

तालः पूर्वंतुल्यः ।

[२०] अथ भूपाली

छन्दोलक्षणम्—

सरसाऽऽसावरी-तुल्य-पदार्थं-घटनाऽन्विता ।
मिथिलाभूमि-भूपाली गीयते गीतिसत्तमैः ॥१३६॥

तथा चारि मात्राक तीन गण (१+४×३=१३ मात्रा) हो तथा तीनि मात्राक ध्रुवपद हो (?), एहिना आगुओक चरणक विन्यास हो से गीतविद् लोकनिसँ पर्वतीय-मलारी कहाय गाओल जाइत अछि ।१३४-१३५।

उदाहरण [गीत संख्या ५३]

अनवरत=सतत । दादुर+बेङ । तलित=विद्युत् । दह दिगं=दश दिक् । मोर=मयूर । नीप=कदम्ब । केतकी=केओला । निञा=निज (अपन) । बालभ=वल्लभ, प्रिय ।

एहिमे ताल पूर्ववत् बुझब ।

[२०] भूपाली

एहि छन्दक लक्षण—

जकर चरणक क्रम-विन्यास सरसा आसावरीक समान हो, तकरा संगीतक विद्वान् लोकनि मिथिलादेशीय भूपाली कहि गबैत छथि ।१३६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम्

'चल चल सुन्दरि शुभकर आज।
तमतम करइते नहि होअ काज ॥ इत्यादि।

ताल चलनि दुइ ताल लए, एआ मे परगट होति ॥

[२१] अथ गुर्जरी

आकृतिरुक्ता प्राक्। अत्र तु वितत-वृत्तादावुदाहरणीये जयदेवः—

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधू-निचयेन।
साऽपराधतया मयाऽपि न वारिताऽतिभयेन ॥
हरि हरि !! हताऽऽदरतया गता सा कुपितेव ॥ ध्रु० ॥
(गीतगोविन्दम्—सर्गः ३) इत्यादि सुप्रसिद्धम्।

इति श्री लोचनशर्म-विरचितायां रागतरङ्गिण्यां
मिथिला-गत्यनुरुद्ध-षट्त्रिंशदन्तर्गत
रागविवरणन्नाम
तृतीयस्तरङ्गः ॥

उदाहरण 'चल चल सुन्दरि' (गीत संख्या ४९) पहिनहि आबि चुकल अछि।

एहिमे दू टा चलति (द्रुत ?) ताल प्रकट होइत अछि।

[२१] गुर्जरी

एकर स्वरूप पहिनहि कहल गेल अछि। एहिठाम वितत प्रभृति छन्द सभक उदाहरण देब उचित थिक, ताहिमे जयदेव कविक गीत एकमात्र उदाहरण रूपमे उपस्थित कयल जाइछ :—

ई राधा हमरा गोपीक समूहसँ घेरलि देखिके चलि देलनि। आ अपराधी भेलाक कारणें डरें हमहूँ नहि रोकलियनि। हाय हाय ! अनादृता भ' ओ (राधा) तमसा क' चलि गेलीह इत्यादि गीत प्रसिद्ध अछि।

इति श्रीलोचनशर्माक बनाओल रागतरंगिणीमे मिथिला-देशीय
संगीत-गतिक अनुसार छत्तीस रागक अन्तर्गत पड़ैत रागक
विवरण नामक तृतीय तरंग समाप्त।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थः तरंगः

अथ संकीर्ण रागाः

तत्र प्रथमं मिथिलामात्रसुप्रसिद्धाः । ते च—

विभासी चाहिरानिश्च गोपीवल्लभ एव च ।
शारङ्गी चापि कोडारो धनछी-गौडमालवौ ॥
राजविजय-नाटौ च नवैते तीरभुक्तिजाः ॥१॥

[२२] तत्र प्रथमा विभासी

अतःपरमपि लक्षणं पूर्वंदेव । एतच्छन्दोलक्षणञ्च—

सप्तविंशति-पर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
पदार्धे बहुधा वर्णा लघवस्त्वरित-स्वरैः ॥२॥
गानोत्थानं तत्समाप्तिर्विलम्बिततरैः स्वरैः ।
यत्र सा तु विभासी स्यात् कलिका-पञ्चक-ध्रुवा ॥३॥

चतुर्थ तरङ्ग

संकीर्ण राग

ताहिमे पहिने केवल मिथिलामे प्रसिद्ध राग कहल जाइछ। ओ सभ निम्नलिखित अछि :—

(१) विभासी, (२) अहिरानी, (३) गोपीवल्लभ, (४) शारंगी, (५) कोडार, (६) धनछी, (७) गौडमालव, (८) राज-विजय ओ (९) नाट—इएह नओ टा संकीर्ण राग तिरहुतमे विकसित भेल अछि ।१।

[२२] ताहिमे पहिल विभासी

एकर बादो लक्षण पहिनहि जकाँ कहल जायत । एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एकैससँ सत्ताइस धरि मात्रा हो ओ अधिकतर वर्ण (अक्षर) लघु ओ द्रुत स्वरमे उच्चरित हो, गानक उत्थान (आरम्भ) ओ समाप्ति अति विलम्बित स्वरसँ हो से विभासी छन्द कहबैत अछि। एकर ध्रुवपद पाँच मात्राक होइछ ।३।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत संख्या ५४]

कुसुम रस अतिमुदित मधुकर, कोकिल पञ्चम गाव।
ऋतु वसन्त, दिगन्त बालभ, मानस दहोदिस धाव।।
सजनिआ।।ध्रुव।।
तेजल तेल तमोल तापन, सपन निसि सुख रङ्ग।
हेमन्त विरह अनन्त पाबिअ, सुमरि सुमरि पिआ सङ्ग।।
मोर दादुर सोर अहोनिस, बरस बूंद सदन्त।
विषम बारिस, विना रघुवर, विरहिनि जीवन अनन्त।।
सुसुखि ! धैरजें सकल सिधि मिल, सुनह कन्त सुवानि।
शिशिर शुभ दिन, राम रघुवर, आओत तुअ गुन जानि।।
[इति] विद्यापतेः।

मम तु—

[गीत संख्या—५५]

जलद जाल कराल बारिस दिवस उपगत भेल।
वधिक बालभु अवधि बिसरल, अजहु मिलि नहि गेल।
सजनिआ।।ध्र०।।
तिमिर तति बिकरार जामिनि, निअर कामिनि कन्त।
नाह निरदए बिसरि बैसल, मोहि भेल जीवन अन्त।

उदाहरण [गीत संख्या ५४]

पंचम = पंचम स्वर। दिगन्त बालंभ = प्रिय अति दूर छथि। धाव = दौड़ैत अछि। तमोल = पान। तापन = आगि। मोर = मयूर। दादुर = बेङ। सोर = शब्द। अहोनिसि = दिन राति। सदन्त = सदा।

ई गीत विद्यापतिक थिक। हमर —

[गीत संख्या ५५]

जलद-जाल—मेघक समूह। कराल—भयानक। बारिस-दिवस—बरसातक समय। उपगत—उपस्थित। वधिक—खुनियाँ। बालंभु—प्रिय। तिमिरतनि—अन्धकारक बाहुल्यसँ राति डराओन अछि। एहिमे कामिनी प्रियक लग रहैछ, किन्तु हमर नाथ निर्दय छथि। समद—मद सहित, उत्तेजक। दादुर—बेङ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुर दूर मयूर-कूजित, समद दादुर-नाद।
समन सन घन दहन बरिसए, कुलिस सरि बिसमाद॥
नीरनिधि-सुत-सुमुखि! थिर कर, न कर मानस खीन।
अचिरें चिर-परवास परिहरि, हरि बहुराओब दीन॥
सुमति लोचन भन सुधीजन, विषम विरह कलेश।
जानकी-जनि-भूमि-भूषन, बुझ महिनाथ नरेश॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालचतुष्टयम् ॥४॥

[२३] अहिरानी

(२३-१) अहिरानी भीमपलासिका

ए०छन्दोलक्षणम्—

षड्विंशतिं समारभ्य यत्रोनत्रिंशदन्तिकाः।
पदार्धं-कलिकाः किं च ध्रुवाद्यर्धे त्रयोदश॥
सा तु भीमपलासी स्यादहिरानिरिति श्रुता॥५॥

उदाहरणम् [गीत सं० ५६]

सुरत समापि सुतल वर नागर, पानि पयोधर आपी।
कनक-सम्भु जनि पूजि पुजारें, धएल सरोरुहें झापी॥
सखि हे मालति केलि विलासे।

नाद—शब्द। मनत—यमराज, मृत्यु। दहन—आगि। कुलिस—वज्र। चन्द्रमा सन मुँहवाली (नीरनिधि—समुद्र, तकर सुत—चन्द्र)। अचिरें—जल्दिए। चिर परवास—बहुत दिनक प्रवास। परिहरि—छोड़िक'। बहुराओव—घुरि आओत। जानकी-जनि-भूमि—जानकीक जन्म भूमि, मिथिला।

एहिमे चारि ताल होइत अछि, दू द्रुत ओ दू मध्य।४।

[२३] अहिरानी

(२३.१) अहिरानी-भीमपलासिका

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे छब्बीससँ उनतीस धरि मात्रा रहय ओ ध्रुवपदक पूर्वार्ध मे तेरह मात्रा रहय से अहिरानी प्रसिद्ध भीमपलासी कहबैत अछि।५।

उदाहरण [गीत सं० ५६]

सुरत समापि—केलि-क्रीड़ा समाप्त क'। पानि पयोधर आपी—स्तन पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालति रमि अति ताञ्हि अगोरलि, पुन रतिरङ्गक आसे ॥ध्रु०॥
वदन मेराए धएल मुखमण्डल, कमले मिलल जनि चन्दा।
भमर चकोर दुअओ अलसाएल पीबि अमिञ्च मकरन्दा॥
भनइ ञ्मिञ्राकर सुनु मधुरापति, राधा-चरित अपारे।
राजा सिवसिंह रूपनराएन, लखिमा देइ कण्ठहारे॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालस्य जायते।
यदि चाऽस्य तदा सोऽयं रागः सम्यक् प्रजायते ॥६॥

(२३-२) रम्या भीमपलासिका

कलिका-षोडशोपेत-ध्रुवकाद्यर्ध-भूषिता।
पूर्वतुल्यपदा साऽपि रम्या भीमपलासिका ॥७॥

उदाहरणम् (गीत सं० ५७)

सुरुज सिन्दुर-विन्दु, चान्दने लिहए इन्दु, तिथि कहि गेलि तिलके।
विपरित अभिसार, बरिस अमिञ्च-धार, अङ्कुश कए लतिके॥
हे माधव ! भेंटलि पसाहनि बेरी।

हाथ दय। कनक-सम्भु—सोनाक शिवलिंग। पुजारें—पूजक। सरोरुहें—कमलसँ। रमि—रमण कय। ताञ्हि—ओकरा नायकके। मेराए—मिलाय। अमिञ्च-मकरन्दा—अमृतस्वरूप पराग।

जँ एहिमे दूटा द्रुत ओ दू टा मध्य ताल देल जाय तँ ई नीक जकाँ गाओल जायत।६।

(२३.२) रम्या-भीमपलासिका

जकर ध्रुवपदक पूर्वार्धमे सोलह मात्रा हो तथा शेष पद-विन्यास पूर्वहि जकाँ (अहिरानी जकाँ) हो से रम्या-भीमपलासिका कहबैत अछि।७।

उदाहरण [गीत सं० ५७]

सुरुज सिन्दुर बिन्दु—सिन्दूरक ठोपसँ सूर्य बनओलक। चान्दने लिहए इन्दु—चन्दनसँ चन्द्रमा लिखलक। एहि प्रकारें तिलकक विन्याससँ मिलन-तिथिक सूचना देलक (अमावस्या तिथिकें सूर्य ओ चंद्र संग रहैत छथि)। विपरीत अभिसार—नायकक नायिकासँ मिलनक हेतु गमन। अमिञ्चधार—अमृतक धारा। अलक (लट) सँ अंकुश बनाय लताक भान करओलक अर्थात्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदर हरलक, पुछिओ[1] न पुछलक, चतुर सखीजन मेरी ।।ध्रु०।।
केतकि-दल लए, चम्पक फुल दए, कबरी थोएलक[2] आनी।
मृगमद कुङ्कमें अगरुचि[3]लओलक, समए निवेद सयाँनी ।।
भनइ विद्यापति सुनु वरयौवति! कुहू[3]निकट परमाने।
राजा शिवसिंह रूपनराएन, बखिमा देवि रमने ।।

(२३.२) धन्या भीमपलासिका

चतुष्कल-त्रिकोपेत-ध्रुवकाद्यर्ध-भूषिता ।
पूर्वतुल्यपदा-मात्रा धन्या भीमपलासिका ।।८।।

उदाहरणम् [गीत सं० ५८]

नव-जोवन अभिरामा।
जत देखल तत कहहि न पारिअ, छओ अनुपम एक ठामा ।।ध्रु०।।

लताकुंज संकेत स्थल जनओलक। पसाहनि—प्रसाधन, साज-सज्जा। चतुर सखीजन मेरी—चतुर सखी सभसँ मिलल रहलाक कारणेँ समादो ने पुछलक जे भेद ने खुजि जाय। केतकि-दल—केओलाक पात। चम्पक—चम्पाफूल (एहि पर भौंरा नहि अबैछ। कबरी—केश-पाश। थोएलक—रखलक (व्यंग्य जे एखन जनु आबथि)। मृगमद—कस्तूरी। अगरुचि—अंगक सौन्दर्य। केतकि''''सयानी—श्वेत ओ श्यामक मेलसँ सन्ध्या समय सूचित कयलक। सयानी—चतुरा। कुहू—अमावस्या।

(२३.३) धन्या भीमपलासिफा

तीनि चतुष्कलसँ जकर ध्रुवपदक आधा भाग हो एवं आगाँ पूर्ववर्णित (अहिरानी) क समान मात्रा हो, से धन्या भीमपलासिका कहबैत अछि।८।

उदाहरण [गीत सं० ५८]

अभिरामा सुन्दर। कहहि न पारिअ—कहि नहि सकैत छी। एक ठामा—एके सुन्दरीमे छओ अनुपम वस्तुक भान होइत अछि। हरिण, इन्दु (चन्द्र), अरविन्द (कमल), करिनि (हथिनी), हेम (सोना), पिक

१. मूलमे ई पंक्ति खण्डित अछि। त्रुटिपूर्त्ति नेपाल पदाबली पृ० ९५ तथा गीतविद्यापति पृ० ८८सँ। २. फोएलक। ३. अगरुचितलआलक। ४. कुहूनीकट।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिन, इन्दु, अरविन्द, करिनि हेम[1] पिक बूझल अनुमानी।
नयन, वदन[2], परिमल गति,[3] तनुरुचि अओ अति-सुललित वानी॥
कुच युग उपर चिकुर फुजि पसरल, ता अरुझाएल हारा।
जनि सुमेरु ऊपर मिलि ऊगल, चान्द बिहुनि सबे तारा॥
भनइ विद्यापति सुनु वर जौवति, आन न पाबए कोई।
कंसदलन नाराएन सुन्दर तासु रमनि पए होई॥

सत्वरत्रिकमादाय गतिं तालस्य चाऽत्र तु ॥९॥

(२३.४) वितता भीमपलासिका

अष्टविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः।
यत्पदार्धे, ध्रुवाद्यर्धे चोनविंशतिसंख्यकाः॥
सापि भीमपलास्येव वितता गीतिसम्मता ॥१०॥

उदाहरणम् (गीत सं० ५९)

उपरे पयोधर नख-रेख सुन्दर मृगमद पङ्के लेपला।
जनि सुमेरु ससि-खण्ड उदित भेल जलधर जालें झाँपला॥
अभिरानि हे कपट करह काँ लागी।
कोन पुरुष गुने लुबुध तोहर मन रयनि गमओलऽ जागी॥ ध्रु०॥

(कोइली), ई छओ क्रमशः एकहि नायिकाक नयन (आँखि), वदन (मुह), परिमल (सुगन्धि), गति (गमन) ओ सुललित वाणीसँ अनुमान कयल जाइत अछि। कुचयुग—दूनू स्तन। चिकुर—केश। अरुझाएल—ओझरायल। हारा—मोतीमाला। सुमेरु—सोनाक पहाड़। बिहुनि—विहीन। आन—आन। कंसदलन—कंसकेँ मारनिहार। नारायण—कृष्ण। एहिठाम कोनो राजाक संकेत मानब भ्रम थिक। प्रसंगसँ कृष्णे अर्थ संगत।

एहिठाम तीन द्रुत ताल होइछ।९।

(२३.४) वितता भीमपलासिका

जाहिमे प्रति अर्धक पचीससँ अट्ठाइस धरि मात्रा रहए तथा ध्रुवपदक पूर्वार्द्धमे उन्नैस मात्रा रहय से वितता-भीमपलासिका कहबैत अछि।१०।

उदाहरण [गीत सं० ५९]

पयोधर—स्तन। नखरेख—नखक्षत, नघँर। मृगमद पङ्के—कस्तूरीक लेपसँ। सुमेरु—सोनाक पहाड़। जलधर—कस्तूरी। काँ लागी—किसक।

---

१. हिम। २. वरन। ३. छवि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारने कञोनें अधर भेल घूसर पुनु कोने आरत देला।
दूधक परसें पवार धवल भेल, अरुन मजिठ भए गेला॥
नवि पनारि गजें गंजि नड़ाउलि, परसलि सूर किरने।
ऐसन देखिअ कपट करह जनु, बेकत नुकाओब कञोने॥
दस-अवधान भन पुब्ब पेम गुनि, प्रथम समागम भेला।
आलम साह प्रभु भाविनि भजि रहु, कमलिनि भमर भुलला।

[२४] अथ गोपीवल्लभः

एतच्छन्दोलक्षणम्—

पञ्चविंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः।
पदार्धे, यद्ध्रुवान्तार्धे दशपञ्चात्मिकाः कलाः॥११॥
बहुधा त्वध्रुवो यस्तु गीतिभिर्गीयते सदा।
मिथिला-देशविख्यातो गोपिकावल्लभः स तु॥१२॥

उदाहरणम् [गीत सं० ६०]

गमने गमाउलि गरिमा, अगमने जिवन सन्देह।
दिने दिने तनु अवसन भेल, हिम कमलिनि सम नेह॥
अबहु न सुमरह मधुरिपु, कि करत सुन्दरि नाम।
मोहि बिसरलह कहिनि रहु ठाम॥ध्रु०॥

रयनि—राति। घूसर—मलिन। आरत आरक्त, लाल। पवार—प्रवाल, मूंगा। परसें—स्पर्शसँ। अरुन—लाल। मजिठ—अति गाढ़ लाल। नवि—नवीन। पनारि-पओनारि—पद्मनाल (कमलक लता)। गजें—हाथीक द्वारा। गंजि—मचोड़िक'। नड़ाउलि—छोड़ल। परसलि सूर किरने—सूर्यक किरणसँ स्पर्श कयल गेल (मौलाए गेल)। वेकत-व्यक्तकें। कञोने—के।

[२४] गोपीवल्लभ

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एकैससँ पचीस धरि मात्रा हो तथा ध्रुवपदक उत्तरार्धमे पन्द्रह मात्रा हो, जे बहुत ठाम विनु ध्रुवपदहुक गाओल जाय, से मिथिला देशमे गोपीवल्लभ कहि विख्यात अछि।१२।

उदाहरण [गीत सं० ६०]

नायकक लग जँ स्वयं जाइत अछि तँ (गरिमा प्रतिष्ठा) नष्ट होइत छैक। जँ नहि जाइत अछि तँ जीवहुमे सन्देह छैक। तनु—देह। अवसन—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दिस कान्हु, अओकाँ दिसँ, सुवितत वंश विशाला।
दुहु पथ चढ़लि नितम्बिनि, संसञो पड़ कुलबाला॥
पाँचबान अरिआतए, धैरजें करु पगु थीरे।
आँचर मुंह दए कांदए, झाषए नयन बह नीरे॥
—इति विद्यापतेः।

परञ्च—

(गीत सं० ६१)

नयन निमेष जनि देखइतें, चौजुग भौ मोहि भान।
पति-संगे[1]रति-रंगे गुनितहु, कलप अलप परिमान॥
हरि हरि !! से[2]पिआ रसमय, असमय परिहरि गेल।
तञो हिञ कञोन पराभव, जञो दुइआ धन भेल॥
नाहनि कारन कि कहब, दारुन पिक-रव सूनि।
कोने परि जीवन राखब, कत झाँखब सिरधूनि।
गरल मृणाल-वलय, रस[3] मलयज हमें[4]न सोहाव।
दिवस दोसें[5] हिमधामाँ, महिमा बिसरि संताव॥
रसमय कवि जयकृष्ण[6]भन,धैरज धर वरनारि।
अचिरहि मिलत मधुरपति, गुन गौरव अवधारि॥

अवसन्न, क्षीण। हिम-कमलिनि—शीत-कालक कमलिनी (जाड़मे कमल गलि जाइछ।) मधुरिपु—कृष्ण। कहिनि—कथा। अओकाँ दिस—दोसर दिस। सुवितत—विख्यात। संसञो—सन्देहमे। पाँचबान - कामदेव। अड़िआतए—प्रेरित करैछ। पगु—पयर। काँदए—कनैत अछि। झाँषए—कलपैत अछि।

ई गीत विद्यापतिक थिक। दोसरो उदाहरण—

[गीत सं० ६१]

नयनसँ एक पल भरि देखल तँ पल चारि युगक बराबरि लागल। संग रहितहु तँ कल्पो अल्पे बुझाइत। तञो हिअ—जँ हृदय दू टुक नहि भेल तँ पराभव की। नाह—नाथ। निकांरुन—निष्करण, कठोर। पिक-रव—कोइलीक शब्द। कोने परि—कोनाक'। मृणाल वलय (कमलक नालक कँगना) मे विष बुझि पड़ैत अछि। मलयज—श्रीखण्ड चानन। हिमधामा—चन्द्रमा। मधुरपति—कृष्ण। अवधारि—बूझिक'।

१. पतिसंगे रतिरंगे। २. साप आर समय। ३. वस। ४. हम। ५. दासे ६. जयकृष्णन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अत्र यद्यपि एतद्वृत्त-घटित-लक्षणं करुणामालवेऽतिव्याप्तम् अतिव्याप्तं च तल्लक्षणम् एतस्मिन् इति, तथापि उभयभेदयोः उभयत्र घटकत्वात् नाऽतिव्याप्तिः। किञ्च एतयोः स्वरवैलक्षण्यस्याऽपि प्रकटत्वात् तदेव लक्षणमिति नाऽतिव्याप्तिशङ्काऽपीति मन्तव्यम्। अनयैव दिशा अन्यत्रापि एतद् दूषणं निरसनीयमिति दिक्।

[२५] अथ सारङ्गी

भठिआल-राग-संकीर्णं ललिता यदि जायते।
शारङ्गीति समाख्यातः तदा रागो भवेदिह ॥१३॥

अस्यास्तु शुद्धा, देशी, अभिरामा, शोभना, अनूपा चेति पञ्च[1] भेदाः। तत्र—

(२५.१) शुद्धा शारङ्गी यथा

एतस्याः छन्दोलक्षम्—

सप्तचत्वारिंशदादि-सैकपञ्चाशदन्तकाः।
यत्पदार्धकलाः सा तु शारङ्गी शुद्ध-संज्ञका ॥१४॥

एहि ठाम यद्यपि एहि छन्दक लक्षण करुणा-मालवमे अतिव्याप्त अछि आ ओकरो (करुणामालवोक) लक्षण एहि (गोपीवल्लभ) मे अतिव्याप्त भय जाइत अछि, तथापि दूनूक लक्षणमे दूनूक भिन्नत्वक निवेश रहबाक कारणे अतिव्याप्ति नहि मानक चाही। दोसर बात, एहि दूनूक स्वरक विलक्षणता सेहो प्रकट अछि, अतः सएह (स्वर-वैलक्षण्य) लक्षण मानलासँ अतिव्याप्तिक शंको नहि उठि सकैछ से बूझक चाही। एही तरहेँ आनो ठाम एहि दोषक समाधान करक चाही।

[२५] सारंगी

जँ भठिआल रागक संग ललिता मिझरा जाय तँ से सारंगी नामक राग भय जाइत अछि।१३।

एकर शुद्धा, देशी, अभिरामा, शोभना, अनूपा ई पाँच भेद होइत अछि।

(२५.१) शुद्धा सारंगी

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे सँतालीससँ एकावन धरि मात्रा रहय से शुद्धा सारंगी कहबैत अछि।१४।

---

१. चत्वारो भेदः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् (गीत सं० ६२)

कमल आनन, गण्ड मण्डल
चन्द-दिनकर स्रवन-कुण्डल,
हृदय शोभित तारगन
जटहार विमलवरे !

दहिन-वाम पहन्ति कर कसि
चक्क फनि तिस्सूल कुलससि
चम्म धनुष परेत-सारथि
महिष चिकुर वरे !

चण्ड-मधु - कैटभ - विनासिनि
मुण्ड - महिषासुर- गरासिनि
धूम्रलोचन खण्डि रन भर
मण्डि मुण्ड-वरा।

विकट कट-कट दसन भीषन
रक्तबीज-भयङ्करी रन
निभरि खप्पर सघट घट घट
रुधिर - पान - करा।

परम तहु पर जोगजोगिनि
सकल रस संभोग भोगिनि
चण्डिपद - राजीव - केसर
प्रणवि विनय भनम्।

उदाहरण [गीत सं० ६२]

आनन – मुख। गण्ड-मण्डल—गाल लग। चन्द-दिनकर श्रवन कुण्डल— सूर्य ओ चन्द्र कानक कुण्डल छथि। तारगन-जट-हार—तारागणसँ जटित स्वच्छहार पहिरिनिहारि। पहन्ति—प्रहरन्ती—प्रहार करैत छथि। कर कसि—हाथमे धारण कयने। चक्क—चक्र। फनि—साँप। तिस्सूल—त्रिशूल। कुलससि—कुलिश—वज्र। चम्म—चर्म—ढाल। धनुष। महिष-चिकुर— महिषासुरक केश (टीक)। अष्टभुजा भगवतीक आठो हाथमे उक्त आठो वस्तु छनि। गरासिनि—खएनिहारि (मारनिहारि)। खण्डि – काटिक'। रन भर— युद्धक्षेत्रकेँ भरिक'। मण्डि—शोभित कय। मुण्डधरा—मुण्ड लय शोभित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लखनचन्द नरेन्द्र के असि
देह भगवति अभय वर हति
सकल[1] वैरि-दलम् ।।

एहि चलन दुइ तोरित अरु, थोर सत्वर एक ।
तिन्हु तालतें होत हुए, पुनि राग अम्मृत सेक ।।

(२५-२) अथ देशी

एतच्छन्दोलक्षणम्—

अष्टाविंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे तथैवादिपदार्धाऽर्धात्मको ध्रुवः ।।१५।।
यत्र चाऽऽदित्यसंख्यात-कलिकः किल जायते ।
देशपूर्वां तु तामाहुः सारङ्गीं गीति-सत्तमाः ।।१६।।

उदाहरणम् (गीत सं॰ ६३)

विदिता देवी विदिता हो ।।
अविरल केस सोहन्ती ।
एकाएक सहस को धारिनि
जनि रंगा पुर नटी ।।

दसन—दाँत । भीषन—भयानक । निभरि—खप्परकें नीक जकाँ भरि । जोग-जोगिनि—महायोगीश्वरी । चण्डिपद—चण्डी (भगवती) क चरण-कमलक कोषकें सविनय प्रणाम करैत छी । असि—तरुआरि ।

एहि रागमे अतिद्रुत (चलती) ताल दुइ गोट ओ अल्पद्रुत ताल एक गोट, एही तीनू तालें ई अमृतक वर्षा करैत अछि ।

(२५ २) देशी

एकर छन्दक लक्षण—

जाहि छन्दक अर्धकमे एकैस मात्रासँ अट्ठाइस धरि मात्रा रहय ओ तहिना ध्रुवक पूर्वार्धमे १२ मात्रा हो तकरा गीतिवेत्तालोकनि देश-सारंगी कहैत छथि ।१५-१६।

उदाहरण [गीत सं॰ ६३]

विदिता—प्रसिद्ध । अविरल—सघन । सोहन्ती—शोभित । एका—

---

१. (चौदह मात्राक एक चरण कम अछि ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कज्जल रूप तुअ काली कहिअए
उज्जल रूप तुअ वानी।
रवि-मण्डल परचण्डा कहिअए
गङ्गा कहिअए पानी॥
ब्रह्मा घर ब्रह्मानी कहिअए
हरघर कहिअए गोरी।
नारायन-घर कमला कहिअए
के जान उतपति तोरी॥
विद्यापति कविवरें एहो गाओल
जाचक-गन के गती।
हँसिनि देइ पति गरुड-नराएन
देवसिंह नरपती॥
सत्वर मध्यम चारि एहि रागिनि ताल-विवेक॥

(२५-३) अथ अभिरामा

वृत्तलक्षणमस्याः—

चतुष्कल-चतुष्कं तु सैकमारभ्य यद्गनाः।
कलिकाः सचतुर्मात्र-षट्कल-त्रितयावधि॥१७॥
तादृशार्ध-पदोपेता विराम-चरणा तु या।
अभिरामां तु तामाहुः शारङ्गीं गीतिसत्तमाः॥१८॥

एकाकी। एक सहस्र को धारिनि—एक हजारकें धारण कयनिहारि। रंगापुर—रंगमंच पर। नटी—नाट्य देखओनिहारि। वानी—सरस्वती। रवि-मण्डल—सूर्यमण्डलमे।

एहि रागिनीमे द्रुत ओ मध्य मिलाय कुल चारि ताल होइत अछि।

(२५.३) अभिरामा

एकर छन्दक लक्षण—

एक मात्रा सहित चारि चतुष्कल (१+४×४=१७ मात्रा) सँ लय चारि मात्रा सहित तीन षट्कल (४+६×३=३२ मात्रा) धरि जाहिमे हो, एहि तरहक अर्धकसँ युक्त ओ प्रतिचरणक अन्तमे विराम जाहिमे हो से संगीतवेत्त लोकनिमे अभिरामा सारंगी कहवैत अछि।१७-१८।

१. षट्कखस्तृतयावधि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत सं० ६४]

नमित अलकें बेढ़ला मुख-कमल सोभे।
राहुकि बाहु परसला शशिमण्डल लोभे॥
मदन सरें मुरुछलि चिर चेत न बाला।
देखलि से धनि हे बासि मालति-माला॥
कलस-कुच लोटाइलि[1] धन-सामरि वेनी।
कनय पवय सूतलि[2] जनि कारि नागिनी॥
भनें विद्यापति भाविनि[3] थिर थाक नमने।
राजाहुं सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देइ रमने॥

(२५-४) अथ शोभना

लक्षणम्—

कलाभिः कलिकाभ्यां वा यत्राधिकं[4] गणद्विकात्।
षट्कलात् पदमर्धं स्यादुत्सर्गात् सा तु शोभना॥१९॥

उदाहरणम् [गीत सं० ६५]

पुरह पुरादित अभिमत पुरू।
दारिद दुख दूरें परिहरू॥
तोहरा चरन सरन जे आव।
धन बित-पूत परम पद पाब॥ (इत्यादि)

उदाहरण [गीत सं० ६४]

नमित अलकें—नमड़ल केशसँ। मदन-सरें—कामदेवक तीरसँ। कलस-कुच—घट स्वरूप स्तन। घन-सामरि वेनी—मेघ सन कारी जुट्टी। कनय पबय—सोनाक पर्वत। भाबिनि—भामिनी, कामिनी। थिर—मन स्थिर नहि रहैछ।

(२५.४) शोभना

एकर छन्दक लक्षण—

एक मात्रा वा दू मात्रा अधिक दू षट्कल (२×६+२=१४ मात्रा) सँ जकर अर्धक रचित हो से सामान्यतः शोभना कहबैत अछि।१९।

उदाहरण [गीत सं० ६५]

पुरादित—पुरादित्य शिव। अभिमत पुरू—कामना पूर्ण करू। परि-हरू—हटाउ।

---

१. लोटाइली। २. सूतली ३. भाविनी। ४. यत्राधिकगणद्विकात्।
५. (गीतक शैली देखि लगैछ जे ई गोविन्द कविक थिक।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२५-५) अथ अनूपा

(अनूपा) वृत्तमस्याः। तल्लक्षणम्—

आदावर्ध-द्वयोपेतं पदमस्मात् त्रिभिर्दलैः।
ततोऽप्येवंक्रमेणैव बहुधा पद-निर्मितिः ॥२०॥
त्रयोदश-कलान्ताः स्युः यत्राऽङ्कावधयः कलाः।
नियमेनोज्झिता ह्रस्व-पदार्धे तु व्यवस्थिताः ॥२१॥
षट्कलाभ्यां सैकताभ्यामथवा सकलान्तकाम्।
अनूपामिति तामाहुः शारङ्गीं गीतिसत्तमाः ॥२२॥

उदाहरणम् [गीत सं० ६६]

तोरए मोञे गेलिहुँ फूल।
मोती कानिके तूल॥
साजलि[1] साजी अछोरसि मोरि,
गरुवि गरुवि आरति तोरि।
डिठि देखइतें दिवस चोरि॥
एत कान्हाइ परधन लोभ।
जे नहि लुबुध सेहे पए सोभ॥
निकुञ्ज केर समाज।
इथिं न हो मुख लाज॥

(२५.५) अनूपा

एकर अनूपा छन्द अछि। तकर लक्षण—

प्रारम्भमे दू चरण केर एक पद रहय, ओ तकर बाद तीनि चरणक एक पद हो, एही तरहें आओरो पद बनल रहय। छोटका अर्धकमे नओसँ तेरह धरि मात्रा रहय, बादक पदमे दू षट्कल ओ तीनि मात्रा (एक सहित दू मात्रा) अर्थात् १५ मात्रा वा एक मात्रा सहित दू षट्कल (१३ मात्रा) जाहिमे हो तकरा गीतक विद्वान् अनूपा नामक शारंगी कहैत छथि।२०-२२।

उदाहरण [गीत संख्या ६६]

मोञे—हम। माणिके—माणिक। तूल—तुल्य। साजलि साजी—सज्जित फुलडाली। अछोरसि—छीनैत छह। गरुवि आरति—गुर्वी आर्त्ति—पैघ (उत्कट। आतुरता। डिठि—दृष्टि। लुबुध—लुब्ध। इथिं—एहूमे। ढाकिबो

---

१. साजनि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ढाँकिवो केन अपजस-रासि
से करे कान्हु जे न लजासि।
जखने नागर नगर जासि॥
पीन पयोधर भार।
मदन राए भण्डार॥
रतने जड़िलो ताहरि माथ
मलिन होएत न देहे हाथ।
बड़ से कठिन हमर नाथ॥
कवि भन कण्ठहार।
रस एतए के पार॥
सिरि शिवसिंह जानए तन्त
रतन सन लखिमा कन्त।
सब कला रसँ जे गुनमन्त॥

सारङ्गीभेदाः कथिताः॥

(२६) सूहवः कोडारः

एतस्य१ तु पाश्चात्य-सूहीसमाख्यात-रागमिलनेन सूहओ इत्यपि नाम।

अतःपरमेतद्भेदा उच्यन्ते। तत्र—

केन—कोना झाँपल जायत। कृष्ण, तों लज्जाजनक काज करैत छह। रतने जड़िलो—रत्नसँ जटित। ताहरि—ओकर ओहि पर हाथ नहि दैह। देवह तँ मलिन भय जायत। हमर स्वामी बड़ कठोर छथि ओ क्षमा नहि करताह। सारंगीक भेद कहल गेल।

[२६] कोडार वा सूहओ

एकर पश्चिम-देशीय सूही नामक रागक मेलसँ सूहओ सेहो नाम कहल जाइत अछि।

आब एकर भेद कहल जाइत अछि। ताहिमे –

१ एतस्यातु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२६-१) सूहवः (देशी)

एतच्छन्दोलक्षणम् —

सप्तविंशति-पर्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे, ध्रुवाद्यर्धे दशपञ्चात्मिकाः पुनः ॥
मिथिलायामयं तावत् सूहवः समुदाहृतः ॥२३॥

उदाहरणम् (गीत सं० ६७)

पिश्रा परबास. श्रास तुश्र पासहिं, तें कि बोलह जदि श्रान ।
जे पतिपालक से भेल पावक, इथीं कि बोलत श्रान ॥
साजनि ! श्रघट न घटाबह मोहि ।
पहिलहिं श्रानि पानि पिश्रतमे गहि, करें धरि सोपलहु तोहि॥ध्रु०॥
कुलटा भए जदि पेम बढ़ाइश्र, तें जीवने की काज ।
तिला एक रंग-रभस सुख पाश्रोब, रहत जनम भरि लाज ॥
कुल-मामिनि भए निज-पिश्र बिलसए, श्रपथें कतहु नहि जाइ ।
की मालति मधुकर उपभोगए, किवा लताँहि सुखाइ ॥
विद्यापति कह कुल रखलें रह, दूति वचने नहि काज ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन, लखिमा देवि समाज ॥
मध्यमत्रिकमादाय तालस्य गतिरत्र तु ॥२४॥
श्रयं तु देशाख्यः ।

(२६.१ सूहव (देशी)

एकर छन्.क लक्षण—

जकर अर्धकमे चौबीससँ सत्ताइस धरि मात्रा रहय ओ ध्रुवपदक अर्धकमे पन्द्रह मात्रा रहय से मिथिलामे सूहव कहल जाइत अछि ।२३।

उदाहरण [गीत संख्या ६७]

पिआ परबास—पति प्रवासमे छथि । आस तुअ—केवल तोहरे आशा अछि । आन—आन, (अन्यथा) । पतिपालक—प्रतिपालक । पावक—अग्नि । इथीं—एहिमे । अघट न घटावह—अघटमे (कुमार्गमे) नहि लय जाह । पहिलहि—हमर प्रियतम पहिनहि तोहर हाथमे हमरा दय गेलाह । पेम—प्रेम । तिला एक—एक क्षण । रग-रभस—विलास । अपथें—अनुचित मार्ग दय । एहिमे तीनि मध्यम ताल देल जाइत अछि ।२४।

ई 'देश' नामक थिक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२६-२) अथ शुद्धः

एतच्छन्दोलक्षणम् —

सप्तविंशति-मात्राभिर्यत्पदार्धं द्वयं समम् ।
ऊनविंशति-मात्राभिर्ध्रुवकाद्यर्धमुत्तरम् ॥
षोडशात्मक-मात्राभिर्यत्र शुद्धः स सूहवः ॥२५॥

उदाहरणम् [गीत सं० ६८]

सरदक ससधर सम मुखमण्डल, काञ्चि झंपाबह वासे ।
अलपओ हास सुधारस बरिसओ, छाड़ओ आमिञ पिआसे ॥
कि आरे मानिनि ! अपनहु मने अनुमान ।
रुसइते आनहु बोलब अगेआन ॥ध्रु०॥
हाटक-घटन सिरीफल सुन्दर, कुचयुग कोटि करु आधे ।
पानि-परस रस अनुभव सुन्दरि, न कर मनोरथ, बाधे ॥
नागरि अङ्ग विभङ्गक आगरि, विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन, लखिमा देवि रमने ॥

(२६-३) अथ कामसूहवः

ए० छन्दोलक्षणम् —

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
पदार्धे यद्ध्रुवाद्यर्धे चतुष्कल-चतुष्ककः ॥
मिथिलायामयं तावद् विख्यातः काम-सूहवः ॥२६॥

(२६.२) शुद्ध

एकर छन्दक लक्षण—

जकर दूनू अर्धक सत्ताइस मात्राक हो, ध्रुवपदक पूर्वार्ध उन्नैस मात्राक तथा उत्तरार्ध सोलह मात्राक हो से शुद्ध सूहव कहबैत अछि ।२५।

उदाहरण [गीत संख्या ६८]

सरदक ससधर—शरद ऋतुक चन्द्रमाक । काञ्चि—किएक । वासे—वस्त्र सँ । अलपओ—अल्पोहु—थोड़ो । आमिञ—अमृत । अनुमान—अनुमान, अन्दाज । अगेआन—अज्ञात । हाटक-घटन—सोनासँ बनल । सिरीफल—श्रीफल (वेल) । कोटि—फांक । पानि-परस—हाथक स्पर्श । आगरि—आकर, निधि ।

(२६.३) कामसूहव

एकर छन्दक लक्षण —

जाहिमे पचीससँ तीस मात्राक पदार्ध हो ओ ध्रुवपदक आधा भागमे चारि चतुष्कल (४×४=१६ मात्रा) हो से मिथिलामे कामसूहव कहबैत अछि ।२६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत सं० ६९]

वदन चाँद तोर
नयन चकोर मोर
रूप अमिअ-रस पीबे[1]।
अधर मधुरि फुल
पिअ मधुकर तुल
मधु विनु कतिखन जीबे ॥
हे मानिनि ! मन तोर गढ़ल पसाने।
अपने रभसें हसि
किछुओ उतर देसि
सुखे[2] जाओ निसि अवसाने ॥ध्रु०॥
निअ मने न गुनसि
पर-बोल न सुनसि
न बूझसि छैलेरि[3] वानी।
अपन अपन कजा
कहैतें परम लजा
अरथित आदर हानी ॥
भनइ विद्यापति
सुनु वरयौवति
सबे खन न करिअ माने।
राजा सिवसिंह
रूप नराएन
लखिमा देवि रमने ॥

उदाहरण [गीत संख्या ६९]

वदन—मुह। नयन चकोर मोर - हमर आँखि चकवा पक्षी थिक। अमिअ—अमृत। अधर मधुरि फुल—नायिकाक ठोर मधुरीक फूल थिक। पिअ—प्रिय। मधुकर-तुल – भौंराक तुल्य। पसाने = पाषाण (पाथरसं)। रभसें—विलाससं। निसि अवसाने रातिक अन्त। निअ – अगम। छैलेरि वानी—चतुर नायकक वाणी। कजा—काज। अरथित—गरजू।

---

१. पावे। २. सुखे। ३. न छैलविरानी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२६,) अथ करुणा-सूहवः

ए॰ वृत्तलक्षणम्—

कलया कलिकाभ्यां वा हीनैर्यत्र चतुष्कलैः।
चतुर्भिः पदमर्धं तत् करुणासूहवाभिधम् ॥२७॥

उदाहरणम् [गीत सं० ७०]

कुल गुन गौरव शील सोभाओ।
सबे लए चढ़लिहु तोहरहि नाओ ॥
हमे अबला कत कहब अनेक।
आइति पड़लाँ बूझिअ विवेक ॥
हठ तेजि माधव, कर मोहि पार।
सब तँह बड़ थिक पर उपकार।
हमरा भेलि आबे तोहरि आस।
से न करिअ जे हो उपहास ॥
तोहें परपुरुष हमहु परनारि।
हृदए काँप तुअ रीति बिचारि ॥
भल मन्द जानि करिअ परिनाम।
जस अपजस पए रह गए ठाम ॥
भनइ विद्यापति तोहें गुनमान।
हाथि महतें नब के नहि जान ॥

सत्वरो मध्यमश्चैव तालद्वितयमत्र तु ॥२८॥

(२६.४) करुणा सूहव

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एक वा दू मात्रा कम चारि चतुष्कलसँ (१—४×४=१५ मात्रा) हो से करुणा सूहव कहबैत अछि।२७।

उदाहरण [गीत संख्या ७०]

सोभाओ—स्वभाव। आइति—आयत्ति, वशमे पड़ला पर विवेक बुझल जाइछ। तुअ रीति—तोहर क्रम। हाथि महतें नव—हाथी महतयारेसँ। झुकैत अछि।

एहिमे एक द्रुत ओ एक मध्यम इएह दू ताल होइत अछि।२८।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२६.५) अथ सुन्दर-सूहवः

एतच्छन्दोलक्षणम्—

त्रिदलं पदमत्रापि, तृतीयं पञ्चषट्कलम् ।
द्वि-त्रियुग्भ्यां चतुर्मात्र-गणाभ्यामथवा त्रिभिः ।
चतुर्मात्रगणैरेव द्वितीयं द्विकलाधिकात् ॥२६॥
षट्कलात्मैक-तद्द्वन्द्[1]वावधिभूतकलं दलम् ।
आदिभूतं तु यत्र स्यात् स तु सुन्दरसूहवः ॥३०॥

उदाहरणम् [गीत सं० ७१]

नाव डोलाव अहीरे
जिवइतें न पाओब तीरे खर-नीरे लो ॥

खेब न लेअए मोले
हँसि-हँसि कीदहु बोले जिव डोले[2] लो ॥

कके बिके एलिहुं आपे
बेढ़ल मोहि बड़ें सापे मोरे पापे लो ॥

(२६ ५) सुन्दर सूहव

एकर छन्दक लक्षण—

एहिमे तीन चरणक पद होइत अछि। तेसर चरणमे पाँच-छओ मात्रा रहय। दू-तीनि मात्रासँ युक्त दू टा चारि मात्राक गण (२+२×४=१० मात्रा) अथवा तीनि टा चारिमात्राक गण ओ दू मात्रा (४×३+२=१४ मात्रा) सँ दोसर चरण बनय। एक षट्कल (६ मात्रा) सँ दू षट्कल (६×२=१२ मात्रा) धरिक पहिल चरण जाहिमे हो से सुन्दर-सूहव कहबैत अछि।२९-३०।

उदाहरण [गीत संख्या ७१]

अहीर--गोआर, कृष्ण। खर नीरे--तेज धारा। खेब—खेबा, नाओ खेबबाक पारिश्रमिक। कीदहु--किछु। जिव डोले—प्राण कँपैत अछि। कके--किएक। बिके—बिकिनय। आपे--स्वयं। बेढ़ल--पँच साँपसँ घेरा

१. तद्द्वन्द्वावधि। २. जीव डोलों लो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करितहु पर उपहासे
परलिहु तहि[1] विधि फासे
नहि आसे लो ॥
न बुझसि अबुझ गोआरी
भजि रहु देव मुरारी
नहि गारी लो ॥
भवानीनाथ हेन भाने
नृप देव जत रस जाने
नव कान्हे लो ॥

(२६-१) स्मरसन्दीपनकोडारः

छन्दोलक्षणम्—

सप्तविंशतिपर्यन्तं यत्र विंशतितः कलाः ।
पदार्धे यद्ध्रुवाद्यर्धे षट्कलद्विक-संख्यकाः ।
स्मरसन्दीपनः सोऽयं कोडारः समुदाहृतः ॥३१॥

उदाहरणम् (गीत सं० ७२)

सखि हे ! आज जाएब मोही ।

गेलि छी । पर—दोसराक । फासे—पाश (फन्नी) मे । गोआरी—गोपी । अबुझ—मुग्धा । हेन—एहि तरहें । नृप[2]देव—राजा देवसिंह (शिवसिंहक पिता) । नव कान्हे—नवीन (युवक) कृष्ण ।

(६) स्मरसन्दीपन कोडार

छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे बीसस सत्ताइस धरि मात्रा रहय ओ ध्रुवपदक आधा भागमे दू षट्कल (६ × २ = १२ मात्रा) रहय से स्मरसन्दीपन कोडार कहबैत अछि ।३१।

उदाहरण [गीत संख्या ७२]

मोही —हम । चाँदन—चानन । अंजन-विहुन —काजर रहित । धवल

१. 'नृप देव' शब्दसँ 'नृपसिंह''क (गीत संख्या ४२) सेहो ग्रहण भय सकैछ । हिनक समय १५०० ई० मे एक भवानीनाथ पलिबार हाटी मूलक पल्लवकार भवनाथक पुत्र भेटैत छथि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घर गुरुजन डर न मानब, वचन चूकब नही ॥ध्र ॥
चाँदन आनि-आनि[1] अङ्ग लेपब, भूषन कए गजमोती ॥
अञ्जन-बिहुन लोचन-युगल, धरत धवल जोती ।
धवल वसने तनु झपाओब, गमन करब मन्दा ।
जैअओ सगर गगन उगत, सहसें सहसें चन्दा ॥
न हमे काहुक डीठि निवारबि, न हमे करब ओते ।
अधिक चोरि पर सञो करिअ, इहे सिनेहक लोते ॥
भने विद्यापति सुनह जुवति, साहसें सकल काजे ।
बुझ सिवसिंह रस रसमय, लखिमा[2] देवि समाजे ॥

[२७] कोडार

(२७-१) वियोगिकोडार:

एतच्छन्दोलक्षणम्—

पञ्चविंशतिमारभ्य यत्रोनत्रिंशदन्तिकाः ।
पदार्धकलिकाः किञ्च ध्रुवाद्यर्धं तु ताः पुनः ॥३२॥
यत्राष्टादशपर्यन्ता वियोगिपदपूर्वकः ।
कोडारः स तु विख्यातो मिथिला-जन-संसदि ॥३३॥

जोती—श्वेत ज्योति। सहसें—सहस्रशः। डीठि—दृष्टि, नजरि। निवारबि—बचायब। ओते—ओट (अढ़)। परसञो—दोसरासँ। लोते—रहस्य। शुक्लाभिसारिकाक वर्णन।

[२७] कोडार

(२७.१) वियोगी कोडार

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे पचीससँ उनतीस धरि मात्रा रहय तथा ध्रुववदक आधा भागमे अट्ठारह धरि मात्रा रहय से मिथिलाक सभ्य समाजमे वियोगि-कोडार कहबैत अछि।३२-३३।

१. ञानि आनि। २. सोरम। आगूक गीत सं० ७३ मे सोरम पद अछि, तकरे साहचर्य सँ ई पाठ भेल हो से सम्भव थिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत संख्या ७३)

साए साए ! पिआके कह बिनती ।
इहओ वसन्त ऋतु ओतहि गमाबथु एतएक भलि नहि रीती ॥
घन-मलयज-रस परसें लाग बिस, दूसह सुनिअ पिक-नादे ।
अनल बरिस ससि, निन्दओ न होअ निसि. एतए आओर परमादे ॥
जे सबे विपरित से सबे कहब कत, के पतिआएत आने ।
जखने आओब हरि हमहि निवेदब, जओ राखत पंचबाने ॥
सुमुखि समाद समादरें समदल, नसिरा साह सुरताने ।
मिथिला भूपति[1] सोरम देइ पति, कंसनराएन भाने ॥
अपि च—

[गीत सं० ७४]

सिरिहिं मिलल देहा, न कुच चाँद-रेहा, घामे न पिउल सुगन्धा ।
अधर मधुरि फुल, देखिअ तोहरि तुल, धएलहि अछ मकरन्दा ॥
रामा अइलिहे पिअ बिरसाइ ।
पुरुष केसरि जनि, दमन लता धनि, छुअइते[2] जा असिलाइ ॥ध्रु०॥

उदाहरण [गीत संख्या ७३[

साए—हाय ! मलयज-रस—घसल चानन । परसें—स्पर्श सँ । विस—विष । दुसह—असह्य । पिक-नादे—कोइलीक शब्द । अनल—आगि । परमादे—दुःस्थिति । पंचबाने—कामदेव । सुमुखि-समाद – नायिकाक समादकें । समादरें—आदरसँ । समदल—निवेदित कयल ।

आओरो—

[गीत सं० ७४]

सिरिहिं मिलल—शोभासँ युक्त । कुच—स्तन पर । चाँद रेहा – चन्द्राकार चेन्ह (नखक्षत) । मकरन्दा—पराग । रामा – सुन्दरी । केसरि—सिंह । दमन-लता धनि - नायिका मानू दमनलता (एक कोमल लत्ती जकर फूल अत्यन्त सुगन्धित होइछ) थिकीह । असिलाइ—मरुआय जाइत छथि ।

१. नसिराभूपति । पूर्वचरणक नसिरापद पुनः एतय आबि मिथिला क स्थान गीड़ि गेल से बुझाइछ । २. चुअइतें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गेलहि कएलह मान, की अवसर ज्ञान, की[1] सिसु बालँभ तोरा।
मुसए गेलिहे धन, जागल परिजन, लगहि कलाम्रोक चोरा॥
भनइ विद्यापति, सुनु वर जौवति, ई रस केम्रो-केम्रो जाने।
राजा सिवसिंह रूपनराएन, ल़खिमा देवि रमाने॥

(२७-२) अथ मोरङ्गिआ-कोडार:

एतच्छन्दोलक्षणम्—

दीर्घं पदमतो ह्रस्वे पदे दीर्घं ततश्च ते।
ततोऽप्येवंक्रमेणैव पदानां निर्मितिर्भवेत् ॥३४॥
सप्तविंशति-पर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः।
दीर्घार्धे,[2] कलिकान्यूनैः चतुर्भिस्तैः कलाधिकैः ॥३५॥
तैर्वा यत्र चतुर्मात्रगणैर्ह्रस्वार्ध-निर्मितिः।
मोरङ्ग-देश-कोडारः कथ्यते गीतिभिस्तु सः ॥३६॥

उदाहरणम् [गीत संख्या ७५]

रितुराज आज बिराज हे सखि, नागरी-गन-वन्दिते।
नव रङ्ग नव दल देखि उपवन, सहज शोभित कुसुमिते॥

गेलहि — जाइत देरी। सिसु बालँभ—पति बच्चा छथि। मुसए—चोराबय। परिजन—परिवार। लगहि कलाओक चोरा—भाव अस्पष्ट।

(२७.२) मोरङ्गिया कोडार

एकर छन्दक लक्षण —

पहिने एक दीर्घ (बड़का) पद, तकर बाद दू टा ह्रस्व (छोट) पद ओ तकर बाद दीर्घ (पँघ) पद, एही क्रमें पद सभक रचना हो; पचीसस सत्ताइस धरि मात्रा बड़का पदक अर्धक्रमे हो, एक मात्रा कम चारिमात्राक चारि गण (४×४−१=१५ मात्रा) सँ वा एक मात्रा अधिक चारि चतुष्कल (१+४×४=१७ मात्रा) सँ छोटका पदक अर्धांक बनल हो से मोरङ्गिया कोडार कहबैत अछि।३४-३६।

उदाहरण [गीत सं० ७५]

रितुराज — वसन्त। बिराज—शोभित अछि। नागरीगन वन्दिते—चतुर

१. कि। २. दीर्घार्थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरे कुसुमित कानन कोकिल साद।
मुनिहुँक मानस उपजु विषाद॥
साजनि हम पति निदय वसन्त।
दारुन मदन, निकारुन कन्त॥

अतिमत्त मधुकर मधुर रव कर, मालती मधु-सुञ्चिते।
समञो कन्त उदन्त नहि किछु, हमहि विधि-वस वञ्चिते॥

वञ्चित नागरि सेहे संसार।
एहि रितु पहु सञो न करु विहार॥

अति हाव-भाव मनोज मारए, चन्द रविसम[1] भान ए।
पुरुब पाप सन्ताप जत होअ, मन मनोभव जान ए॥

जारए मनसिज मार सर साधि।
चाँदने देह चौगुन होअ धाधि॥

सबे धाधि आधि बेआवि जाइति, करिअ धैरज कामिनी।
सुपहु मन्दिर तोरित जाएत, सुफले जाइति जामिनी॥

जामिनि सुफले जाइति अवसान।
धैरज कर धरणीधर भान॥

दुइ सत्वर अरु मध्य दोए, चारि ताल के राग।
कूर सुनत नहि कबहु पुनि, सोइ सुनत जेहि भाग॥

नायिका सभसँ पूजित। नवरङ्ग—नवीन रङ वा नवीन अनुराग। साद—शब्द। विषाद—बेचैनी। हम-पति—हमरा प्रति। निकारुन—निर्दय। रव—शब्द। उदन्त—समाचार। विधिवस वञ्चिते—अभागलि। मनोज—कामदेव। चन्द रवि-सम भान—चन्द्रमा सूर्यक समान सन्तापक बूझि पड़ैत छथि। मनोभव—कामदेव। मनसिज—कामदेव। चाँदने—चानन लगओने। धाधि—ज्वाला, धधरा। आधि-वेआधि—कष्ट ओ रोग। तोरित—त्वरित, शीघ्र। जामिनी—राति।

दू टा द्रुत ओ दू टा मध्यम एही चारि तालक ई रागिनी होइत अछि। एकरा क्रूर व्यक्ति (अरसिक) कखनहुँ नहि सुनैत अछि। भाग्यवाने व्यक्ति एकरा सुनैत छथि।

१. ससि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२७-३) अथ दण्डक-कोडारः

[लक्षणम्]—

दण्डकाशावरीवृत्ते दण्डकाशावरी यथा ।
तथा दण्डक-कोडारे स रागः किल जायते ॥३७॥

उदाहरणम् [गीत संख्या ७६]

श्री मुरारि-पदारविन्द समुल्लसन्मकरन्द-तुन्दिल-
पूर सुन्दर लहरि पूरित सकल गगन-तले !
वज्रलेप-सरूपपाप परम्परा[1] विपिनावली फल-
मूल-पल्लव-दाह-दर्शित-दाव नील-जले !
जय देवि गङ्गे ! दुरित-संहृतिमिन्दुमौलि-जटातट[2]-च्युति-
भङ्गि तङ्ग तरङ्ग चङ्गिम तुलित चन्द्रकले ! ॥ध्रु०॥
—इत्यादि सुप्रसिद्धम् ।

किं च--[गीत सं० ७७]

जखने[3] मधुरिपु भवन आओब ।—इत्याद्यपि सुप्रसिद्धम् ॥
"जय देवि दुर्गे !" (गीत सं०-४८) इत्याद्यपीति ।

(२७.३) दण्डक कोडार

[लक्षण—]

दण्डक-आसावरी छन्दमे जेना दण्डक-आसावरी राग गाओल जाइत अछि तहिना दण्डक-कोडार छन्दमे दण्डक-कोडार राग गाओल जाइत अछि ।३७।

उदाहरण [गीत सं० ७६]

हे गङ्गे, अहाँ श्रीविष्णु भगवानक चरण-कमलक रम्य परागपुंजसँ भरल सुन्दर लहरिसँ सम्पूर्ण आकाशकेँ भरि देल । वज्रलेप स्वरूप पापावली-रूपी जे विपिनावली (वनसमूह) तकर फल, मूल (जड़ि) ओ पल्लवकेँ जरयबामे दावाग्नि स्वरूप अहाँक नील-जल अछि । दुरित-संहृति—पाप समूहकेँ । इन्दुमौलि—महादेव । तनिक जटासँ खसवाक कारणेँ उत्पन्न जे भौरी ताहिसँ युक्त तरंगसँ शोभायमान ।

इत्यादि गीत सुप्रसिद्ध अछि । तथा—

[गीत सं० ७७]

जखने मधुरिपु.........इत्यादि गीत सुप्रसिद्ध अछि ।

"जय देवि दुर्गे !" (गीत संख्या ४८) इत्यादि गीत सेहो एकर उदाहरण भय सकैछ ।

---

१. परस्परा । २. तटादुति । ३. जषने ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२७-४) अथ शुद्ध-कोडारः

ए०छन्दोलक्षणम्—

अष्टाविंशति-पर्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः ।
स्युः पदार्धे यदीये स शुद्धः कोडारसंज्ञकः ॥३८॥

उदाहरणम् [गीत सं० – ७८]

जय जय जय नत सतत सिवङ्करि
परिहित नर-सिर-माले !
लम्बित रसनि, दसन अतिभीषन
वसन मिलल बघछाले ॥
चौदिस मानुस माँसु मुदित अति
फेरु फुकर कत रासे ।
मनिमय विविध विभूषने मण्डित
वेदि विदित तुअ वासे ॥
भूत परेत पिसाच निसाचर
अगनित जोगिनि-जाले ।
जखने न जगत जननि, तुअ संगति
तहँन कहिअ कोन काले ॥
विमल बाल रवि-मण्डल सन तुअ
तीन नयन परगासे ।
असुर रुहिर मदिरा मद मातलि
वदन अमिञ्ञ सम हासे ॥

(२७.४) शुद्ध कोडार

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे चौवीससँ अट्ठाइस धरि मात्रा रहय से शुद्ध कोडार कहबैत अछि।३८।

उदाहरण [गीत संख्या ७८]

नत—प्रणत (भक्त जन)क सिवङ्करि—शिवङ्करि (कल्याणकारिणी)। परिहित—पहिरने। नरसिरमाले—मनुष्यक मूड़ीक माला। लम्बित-रसनि—जीह लटकओने। दसन—दाँत। वसन—वस्त्र। फेरु—शृगाल। मनिमय.... वेदि—मणिक विभूषणसँ शोभित वेदी (चबुतरा) पर। असुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुग्र ञनुरूप सरूप बुझिग्र नहि
तैंग्रग्रो तोहर गुन गाऊ।
ञोकेहि तुग्र पदबन्ध करिग्र देवि,
निञ-जने लोचन लाऊ॥

—इति मम, ग्रन्यदीयं तु बहु-विततमत्र।

(२७.५) अथ विततारूयः

एतच्छन्दोलक्षणम्—

सप्तविंशति-पर्यन्तमेकविंशतितः कलाः।
यदीये तु पदार्धे स्युर्विततारूयः स सूहवः ॥३६॥

उदाहरणम् [गीत सं० ७९]

साए साए ! काँ लागि कौतुकें देखल
निमिष लोचन ग्राधे।
मोर मन मृग मरम बेधल
विषम-बान बेग्राधे॥
गोरस बिरस बासि बिसेषल
छिकेंहुँ छाड़ल गेहा।

रुहिर—राक्षसक (शोणित)। अमिञ—अमृत। ञोकहि—एकमात्र। पद-बन्ध—पयर धरब। निञजने—अपन लोक।

ई गीत हमर (लोचनक) थिक। आनक तँ बहुतो विस्तृत अछि।

(२७.५) वितता

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एकैसस सत्ताइस धरि मात्रा रहय से वितत नामक सूहव थिक।३९।

उदाहरण [गीत संख्या ७९]

साए - हाय !। काँ लागि—किएक। कौतुकें—उत्सुकतासँ। मोर मन-मृग—हमर मनरूपी हरिण। मरम वेधल—मर्मस्थलमे बेधल गेल। विषम-बान-वेआधे—कामदेव रूपी व्याधासँ। गोरस बिरस बासि—दही बासि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुर्लि धुनि सुनि मन मोहल
बिकेंहु भेल संदेहा ॥
तीर तरङ्गिनि कदंब कानन
निकट जमुना घाटे।
उलटि हेरैते उबटि परल
चरन चीरल काँटे ॥
सुकृत सुफल सुनह सुन्दरि
गोविन्द वचन सारे।
सोरम-रमन कंसनराएन
मिलत नन्द-कुमारे ॥

अथ कामोद-केदार-वृत्तेऽपि किल जायते।
कोडार-रागस्तद्वृत्तं पुरैव समुदाहृतम् ॥४०॥

तदेवं शुद्धकोडार-वितत-दण्डक-मोरङ्गिश्रा-वियोगीति पूर्वप्रतीकमादाय कोडारस्य पञ्च, देश शुद्ध काम[१]-करुणा-सुन्दर-स्मरसन्दीपन इति पूर्वप्रतीकमादाय षट् सूहवस्य (भेदाः)। तस्मादेते[२] तयोः एकादश द्वादश वा भेदा भवन्तीति।

भेलाक कारणे खट्टा भय गेल। गेह—घर। बिकेंहु—बिकाइयोमे। तीर-तरङ्गिनि—नदीक कछेरमे। उलटि हेरैते—उनटिकें देखैत काल। उबटि—उत्पथ—बाटसँ आन ठाम (उभर-खाभर बाटमे)। सुकृत सुफल—पुण्यक सुन्दर फल। नन्दकुमारे—कृष्ण।

कामोद ओ केदार रागहुक छन्दमे कोडार राग भय जाइत अछि। ओ छन्द पहिनहि उदाहरण सहित कहि गेल छी।४०।

एहि तरहें शुद्धकोडार, वितत, दण्डक, मोरङ्गिया ओ वियोगी एहि पूर्वप्रदर्शितकें लय कोडारक पाँच भेद तथा देश, शुद्ध, काम, करुणा, सुन्दर ओ स्मरसन्दीपन एहि पूर्वप्रदर्शितकें लय सूहबक छओ भेद अछि। अतः एहि दूनूक एगारह वा बारह भेद होइत अछि।

१, देशशुद्ध, शुद्धकाम। २. तस्मादेतत्तयोः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[२८] धनछी

धनास्री-राजविजयौ अहिरानि-विराजितौ ।
जायेते चेत् तदा तु स्याद् धनछी-नाम रागिणी ॥४१.।

तत्र तु प्रथमा—

(२८-१, मङ्गली धनछी

एतद्वृत्तलणम् -

चतुर्विंशतिमारभ्य यत्रैकत्रिंशदन्तिकाः ।
पदार्धकलिलाः सा तु मङ्गली धनछी मता ॥४२॥

उदाहरणम् [गीत सं० ८०]

अगर उगारि, गारि मृगमद-रस, कए अनुलेपन देह ।
चललि तिमिर मिलि, निमिषें अलख भेलि, काच कलसि[1] मसि रेह
हे माधव,
हेरह हरखि धनि, चान उगल जनि, महितले मेटि कलङ्क ।
घर गुरुजन हेरि, पलटति कतबेरि, ससिमुखि परम ससङ्क[2] ॥

[२८] धनछी

धनास्री ओ राजविजय जं अहिरानीसँ युक्त होइत अछि तँ धनछी नामक रागिनी होइत अछि ।४१।

ताहिमे पहिल—

(२८.१) मंगली धनछी

एकर छन्दक लक्षण—

चौबीससँ एकतीस धरि मात्रा जकर अर्धकमे हो से मंगली धनछी कहबैत अछि ।४२।

उदाहरण [गीत संख्या ८०]

अगर उगारि—अगरसँ देहक मर्दन कय । मृगमद रस—कस्तूरीक रस । अनुलेपन—लेप, देहमे अगर ओ कस्तूरीक लेप लगा अन्धकारमे मिलि अलख (अलक्ष्य) भेलि चललीह, जेना काच (सीसा) क कलसीमे कारी मोसि भरल हो । चान''''''कलंक—जेना चान अपन कलंककें मेटाक' धरतीपर उगल हो । (उत्प्रेक्षा अलंकार) । पलटति—घुरि जायत । ससंक—घबाइत ।

१. कसनि । २. परम सङ्क ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुग्र गुनगन कहि, ञानलिग्र साहि टारि, दैए सुमुखि बिसबास।
तें परि पठाइग्र, जें पुनु पाबिग्र, पर-धन बिनु परयास।।
जपलं जनम सत, मदन-महामत, बिहि सुफलित करु ग्राज।
मन्ति[1] गोविन्द भन, कंसनराएन, सोरम देवि समाज।।

सत्वर-त्रितयं त्वत्र तालस्य गुणिसम्मतम्।
हीयते तैर्विना रागस्तान् सम्यक्सुप्रयोजयेत्[2] ।।४३।।

(२८.२) अथ पहड़िआ

एतद्वृत्तलक्षणम्—

चतुर्भिः कलिकाहीनैः चतुर्मात्र-गणैः समम्।
पदार्धद्वितयं यत्र धनछी सा तु पर्वती ।।४४।।

उदाहरणम् [गीत सं ८]

की पर-वचने कन्ते देल कान।
की परकामिनि हरल गेञान।।
की तन्हि बिसरल पुरुबक नेह।
की जीवन ग्राबे पड़ल संदेह।।

ञानलि—अनलहु। साहि-टारि—सहटारिक। तें परि—तेना। परयास—प्रयास। मदन महामत—कामदेवक महामन्त्र। बिहि—भाग्य। मंति—मन्त्री।

एहिमे तीन द्रुत ताल गुणवान् लोकनिक सम्मत अछि। ताहि बिना राग क्षीण भ' जाइछ। अतः तीनू द्रुत तालकें नीक जकाँ प्रयुक्त करी।४३।

(२८.२) पहड़िआ

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एक मात्रा कम चारि मात्राक चारि टा गण (४×४—१ =१५ मात्रा) हो ओ दूनू अर्धक समाने हो से पहड़िआ धनछी कहवैत अछि।४४।

उदाहरण [गीत सं० ८१]

परवचने—दोसराक वचन पर। गेञान—ज्ञान। पुरुबक नेह—पूर्वजन्मक

---

१. दास। भाषा गीत संग्रह गीत सं० ५० क अनुसार 'भांति' पाठ देल अछि। परवर्ती कवि गोविन्द दासक भ्रमसँ लेखक प्रमादें एहूठाम 'दास' जुटि गेल हो से सम्भावना। २. सम्यक् प्रयोजयेत्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की परिनत भेल पुरुबक पाप।
की अपराधे कएल बिहि साप॥
की सखि, कओोन करब परकार।
की अविनय दहुँ पड़ल हमार॥
की हमे कामकला एक घाटि।
कीदहुँ समयक इहे परिपाटि॥
मधुसूदन भन मने अवधारि।
की धँरजें नहि मिलत मुरारि॥

तालः पूर्वतुल्यः।

(२८.३) अथ पञ्चमस्वरा

एतच्छन्दोलक्षम्—

चतुर्मात्र-त्रिकं सैकमारभ्य नियमोज्झिताः।
पदार्धकलिका यत्र षोडशान्तास्तु सा मता।
मिथिला-गीतिगोष्ठीषु धनछी पञ्जमस्वरा[1] ॥४५॥

उदाहरणम् [गीत सं० ८२]

आकुल चिकुरे बेढ़ल मुख सोभ।
राहु कएल ससि-मण्डल लोभ॥

स्नेह। साप—शाप, कोन अपराधें विधाता शाप देलनि। परकार—उपाय। की अविनय दहुँ—कोनो अशिष्ट कार्य। घाटि—घटी, कमी। अवधारि—विचारि।

एहिमे ताल पूर्ववर्णित होइछ।

(२८.३) पंचमस्वरा

एहि छन्दक लक्षण—

जकर अर्धक चारि मात्राक तीन गण एक मात्रा अधिक (४×३+१= १३ मात्रा) सँ लय अनियत रूपें सोलह मात्रा धरिक हो से मिथिलाक संगीत-गोष्ठीमे पंचमस्वरा धनछी कहबैत अछि।४५।

उदाहरण [गीत सं० ८२]

आकुल चिकुरे—अस्त व्यस्त (छिड़िआइत) केशसँ। राहु—राहुग्रह जकर स्वरूप कारी होइछ (केश राहुस्वरूप ओ मुख चन्द्रमण्डल स्वरूप)। उभरल—

१. पञ्चसुस्वरा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उभरल कुसुम[1] माल बर अङ्ग।
जनि जमुना मिलु गङ्ग तरङ्ग ॥
वदन सोहाओन स्रम-जल बिन्दु।
मदने मोति लए पूजल इन्दु ॥
पिअ-मुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज।
चाँद अधोमुख पिबए सरोज ॥
कुच-विपरीत विलम्बित हार ॥
कनक-कलस बम दूधक धार ॥
किंकिनि सबद नितम्बिनि छाज।
मदन विजय-रथ बाजन बाज ॥
भनइ विद्यापति मने अनुमानि।
कामिनि रम पिआ अनुमत जानि ॥

सत्वरद्वितयं मध्य-द्वयं चेवात्र जायते।
तालानां तावता तालाश्चत्वारः परिकीर्त्तिताः ॥४६॥

(२८-४) अथ श्रीविमिश्रा

ए० वृत्तम्। (लक्षणम्)—

गणैस्त्रिभिश्चतुर्भिश्च कलान्यूनैः क्वचित्तु तैः।
चतुर्मात्रैः पदानां तु दलयोर्यत्रनिर्मितिः[2]।

फूजल। कुसुम-माल—फूलक माला। केश ओ मालाक मिश्रण उक्त नदीक संगम बुझाइछ। सोहाओन—शोभायमान (सुन्दर)। स्रम-जलबिन्दु—रतिक परिश्रमसँ उत्पन्न घाम। मदने—कामदेव। इन्दु—चन्द्र। ओज—संकोच। कुच विपरीत—नीचाँ मुहेँ स्तनक संग हार लटकि रहल अछि। बम—उगिलि रहल अछि। सबद—शब्द। मदन—कामदेव।

एहिमे सत्वर (द्रुत) ताल दू ओ मध्य ताल दू, एही तालक मेलसँ चारि ताल होइत अछि।४६।

(४) श्रीविमिश्रा

एकर छन्दक लक्षण—

जाहिमे दूनू अर्धकक रचना चारि मात्राक तीनि वा चारि गणसँ हो,

१. 'फूजल चिकुर माल धर अङ्ग' ई तरौनी पदावली—गीत सं० १७० क पाठ अर्थसंगत अछि। २. निर्मितः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रमेण श्रीविमिश्रेयं धनछी गीति-सम्मता ।।४७।।

उदाहरणम् [गीत सं० ८३]

मलिन-कुसुम-तनु चीरे ।
कर पर वदन, नयन ढरु नीरे ।।
कि कहब माधव ताही ।
तुग्र गुन लबुधि मुगुधि भेलि राही ।।
उरँ लुर सामरि बेनी ।
कमल-कोष जनि कारि नागिनी ।।
केग्रग्रो सखि ताकए साँसे ।
केग्रग्रो नलिनी-दलें करए वतासे ।।
केग्रग्रो बोल ग्राएल हरी ।
उससि उठलि सुनि नाम तोहरी ।।
सुकवि विद्यापति गावे ।
बिरहिनि बेदन सखि समुझावे ।।

लघु सत्वर तिनि ताल एहि, चलनि होत परगास ।
तातें चुकि सुर चलत तव, गुनी होत उपहास ।।

तथा ओहिसँ एक मात्रा कमो रहय (४×३=१२ मात्रासँ ४×४=१६ मात्रा तक वा ११ मात्रासँ १५ मात्रा तक) तँ से श्रीविमिश्रा धनछी कहबैत अछि।४७।

उदाहरण [गीत सं० ८३]

मलिन-कुसुम तनु—मौलायल फूल-सन देह। चीरे—साड़ी। करपर वदन—हाथ पर मुह रखने। लुबुधि—आसक्त भय। मुगुधि—मुग्ध (भाव-विभोर)। राही—राधा। उरँ लुर—छाती पर झूलैत अछि। बतासे—बसात।

लघु ओ द्रुत मिलाय तीनि गोट ताल एहिमे प्रकटित होइत अछि। एहिसँ रहित भय जँ सुर चलैछ तँ गुणी व्यक्तियो हँसीक पात्र भय जाइत छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२८.५) अथ योगिआ

एतद्वृत्तलक्षणम्—

पञ्चविंशतिपर्यन्तं द्वाविंशति-कलावधि ।
ध्रुवान्तार्द्धसमा यत्र पदार्द्ध-कलिकाः किल ॥४८॥
त्रयोदश - कलोपेत - ध्रुवाद्यर्द्ध - व्यवस्थितिः ।
जोगिआ धनछी सा तु मिथिला-गीति-सम्मता ॥४९॥

उदाहरणम् [गीत सं० ८४]

लाखहुँ लता, कोटि तरुअर, जुवति कत न लेख ।
सबहि फूलाँ मधु मधुमय, मधुहुँ मधु विसेष ॥
साजनि ! हमर वचन सून ।
सबे परिहरि तोहि इछ हरि, अओ कि सराहसि पून ॥ध्र०॥
तोरिए चिन्ता, तोरि बरता, सेजहु तोरिए ठाम ।
सपनहुँ हरि तोहि न बिसर, लए उठ तोरिए नाम ॥
आलिङ्गन बेरा पाछु निहारए, तोह बिनु सुन कोर ।
पाछिलि कथा हृदय[1] बेथा, लाजे न छाड़ए नोर ॥

(२८.५) योगिआ

एकर छन्दक लक्षण—

जाहिमे बाइससँ पचीस मात्रा धरिक अर्धक हो, ओ ध्रुवपदक उत्तरार्ध सेहो एहने हो, ध्रुवपदक पूर्वार्ध तेरह मात्रासँ युक्त हो से मिथिला-संगीतानुसारेँ जोगिआ धनछी कहबैत अछि ।४८-४९।

उदाहरण [गीत सं० ८४]

एहि संसारमे लाखो लता अछि, लाखो तरु अछि ओ अगणित युवती अछि । मधु तँ सभ फूलमे अछि किन्तु मधुकरक हेतु मधु-मधुमे अन्तर अछि । इछ – चाहैत अथि । सराहसि पून—पुण्यक (भाग्यक) प्रशंसा करु । तोरिए चिन्ता—तोहरे चिन्ता करैत रहैत छथुन्ह । बरता—वात (चर्चा) । सेजहु—ओछाओन पर । ठाम – स्थान । पूर्वक बातसँ हृदयमे व्यथा (पश्चात्ताप)

१. हृदय कथा गुपुति व्यथा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरसकवि विद्यापति गाओल, निञ मने अवधारि।
जकर पेमे पराधिन बालभु, सेहे कलावति नारि॥

[२८.६] अथ शाम्भवी

ए० वृत्त [लक्षणम्]—

षोडशान्ताः कला यत्र चतुर्दश-कलावधि।
पदार्द्धे, वीतनियमा धनछी सा तु शाम्भवी ॥५०॥

उदाहरणम [गीत सं० ८५]

जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारि।
जय अधपूरुष जय अधनारि॥
आध धवल तनु, आध तनु गोरा।
आध पटोर, आध मुज-डोरा॥
आध जोग, आध भोग-विलासा।
आध पिनाक, आध नग-वासा॥
आध सिन्दुर विन्दु, आध विभूती।
आध हाड़-माल, आध गजमोती॥
भने कवि रतन, विधाता जाने।
दुइ कए बाँटल, एक पराने॥

छनि। अवधारि—बिचारिक'। पेमे—प्रेमसँ। बालंभु—वल्लभ (प्रिय, पति)। कलावति—चतुरा।

(२८.६) शाम्भवी

एकर छन्दक लक्षण—

जाहिमे चौदह मात्रासँ सोलह मात्रा धरिक पदार्ध हो एवं एकर अतिरिक्त अन्य कोनो क्रम नहि हो से शाम्भवी धनछी कहबैत अछि।५०।

उदाहरण [गीत सं० ८५]

त्रिपुरारि—त्रिपुरासुरक शत्रु, महादेव। अधपूरुष—आधा अङ्गसँ पुरुष ओ आधा अङ्गसँ नारी। धवल तनु—उज्जर देह। पिनाक शिव-धनुषक नाम थिक। नग-वासा—रत्न जटित वस्त्रसँ युक्त। हाड़-माल—हड्डीक मालासँ युक्त।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वरित-त्रितयं त्वत्र तालस्य परिदृश्यते ।
तद्बहिर्भूतरागस्तु कुरागो गुणिनां मतः ॥५१॥

(२८.७) [अथ शोभना]

आ चतुर्दशकात् सप्तदश-पर्यन्तकाः कलाः ।
पदार्धो यत्र सा प्रोक्ता धनछी तु सुशोभना ॥५२॥

उदाहरणम् [गीत सं० ८६]

सुपने आएल सखि ! मझु पिअ पासे ।
तखनुक कि कहब हृदय हुलासे ॥ध्रु०॥
न देखिअ धनु-गुन न देखु सन्धाने ।
चौदिस परए कुसुमसर-बाने ॥
बंक विलोचन बिगसित थोरा ।
चाँद उगल जनि समुद हिलोरा ॥
उठलि चेहाए आलिगन बेरी ।
रहलि लजाए सूनि सेज हेरी ॥
भनइ विद्यापति सुनह सपने ।
जत देखलह तत पुरतौहे मने ॥

तदेवं मञ्जली, पहड़िआ, पञ्चमस्वरा श्रीविमिश्रा, जोगिआ, शाम्भवी, शोभना इति पूर्वप्रतीकयोगात् सप्तधा धनछी ।

एहि ठाम तीन द्रुत ताल देखल जाइछ। ताहिसँ बाहर (कम वा वेसी) भय ई कुराग भय जाइत अछि।५१।

(२८.७) शोभना

जाहिमे चौदहसँ सत्तह मात्रा धरिक पदार्ध हो से शोभना धनछी कहबैत अछि।५२।

उदाहरण [गीत सं० ८६]

मझु—हमर। हुलास—उल्लास। धनु-गुन—धनुषक डोरी। सन्धान—निशाना। कुसुमसरबाने—कामदेवक बाण। बंक—वक्र, कुटिल। विलोचन—आँखि। विगसित—विकसित। सूनि सेज हेरी—बिछाओन शून्य देखि।

एहि तरहें मञ्जली, पहड़िआ, पंचमस्वरा, श्रीविमिश्रा, जोगिआ, शाम्भवी, शोभना एहि पूर्ववर्णित सभकें मिलाय सात प्रकारक धनछी होइत अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[२९] अथ गौड़मालवः

एतस्य तु गौड़-मिथिला इति आदाय भेदद्वयम् ।

(२९.१) तत्र प्रथमो गौडीयः

ए० वृत्ताम्—

त्रिंशदारभ्य षट्त्रिंशत्-पर्यन्ताः कलिकाः किल ।
दशकात् षोडशान्ताश्च मात्रा यत्र पदार्धयोः ॥
क्रमादिह तु स प्रोक्तो गौडीयो गौडमालवः ॥५३॥

उदाहरणम् [गीत सं० ८७]

बाँधए विकट जटा, तथिहुँ चाँदेर फोटा,
कत जुग सहस बयस बहि गेला ।
उमत महादेव समत न भेला ॥
मौलि मेलए छार, सहज न तेजए पार,
सुकवि विद्यापति गाऊ ।
जीवओ सिव सिंह राऊ ॥

सत्वर-द्विकमादाय तालस्यात्र गतिर्मता ॥५४॥

[२९] गौड़मालव

एकर गौड़ ओ मिथिला एहि दूनूकेँ लय दू भेद अछि । ताहिमे पहिल—

(२९.१) गौड़ीय

एकर छन्दक लक्षण—

जकर पदक पूर्वार्धमे तीससँ छत्तीस धरि मात्रा ओ उत्तरार्धमे दससँ सोलह धरि मात्रा रहय से गौडीय गौड़मालव कहबैत अछि ।५३।

उदाहरण [गीत सं० ८७]

तथिहुँ - ताहि पर । चाँदेरि फोटा—चन्द्रमाक ठोप । कत जुग सहस — कय हजार वर्ष । उमत - उन्मत्त; विक्षिप्त । समत—समीचीन बुद्धिबाला । मौलि—माथ पर । मेलए छार—छाउर मिलबैत छथि ।

एहिमे दू टा द्रुत ताल लगैत अछि ।५४।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२९.२) अथ मैथिलः

ए० वृत्तम्—

सप्तोत्तर-दशान्तास्तु द्वादशावधयः कलाः ।
यत्पदार्द्धे स तु प्रोक्तो मिथिला-गौडमालवः ॥५५॥

उदाहरणम् [गीत सं० ८८]

गेलाहु पुरब-पेमे, उतरो न देइ । दाहिन वचन वाम कए लेइ ॥
ए हरि रस दए रुसलि रमनी । हमतह न आउति कुंजर-गमनी ॥
गेए मनाबह रहओ समाजे । सब तह बड़ थिक आखिक लाजे ॥
जे किछु कहलक से अछि लेले । भल कहि बूझब अपनहि गेले ॥
भनइ विद्यापति नारि सोभावे । रुसलि रमनि पुनु पुनमति पावे ॥

[३०] अथ राजविजयः

(३०.१) तत्र प्रथमं देवपूर्वः

ए० वृत्तलक्षणम्—

अष्टाविंशति-पर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्द्धे यत्रोनत्रिंशदात्मिकाः ।
स चोत्सर्गाद् देवराजविजयः परिकीर्त्तितः ॥५६॥

(२९.२) मैथिल

एकर छन्दक लक्षण—

जकर पदार्धमे बारहसँ सत्रह धरि मात्रा रहय से मिथिला-गौड़मालव कहबैत अछि ।५५।

उदाहरण [गीत सं० ८८]

पुरब-पेमे—पूर्वक प्रेम सोचि । वाम—विपरीत । हम तह—हमरासँ (हमरा कहलासँ) । कुंजर-गमनी—हाथी-सन गति बाली । गेए—जाकʼ । आखिक—आँखिक ।

[३०] राजविजय

(३०.१) तहिमे पहिल – देव-राजविजय

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे पचीससँ अट्ठाइस धरि मात्रा रहय ओ ध्रुवपदक पूर्वार्ध मे उनतीस मात्रा रहय तँ से सामान्य रूपेँ देव-राजविजय कहबैत अछि ।५६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् [गीत सं० ८९]

कतहु श्मश्रु धर, कतहु पयोधर
भल वर मिलल सुशोभे।
अधंग धइलि नारि, न[1] गुनलि निञ गारि
गरुअ गौरि गुन लोभे॥
आलो शिव शम्भू; तुमि[2] शिव शम्भू
तुमि जो बधलो पचबाने॥ध्रु०॥
गाँग लागि गिरिजाक मनौलिहे
कके देवि! बोलह मन्दा।
चरन नमित फनि, मनिमय भूषन
धरखि खिआएल चन्दा॥
भनइ विद्यापति, सुनह तिलोचन
पय-पङ्कज मोरि सेवा।
चन्दल देइ पति, वैदनाथ गति
नीलकण्ठ हर देवा॥

उदाहरण [गीत सं० ८९]

आधा अंगमे श्मश्रु (मोँछ) छनि तँ आधामे स्तन। भल वर—भने नीक जकाँ। अधंग—अर्धाङ्ग (आधा अङ्गमे)। निञ गारि—अपन अप्रतिष्ठा। गरुअ—गुरु (भारी)। गंगाकेँ देखि गौरी कहुँ भागि ने जाथि तेँ आधा अंग साटि लेल। आलो शिव—आहे शिव। एहि गीतक ध्रुवपद बंगाली गायक-परम्परामे बंगला-सन भय गेल अछि। एकर समुचित पाठक अनुमान लगाओल जा सकैछ—

आहे शिव शम्भू, तोहेँ शिव शम्भू,
तोहेँ बधलह पचवाने।

गाँग लागि - गंगाकेँ ल' क' (ई उक्ति शिवक थिक)। कके—किएक। मन्दा—अधलाह (एकरा अधलाह किएक कहैत छी, हम तँ पार्वतीकेँ मनयबाक हेतु गंगाकेँ अनने छी।) चरन नमित फनि—फणी (साँप) जे मणिसँ युक्त शिवक भूषण थिक पयर पर लोटाय लागल। शिवक पूर्वोक्त समाधानसँ हँसी लगलासँ नीचाँ उतरि गेल। धरखि—घर्षणसँ (हँसैत-हँसैत चन्द्रमा घर्षणसँ खिआय गेलाह)। तिलोचन—त्रिलोचन, शिव। पयपङ्कज—चरणकमल।

१. 'न' नहि अछि। २. तुमी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वर-द्वितयं चैव मध्यमद्वितयं तथा ।
एवं रागानुगास्तालाश्चत्वारो गुणिनां मताः ॥५७॥

(३० २) अथ अलानविमिश्रः (आडान)

एतद्वृत्तलक्षणम्—

यत्राष्टादश[1]-पर्यन्तं स्युस्त्रयोदशतः कलाः ।
पदार्धे सोऽडान-राजविजयः परिकीर्त्तितः ॥५८॥

उदाहरणम् [गीत सं० ९०]

जय जय भगवति भीमा भयानी ।
चारि वेदे अवतरु ब्रह्मवादिनी ॥
हरि हर ब्रह्मा पुछइत भमे ।
एकओ न जान तुअ आदि-मरमे ॥
भनइ विद्यापति, राए मुकुट-मणि ।
जिवओ रूपनराएन नृपति घरणि ॥

एहि रागक अनुकूल दू द्रुत ओ दू मध्यम इएह चारि ताल गुणवान् लोकनिक सम्मत अछि ।५७।

(३०.२) अलानविमिश्र (अडान)

एहि छन्दक लक्षण—

जाहिमे तेरह मात्रासँ अट्ठारह मात्रा धरिक पदार्ध हो से अडान-राज-विजय कहबैत अछि ।५८।

उदाहरण [गीत सं० ९०]

भीमा—भयानक । भयानी—भवानी । चारि वेदें अवतरु—चारू वेद रूपें अवतार लैत छी । ब्रह्मवादिनी—ब्रह्मकें कहयवाली । हरि—विष्णु । हर—महादेव । भमे—घूमल फिरैत छथि । आदि-मरमे - आदिक (उत्पत्तिक) मर्म (रहस्य) ।

१. यत्रादश ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लघु सत्वर अरु मध्य एहि, तीन ताल शुभ होत ।
तीनि लिन्हे जओ गाइअए; तओ होत रसन के सोत ।।

(३०.३) अथ देश-राजविजय:

एतच्छन्दोलक्षणम्—

द्वादशावधि यत्र स्युः कलिकाश्चाचतुर्दश ।
यत्पदार्द्धे स विज्ञेयो देशराजस्तु गायकैः ।।५९।।

उदाहरणम् [गीत सं० ९१]

जाति पदुमिनि सहति कता ।
गजें दमसलि दमन-लता ।।
लोभें अधिक मूल न मार ।
जे मूल राखए से बनिजार ।।
अछल जोर सिरीफल भाँति ।
कएलह छोँलग-नारँग-काँति ।।
भनइ विद्यापति न कर लाथ ।
भूखल न खाए दूहू हाथ ।।

लघु, द्रुत ओ मध्य ई तीन ताल एहिमे शुभ होइत अछि। एही तीनकें लय जें ई गाओल जाइत अछि, तें रसक धारा प्रवाहित भय जाइत अछि ।

(३०.३) देश-राजविजय

एकर छन्दक लक्षण—

जकर पदार्धमे बारहसँ लय चौदह धरि मात्रा रहय तकरा गायक लोकनि देशराजविजय कहैत छथि ।५९।

उदाहरण [गीत सं० ९१]

जाति पद्मिनि—पद्मिनी जातिक नायिका । सहति कता—कतेक सहत । गजें दमसलि—हाथीसँ मचोड़लि गेलि । दमन-लता—एक प्रकारक कोमल लत्ती । मूल—मूलधन । बनिजार—वनियाँ । अछल—छलैक । जोर सिरीफल भाँति - एक जोड़ बेलक सदृश (स्तन) । छोलँग—नेगो । नारँग—नारंगी (समतोला । काँति —कान्ति; समतोला-सन लाल कए देलह ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वर-द्वितयं मध्य-द्वयं तालचतुष्टयम् ।
एतद्विहीनोऽयं रागः कुराग इति निश्चितम् ॥६०॥

(३०.४) अथ कानरामिश्रः

ए० वृत्तलक्षणम्—

चतुष्कल-चतुष्कात् तु कलान्यूनात् कलाः किल ।
ऊनविंशति-पर्यन्ताः स्युः पदार्द्धे तु यत्र वै ।
स रागः कानरा-राजविजयः परिकीर्त्तितः ॥६१॥

उदाहरणम् [गीत सं० ९२]

नमञो नमञो चण्डी चरन-युगल तोर ।
तोरित दुरित हरि देहे[१] अभय वर ॥
कट-कट दसन, रसन लह-लह कर ।
खड्गें खण्डिए चण्डी रुहिर खपर भर ॥
हेर जोह खोह करि धरए तुरए सरि ।
मूह मेलए रुहिर घट-घट घोट करि ॥
लखनचन्द राए करए तुअ भगति[२] ।
देहे अभय वर निञ पद जुग रति ॥

एहि रागमे दू द्रुत ओ दू, मध्यम ई चारि ताल होइत अछि । एहिसँ रहित भ' ई कुराग भ' जाइत अछि ।६०।

(३०.४) कानरा-मिश्र

एकर छन्दक लक्षण—

जकर पदार्धमे एक मात्रा कम चारि चतुष्कल (१५ मात्रा) सँ लय उनैस मात्रा धरि हो से राग कानरा-राजविजय कहबैत अछि ।६१।

उदाहरण [गीत सं० ९२]

हे चण्डी, तोहर चरण युगलमे हम प्रणाम करैत छी । हमर पापकेँ तुरन्त हरि हमरा अभय वर दएह । दसन—दाँत । रसन—जीह । रुहिर—रुधिर (शोणित) । हेरि जोह खोह करि—ताकि हेरि क', नीक जकाँ अन्वेषण क' । घोट करि—घोँटि क' । भगति—भक्ति ।

१. देहै । २. भगवति ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जायते गुणिभिर्दत्त एक एवात्र मध्यमः ।
तालस्तेनामुना हीनो रागोऽयं कुत्सितो मतः ॥३२॥

(३०.५) अथ मङ्गलराजविजयः

एतच्छन्दोलक्षणम्—

चतुष्कल-त्रिकं सैकमारभ्य नियमोज्झिताः ।
चतुष्कल-चतुष्कान्ता यत्पदार्धकलाः किल ॥
मङ्गलोत्तरनामायं राजपूर्वो भवेदिह ॥६३॥

उदाहरणम् [गीत सं० ९३]

साँझक अतिथि भागें विहि आान ।
विमुखें पाप बड़ अछुए गेआान ॥
हमरेओ कन्त बसए परदेश ।
अतए[1] पथिक देखि मोहि कलेस ॥
पथिक ! वास भमि आानतए लेह ।
हमरा दोसर तेसर नहि गेह ॥
चतूर चतुरभुज ई रस जानि ।
कौसलें अभिमत करए सआानि ॥

एहि रागमे गुणवान् लोकनिसँ देल एकमात्र मध्यम ताल होइत अछि। एहिसँ हीन भय ई निन्दित होइत अछि।६२।

(३०.५) मंगल-राजविजय

एकर छन्दक लक्षण —

तीन चतुष्कल ओ एक मात्रा (४ × ३ + १ = १३ मात्रा) सँ लय अनियत रूपें चारि चतुष्कल (४ × ४ = १६ मात्रा) धरि जकर पदार्धमे हो से मंगल-राजविजय कहबैत अछि।६३।

उदाहरण [गीत सं० ९३]

विहि आान—विधाता अनैत छथि। अछुए गेआान—ज्ञान अछि। अतए—तें। भमि—टहलि क'। आानतए—अन्तय, अन्यत्र। गेह—घर। सआानि—चतुरा। 'हमरा दोसर तेसर नहि गेह' सँ पूर्व चरणक 'वास आानतए' पदक 'एतहि वास लएह' ई व्यंग्य।

---

1. अथिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तालस्त्रितयमत्रास्ति गुणिनां गणसम्मतम् ।
तावद्भिः कृतसारथ्यो रागोऽयमनुरञ्जकः ॥३४॥

(३०.६) अथ मनमोदः

लक्षणम् ।—

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
पदार्धे मनमोदाख्यः स भवेद् राजपूर्वकः ॥६५॥

उदाहरणम् [गीत सं० ९४]

सखि ! मधुरिपु सन के दहु[1] सोहाञोन
जे दिअ[2] तन्हिक उपाम हे ।
तसु नख[3] नेञोछन सरद-सुधानिधि
पङ्कज के लेत नाम हे ॥
सखि ! आज मधुरिपु देखल मोञे हटिआ
लोचन जुगल जुड़एला ॥ध्रु.॥
अरघहि[4] लोचने जखने निहारलन्हि
बाँक कइए भौंह-भङ्गा ।
तखनुक अवसर जागल पचसर
थाने थाने गेल अङ्गा ॥

गुणी व्यक्तिक सम्मत एहिमे तीन ताल होइत अछि । ताहिसँ चलैत ई राग आनन्ददायक होइत अछि ।६४।

(३०.६) मनमोद

लक्षण—

जाहिमे पदक आधा भागमे पचीससँ तीस मात्रा धरि हो से मनमोद राजविजय कहबैत अछि ।६५।

उदाहरण [गीत सं० ९८]

कृष्णक समान के सोहाओन अछि जकरासँ हुनक उपमा दिअ । शरदक चन्द्रमा तँ हुनक नहक नेञोछन (काटिक' त्याज्य अंश) थिक । हटिञा—हाट पर । बाँक—कुटिल । पचसर—कामदेव । थाने-थाने । पसार—

१. के कतए । २. जे दिअ । ३. मन । ४. अधखाहि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरसन-लोभे पसार देल हमे
सखि-मुखे सुनि बड़ं रसी ।
तखने उपजु रस भेलिहुं परबस
बिसरलि दूधहु[1] कलसी ।।
दान-कलप-तरु मेदिनि अवतरु
नृप हिन्दू - सुलताने ।
मेधा देइ पति रूपनराएन
प्रणवि जीवनाथ भाने[2] ।।

सत्वर मध्यम तीनि करि, चल चलनि मे ताल ।
एआ में मिलि सुर होत तब, रस उपजत सुविशाल ।

(३९.७) अथ भटिआलपूर्वः

ए० वृत्तम्—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्द्धे स भवेद् भठिआली राजपूर्वकः ।।६६।।

उदाहरणम् [गीत सं० ९५]

जय जय दुर्गे दुर्गति हारिनि
सब-सिधि-कारिनि देवी ।
भुगुति मुकुति दुहु दुखें बिनु पाबिअ
[तुअ] पदपङ्कज सेवी ।।

दोकान, हाट पर वेचवाक लेल वस्तुक विन्यास । कलसी—डाबा । दान-कलप-तरु—दान देवामे कल्पवृक्षक सदृश । मेदिनि—पृथ्वी ।

एहिमे चलती ताल सत्वर (द्रुत) ओ मध्यम मिलाय तीनि होइत अछि। ताहिसँ मिलि जखन सुर चलैत अछि तँ बहुत पँघ रस उत्पन्न होइत अछि ।

(३०.७) भठिआल-राजविजय

इएह छन्द (एकर लक्षण)—

जकर पदार्धमे पचीससँ अट्ठाइस धरि मात्रा हो से भठिआल-राजविजय कहबैत अछि ।६६।

उदाहरण [गीत सं० ९५]

दुर्गति-हारिनि—कष्ट दूर करयबाली। सब-सिधिकारिनि—सब सिद्धि देनिहारि। भुगुति—भुक्ति, भोग। मुकुति—मुक्ति। विरंचि—ब्रह्मा।

१. दूधहुँ । २. भाने हे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विष्णु विरञ्चि विभावसु वासव
शिव तुअ घरए धेआने।
आदि-सकति भगवति ! भव-भाविनि।
केओ न अन्त तुअ जाने ॥
तनु अतिसुन्दर मरकत-मनि जनि
तीनि नयन, भुज चारी।
शंख चक्र शर कर धनु धारिनि
शशि शेखर अनुसारी ॥
मनिमय कुण्डल हार मनोहर
नेपुर घन हन बाजे।
किंकिनि रन-रन सुललित कंकन
भूषन विविध विराजे ॥
पञ्चानन-वाहिनि दाहिनि होइ
सुमरि महेश विमोही।
सदानन्द कह चरन,जुगल तुअ
सरन कएल जग जोही ॥
सत्वर मध्यम तीनिए ताल।
तें बिनु रागिनि होइति बिहाल ॥

तदत्र देवराज, अलानराज, देशराज, कानरराज, मङ्गलराज, मनमोदराज, भठिआलराज इत्येवं सप्त-विधो राजविजय उक्तः।

विभावसु—अग्नि। वासव—इन्द्र। आदि-सकति—आदि शक्ति। शशि शेखर अनुसारी—माथ पर अनुरूप चन्द्र छथिन्ह। पञ्चानन—सिंह। दाहिन होह—हमर दहिन होउ, हमरा पर प्रसन्न होउ। महेश विमोही—मोहहीन शिवकें। जोही—खोजिफ'।

एहिमे सत्वर (द्रुत), ओ मध्यम मिलाय तीनि ताल होइत अछि। ताहि विना ई रागिनी अव्यवस्थित भ' जाइत अछि।

एवं प्रकारें एतय देवराज, अलानराज, देशराज, कानरराज, मंगलराज, मनमोदराज, भठिआल राज एहि भेदें सात प्रकारक राजविजय कहल गेल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[३१] अथ नाटः

मलारी-स्वरमादाय किञ्चित् कामोदवादने ।
नाटराग-समुत्पत्तिं वदन्ति किल गायकाः ॥६७॥

अतः परमेतद्भेदाः । तत्र प्रथमम्—

(३१.१) शुद्धः

ए० वृत्तालक्षणम्—

षट्कल-द्विक-पर्यन्ता द्विकलोन-ततः कलाः ।
यत्पदार्धे भवेदत्र शुद्ध-नाटः स एव हि ॥६८॥

उदाहरणम् [गीत सं० ९६]

मृगमद-पङ्क अलका । मुख जनु करह तिलका ॥
सम्पुन पुनिम के चन्दा । कलंके होएत गए मन्दा ॥
सहजे सुन्दरि बड़ि राही । कि करति अधिक पसाही ॥
ऊजर नयन नलिना । काजरें न करु मलिना ॥
दूधक घोएल भमरा । मसि बुड़ि होएत समरा ॥

[३१] नाट

मलारीक स्वर लय किछुए कामोद बजओला पर नाटरागक उत्पत्ति होइत अछि, ई गायक लोकनि कहैत छथि ।६७।

आब एकर भेद कहल जाइत अछि । ताहिमे पहिल—

(३१.१) शुद्ध

एकर छन्दक लक्षण—

दू मात्रा कम षट्कल (१२—२= ० मात्रा) सँ लय दू षट्कल (१२ मात्रा) धरि जकर पदार्धमे हो से शुद्ध नाट कहबैत अछि ।६८।

उदाहरण (गीत सं० ९६)

मृगमदपङ्क—कस्तूरीक लेप ल' अ... तिलक (पसाहिन) नहि कग्ह । पूर्णिमाक पूर्णचन्द्र कलंक (धब्बा) सँ मलिन भ' जायत । राही—राधा । पसाही—प्रसाधन क' । नलिना—कमल । दूधक धोअल भ्रमर मोसिमे डुबि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पीन पयोधर गोरा। उलटल कनए कचोरा॥
चाँदने धवल न करू। हिमे झापि जाएत सुमेरू॥
विद्यापति हेन कवी। कतए तिमिर जहाँ रवी॥
रूपनराएन पहू। तौलि हलत गुरु-लहू॥

तालद्वितयमेवात्र विद्यते गुणिसम्मतम्।
तदादाय यदा गानं क्रियते सुस्वरस्तदा॥६९॥

(३१.२) अथ मलारी नाट

ए० छन्दोलक्षणम्—

चतुष्कल-चतुष्केण यद्ध्रुवाद्यर्ध-निर्मितिः।
ध्रुवान्तार्धे तु यत्र स्यात् पदार्धान्तरवत् स्थितिः॥७०॥
पञ्जविंशतितः किंच त्रिंशदन्ताः कलाः किल।
यत्पदार्धे तु स भवेन्मलारी-नाटसंज्ञकः॥७१॥

उदाहरणम् [गीत सं० ६७]

गगन गरज मेघा, उठए धरनि थेघा
पचसर हिअ गेल साली।
सुमुखि देह खिन, जिउति आजुक दिन
के जान कि होइ त काली॥

श्यामल भ' जायत। उलटल – औन्हल। कनए कचोरा—सोनाक बाटी। धवल—उज्जर। हिमे – बर्फसँ। सुमेरु – सोनाक पर्वत। गुरु-लहू – गुरु-लघु।

एहि रागमे गुणवान लोकनिक सम्मत दुइए ताल होइत अछि। तकरा ल' जखन ई गाओल जाइछ तँ उत्तम स्वर बहराइछ।६९।

(३१.२) मलारी नाट

एकर छन्दक लक्षण—

चारि चतुष्कल (४×४=१६ मात्रा)सँ जकर ध्रुवपदक पूर्वार्ध बनय ओ ध्रुवपदक उत्तरार्ध सामान्य पदक आधा जकाँ हो, जकर अर्धकमे पचीससँ तीस धरि मात्रा हो, से मलारी नाट कहबैत अछि।७०।

उदाहरण [गीत सं० ९७]

आकाशमे मेघ गरजैछ। धरनि थेघा—नायिका धरती पर हाथ टेकि उठैत अछि। कामदेव हृदय सालि (विद्ध क') देने छथि। काली—कालिह। तसु—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माधव ! मन दए सुन तसु वानी ।
कुजन निरूपि सुजन सखि संगति
जे किछु कहए सञानी ।। ध्रु०।।
की हमे साँझक एकसरि तारा
भादव चौठिक चन्दा ।
ऐसन कए पिआओ मोर मुख मानल
मो पति जीवन मन्दा ।।
वामहु गति जत समदि पठओलन्हि
से सबे कहि कहि गेली ।
तेरसि तिथि ससि, सामर पख निसि
दसमि दसा मोरि भेली ।।
भनइ विद्यापति, सुन वरजौवति
मने जनु मानह आने ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन
लखिमा देवि रमाने ।।

परं च—

[गीत सं० ९८]

रयनि काजर बम, भीम भुअङ्गम
कुलिश परए दुरवार ।

हुनक । कुजन निरूपि—दुष्ट लोकके देखि । सञानी—चतुर नायिका । साँझक एकसरि तारा साँझपहर जखन केवल एकेटा तारा उगल रहैछ तँ तकरा देखब लोक अशुभ बुझैछ, की हम सएह छी जे हमरा दिस नहि देखैत छी ?—ई व्यंग्य । भादवक चौठ तिथिक चन्द्रमा देखब अशुभ थिक (अतः चतुर्थीचन्द्रक पूजाक उत्तर "सिंहः प्रसेनमवधीत्" एहि दोषनाशक मन्त्रें चन्द्र-दर्शन कयल जाइछ) । मो पति—हमरा प्रति । वामहु—विपरीतो । जत—जतेक । तेरसि—कृष्णपक्षक त्रयोदशी तिथिक रातुक चन्द्रमाक सन । दसमि दसा—मरणावस्था (कामोद्दीपनसँ दस दशा होइत अछि जाहिमे दसम् मरणा-वस्था होइत अछि ।)

दोसरो उदाहरण [गीत सं० ९८]

रयनि—रजनी, राति । काजर बम—काजर उगलि रहल अछि । भीम—भयानक । भुअङ्गम—साँप । कुलिश—वज्र; ठनका ठनकि रहल अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गरजें तरस मन, रोसें बरिस घन
संसाञो परु अभिसार ॥
सजनी ! वचन छड़ैतें मोहि लाज ।
जे होअए से होअओ बरु, सबे हमे अंगिकरु
साहसं मन देल आज ॥ध्रु०॥

ठामहि रहिअ घुमि, परसें चिन्हिअ भुमि
दिग मग उपजु सन्देह ।
हरि हरि ! शिव शिव !! ताबे जाइह जिव
जाबे न उपजु सिनेह ॥
चरने बेढ़ले फनि हित कए मानल धनि
नूपुर न करत रोर ।
सुमुखि ! पुछञो तोहि, सरुप कहसि मोहि
पेमक कतएक ओर ॥
अपन सुहित मित, देखिअ से परतेख
न पाइअ पेमक ओर ।
चाँद हरिन बह, राहु-कबल सह
पेम पराभव थोर ॥
भनइ विद्यापति, सुनह सुचेतनि
गमन न करह विलम्बे ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन
सकल-कला अवलम्बे ॥

तरस—डराइछ । रोसें– क्रोधें, जोर-जोरसें । संसञो— सन्देहमे । अंगिकरु—अंगीकार (स्वीकार) कय लेब । दिगमग—दिशा ओ मार्ग । चरने बेढ़ल—पायरमे साप लेपटायल, तकरा उपकार बूझल, कारण जे एहिसें नूपुर शब्द नहि करत । पूर्वोक्त नायिकाक अभिसारक दृढ़ उक्ति सुनि सखी पुछैत अछि जे प्रेमक स्वरूप ओ एकर कोनो ओर-छोर बुझाबह । एहि पर नायिकाक उक्ति होइछ जे अपन इष्ट-मित्रकें प्रत्यक्ष देखि सकैत छी मुदा प्रेमक ओर छोर कतहु नहि भेटत । देखू—प्रेमक कारणें चन्द्रमा हरिणकें रखने छथि । राहुक आक्रमण सहैत छथि । अतः प्रेमक पराभव थोड़ें बुझि पड़ैत छैक ।

• Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरद्वितयं मध्यद्वितयं तावता पुनः ।
चतुष्टयं तु तालानां जायते रागमध्यगम् ॥७२॥

(३१-३) अथ शंकुक-नामा

एतच्छन्दोलक्षणम—

द्वादशावधयो यत्र षोडशान्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे स नाटस्तु[1] शंकुकः समुदाहृतः ॥७३॥

उदाहरणम् [गीत सं० ९९]

दूरहि ऊरु रहल गहि ठाम ।
चरने पाओल थल-कमल उपाम ॥
सेद-बिन्दु परिपूरल देह ।
मोतिम फरलि सौदामिनि रेह ॥
संकेत-निकेत मुरारि निहारि ।
अपनि अधिनि नहि रहलिए नारि ॥
पुलकित भेल पयोधर गोर ।
दगध मदन पुनु आकुर तोर ॥
बजइतें वचन भेल सर-भंग ।
कदली-दल जकें काँपए अंग ॥

एहि रागमे दू द्रुत ओ दू मध्यम ई चारि ताल होइत अछि ।७२।

(३१.३) शंकुक

एकर छन्दक लक्षण—

जकर पदार्धमे बारहसँ सोलह धरि मात्रा हो से शंकुक नाट कहबैत अछि ।७३।

उदाहरण [गीत सं० ९९]

ऊरु—जाँघ । चरण स्थलकमलक उपमा पाओलक । सेद—घाम । मोतिम—मुक्तामय । सौदामिनि-रेह—बिजलोकाक रेखा । संकेत-निकेत — मिलनक हेतु निर्धारित स्थान । स्तन पुलकित भेल, मानू शिवक त्रिनेत्रसँ जरल

१. स शङ्कुकनाटस्तु ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi .

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसमय श्यामसुन्दर कवि गाव।
सकल अधिक भेल मनमथ भाव॥
कृष्णनराएन ई रस जान।
कमलावति-पति गुनक निधान॥

परं च—

[गीत संख्या १००]

करतल कमल नयन ढर नीर।
न चेतए कुन्तल, सँभर न चीर॥
तुअ पथ हेरि हेरि चित नहि थीर।
सुमरि पुरुब नेहा दगध सरीर॥
कतें परि माधव, साधब मान।
विरहि जुवति माँग दरसन दान॥
जल मधे कमल, गगन मधे सूर।
आतर चाँदहु कुमुद कत दूर॥
गगन गरज मेघा, सिखर मयूर।
कत जन जान सिनेह कत दूर॥
भनइ विद्यापति विपरित मान।
राधा-वचने लजाएल कान्ह॥

कामदेव पुनः अंकुरित भ' उठल हो। सरभंग—स्वरभंग, अस्पष्ट बोली। कदली-दल—केराक पात। मनमथ—कामदेव।

आओरो उदाहरण [गीत संख्या १००]

करतल-कमल—तरहत्थी रूपी कमल पर। न चेतए कुन्तल—केशकें ठीक नहि करैत अछि। सँभर न चीर—वस्त्र नहि सम्हारैत अछि। तुअ पथ—तोहर (कृष्णक) बाट। सुमरि पुरुब नेहा—पूर्वक स्नेहकें स्मरण कय। कतें परि—कतेक काल धरि। जल मधे—जलमे। गगन मधे—आकाशमे। आतर...... दूर—चान ओ कुमुदमे स्नेह कतेक दूरसँ भय जाइत छैक, से सभ जनैछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परं च—

[गीत संख्या १०१]

गगन गरज घन, जामिनि घोर।
रतनहुँ लागि न सञ्चर चोर॥
ओहना तजि अएलाहुँ निञ गेह।
अपनहुँ न देखिअ अपनुक देह॥
तिला एक माधव, परिहर मान।
तुअ लागि संसञो परल परान॥
दुसह जमुना नरि ऐलिहु भाँगि।
कुच-जुग तरल तरनि तँ लागि॥
देह अनुमति हे जुझओ पचवान।
तोहे सन नगर नागर नहि आन॥
भनइ विद्यापति नारि सोभाव।
अपनुक अभिमत जुकुति बुझाव॥
राना रूपनराएन जान।
सिवसिंह लखिमा देइ रमान॥

तालत्रितय-सम्पन्ना गतिरेषा विराजते।
राजते तैर्विना रागः सोऽयं नैवाऽत्र कुत्रचित्॥७४॥

आओरो उदाहरण [गीत सं० १०१]

आकाशमे मेघ गरजैत अछि। राति डराओन अछि। चोर रत्नहुँक लेल नहि बहराइत अछि। एहना—एहन स्थितिमे। गेह—घर। परिहर—छोड़ू। तुअ लागि—तोहरा लेल। संसञो—सन्देहमे, संकटमे। नरि—नदी। भाँगि—भंग कए, धाराकेँ चीरैत, हेलि क'। कुच-जुग तरल तरनि—दूनू स्तन हल्लुक नाओ छल (घैलाक सहारासँ हेलब प्रसिद्ध अछि)। अनुमति—आज्ञा। जुझओ—युद्ध करओ। पचवान—कामदेव। तोहसन ......आन—नगर भरिमे केओ आन तोहरा सन रसिक नहि अछि। अपन मनक आकांक्षा युक्तिसँ बुझबैत अछि।

एहि रागमे तीन तालक गति होइछ। ताहि विना ई कतहु नहि शोभित होइछ।७४।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३१.४)अथ कामोदनाटः

ए० छन्दोलक्षणम् –

चतुष्कल-त्रिकात् सैकादारभ्य नियमोज्झिताः ।
चतुष्कल-चतुष्कान्ताः क्वचित् सैकाधिकास्ततः ॥७५॥
यत्पदार्धे, द्वयोरन्त्ये[1] तथा स्युरुत्समाः किल ।
कलिकाः स तु कामोद-नाट इत्यभिधीयते ॥७६॥

उदाहरणम् [गीत सं० १०२]

जय जय भगवति ! जय महामाया ।
त्रिपुरसुन्दरि ! देवी करु दाया ॥
आहे माता ॥ध्रु०॥
दालिम कुसुम सम तुअ तनु छवी
एखनहि[2] उदित भेल जनि रवी ॥
धनु सर पास अङ्कुस हाथ ।
तेतिस कोटि देव नाव माथ ॥
चङ्गिम उपमा न केओ पाब ।
काम-रमनि दासि-पद पाब ॥

(३१.४) कामोद-नाट

एकर छन्दक लक्षण—

जकर अर्धकमे एक मात्रा सहित तीनि चतुष्कल (१+४×३=१३ मात्रा) सँ लय अनियत रूपेँ चारि चतुष्कल (४×४=१६ मात्रा) धरि रहय तथा तकर अन्तमे उत्सम (विषम ?) मात्रा रहय (दूनू चरणमे एक रङ नहि) से कामोदनाट कहबैत अछि ।७५-७६।

उदाहरण [गीत सं० १०२]

दाया—दया । दालिम कुसुम सम—दाड़िमक फूलसन । धनु सर—चारू हाथमे चारि वस्तु—धनुष, तीर, पाश (बन्धनास्त्र), आँकुस । तेँतीस करोड़ देवता माथ झुकबैत छथि । चङ्गिम—सौन्दर्य । अहाँक सौन्दर्यक आगाँ कामदेवक स्त्री रति सेहो दासीक स्थान पबैत छथि ।

१. रम्ये स्यूरुत्सगाः । २. तखने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं च परिदृश्यते ।
तालानां तावता तालाश्चत्वारः परिकीर्त्तिताः ॥७७॥

(३१.५) अथ उत्तमः

एतच्छन्दोलक्षणम्—

ह्रस्वमर्धं ततो दीर्घम् एष एव क्रमः पदे ।
ह्रस्वार्धे त्रिदशान्ताश्च कला यत्र दशादिकाः ॥७८॥
दीर्घार्धे चाष्टविंशान्ताः पञ्चविंशतितः कलाः ।
नियमाद् विगतास्तु स्युर्नाटोऽयमिह तूत्तमः ॥७९॥

उदाहरण [गीत संख्या १०३]

सखि हे बालंभ जितब बिदेसे ।
हमे कुल-कामिनि कहइते ञनुचित, तोहहु देहुन्हि उपदेसे ॥
ई न बिदेसक बेली ।
दुरजने हमर दुख न अनुमापब, तें तोहे पिआ लगे[1] लएली ॥
किछु दिन करथु निवासे ।
हमे पूजल जे सेहे पए भुंजब[2], राखथु पर उपहासे ॥

एहिमे दू द्रुत ओ दू मध्यम ताल देखल जाइछ। ताहिसं एहि रागमे चारि ताल होइत अछि।७७।

(३१.५) उत्तम

एकर छन्दक लक्षण—

जतय पहिने छोट खण्ड रहय तखन पँच एहि क्रमें पद-रचना हो, छोटका खण्डमे दससं तेरह धरि मात्रा रहय, बड़कामे पचीससं अट्ठाइस धरि अनियत रूपसं रहय, से उत्तम-नाट कहबैत अछि।७९।

उदाहरण [गीत सं० १०३]

बालंभ—वल्लभ, प्रियतम। जितब—जितताह, अर्थात् जयताह ('जायब' कें अशुभ मानि जितब कहल जाइछ)। कुल-कामिनि—कुलांगना। ञनुचित—अनुचित। बेली—समय। अनुमापब—बुझत। पूजल—पुञ्जित कयलहुं (अरजने छी)। सेहे पए—सएह। भूंजब—भोग करब। पर उपहास—दोसर जे निन्दा करत से। बधभागी—हत्याक भागी। जहिखने "जखनहि ओ

१. पिआ गेल एली। २. भुजव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होएताहे किए वधभागी ।
जहिखने हुन्हि मने माधुर[1] चिन्तब, हमहु मरब धसि आगी ॥
विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन, लखिमा देवि रमाने ॥

तदेवं शुद्ध, मलारी, शंकुक,[2] कामोद, उत्तम (इति) एतत्पूर्वप्रतीकमादाय नाटः पञ्चधा ।

इदं तु बोध्यम् अवान्तर बहुभेदवताम् अल्पभेदवतां च रागाणां तत्तादुत्पत्ति-साधनीभूत-तत्तद्गीतम् :आदाय तावद्-अन्यान्यतम गीतोत्पत्तिकत्वं तत्ताच्छन्दोघटित - गीतोत्पत्तिक - स्वरावान्तर-भेदभूत-तत्तद्रागानेव वाऽऽदाय तावदन्यान्यतमत्वं वा लक्षणमस्तु एकतश्चैतत् । वस्तुतस्तु—विजातीय सुखजनकतावच्छेदकतया सिद्धाः तास्ताः तत्तद्रागगता जातय एव तत्तद्राग-लक्षणमिति । अवान्तरभेदानां च तदुक्तमेवेति दिक् ।

अथ संकीर्णाऽसंकीर्ण-मैथिल-रागाणामेकीकृत्य गणना—

मथुरा जयबाक निश्चय करताह ।

एहि तरहें शुद्ध, मलारी, शङ्कुक, कामोद, उत्तम एहि पूर्ववर्णित सभकें मिलाय नाट पाँच प्रकारक होइछ ।

ई बुझक चाही जे गौणरूपक बहुत भेदवाला ओ अल्प भेदवाला रागसभक लक्षण तत्तत् रागक उत्पत्तिक साधनभूत तत्तत् गीतकें लय तत्तदन्यतम गीत पर उत्पन्नत्व कयल जा सकैछ अथवा तत्तत् छन्दमे निबद्ध जे गीत ताहिमे उत्पन्न स्वरक जे अवान्तर भेद स्वरूप तत्तत् राग, तकरहि ल' क' ओहिमे कोनो एक एना लक्षण कयल जा सकैछ ई एक मत थिक । वस्तुतः विजातीय (भिन्न जातिक) वा भिन्न-भिन्न प्रकारक आनन्द दायकत्वसं सिद्ध जे प्रत्येक रागगत पृथक्-पृथक् जाति, सएह ओहि-ओहि रागक लक्षण भेल । गौण भेद सभक लक्षण तें उपर्युक्ते होइत — ई केवल दिग्दर्शन मात्र भेल ।

आब संकीर्ण ओ असंकीर्ण मैथिल राग सभक एक-एक क' गणना कयल जाइछ ।

---

१. माधवा । २. शंकूक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ललिता तदनु विभासी[1] भैरव्यहिरा[2] बराड़ी च।
गोपीवल्लभ[3] गुजरी रामकली काऽपि शारङ्गी ॥८०॥
कौशिक-कोडाराख्यौ वसन्तो धनछी तथा।
असावरी च श्रीरागो गौडमालव-मालवौ ॥८१॥
भूपाली-राजविजय-नाटाः कामोद-देशाखौ।
केदारोऽथ मलारी इत्येते मैथिलाः कथिताः ॥८२॥

तदेतान् एतावदवान्तरभेदाँश्चादाय ऋतु[4]राजमन्तरा तीरभुक्ति-देशीयाः सप्तनवतिसंख्यका रागा वेदितव्याः। वेदितव्यानि च तावत्संख्यकानि तीरभुक्ति-देशि-गीतान्यपीति। देशान्तरा[5]देश्यश्च कियत्यो लेख्या इत्यधुना न लिख्यन्ते ताः॥

इति श्रीलोचनशर्मविरचितायां रागतरङ्गिण्यां
तीरभुक्ति-देशीय-संकीर्णरागविवरणं
नाम चतुर्थस्तरङ्गः।

(१) ललिता, (२) विभासी, (३) भैरवी, (४) अहिरानी, (५) बराड़ी, (६) गोपीवल्लभ, (७) गुजरी, (८) रामकली, (९) शारंगी, (१०) कौशिक, (११) कोडार, (१२) वसन्त, (१३) धनछी, (१४) आसावरी, (१५) श्रीराग (१६) गौड़मालव, (१७) मालव, (१८) भूपाली, (१९) राजविजय, (२०) नाट, (२१) कामोद, (२२) देशाख, (२३) केदार ओ (२४) मलारी ई चौबीसो मैथिल राग कहल गेल अछि।८०-८२।

अतः एहि सभकें तथा एकर सभक अवान्तर (गौण) भेदकें ल' वसन्त रागकें छोड़ि तिरहुत देशीय सन्तानबे टा राग जानक चाही। ओतबे संख्यामे तिरहुति देशीय गीतो जानक चाही। देशान्तर ओ देशी राग सभ कतेक लिखल जाय, अतः एखन नहि लिखल जाइत अछि।

इति श्री लोचनशर्माक बनाओल रागतरंगिणीमे
तिरहुतिदेशीय संकीर्ण राग-विवरण नामक
चतुर्थ तरंग समाप्त ॥

---

१. विभावसी तदनु। २. रानि। ३. गोपीवल्लभोगुजरी इति साधु। ४. रितु। ५. ई पंक्ति "चतुर्थस्तरङ्गः" एकर बाद मूलमे अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमः तरंगः

अथ यन्त्रजादि - रागसामान्योत्पत्त्युपयुक्त- संस्थिति साधनीभूत-स्वरसंज्ञा-प्रकरणम् ।

स्वस्व-शेष-श्रुतिं त्यक्त्वा यदा ऋषभ-धैवतौ ।
गीयते गुणिभिः सर्वैः तदा तौ कोमलौ मतौ ।।१।।
गृह्णाति मृदु[1] मस्याऽपि गान्धारः प्रथमां श्रुतिम् ।
यदा तदा जनैरेष तीव्र इत्यभिधीयते ।।२।।
द्वितीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतरः स्मृतः ।
चतुर्थीमपि चेदेवम् अतितीव्रतमः स्मृतः ।।३।।
अतितीव्रतमो गस्तु शारङ्गे परिगीयते ।।४।।
षड्जस्य च निषादश्चेद् गान्धारः प्रथमां श्रुतिम् ।
तदा सङ्गीतिभिः सोऽपि तीव्र इत्यभिधीयते ।।५।।

पञ्चम तरङ्ग

वाद्य वीणा प्रभृतिसँ उत्पन्न राग-सामान्यक उत्पत्तिमे उपयुक्त संस्थितिक साधन-स्वरूप स्वरसंज्ञा प्रकरण प्रारम्भ होइत अछि :—

जखन ऋषभ ओ धैवत स्वर अपन-अपन शेष-श्रुतिकेँ छोड़ि गाओल जाइत अछि, तखन ओकरा गुणी लोकनि कोमल कहैत छथि ।१।

जखन गान्धार स्वर कोमल मध्यम स्वरक प्रथम श्रुतिकेँ लैत अछि तँ तकरा लोक तीव्र कहैत छैक ।२।

एहिना (यदि गान्धार कोमल मध्यम स्वरक) दोसरो श्रुतिकेँ ग्रहण करय तँ तीव्रतर कहबैछ आ जँ चारिमहुकेँ ग्रहण करय तँ अतितीव्रतम कहबैछ ।३।

अतितीव्रतम गान्धार स्वर शारंग रागमे गाओल जाइत अछि ।४।

यदि निषाद ओ गान्धार स्वर षड्ज स्वरक पहिल श्रुतिकेँ ग्रहण करय तँ संगीतज्ञ लोकनि ओकरा तीव्र कहैत छथि ।५।

---

१. मध ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतरः स्मृतः ।
तृतीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतमः स्मृतः ॥६॥
षड्जस्य द्वे श्रुती गृह्णन् निषादः काकली स्मृतः ।
तीव्रतमे निषादे च गेया सैव विचक्षणैः ॥७॥
स-पयो रि-धयोश्चैव तथैव ग-निषादयोः ।
संवादः कथितो विज्ञैर्मं-सयोः स्वरयोर्मिथः ॥८॥
हृदि मन्दो[1] गले मध्यो मूर्ध्नि तार इति क्रमात् ।
द्विगुणः पूर्व-पूर्वस्मात् स्वरः स्यादुत्तरोत्तरः ॥९॥

इति स्वरसंज्ञा

अथ स्वर-श्रुति-विभागः

द्वाविंशतिस्तु श्रुतयः स्वराणां[2] भागशः स्मृताः ।
तद् यथा श्रूयतां तावत् सङ्गीताद् बुद्धिपारगैः ॥१०॥

एहिना (यदि निषाद ओ गान्धार षड्जस्वरक) दोसर श्रुतिकें ग्रहण करय तँ ओ तीव्रतर कहबैत अछि। आ जँ तेसर श्रुतिकें ग्रहण करय तँ तीव्रतम कहबैत अछि।६।

षड्जस्वरक दू श्रुतिकें ग्रहण कयनिहार निषाद स्वर काकली कहबैत अछि। इएह तीव्रतम निपाद स्वरमे कलावान् द्वारा गाओल जाइछ।७।

स आओर प मे, रि आओर ध मे, ग ओ नि मे तथा म आओर स मे परस्पर संवाद (साहचर्य) होइछ से विद्वान् लोकनि कहने छथि।८।

हृदयमे मन्द स्वर, कण्ठमे मध्य स्वर ओ मूर्द्धा (मस्तक) मे तार स्वर उत्पन्न होइछ ओ ई क्रमश: पूर्व पूर्वसँ उत्तरोत्तर द्विगुण होइत अछि; अर्थात् मन्दसँ द्विगुण मध्य तथा मध्यसँ द्विगुण त रस्वर होइछ।९।

स्वर संज्ञा-प्रकरण समाप्त

स्वरश्रुति-विभाग

स्वर स्भक भाग क' क' बाइस श्रुति कहल गेल अछि। ओ जेना होइछ से विद्वान् लोकनि संगीतसँ सुनथु।१०।

---

१. मन्द्रो। २. सुराणां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीव्रा कुमुद्वती मन्दा छन्दोवत्यस्तु षड्जगाः ।
दयावती तु रञ्ज्ञेया रञ्जनी रक्तिकेत्यमूः[१] ॥११॥
रौद्री क्रोधा च गान्धारे वज्रिकाऽथ प्रसारिणी ।
प्रीतिश्च मार्जनीत्येताः श्रुतयो मध्यमाश्रिताः ॥१२॥
क्षिती रक्ता च सन्दीपिन्यालापिन्यथ पञ्चमे ।
मदन्ती रोहिणी रम्येत्येता धैवत-संश्रयाः ॥१३॥
उग्रा च क्षोभिणी च द्वे निषादे वसतां श्रुती ।
× × × ॥१४॥

इति स्वरश्रुति-विभागः

अथ स्वरसंस्थिति-प्रकरणम्

वीणायां सर्वरागाणां स्वराणां संस्थितिस्तु या ।
तस्या वादनमात्रेण स्वरव्यक्तिः प्रजायते ॥१५॥
तास्तु संस्थितयः प्राच्यो रागाणां द्वादश स्मृताः ।
याभी रागाः प्रगीयन्ते प्राचीना रागपारगैः ॥१६॥

तीव्रा, कुमुद्वती, मन्दा ओ छन्दोवती ई चारू श्रुति षड्ज स्वरमे तथा दयावती, रंजनी ओ रक्तिका ई तीनू श्रुति ऋषभ स्वरमे होइत अछि ।११।

रौद्री, क्रोधा ओ वज्रिका ई तीनू श्रुति गान्धार स्वरमे एवं प्रसारिणी, प्रीति ओ मार्जनी ई तीनू श्रुति मध्यम स्वरमे होइत अछि ।१२।

क्षिति, रक्ता, सन्दीपिनी ओ आलापिनी ई चारू श्रुति पंचम स्वरक एवं मदन्ती, रोहिणी ओ रम्या ई तीनू श्रुति धैवत स्वरमे होइत अछि ।१३।

उग्रा ओ क्षोभिणी ई दू टा श्रुति निषाद स्वरमे रहैत अछि । ⋯१४।

स्वरसंस्थिति

वीणामे सभ रागक स्वरक संस्थिति (ठाट) रहैत अछि जे स्वर सभ वीणाकें बजओला मात्रसँ प्रकट भ' जाइत अछि ।१५।

रागसभक उक्त प्राचीन संस्थिति बारह टा कहल गेल अछि जाहिसँ पुरान-पुरान रागपारंगत लोकनि रागसभकें गबैत छथि ।१६।

---

१. त्यमूः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तास्तु—

भैरवी टोडिका तद्वद् गौरी कार्णाट एव च।
केदार ईमनस्तद्वत् शारङ्गो मेघरागकः।
धनाश्री पुरवी किञ्च मुखारी दीपकस्तथा ॥१७॥
एतेषामेव संस्थाने सर्वे रागा व्यवस्थिताः।
यथा यद्राग-संस्थानं तत् तथैव वदाम्यहम् ॥१८॥
शुद्धाः सप्त स्वरा[1]रम्या वादनीयाः प्रयत्नतः।
तेन वादनमात्रेण भैरवी जायते शुभा ॥१९॥
अन्ये तु भैरवी-रागे धैवतं कोमलं विदुः।
तदशुद्धं यतस्तादृक् नाऽयं रागोऽनुरञ्जकः ॥२०॥

इति भैरवी-संस्थानम्।

शुद्धाः सप्त स्वराः कार्या रिधौ तेषु च कोमलौ।
टोडी सुरागिणी गेया ततो गायक-नायकैः ॥२१

इति टोड्याः।

ओ संस्थिति सभ अछि (१) भैरवी, (२) टोड़ी, (३) गौरी, (४) कार्णाट, (५) केदार, (६) ईमन, (७) शारंग, (८) मेघराग, (९) धनाश्री, (१० पूर्वा, (११) मुखारी ओ (१२) दीपक ।१७।

एकरे सभक संस्थिति (ठाट) मे सभ राग व्यवस्थित अछि। कोन रागक केहन संस्थान अछि से आब यथावत् कहैत छी ।१८।

(१) भैरवी-संस्थान—शुद्ध सुन्दर सातो स्वरकें यत्नपूर्वक बजाबी, बजबितहिं भैरवी राग उत्पन्न भ' जायत ।१९।

किन्तु आन-आन व्यक्ति कहैत छथि जे भैरवी रागमे कोमल धैवत चाही। हुनक कथन ठीक नहि, किएक तँ ओहि तरहें ई राग अनुरंजक (चित्तकें प्रसन्न कयनिहार) नहि होइत अछि ।२०।

(२) टोड़ी-संस्थान—शुद्ध सातो स्वर दिऐक। ताहिमे ऋषभ ओ धैवत कोमल दिऐक। ताहि सँ पैघ-पैघ गायक लोकनि सुरागिनी टोड़ीकें गबैत छथि ।२१।

---

१. सुरा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवं सति च गान्धारो द्वे श्रुती मध्यमस्य चेत् ।
गृह्णाति काकली निः स्यात् तदा गौरी प्रवर्तते ॥२२॥

अस्यार्थः-ऋषभ-धैवतौ कोमलौ भवतः गान्धारश्च मध्यमस्य श्रुति-द्वयं गृह्णाति ।

× × ×

[1]तदा कानराऽऽख्यात-कार्णाटसंस्थानं भवतोत्यर्थः ।

इति कार्णाट-संस्थानम् ।

× × ×

गान्धारो मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, निषादश्च षड्जस्य श्रुति-द्वयं गृह्णाति, तदा केदार-संस्थानं भवतीत्यर्थः ।

इति केदारसंस्थानम् ।

एवं सति च संस्थाने मध्यमः पञ्चमस्य चेत् ।
गृह्णाति द्वे श्रुती राग ईमनो जायते तदा ॥२३॥

इति ईमन-संस्थानम् ।

(३) गौरी-संस्थान—यदि पूर्वोक्त स्थितिमे गान्धार स्वर मध्यम स्वरक दू श्रुति लेअय आओर निषाद काकली हो तँ गौरी संस्थान होइत अछि ।२२।

अर्थात् ऋषभ ओ धैवत कोमल रहय आओर गान्धार मध्यमक दू श्रुतिक ग्रहण करय ।

(४) कर्णाट-संस्थान – ········तखन कानरा नामक कार्णाट-संस्थान होइत अछि ई अर्थ भेल ।

(५) केदार-संस्थान—गान्धार मध्यमक दू श्रुति लेअय आओर निषाद षड्जक दू श्रुति लेअय तँ केदार-संस्थान होइत अछि ।

(६) ईमन-संस्थान—एहिना पूर्व संस्थान रहला पर जँ मध्यम स्वर पंचमक दू श्रुति लेअय तँ ईमन राग उत्पन्न होइत अछि ।२३।

---

१. अत्र ग्रन्थः खण्डितः । २. एतय किछु पाठ खंडित अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]गान्धारो मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति. मध्यमश्च पञ्चमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, निषादश्च षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, मध्यमः शुद्धो भवति तदा मेघरागस्य संस्थानं भवतीत्यर्थः।

इति मेघ-संस्थानम्।

ऋषभः कोमलो गस्तु द्वे श्रुती मध्यमस्य चेत्।
गृह्णाति द्वे श्रुती मश्च पञ्चमस्य विशेषतः॥२४॥
धैवतः कोमलो निश्च षड्जस्य द्वे श्रुती तथा।
गृह्णाति रागिणी रम्या धनाश्रीर्जायते तदा॥२५॥

ऋषभः कोमलो भवति, निषादः षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, तदा धनाश्री-संस्थानं भवतीत्यर्थः।

इति धनाश्री-संस्थानम्।

(७) शारंग-संस्थान[2]— × × ×

(८) मेघराग-संस्थान— गान्धार मध्यमक दू श्रुति लेअय, मध्यम पंचमक दू श्रुति लेअय आओर निषाद षड्जक दू श्रुति लेअय तथा मध्यम स्वर शुद्ध हो तँ मेघरागक संस्थान होइत अछि, ई अर्थ भेल।

(९) धनाश्री-संस्थान— ऋषभस्वर कोमल हो, गान्धार मध्यमक दू श्रुति लेअय ओ मध्यम पंचमक दू श्रुति लेअय, धैवत कोमल हो तथा निषाद षड्जक दू श्रुति लेअय तँ उत्तम रागिनी धनाश्री होइत अछि।२४-२५।

ऋषभ कोमल हो तथा निषाद षड्जक दू श्रुति ग्रहण करय तँ धनाश्री सँस्थान होइत अछि, ई अर्थ भेल।

---

१. अत्र शारङ्गसंस्थितिवर्णनात्मकः श्लोकः खण्डितः प्रतिभाति।
२. पाठ खण्डित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

औडवः पञ्चभिः प्रोक्तः स्वरैः षड्भिस्तु षाडवः[1] ॥२६॥
ईमन-स्वरसंस्थाने निषादः प्रथमां श्रुतिम् ।
गृह्णाति धैवतस्यैषा पूर्वायाः स्वरसंस्थितिः ॥२७॥

गान्धारो[2] मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, मध्यमः पंचमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, निषादः षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, धैवतश्च निषादस्यैकां श्रुतिं गृह्णाति, तदा पूर्वासंस्थानं भवतीत्यर्थः ।

इति पूर्वा-संस्थानम्

शुद्धाः सप्त स्वराः तेषु धैवतः कोमलो भवेत् ।
वीणायां जायते शुद्धा मुखारी-सांस्थितिस्तदा ॥२८॥

शुद्ध-सप्तस्वरेषु चेद् धैवतः कोमलो भवति, तदा मुखारी-संस्थितिर्भवतीत्यर्थः ।

इति मुखारी-संस्थितिः

सर्वं मिलित्वा दीपकोऽपि लेख्यः ।

[इति दीपकसंस्थितिः]

(१०) पूर्वा संस्थान—पाँच स्वरसँ औडव (स्वर जाति) तथा छओ स्वरसँ षाडव (स्वर जाति) होइत अछि[3] ।२६।

जँ ईमन स्वरसंस्थानमे धैवत निषादक पहिल श्रुतिकेँ लेअय तँ से पूर्वा-स्वरसंस्थान कहबैत अछि ।२७।

अर्थात् जँ गान्धार मध्यमक दू श्रुति लेअय, मध्यम पंचमक दू श्रुति लेअय, निषाद षड्जक दू श्रुति लेअय आ धैवत निषादक एक श्रुति लेअय तँ से पूर्वा-संस्थान होइत अछि ।

(११) मुखारी—जँ शुद्ध सातो स्वरमे धैवत कोमल हो तँ वीणा पर शुद्ध मुखारी संस्थिति उत्पन्न होइत अछि ।२८।

अर्थात् शुद्ध सातो स्वरक रहला पर जँ धैवत कोमल हो तँ मुखारी संस्थिति होइत अछि ।

१. खा० । २. गान्धार । ३. एहि पाँतीक स्वरजातिक प्रकरणमे रहब उचित, एतय भ्रमवश प्रक्षिप्त भेल अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ स्वरजातय:

सम्पूर्णा ब्राह्मणाः प्रोक्ताः क्षत्रियाः षाडवा मताः।
औडवाः कथिता वैश्याः शूद्रास्तदितरे क्वचित् ॥२६॥

(१) अथ भैरवी-संस्थितौ

नीलाम्बरी सदा ज्ञेया भैरवी-रागिणी-संस्थतौ।

(२) अथ टोडी-संस्थितौ

टोडी सुरागिणी काऽपि सुस्थितौ सैव गीयते ॥३०॥

(३) अथ गौरी-संस्थितौ

मालवः[1] स्याद् गुणमयः श्री गौरी च विशेषतः।
चैती गौरी तथा प्रोक्ता पहारी गौरिका पुनः ॥३१॥
देशी टोडी देशकारो गौरो रागेषु सत्तमः।
त्रिवर्णं, स्यान्मुलतानी धनास्त्रीश्च वसन्तकः ॥३२॥

(१२) दीपक—सभ मिलिक' दीपको लिखि ली।[2]

स्वर जाति

सम्पूर्ण ब्राह्मण जातिक, षाडव क्षत्रिय जातिक, औडव वैश्यजातिक ओ ताहिस' भिन्न कतहु-कतहु शूद्रजातिक स्वर कहल गेल अछि।२९।

(१) [भैरवी संस्थिमे]—लीलाम्वरी रागिनी सतत भैरवी संस्थितिमे गयबाक चाही।

(२) [टोड़ी संस्थितिमे]—टोड़ी रागिनी टोड़ी संस्थितिमे गाबक चाही।३०।

(३) गौरी संस्थितिमे—मालव, गुणमय, श्री-गौरी, चैती-गौरी, पहाड़ी-गौरी, देशी, टोड़ी, देश.कार, गौर, त्रिवर्ण, मुलतानी, धनास्त्री, वसन्त,

---

१. मालवस्याद्। २. पाठ अस्पष्ट।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामकरी तथा गेया गुर्जरी बहुली ततः ।
रेवा च भठिआलश्च षड्रागश्चतथोत्तमः ॥३३॥
मालश्री[1]पञ्चमः किञ्च जयत-श्रीश्च रागिणी ।
आसावरी तथा गेया देवगान्धार एव च ॥३४॥
सिन्धी आसावरी गेया गेया गुणकरी तथा ।
गौरी-संस्थानमध्ये तु एते रागा व्यवस्थिताः ॥३५॥

(४) अथ कार्णाटसंस्थितौ

षाडवः[2] कानरो रागो देशी विख्यातिमागतः ।
वागेश्वरी कानरश्च खम्भाइचो तु रागिणी ॥३६॥
सोरठः परजो मारु जैजयन्ती तथाऽपरा ।
ककुभाऽपि च कामोदः कामोदी लोकमोदिनी ॥३७॥
केदारी रागिणो रम्या गौरः स्यान्मालकौशिकः ।
हिन्दोलः सुघराइः स्याद् अडानो रागसत्तमः ॥३८॥
गोरा कानरनामा च श्रीरागश्च सुखावहः ।
कार्णाट-संस्थितावेते रागाः सन्तीति निश्चितम् ॥३९॥

रामकरी, गुर्जरी, बहुली, रेवा, भठिआल, षडराग, उत्तम, मालवश्री, पंचम, जयतश्री,आसावरी. देवगान्धार, सिन्धी आसावरी, गुणकारी – एतेक राग गौरी संस्थानमे गाओल जाइछ ।३१-३५।

(४) कार्णाट-संस्थितिमे—षाडव, कानर, देशी, वागेश्वरी, कानरा, खम्भाइची, सोरठ, परज, मारु, जयजयन्ती, ककुभा, कामोद, कामोदी, केदारी, गौर, मालकोश, हिन्दोल, सुघराइ, अडान, गोरा, कानर तथा श्रीराग एतेक राग कार्णाट संस्थितिमे गाओल जाइछ ।३६-३९।

१. मालवः श्रीपञ्चमः । २. षाडवष्कानरो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(५) अथ केदारसंस्थितौ

केदारस्वर-संस्थाने श्रुतः केदार-नाटकः ।
आभीर-नाटनामा च गेयो रागः तथाऽपरः ॥४०॥
खम्भावती ततो गेया शङ्कराभरणस्तथा ।
विहागरा च हम्वीरः श्यामः श्रुतिमनोहरः ॥४१॥
छाया-नाटश्च भूपाली गेया भीमपलाशिका ।
कौशिकस्तु तथा गेयो मारु-रागो विचक्षणैः ॥४२॥

(६) अथ ईमन-संस्थितौ

ईमन-स्वर-संस्थाने शुद्ध-कल्याण ईरितः ।
पुरिआ विदिता लोके जयत्कल्याण एव च ॥४२॥

(७) अथ शारङ्ग संस्थितौ

शारङ्ग-स्वरसंस्थाने प्रथमा पटमञ्जरी ।
वृन्दावनी तथा गेया सामन्तो वड़हंसकः ॥४४॥

(८) अथ मेघसंस्थितौ

मेघरागस्य संस्थाने मेघो मल्लार एव च ।
गौड-शारङ्ग-नाटौ[1] च रागौ वेलावली तथा ॥४५॥

(५) केदार संस्थितिमे—केदार-स्वरसंस्थानमे एतेक राग सुनल जाइछ—केदार-नाट, आभीरनाट, खम्भावती, शंकराभरण, विहागरा, हम्वीर, श्याम, छायानाट, भूपाली, भीम-पलांसी, कौशिक तथा मारुराग ।४०-४२।

(६) ईमन-संस्थितिमे—ईमन-स्वरसंस्थितिमे तीन राग होइत अछि—शुद्ध कल्याण, जयत्कल्याण तथा पुरिआ ।४३।

(७) शारंग-संस्थितिमे—शारंग-स्वरसंस्थानमे पटमंजरी, वृन्दावनी, सामन्त तथा बडहंस राग गाओल जाइछ ।४४।

(८) मेघ-संस्थितिमे--मेघराग संस्थानमे मेघमल्लार, गौडशारंग, नाट,

---

१. नाटी रागौ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलहिया तथा गेया शुद्ध-सूहव एव च।
देशि-सूहव देशाखः शुद्ध-नाटस्तथैव च ॥४६॥

(९) अथ धनाश्री संस्थितौ

धनाश्री-स्वरसंस्थाने धनाश्रीर्ललिता[2] तथा।

(१०) अथ पूर्वासंस्थितौ

पूर्वायाः स्वरसंस्थाने पूर्वैव[3] परिगीयते ॥४७॥

अथ स्वराः

सर्वेषामथ रागाणां ये ये तु क्रमतः स्वराः।
तेषु सर्वस्वरेष्वाद्यः षड्ज एवाऽभिधीयते ॥४८॥

वेलावली, अलहिया, शुद्ध सूहब, देशी सूहव, देशाख तथा शुद्ध नाट—एतेक राग गयबाक चाही।४५-४६।

(९) धनाश्री संस्थितिमे—धनाश्री-स्वरसंस्थानमे धनाश्री तथा ललिता अबैत अछि।

(१०) पूर्वा संस्थानमे—पूर्वा-स्वरसंस्थानमे केवल पूर्वा राग गाओल जाइत अछि।४७।

स्वर

सब रागमे जे-जे स्वर क्रमशः अबैत अछि ताहि सभमे सबसँ आदिमे षड्जे अबैत अछि।४८।

१. ललितास्तथा। २. पूर्वैव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तथा हि—

सरिगा मपधा निः सः सनिधाः पमगा रिसौ ।
रोहाऽवरोह-योगेन सम्पूर्णा भैरवी मता ॥४६॥

एवं तत्तद्राग-स्वरारोहाऽवरोहास्तु अन्यत्र द्रष्टव्याः । इह तु विस्तरभयान्न लिखिता[1] ।

अथ सकलदेश-साधारण-गुणिगणप्रसिद्धाः

रागसंकराः

तत्र..................

× × × धा होत ।[2]
पाओस में रस पाए बहु ज्यो सरिता के सोत ॥१॥
प्रथम कामोद सो शुद्ध जुत, राग रमन सामन्त ।
तिलक कल्याण कामोद पुनि, मुनिवर भरत भनन्त ॥२॥

तहिना प्रसिद्ध अछि : –

सा रे ग म प ध नि सा, सा नि ध प म ग रे सा—एकर आरोह तथा अवरोह (चढ़ाओ उतार) क मेलसँ सम्पूर्ण भैरवी उत्पन्न होइत अछि ।४९।

एहि तरहेँ आनो आन रागमे आरोह तथा अवरोहक वर्णन आनठाम (आन पोथीमे) देखू । एहिठाम विस्तारक भयसँ नहि लिखल गेल । आब सगर देशमे सकल गुणीलोकनिमे प्रसिद्ध रागसङ्कर (राग सभक मिश्रण) देखाओल जाइछ ।

ताहिमे × × ×

[दोसर रागसँ मिलला पर राग] अनेकधा प्रवाहित होइछ, जेना वर्षा ऋतुमे अधिक रस (जल) पओने नदीक धारा अनेक भ' जाइछ ।१।

पहिल शुद्ध कामोद थिक से जखन (अपन भार्यासँ) मिलैत अछि तखन सामन्त बनैत अछि । तथा तिलक, कल्याण ओ कामोद होइत अछि—ई मुनिवर भरत कहैत छथि ।२।

---

१. लिखितः । २. धोहिति ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्ध मिलाए जो गाइअइ, अएसोइ शुद्ध कामोद।
कामोद-भारजा जदि मिलए, साञो त करए प्रमोद ॥१॥

तिलक आदि षट्राग यदि, सुद्ध मिलें कामोदहि होए।
ता सञो तिलक कामोद भर, सुखद कहए सब कोए ॥२॥

ईमन गुण्ड दुइ मिलें, बजए जञो बीना माह।
होत कल्याण कामोद सो, रागिनि में नरनाह ॥५॥

गौरी श्यामा गुर्जरी, आसावरी गंधार।
मिलें बडारी जगत में, ए खट्राग विचार ॥६॥

आसावरी अओ गुर्जरी, मिले गुनकरी होत।
सिवराष्ट्र मिलि कए धनासिरि, कुम्भारी के गोत ॥७॥

मालसिरी मल्लार अरु, शुद्ध सकल सुर होए।
तेही सञो मधुमाधओ, जगत कहत संगीती लोए ॥८॥

नटनरायण ते जरहि, हरभूषन जग होइ।
तामें शुद्ध संयोगहू, राग स[रस्व]ती सोइ ॥९॥

यदि शुद्ध (कामोद) के मिला क' गाबी, तँ से शुद्ध कामोद हो। यदि कामोदक रागिनीसँ मिलाक' गाबी तँ से सामन्त राग बनि आनन्दित करैत अछि। यदि तिलक आदि षटराग शुद्ध कामोदक संग मिलय तँ ताहिसँ तिलक कामोद बनैत अछि आ सभकेँ आनन्दित करैत अछि।३-४।

जँ ईमन ओ गुण्ड ई दूनू राग मिलाय वीणापर बजाओल जाय तँ से श्रेष्ठ रागिनी कल्याण-कामोद कहबैछ।५।

गौरी, श्यामा, गुर्जरी, आसावरी, गान्धार ओ बडारी ई छबो मिलिक' षट्राग कहबैत अछि।६।

आसावरी ओ गुर्जरीक मेल सँ गुणकरी रागिनी बनैत अछि। शिवराष्ट्र रागक संग मिलला पर धनाश्री कुम्भारी गोतक रागिनी भ' जाइत अछि।७।

जँ मालश्री मल्लारसँ मिलय ओ सकल स्वर शुद्ध रहय तँ ताहि सँ मधुमाधवी उद्भूत होइत अछि, से बात संसारक सकल संगीतज्ञ लोकनि कहैत छथि।८।

जँ नटनारायण रागसँ हरभूषण राग मिलि जाय तँ सरस्वती रागिनी बनैत अछि।९।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालव अचल घनासिरी, दुर्गा चैती चारु।
इन्ह के सब संयोग तें, हुए वडहंस विचारु ॥१०॥

कानर धवल दुहू मिले, होत जो पुरिआ राग।
एआ × × × ॥११॥

श्री मद्वेलावलाद् गुण्ड-योगात् कामोद-पञ्चकम्।
तत्राद्यः शुद्धयोगात्तु द्वितीयोऽपि च वक्ष्यते ॥५०॥
कामोद-भार्या-मिलनात् सामन्ताख्यो भवेत् स तु।
तिलकादिक - षड्राग - योगात्तु तिलकादिकः।
कल्याणाद्यो भवेद् गुण्ड-श्रीमदीमन-योगतः ॥५१॥
बरारी गुजरी गौरी श्यामा चासावरीति च।
गान्धार-संयुता एताः स्युः षड्रागा इतीरिताः ॥५२॥
गुजर्यासावरी-योगात् श्रीमद्गुणकरी मता।
शिवराष्ट्रमिलनाद् धन्या धनास्री कुम्भरीति च ॥५३॥

मालव, अचल, घनास्री, दुर्गा ओ चैती —एहि चारूक मेलसँ बडहंस राग होइत अछि।१०।

कानरा ओ धवल रागक योगसँ पुरिआ रागिनी होइत अछि। ।११।

वेलावल ओ गुण्ड रागक मिलला पर कामोद आदि पाँच राग उत्पन्न होइत अछि। ताहिमे पहिल शुद्धक मेलसँ होइत अछि ओ दोसर कहैत छी।५०।

कामोदक रागिनी मिललासँ दोसर राग सामन्त नामक होइत अछि। तिलक आदि छओ रागक योगसँ तिलक कामोद राग होइत अछि।

गुण्ड राग ओ ईमनरागक मेलसँ कल्याण कामोद राग होइत अछि।५१।

बरारी, गुजरी, श्यामा, आसावरी, गान्धार ओ गौरी ई छबो षड्राग कहबैत अछि।५२।

गुर्जरी ओ आसावरीक योग (मेल) सँ गुणकरी होइत अछि। शिवराष्ट्र राग ओ घनस्रीक मेलसँ कुम्भरी राग बनैत अछि।५ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालस्त्री-शुद्ध-मल्लारं मधुमाधवि-निर्मितिः ।
हरभूषण-शुद्धाभ्यां नटनारायणेन च ॥५४॥
सरस्वत्याः समुत्पत्ति धनास्रीमालवाचलैः ।
गौर्या च बडहंसः स्यात् कानराद् धवलादपि ॥५५॥
पुरिआ रागिणी सैव मङ्गलाष्टक-शब्दिता ।
केदाराऽचल - गौरीभिर्लङ्कादहन - नामकः ॥५६॥
गान्धारो गूजरी श्यामा रामकर्यथ चेद् भवेत् ।
पुरवो-गुणकरी योगाद् वल्लभः शक्तिमान् भवेत् ॥५७॥
वेलाओल-केदारा-योगतो हरभूषणः ।
वेलाओल केदारा-कल्याणैरीमनः[1] स्मृतः ॥५८॥
गौर्यासावरी - देवगिरिभि भैरवादपि ।
सिन्धुसंयोगतः प्रोक्तो गान्धारः पृथिवीतले ॥५९॥

मालस्री तथा शुद्ध मल्लारक मेलसँ मधुमाधवी बनैत अछि। शुद्ध हरभूषण राग तथा नटनारायण रागक मेलसँ सरस्वतीक उत्पत्ति होइत अछि। धनास्रो, मालव, अचल ओ गौरी ई सभ मिला बड़हंस राग बनैत अछि।५४-५५।

कानर ओ धवलक मेलसँ पुरिआ रागिनी होइत अछि, जे मंगलाष्टक सेहो कहबैत अछि।

केदार, अचल ओ गौरीक मेलसँ लङ्कादहन नामक राग होइत अछि।५६।

गान्धार, गुजरी, श्यामा ओ रामकरी जँ पुरवी ओ गुणकरीक योग पाबय तँ शक्तिमान् वल्लभ राग भ' जाइत अछि।५७।

बेलाओल ओ केदाराक योगसँ हरभूषण राग बनैत अछि। बेलाओल, केदारा ओ कल्याणक योगसँ ईमन राग बनैत अछि।५८।

गौरी, आसावरी, देवगिरि, सिन्धु, ओ भैरवक योगसँ गान्धार राग बनैत अछि।५९।

---

१. रीमनस्समृतः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धनास्री-कानरायोगाद् वागेश्वर्याख्य-रागिणी ।
फिरोदस्तस्तु पुरवी-गौरी-श्यामाभिरेव च ॥६०॥
बडारी - वङ्गपालाभ्यां विभासमिलनादपि ।
आडाना रागिणी प्रोक्ता फिरोदस्ताद् घनेन च ॥६१॥
कानरा-योगतः प्रोक्ता सहाँना कापि रागिणी ।
मारूधवल-कुम्भारी-धनास्रीमिलनाद् भवेत् ॥६२॥
पटमञ्जरी ततः शुद्धाच्छङ्कराभरणादपि ।
मल्लार-कानराभ्याञ्च देशाखः समुदीरितः ॥६३॥
गौड़-शारङ्गमिलनाद् भवेद् वेलावली भुवि ।
तत्र सोरठकौरव्या-मिलनात् कौमुदी मता ॥६४॥
मारूधवल - केदारा-जयत्स्रीमिलनाद् भवेत् ।
घण्टोलनामको रागः सङ्गीतिभिरुरीकृतः ॥६५॥

धनास्री ओ कानराक मेलसँ वागेश्वरी रागिनी बनैत अछि। पुरवी, गौरी ओ श्यामक मेलसँ राग फिरोदस्त होइत अछि।६०।

बराड़ी ओ बंगपालसँ विभासक मिलला पर तथा फिरोदस्तसँ मेघरागक मिलला पर अडाना रागिनी होइत अछि।६१।

कानराक योगसँ सहाँना नामक रागिनी कहल अछि। मारू, धवल, कुम्भारी ओ धनास्रीक मेलसँ सेहो सहाँना रागिनी होइत अछि।६२।

शुद्ध शङ्कराभरणसँ पटमंजरी होइत अछि। मल्लार तथा केदारसँ देशाख राग होइत अछि।६३।

गौड़ ओ सारंगक मेलसँ वेलावली बनैत अछि। सोरठ ओ कौरवीक मेलसँ कौमुदी रागिनी होइत अछि।६४।

मारू, धवल, केदारा, जयत्स्री एहि रागसभक मेलसँ घण्टोल नामक राग संगीतवेत्तालोकनिक द्वारा स्वीकृत अछि।६५।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरवी-शैलजा - देवगिरिभि गुण्डयोगतः ।
हारवत्याख्यसङ्कीर्ण-रागिणी लोकदुर्लभा ॥६६॥
धनाश्री-पुरिआभ्यां च भवेद् भीमपलासिका ।
मालश्री-शुद्धसंयोगान्मलारमिलानादपि ।
खम्भावत्याः समुत्पत्तिं वदन्ति किल गायकाः ॥६७॥
शैलजा-देशकाराभ्यां टोडीतोऽपि वराडिका ।
षड्रागासावरी देश्यो हेतुर्गन्धावरी भवेत् ॥६८॥
सरस्वत्यथ मारू च केदाराऽपि मनोहरा ।
विहागरा - समुत्पत्ति - निदान-त्रितयं मतम् ॥६९॥
जयच्छ्री-देशकाराभ्यां ललिताच्च लिलावती ।
मालवाचल - गौड़ीभिस्त्रिवर्णा-मिलनान्मतः ॥७०॥
गुणिगोष्ठीषु विख्यातः कोऽपि रागो मनोहरः ।
हम्वीर ईमनाच्छुद्ध-केदारायोगतः स्मृतः ॥७१॥

पुरबी, शैलजा तथा देबगिरिसँ गुण्ड-रागक मेल भेला पर हारवती नामक संकीर्ण दुर्लभ रागिनी होइत अछि ।६६।

धन स्री ओ पुरियाक मेलसँ भीमपलासिका रागिनी होइत अछि। शुद्ध मालश्री तथा मलारक संयोगसँ खम्भावतीक उत्पत्ति होइत अछि, ई गायकलोकनिक कथन छनि ।६ ।

शैलजा, देशकार तथा टोड़ीक मेलसँ वराडिका रागिनी बनैत अछि। षड्राग, आसावरी ओ देशीक संयोगसँ गन्धवारी होइत अछि ।६८।

सरस्वती, मारू तथा केदारा ई तीनू बिहागरा रागिनीक उत्पत्तिक मूल कहल गेल अछि ।६९।

जयच्छ्री, देशकार तथा ललिताक मेलसँ लीलावती होइत अछि। मालव, अचल ओ गौरीक, मेलसँ मनोहर राग होइछ ।७०।

जे गुणी लोकनिक सभामे विख्यात अछि। हम्मीरक उत्पत्ति ईमन ओ शुद्ध केदाराक मेलसँ होइत अछि ।७१।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्णश्रीरागयुक्ता चेत् कानरा किञ्चिदंशतः ।
भैरवात् किञ्चिदादाय तदा टङ्कः प्रवर्तते ॥७२॥
मलारमिलनात् किञ्च केदारा नागकध्वनिः ।
गुजर्या देशकारश्चेत् कल्याणोऽपि युतो भवेत् ।
अहीरी रागिणी रम्या तदैव भुवि जायते ॥७३॥
शङ्कराभरणं नाटः सोरठी-सङ्गतो यदि ।
तदा तु रभसादिः स्यान्मङ्गला कापि रागिणी ॥७४॥
गान्धारी गुजरी तद्वद् बङ्गाली पञ्चमस्तथा ।
भैरवी-संयुतैरेतै भंवेच्छौराष्ट्र-नामकः ॥७५॥
खम्भारी - पुरिआ - टोड़ीयोगान्नारायणो मतः ।
मनोहरयुतस्तद्वन्मालवो राजहंसकः ॥७६॥
मालश्री-शुद्ध-टङ्कैस्तु भवेद् भीमपलासिका ।
श्रीमान्मालव-गान्धार-वडहंसैर्युतो हरः ॥७७॥

पूर्ण श्रीरागकसँ किछु अंशें युक्त कानरा रागिनी रागभैरवसँ किछु अंश लय टंक राग बनबैत अछि।७२।

मलारसँ मिलला पर केदारा नागकध्वनि (?) बनैत अछि। जँ गुजरीक संग देशकार तथा कल्याण मिलय तँ ताहिसँ उत्तम रागिनी अहीरी उत्पन्न होइत अछि।७३।

शंकराभरण ओ नाट जँ सोरठी सँ मिलैत अछि तँ रभसमंगला रागिनी होइत अछि।७४।

गान्धारी, गुजरी, वंगाली तथा पंचम ई सभ जँ भैरवीसँ मिलैत अछि तँ सौराष्ट्र नामक राग होइत अछि।७५।

खम्भारी, पुरिआ तथा टोड़ीक योगसँ नारायण राग बनैत अछि। मनोहरसँ युक्त भेला पर मालव राजहंस भ' जाइत अछि।७६।

मालस्री, ओ शुद्ध टंकक मेलसँ भीमपलासिका होइछ। मालव, गन्धार तथा बडहंस एहि तीनूक मेलसँ हरराग होइत अछि।७७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षड्राग-धवल - हंसै देशी-टोडीयुतैर्भवेत् ।
पुरवी-शुद्ध-सारङ्गै र्देवगिर्यपि रागिणी ॥७८॥
कानरायुत-कल्याण-संयुता चेद् विहागरा ।
तदा तु गीतिविख्यातो रागः कोलाहलो मतः ॥७९॥
शङ्कराभरणोपेत - मालस्री - संयुतो यदि ।
श्रीरागः सुखदः कोऽपि भवेच्छ्रीरमणस्तदा ॥८०॥
केदारा-पुरवी - वेलवलीभिः ककुभा मता ।
सरस्वत्या तु कुम्भारी मालस्रीयोगतोऽपि च ॥८१॥
देवकारी भवेत् काऽपि कदाचिच्छ्रूयते तु सा !
श्यामा-रामकरीभ्यां च श्रीमद्गान्धारयोगतः ॥८२॥
बहलोपेत-गूजर्या मङ्गलोपेत-गूजरी ।
वराडी गौडिका चैत्यः श्रीपूर्व-रमणोऽपि च ।
एतेषां सङ्गमात् का[1]ऽपि विचित्रा नाम रागिणी ॥८३॥

टोड़ीसँ युक्त षड्राग, धवला ओ हंससँ देशी नामक रागिनी होइछ। पुरवी ओ शुद्ध सारंगक मेलसँ देवगिरि रागिनी होइछ।७८।

जँ विहागरा कानरासँ तथा कल्याण रागसँ युक्त हो तँ गीतिमे प्रसिद्ध राग कोलाहल होइत अछि।७९।

यदि श्रीराग शंकराभरण ओ मालस्रीसँ युक्त हो तँ एक सुखद राग श्रीरमण होइत अछि।८०।

केदारा, पुरवी ओ वेलावल्लीक संयोगेँ ककुभा रागक उत्पत्ति होइछ। सरस्वती ओ मालस्रीक योगसँ कुम्भारी रागिनी होइछ।८१।

देवकारी रागिनी, जे कहियो काल सुनल जाइत अछि, श्यामा ओ रामकरीसँ गान्धारक योगेँ उत्पन्न होइछ।८२।

बहल राग युक्त गूजरीक संग मिलल मंगल राग युक्त गूजरी, बराड़ी, गौडिका, चैत्य तथा श्रीरमण एहिसभक मेल (मिश्रण) सँ विचित्रा नामक रागिनी होइछ।८३।

---

१. कोपि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौरी-ललितयो देंशकारसंयोगतः किल ।
त्रिमल्ल-नामको रागः सङ्गीति-गीति-सम्मतः ।।८४।।
अडाना-कानरा - वेलावलीभि नंटपूवंकात् ।
नारायण त् समाख्याता कलाई नाम रागिणी ।।८५।।
पुरिया-मधुमाधवीराग-योगाद् वागेश्वरी मता ।
वडहंस-टङ्क-गौर्याश्च श्रीरागो रागसत्तमः ।।८६।।
पुरिया वेलावती तद्वत् ककुभापि केदारिका ।
एषां परस्परं योगाद् दक्षिणादोऽपि सम्मतः ।।८७।।
शङ्कराभरणं गौरी मधुपूर्वा च माधवी ।
वेलावली परस्तद्वद् दहनो लङ्कपूवंकः ।।८८।।
परस्परममीषां च संयोगान्नटपूवंकः ।
नारायणो भवेद् रागः सुरलोकेऽपि दुर्लभः ।।८९।।
ललित-पञ्चम-पूर्वाभि र्लीलावति-मनोहरौ ।
युतौ चेत् तत्र हिन्दालस्तदेव किल जायते ।।९०।।

गौरी तथा ललित जखन देशकारक संग मिलैछ तखन संगीतवेत्ता-सभक सम्मत त्रिमल्ल नामक राग होइछ ।८४।

अड़ाना, कानरा, वेलावली एहि सभक संग नटनारायणक योगसँ कलाइ नामक रागिनी होइछ ।८५।

पुरिया ओ मधुमाधवी रागक योगसँ वागेश्वरी होइछ। बड़हंस, टंक ओ गौरीक संयोगेँ उत्तम राग श्रीराग होइछ ।८६।

पुरिया, वेलाबली, ककुभा तथा केदारा एहिसभक परस्पर मेलसँ दक्षिणाद राग होइत अछि ।८७।

शङ्कराभरण, गौरी, मधुमाधवी, वेलावली तथा लङ्कादहन एहिसभक परस्पर संयोगेँ नटनारायण राग होइछ जे स्वर्गंहुमे दुर्लभ अछि ।८८-८९।

जँ लीलावती तथा मनोहर राग ललित, पंचम ओ पूर्वासँ मिलय तँ हिन्दोल राग उत्पन्न होइत अछि ।९०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमत्कल्याण-कामोद-सामन्तै मेंघरागकः ।
मलार-नट-शारङ्ग्यः तद्वद् वेलावली किल ।
देवगिर्यां तु संयोगादेतेषां पञ्चमः स्मृतः ॥९१॥
हिन्दोलादर्धमर्धार्धं कानरा-रागतोऽपि च ।
पुरिआतोऽपि तावन् स्यात् समादाय तु भैरवः ॥९२॥
शङ्कराभरणं तद्वत् कानरा मधुमाधवी ।
एतावद्योगतः प्रोक्ता कानरा सत्सुखावहा ॥९३॥
केदाराहीरनाटौ (च) शुद्धो धवल एव च ।
वागेश्वरी कानरश्च योगात् स्यान्मधुमाधवी ॥९४॥
लङ्कादहन-सोरट्ठी-सङ्करात्[1] किल जायते ।
शक्रसंक्रमणी नाम रागिणी तु सुखावहा ॥९५॥

इति सकलसङ्गीत सिद्धा रागसङ्कराः ॥

कल्याण, कामोद ओ सामन्तक योगसँ मेघराग होइछ । मलार, नट, सारंगी ओ वेलावली एहिसभक संयोग जँ देवगिरिसँ हो तँ पंचम नामक राग होइछ ।९१।

हिन्दोलरागसँ आधा भाग, आधाक आधा (चतुर्थांश) भाग कनरा रागसँ, तथा एक चतुर्थांश पुरिआसँ लय भैरव होइत अछि ।९२।

शङ्कराभरण, कानरा तथा मधुमाधवी एकरा सभक सम्मिश्रणसँ सुखदात्री कानरा नामक रागिनी होइछ ।९३।

केदारा, अहीर, नाट, शुद्ध धवल, वागेश्वरी तथा कानर एकरा सभक मिश्रणसँ मधुमाधवी होइछ ।९४।

लङ्कादहन ओ सोरठीक मिश्रणसँ सुखदायिका रागिनी शक्रसंक्रमणी उत्पन्न होइत अछि ।९५।

सकलसंगीतसिद्ध रागसङ्कर समाप्त ।

---

१. शङ्करात् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ रागाणां गानकला:

तुम्बुरुनाटके—

श्रीपञ्चमीं समारभ्य यावत् स्याच्छयनं हरेः ।
तावद् वसन्तरागस्य गानमुक्तं मनीषिभिः ॥९६॥
इन्द्रोत्त्थानं समारभ्य यावद् दुर्गामहोत्सवम् ।
गेया तावद् बुधैर्नित्यं मालश्री सा मनोहरा ॥९७॥
प्रातर्गेयस्तु देशाखो ललितः पटमञ्जरी ।
विभासो भैरवी चैव कामोदो गण्डकर्यपि ॥९८॥
एका वराड़ी मध्याह्ने सायं कार्णाट-मालवौ ।
नाटश्चैव विशेषेण, शेषा[1] गेयास्तु सर्वदा ॥९९॥
हिन्दोलश्च वसन्तश्च वसन्ते रक्तिदायकः ।
नाटो[2] गौडो वराडी च गुर्जरी देशिरेव च ॥१००॥

रागक गानकाल

तुम्बुरुनाटकमे—

श्रीपंचमी (वसन्तपंचमी) सँ प्रारम्भ क' हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल एकादशी) पर्यन्त वसन्तरागक गानकाल थिक, से विद्वान्लाकनि कहने छथि ।९६।

इन्द्रोत्त्थान (भाद्र शुक्ल द्वादशी) सँ लय दुर्गापूजा पर्यन्त उत्तम रागिनी मालश्री गाबक चाही ।९७।

प्रातःकालमे गयबाक योग्य ई राग सभ अछि :—देशाख, ललित, पटमंजरी, बिभास, भैरवी, कामोद ओ गण्डकारी ।९८।

मध्याह्नकालमे एकेटा रागिनी वराड़ी गाओल जाय । साँझ कय गयबाक लेल कार्णाट, मालव ओ विशेष कय नाट अछि । बाँकी राग सभ समयमे गाबि सकैत छी ।९९।

हिन्दोल ओ वसन्त राग वसन्त ऋतुमे आनन्दित करैछ । नाट, गौड़, वराड़ी, गुर्जरी तथा देशी सेहो वसन्त ऋतुमे आह्लादित करैछ ।१००।

---

१. शेष गेयस्तु । २. नाटौ गोडो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वाह्णे गानमेतेषां निषिद्धमिति तद्विदः ।
नैवाऽपराह्णे गातव्यौ भैरवी-ललितौ क्वचित् ।।१०१।।
रङ्गभूमौ नृपाज्ञायां कालदोषो न विद्यते ।
शुद्ध-शालग - सङ्कीर्णं - धातु - मातु-विभेदतः ।।१०२।।
देशभाषाविभेदाच्च रागसङ्ख्या न विद्यते ।
न रागाणां न तालानामन्तः कुत्रापि विद्यते ।।१०३।।
यथाकालं[1] समारब्धं गीतं भवति रञ्जकम् ।
अतः स्वरस्य नियमाद् रागेऽपि नियमः कृतः ।।१०४।।

अर्वाचीनास्तु:—

ब्राह्मे मुहूर्त्ते गातव्यो भैरवो रागसत्तमः ।
अरुणोदयवेलायां गेया रामकरी पुनः ।।१०५।।
प्रात र्वेलावली गेया पूर्वाह्णे सुभगोऽपि च ।
पूर्वाह्णे याति गायेत टोडीमतिमनोरमाम्[2] ।।१०६।।

गानवेत्ता लोकनि कहैत छथि जे एहि राग सभक (हिन्दोलादिक) गान पूर्वाह्णमे निषिद्ध अछि । भैरवी तथा ललित अपराह्णमे कदापि नहि गाबक चाही ।१०१।

रंगभूमिमे (रंगमंच पर) तथा राजाक आज्ञा भेला पर कालदोष नहि लागय । शुद्ध, शालग, संकीर्ण, धातु तथा मातु एहि सभक भेदसँ तथा देश-भाषादिक भेदसँ रागक संख्या नहि भय सकैछ अर्थात् राग असंख्य अछि । ने रागेक आ ने तालेक कतहु अन्त अछि ।१०२-१०३।

यथोचितकालमे प्रारम्भ कयल गीत आनन्ददायक होइत अछि तेँ स्वरक नियमसँ रागहुमे नियम कयल अछि ।१०४।

नवीन विद्वान् लोकनिक मतेँ—ब्राह्ममुहूर्त्तमे उत्तमराग भैरव गाबी । अरुणोदय कालमे रामकरी गाबी ।१०५।

प्रात:कालमे वेलावली गाबी । पूर्वाह्णमे सुभग गाबी । पूर्वाह्ण बितला पर अतिसुन्दर रागिनी टोड़ी गाबी ।१०६।

---

१. यथाकाले । २. मनोरमा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सङ्गवादो[1] वराड़ी च गेया गायकनायकैः ।
दिवा तृतीयप्रहरे गातव्याऽऽसावरी जनैः ॥१०७॥
काफी मध्याह्नमध्ये तु शारङ्गोऽपि च गीयते ।
अपराह्णे नटो गेयः तद्वद् गायेत मालवम् ॥१०८॥
अपराह्णावसाने च सायाह्ने सति याति वा ।
सायंकालस्तु कालो वै गौरी-रागस्य भूतले ॥१०९॥
निशामुखे तु कल्याणः केदारस्तु महानिशि ।
तृतीयप्रहरे रात्रावडानोऽपि च गीयते ॥११०॥
द्वितीयप्रहरे रात्रौ कार्णाटः सर्वसम्मतः ।
अपराह्णेऽपि सौराष्ट्रं प्रभाते सङ्गवेऽपि[2] च ॥१११॥
पञ्चमो मेघ-सञ्चारे मल्लारः परिगीयते ॥११२॥

संगव (प्रातःकालक उपरान्त दू मुहूर्त्त) मे गायकके बराड़ी गयबाक चाही । दिनक तेसर पहरमे आसावरी गयबाक चाही ।१०७।

दोपहरियाकें काफी तथा शारंग गाओल जाइत अछि । अपराह्णमे (वेरू पहर) नटराग गावी ।१०८।

तहिना अपराह्णक अन्तमे ओ सायाह्न रहला पर वा बितला पर मालव गाबी । साँझ गौरी रागक काल थिक ।१०९।

रातुक आदि भागमे कल्याण गाबी । निशाभाग रातिमे केदार गाबी । रातुक तेसर पहरमे अडान गाओल जाइत अछि ।११०।

रातुक दोसर पहरमे सभक मतें कार्णाट गाबी । अपराह्णमे, भोरमे ओ तदुत्तर दू मुहूर्तमे सौराष्ट्र राग गाबी ।१११।

मेघक संचार भेला पर पञ्चम राग ओ मल्लार राग गाओल जाइछ ।।११२।

१. संगरादौ । २. संगरेऽपि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वस्वोत्पत्ति-निदानसंस्थिति-महामुख्यैक-रागोचित:
काल: सज्जन-गीतिगोष्ठिषु चिदानन्दाय रागव्रजे ।
× × ×
× × × ॥११३॥

अथ नायक-नायिका-प्रकरणम्

अथ एतेषाम उत्पत्ति-साधनीभूत-गीत - प्रतिपादिता: कुत्र के नामका: कुत्र का नायिका इति बुभुत्सावताम्, अतिसुकुमारमतीनाम्, ईश्वराणां झटिति तज्ज्ञानार्थं ते ताश्च लिख्यन्ते ।

तत्र दामोदर:—

शृङ्गारेषु भवन्त्येते चतुर्धा नायका: पुन: ।
अनुकूल: शठो धृष्टो दक्षिणश्चेति संज्ञया ॥११४॥
एकस्यामेव रमते सदा त्यक्तपराङ्गन: ।
सीतायां रामवत् सोऽयमनुकूल: स्मृतो यथा ॥११५॥

अपन-अपन उत्पत्ति ओ तकर मूल, संस्थिति ओ महान् मुख्य (?) तत्तद् रागक उचित जे काल से सज्जन लोकनिक गोष्ठीमे विलक्षण आनन्दित करैत अछि। रागक समूहमे × × × ।।१३।

नायक-नायिका

आब एहि रागसभक उत्पत्तिक साधन स्वरूप गीत सभमे कतय के नायक छथि ओ कतय के नायिका छथि ई बुझबाक हेतु उत्सुक कोमलमति राजा-लोकनिकें झट दय बोध करयबाक हेतु नायक तथा नायिकाक वर्णन कयल जाइत अछि। एहि प्रसंग दामोदर कहैत छथि :—

शृंगाररसमे चारि तरहक नायक होइत अछि—(१) अनुकूल, (२) शठ, (३) धृष्ट, ओ (४) दक्षिण ।११४।

जे सीतामे राम जकाँ एकहि नारीमे अनुराग रखैत परस्त्रीसँ सदा विरत रहैत अछि से नायक 'अनुकूल' कहबैत अछि ।११५।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तनोति पुरतः प्रीतिं पश्चाच्चरति विप्रियम् ।
कृतदोषोऽपि निःशङ्कः शठः स परिकीर्त्तितः ॥११६॥
असत्यभाषो दुश्चेष्टः तर्जितोऽपि न सीदति ।
व्यक्तापराधचेष्टो यः स धृष्ट इति कीर्त्तितः ॥११७॥
सद्भावं गौरवं प्रेम भयं प्रथमयोषिति ।
अन्यत्राऽऽसक्तचित्तोऽपि न मुञ्चति स दक्षिणः ॥११८॥

अथ नायिकाः

मुग्धा मध्या प्रगल्भा च नायिका त्रिविधा मता ।
किञ्चित्-प्रोद्भूत-तारुण्या मुग्धा वामा रतौ भवेत्॥११९॥
तत्र मुग्धा त्वसम्पूर्णा वयसा कौशलेन या ।
वयःकौशल-सम्पूर्णा प्रगल्भा परिकीर्त्तिता ॥१२०॥

जे सोझाँ प्रेम करैत परोछमे अप्रिय काज (आन नायिकासँ प्रेम) करैत अछि ओ अपराध कैओ क' (नायिकाक प्रति) निःशङ्क रहैत अछि से नायक 'शठ' कहबैत अछि ।११६।

जे फूसि बजैत अछि, अधलाह चेष्टा (काज) करैत अछि, गञ्जनो कयला पर हेहर भेल रहैत अछि, आ व्यक्त रूपेँ अपराधमे प्रवृत्त रहैत अछि से नायक 'धृष्ट' कहबैत अछि ।११७।

जे आन स्त्रीमे आसक्त रहितहुँ पहिल स्त्रीक प्रति सद्भाव, आदर, प्रेम तथा भय नहि छोड़ैत अछि से नायक 'दक्षिण' कहबैत अछि ।११८।

नायिका

नायिका तीन प्रकारक होइत अछि—(१) मुग्धा, (२) मध्या तथा (३) प्रगल्भा । किछु-किछु विकसित यौवनबाली रतिमे विरुद्ध स्वभावबाली नायिका 'मुग्धा' कहबैत अछि ।११९।

जे वयस ओ चतुरतामे पूर्णता नहि पओने रहैछ से असम्पूर्णा 'मुग्धा' कहबैत अछि, ओ जे वयस तथा चतुराइमे पूर्णता प्राप्त कयने रहैछ से 'प्रगल्भा' कहबैत अछि ।१२०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्दशसमा यावद् बालेति परिगीयते ।
ततस्तु विंशतिं यावन्मुग्धा प्रथमयौवना ॥१२१॥
ततः षड्विंशतिं यावन्मध्या प्रोक्ता द्वियौवना ।
स्यात् पञ्चत्रिंशतं[1] यावत् प्रगल्भा तु त्रियौवना ॥१२२॥
चतुर्थ-यौवना[2] केचिदत ऊर्ध्वं वदन्ति च ।
पञ्चचत्वारिंशदब्दं यावद् वृद्धा ततो मता ॥१२३॥

[१] मुग्धा

तत्र मुग्धा पञ्चधा—(१) प्रथमावतीर्णयौवना (२) प्रथममदन-विकारा, (३) रतिवामा[3], (४) मृदुरामा, (ग) समधिकलज्जावती चेति ।

या न तथा द्रुतगमना दर-हसितानि च रसोदये धत्ते ।
सेयं मुकुल-कुचश्रीः प्रथमावतीर्ण-यौवन-पदवाच्या ॥१२४॥

चौदह वर्ष धरिक नायिका 'बाला' कहबैत अछि। ताहिसँ ऊपर बीस वर्ष धरि प्रथम-यौवना 'मुग्धा' कहबैत अछि ।१२१।

ताहिसँ ऊपर छब्बीस वर्ष तक दोसर यौवनवाली (अर्थात् यौवनक द्वितीय अवस्था बाली) 'मध्या' कहबैत अछि ।

ताहिसँ ऊपर पैंतीस वर्ष तक यौवनक तृतीय अवस्थाबाली 'प्रगल्भा' कहबैत अछि ।१२२।

केओ-केओ ताहिसँ उपरो पैंतालिस वर्ष धरिक नायिकाकेँ 'चतुर्थ यौवाना नायिका कहैत छथि । ताहिसँ ऊपर भेला पर 'वृद्धा' भय जाइत अछि ।१२३।

[१.] मुग्धा

मुग्धा पाँच प्रकारक होइत अछि—(१) प्रथमावतीर्णयौवना (पहिले पहिल युवावस्थामे आइलि, (२) प्रथम-मदन-विकारा (आरम्भिक कामविकार-बाली), (३) रतिवामा (रतिमे नायककेँ रोकनिहारि) ओ (५) समधिक-लज्जावती (लजकोटरि) ।

(१.१) प्रथमावतीर्णयौवना जे पूर्ववत् तेजसँ नहि चलैत अछि, वासनाक उदय भेला पर मन्द-मन्द मुसकाइत अछि से कली सन स्तनबाली नायिका 'प्रथमावतीर्णयौवना' कहबैत अछि ।१२४।

---

१. पञ्चविंशतिं यावत् । २. यौवना । ३. रतिरामा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आली-सुरत-कथादौ यद्धृदि सहसा विकार-सम्भोदौ ।
सुरभि[1]वितरलित-हारा सा स्यात् प्रथम-मदनविकारा ॥१२५।

सन्तोषयति या कान्तमतीव रमणोत्सवे ।
स्निग्धा तदुपरोधेन रतिवामेति सा मता ॥१२६॥

अल्पेन रमणेनापि या स्यादामर्दिता क्षणात् ।
मालती भ्रमरेणेव मृदुरामेति सा मता ॥१२७॥

वासः कर्षति कान्ते कृतबाहु-स्वस्तिका[2] स्तनोपान्ते ।
नमयति वदनमधो या समधिकलज्जावती सेयम् ॥१२८॥

[२] मध्या

मध्या[3] चतुर्विधा—(१) विचित्रसुरता, (२) प्ररूढ़स्मरयौवना, (३) ईषत्प्रगल्भवचना, (४) मध्यमव्रीडिता चेति[4] ।

(१.२) प्रथम मदन विकारा—सखीक केलिकथा सुनैत जकरा हृदयमे विकार ओ आनन्द होइत छैक, सुगन्धित चंचल हार पहिरने (?) से प्रथम-मदन-विकारा नायिका कहबैत अछि ।१२५।

(१.३ रतिरामा—जे मिलनक उत्सवमे बहुत आग्रह कयला पर द्रवित भ' प्रियकें अत्यन्त सन्तुष्ट करैत अछि से नायिका 'रतिवामा' कहबैत अछि ।१२६।

(१.४) मृदुरामा—जे थोड़ रमण कयलासँ छनहिमे शिथिला भ' जाइत अछि, जेना भौंरासँ मालती फूल, से नायिका मृदुरामा कहबैत अछि ।१२७।

(१.५) समधिकलज्जावती—जे प्रिय द्वारा वस्त्र झिकल गेला पर अपन स्तन पर बाँहि ओ स्वस्तिक (गहना) दय मुह नीचाँ क' लैत अछि से नायिका समधिकलज्जावती कहबैत अछि ।१२८।

[२] मध्या

मध्या नायिका चारि प्रकारक होइत अछि—(१) विचित्रसुरता, (२) प्ररूढ़स्मरयौवना, (३) ईषत्प्रगल्भवचना, तथा (४) मध्यमव्रीडिता ।

---

१. सुरभिदितरलितहारा । २. सुस्तिका । ३. मध्यापि चतुर्विधा ।
४. समधिकलज्जावती चेति ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शृङ्गाररस-संसिक्त-कान्ता नानाकलाऽन्विता ।
नानाबन्ध - विधानज्ञा विचित्रसुरता मता ॥१२६॥

निधाय हृदि या कान्तं बाहुभ्यां गाढ़यन्त्रितम् ।
रमेत जघनान्दोलैः प्ररूढ़स्मरयौवना ॥१३०॥

कान्ते कुचाञ्चल-चलत् - कर - पल्लवान्ते
किञ्चित् तिरोऽञ्चितमुखी करमुत्क्षिपन्ती ।
मा माऽङ्गकं[1] स्पृश विटेति चलेति कोपात्
ईषत्प्रगल्भ-वचना वचनं व्यनक्ति ॥१३१॥

नीवी-बन्धोच्छ्वासनेच्छो रतीच्छो-
र्दीपे तल्पान्तेऽथ सख्याः[2] समीपे ।
मन्दं मन्दं पाणिमस्याऽऽ[3] रुणद्धि
या सा मध्या मध्यम-व्रीडितेयम् ॥१३२॥

(२१) विचित्र सुरता—कान्तके शृंगार रससँ परिपूर्ण कयनिहारि, अनेक कलासँ युक्त, अनेक बन्ध ओ विधान रत्यासनादि जननिहारि नायिका 'विचित्र-सुरता' कहबैत अछि ।१२९।

(२२) प्ररूढ़स्मरयौवना—जे प्रियतमकेँ हृदयमे सटाय बाँहिसँ कसि क' आलिङ्गन कय प्रौढ़तापूर्वक रमण करय से प्ररूढ़स्मरयौवना नायिका कहबैत अछि ।१३०।

(२३) ईषत्प्रगल्भवचना—जे आँचर तर प्रियतमक हाथ अयला पर मुह कनेक घुमा क' हाथ झटकारैत "हमर देह जनु छुबू, धूर्त्त ! हटू" एहि तरहेँ क्रोधयुक्त वचन कहय से ईषत्प्रगल्भ-वचना कहबैत अछि।१३१।

(२४) मध्यमव्रीडिता—जे दीपक प्रकाशमे ओछाओन पर साड़ीक गेँठ खोलय चाहैत रमणोत्सुक पतिक हाथकेँ, कनसोह लैत सखीक रहला पर, नहूँ-नहूँ रोकैत अछि से मध्या नायिका मध्यमव्रीडिता कहबैत अछि।१३२।

---

१. मामङ्गकं । २. सख्यासमीपे । ३. मध्या रुणद्धि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[३] प्रगल्भा

प्रगल्भा सप्तधा—१. स्मरान्धा, २. गाढ़तारुण्या, ३. समस्त रतकोविदा, ४ भावोन्नता, ५. ईषद्व्रीडा, ६. प्रचण्डा, ७. आक्रान्तनायका चेति ।

स्मारोद्वेगं वहन्ती स्तनक(नक)-गिरिप्रान्तमुन्मीलयन्ती
वक्षो विस्फारयन्ती घन-जघन-तटद्वन्द्वमुद्घाटयन्ती ।
नेत्रान्तं पातयन्ती दिशि-दिशि रभसामोदमद्धा[1] वहन्ती
कृष्णं साऽन्वेषयन्ती व्रजति पथि मदान्धास्मरान्धा भ्रमन्ती।१३३।

दृढ़-शृङ्गारतो यस्या भवेदिच्छा निरन्तरम्
नारतिर्गाढ़-तारुण्या सेयं भोग्या मधुद्विषः ॥१३४॥
समस्त-व्यस्त-बाह्येषु रतेष्वपि विचक्षणा ।
कान्ता प्राणहरा सेयं समस्त-रस-कोविदा ॥१३५॥

[३] प्रगल्भा

प्रगल्भा नायिका सात तरहक होइत अछि :—(१) स्मरान्धा (कामसँ अन्ध), (२) गाढ़तारुण्या, (३) समस्त-रसकोविदा, (४) भावोन्नता, (५) ईषद्-व्रीडा (स्वल्प लज्जावती), (६) प्रचण्डा, (७) आक्रान्तनायका ।

(३.१) स्मरान्धा—कामसँ उद्विग्न भेलि, सोनाक पर्वत तुल्य स्तनकेँ अंशतः उघार करैत, छातीकेँ तनैत, सघन दूनू जाँघकेँ उघारैत, आँखि मिल-मिलबैत, आनन्दित भेलि, एम्हर-ओम्हर झटकैत कृष्णकेँ तकैत घुमैत मदेँ अन्ध भेलि स्मरान्धा नायिका बाट पर जाय रहलि अछि ।१३३।

(३.२) गाढ़तारुण्या—अत्यन्त शृंगारसँ जकरा निरन्तर रमणेच्छा होइतहि रहैक, कहिओ अरति (अरुचि) नहि होइक कृष्णक भोग्या से नायिका 'गाढतारुण्या' कहबैछ १३४।

(३.३) समस्त-रसकोविदा—जे समस्त, व्यस्त, ओ बाह्य सभ प्रकारक रतिमे पटु हो, प्रियक चित्तकेँ हरण कयनिहारि से नायिका 'समस्तरस-कोविदा' कहबैत अछि ।१३५।

१. मोदमत्तावहन्ती । (मोदम् अद्धा = तत्त्वतः) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्साह-दोष-दर[1]-हास-विषाद-लज्जा-
चापल्य-मोह-रमणोत्सुकता-विलासैः।
भावैः परैरपि तथा तरुणस्य चेतो
भावोन्नता हरति केलिकला-विदग्धा ॥१३६॥

कान्तस्य वासः क्षिपति किन्तु नारोहति स्वयम्।
पिबत्यधरमुल्लासाद्[2] ईषद्व्रीडेयमीरिता ॥१३७॥

अन्यनारीकृतं चिह्नं दृष्ट्वा कान्ततनौ रुषा।
बन्धनादि-तिरस्कारं प्रचण्डा कुरुते परम् ॥१३८॥

धनुर्वल्लीसमं कान्तं कृत्वा दष्ट-निजाधरा।
विपरीत-रतिं धत्ते रागादाक्रान्तनायका[3] ॥१३९॥

(३.४) भावोन्नता—काम-कलामे प्रवीण जे नायिका उत्साह, दोष, डर, हँसी, विषाद (दुःख), लाज, चंचलता, मूर्च्छा, रतिक हेतु उत्सुकता तथा विलास—एहि भाव सभसँ वा आनो-आनो भावसँ तरुणक चित्तकेँ हरण करैछ से 'भावोन्नता' कहबैत अछि।१३६।

(३.५) ईषद्व्रीड़ा—जे पतिक वस्त्रकेँ फेँकि दैछ किन्तु स्वयं नहि चढ़ैत अछि, ओ उल्लासपूर्वक अधरक पान करैत अछि, से नायिका 'ईषद्व्रीड़ा' कहबैछ।१३७।

(३.६) प्रचण्डा—जे पतिक देहमे आन नारीक रतिचिह्न देखि तामसेँ आलिङ्गनकेँ तिरस्कृत क' बैसैत अछि से 'प्रचण्डा' कहबैत अछि।१३८।

(३.७) आक्रान्तनायका- जे धनुषक डोरी जकाँ पतिकेँ लबाय अपन ठोरकेँ दाँतसँ दबने अनुरागपूर्वक विपरीत रति करैछ से 'आक्रान्तनायका' कहबैछ।१३९।

---

१. दोषदवहास। २. विरत्यधर। ३. नायिका।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एताभिः सर्वाभि र्मिलित्वा षोडस १६ नायिका भवन्तीति। एता एव षोडश नायिकाः प्रत्येकं खण्डिताद्यष्टप्रकारभेदेन अष्टाविंशत्यधिकशतसंख्यया १२८ लिखिता भवन्ति।

तथा च

खण्डिता विप्रलब्धा च वासकसज्जाऽभिसारिका।
कलहान्तरिता चैव तथैवोत्कण्ठिता परा ॥१४०॥
स्वाधीनभर्तृका चाऽन्या तथा प्रोषितभर्तृका[1]।
सम्भोगे विप्रलम्भे च इत्यष्टौ नायिका मताः ॥१४१॥

तत्र—

उन्निद्रता-जनित-राग-विलोहिताक्षः
कान्ता-नखक्षत-विशेष-विचित्रिताङ्गः।
यस्याः कुतोऽपि पतिरेति गृहं प्रभाते
सा नायिका निगदिता खलु खण्डितेति ॥१४२॥
अहरहमतिदूराद्[2] दूतिकां प्रेष्य पूर्वं
सरभसमतियाता क्वापि सङ्केतदेशे।

एकरा सभकें मिला सोलह नायिका होइत अछि (मुग्धा ५+मध्या ४+प्रगल्भा ७=१६)। इएह सोलहो टा एक-एक क' खण्डिता इत्यादि आठ भेदसँ १६×८=१२८ प्रकारक भ' जाइत अछि। यथा—

(१) खण्डिता, (२) विप्रलब्धा, (३) वासकसज्जा, (४) अभिसारिका, (५) कलहान्तरिता, (६) उत्कण्ठिता, (७) स्वाधीतपतिका, तथा (८) प्रोषितपतिका, ई आठो नायिका सम्भोग ओ विप्रलम्भ दूनू शृंगारमे होइत अछि। १४०-१४१।

ताहिमे - (१) जगरनासँ आँखि लाल छनि तथा प्रेमिकाक नहक चेन्हसँ देह शोभित छनि—एहन नायक जाहि नायिकाक भोरमे अबैत छथिन से नायिका 'खण्डिता' कहबैत अछि।१४२।

(२) प्रतिदिन नायकसँ दूर रहैत नायिका पहिने दूतीकें पठाय पछाति

1. चोषितमर्तृका। 2 अहरहमतिद्वरा। (अहरहम् इति प्रमादः। अहरहः इति भवति। प्रतिदिनम् इति तूचितः।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न मिलति खलु यस्या वल्लभो दैवयोगात्
कथयति भरतस्तां नायिकां विप्रलब्धाम् ॥१४३॥

या वास-वेश्मनि सुकल्पिततल्पमध्ये
ताम्बूल-पुष्प-वसनैश्च समं सुसज्जा ।
कान्तस्य सङ्गसमयं समवेक्षमाणा
सा कथ्यते कविवरैरिह वाससज्जा ॥१४४॥

उद्दाम - मन्मथ - महाज्वर - वेपमाना
रोमाञ्च-कण्टकितमङ्गतलं वहन्ती ।
निःशङ्किनी व्रजति या प्रियसङ्गमोत्का
सा कामिनी किल भवेदभिसारिकेति ॥१४५॥

चाटुकारमपि जीवितनाथं
कोपतः स्मरति चेर्ष्यमतिर्या ।
तप्यतेऽनुशय-मन्मथभावैः
कथ्यते तु कलहान्तरिता सा ॥१४६॥

स्वयं शीघ्र संकेत-स्थान पहुँचि जाइत अछि। परन्तु, संयोगसँ नायक नहि भेटैत छथिन—ताहि नायिकाकेँ भरत मुनि 'विप्रलब्धा' कहैत छथि ।१४३।

(३) जे अपन कोठलीमे सुन्दर ओछाओन पर पान-फूल ओ वस्त्रसँ सुसज्जित भ' प्रियतमक मिलनक समयक प्रतीक्षा करैत अछि, तकरा कविवर-लोकनि 'वासकसज्जा' नायिका कहैत छथि ।१४४।

(४) उत्कट कामज्वरसँ कँपैत, रोमाञ्चसँ काँटसँ युक्त सनक देहवाली, निडर भ' प्रियसंगमक हेतु उत्सुक भेलि जे टहलैत अछि से नायिका 'अभिसारिका' कहबैत अछि ।१४५।

(५) जे अनुनयो करैत प्राणनाथकेँ ईर्ष्या एवं क्रोधसँ देखैत अछि, पतिक संग ओछाओन पर रहितहुँ कामसँ सन्तप्त अछि से ई 'कलहान्तरिता कहबैत' अछि ।१४६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नैवाऽऽगतः समुचितेष्वपि वासरेषु
प्राणेश्वरोऽतिगुरुकार्यंवशेन यस्याः ।
दुर्वार-मन्मथ-महाज्वर-वेपिताङ्गीम्
उत्कण्ठितां वदति तां भरतः कवीन्द्रः ॥१४७॥

आश्लेष चुम्बनशतैः कुसुमादिदानैः
प्रेमोत्तरप्रणय - कोमल - चाटुवाग्भिः ।
संस्तूयते प्रियतमेन च याऽनुरागात्
स्वाधीन-भर्तृकपद-प्रकटीकृता सा ॥१४८॥

चिन्ताकुलां मलिनमंशुकमावहन्तीं
डिण्डीसपिण्ड-परिपाण्डुर-गण्डभित्तिम् ।
निर्भूषणां प्रियवियोगज-दुःखतप्तां
तां प्रोषितप्रियतमां प्रवदन्ति सन्तः ॥१४९॥

अत्रापि, (१) स्वीया, (२) परकीया, (३) सामान्यवनिता चेती प्रत्येकमेतासां भेदेन ता अष्टाविंशत्यधिकशतनायिका इदानीं चतुरशीत्यधिकशतत्रयनायिका (३८४) भवन्तीति ।

(६) जकर प्राणनाथ निश्चित तिथि पर कोनो पैघ कार्यंमे पड़ि नहि अबैत छथि से नायिका कोनो उपायक अभावमे महान् कामज्वरसँ थर-थर कँपैत अछि। एकरा कवीन्द्र भरत 'उत्कण्ठिता' कहैत छथि।१४७।

आलिङ्गन, चुम्बन, फूल, वस्त्र आदिक पर्याप्त दान ओ प्रेम भरल कोमल प्रिय-वचनसँ जकर प्रियतम स्तुति करैत छथि से नायिका 'स्वाधीनपतिका' कहबैत अछि।१४८।

चिन्तासँ व्याकुल, मैल वस्त्र पहिरने, समुद्रक फेन सनक पिरौंछ गालवाली, विनु गहना पहिरने, प्रियक वियोगेँ दुःखसँ तप्त एहि नायिकाकेँ विद्वान् लोकनि 'प्रोषितपतिका' कहैत छथि।१४९।

एहि सभक बाद (१) स्वकीया, (२) परकीया ओ (३) सामान्यवनिता, एहि भेदेँ पूर्वोक्त एक सय अट्ठाइसो (१२८) नायिका एहिठाम तीन सय चौरासी (३८४) नायिका होइत अछि।

१. चतुरधिकशतत्रय ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र—

कुलजाऽन्याङ्गना[1]वेश्या त्रिधा स्यादभिसारिका ।
कुलजा संवृता त्रस्ता सव्रीडा तद्गृहं व्रजेत्[2] ॥१५०॥

सलीला स्वेषु भावेषु त्रस्ता विक्षोभिताऽऽनना ।
मन्दस्खलितसंलापा विभ्रमोत्फुल्ललोचना ॥१५१॥

आविद्ध-गतिसञ्चारा शनै गंमनकारिणी ।
नायकं परनारी तु व्रजेन्नाऽन्येन वीक्षिता ॥१५२॥

सखीयुक्ता मदाविष्टा स्फारिताक्षी त्वशङ्किता ।
सनूपुरा यथाकामं वेश्या सरति नायकम् ॥१५३॥

ताहिमे —

(१) कुलजा, (२) परनारी (अन्याऽङ्गना) तथा (३) वेश्या —एहि भेदें अभिसारिका तीन तरहक होइत अछि ।

ताहिमे कुलजा सँकुचाइत भयभीत भेलि लजाइत नायकक कोठली जाइत अछि ।१५०।

अपन भाव प्रकट करबामे अनेक चेष्टासँ युक्त, डराइलि, मुँहक अद्भुत भंगिमासँ युक्त, कम जोरसँ तथा टुटल-फुटल शब्दें वजैत, विलासँ विकसित आँखिवाली, रुकि रुकिक' धीरे-धीरे चलैत, आनक नजरि बचओने परनारी नायक लग जाइत अछि ।१५१-१५२।

सखीक संग मदें भरलि आँखि निड़ारैत निडरि भेलि, नूपुर पहिरने स्वेच्छासँ वेश्या अभिसारिका नायक लग जाइत अछि ।१५३।

शुक्लपक्ष ओ कृष्णपक्षमे (एक-एक कय) अभिसारिका दू प्रकारक होइत अछि ।

---

१. कुलजाङ्गनावेश्या । २. गृहम्व्रजेत् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुक्लपक्षे कृष्णपक्षे द्विधा स्यादभिसारिका ।
मल्लिका-मालधारिण्यः सर्वाङ्गीणार्द्रचन्दनाः ।
क्षौमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ।।२५४।

कालागुरु-विलिप्ताङ्गी नीलरागवदम्बरा ।
चन्द्रोदय-परित्रस्ता कृष्णकृष्णाभिसारिका ।।२४५।।

इति श्रीलोचनशर्मविरचितायां रागतरङ्गिण्यां राग-
संस्थानादिकथनं नाम पञ्चमस्तरङ्गः ।
समाप्तश्चायं ग्रन्थः

वेली फूलक माला पहिरने, सम्पूर्ण देहमे शीतल चन्दन लगओने, रेशमी वस्त्र पहिरने इजोरियामे अभिसारिका लोकक नजरिसँ नहि देखाइत छथि ।१५४।

कालागुरुकें देहमे लेपने, नील रङक वस्त्र पहिरने, चन्द्रमाक उदयसँ डराइत कृष्णपक्षमे अभिसरण करैत कृष्णाभिसारिका कहबैत अछि ।१५५।

इति श्रीलोचन शर्माक बनाओल रागतरंगिणीमे रागसंस्थानादि
कथन नामक पंचम तरंग समाप्त ।
ई ग्रन्थो पूर्ण भय गेल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट १

उदाहृत गीतक अनुक्रमणी

गीत	कवि	गीत सं०
१. अगर उगारि गारि	गोविन्द	८०
२. अनवरत दादुर सोर	,,	५३
३. अबला अंशुक बालभु	विद्यापति	२४
४. आकुल चिकुरे	,,	८२
५. आँचरे वदन झपावह	,,	२०
६. आज पुनिमा तिथि	,,	४५
७. आनन लोनुआ वचने	कविशेखर	५
८. आनन्द कन्दा	लोचन	२
९. उधसल केस कुसुम	विद्यापति	२१
१०. उपमिअ आनन	श्रीनिवास मल	११
११. उपरे पयोधर नख	दस अवधान	५९
१२. एत दिन हृदय हरख	गज सिंह	३५
१३. कतन वेदन मोहि	विद्यापति	३८
१४. कतहु श्मश्रुधर	,,	८९
१५. कनक लता अरविन्दा	रतमाञी	४६
१६. कमल आनन गण्ड	,,	६२
१७. करतल कमल नयन	विद्यापति	१००
१८. कामिनि करए सनाने	,,	४१
१९. कालि कहल पिआओ	,,	४४
२०. को परवचने कन्त	मधुसूदन	८१
२१. कीर कुटिल मुख न	भीषम	२२
२२. कुण्डल कनक कन्हाई	लछमिनराएन	३१
२३. कुण्डल-तिलकें	विद्यापति	३७
२४. कुन्द भमर संगम	सरसकवि	२८
२५. कुलगुन गोरव सील	विद्यापति	७०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत	कवि	गीत सं०
२६. कुसुम-रस अतिमुदित	"	५४
२७. कुसुम बान विलास	(,,)	१६
२८ गगन गरज घन	विद्यापति	१०१
२९. गगन गरज मेघा	"	९७
३०. गमन दिवस मञो	"	१९
३१. गमने गमाउलि	"	६०
३२. गेलाहुँ पुरुबि पेमे	"	८८
३३. गोर देह सुढार सुवदनि	सिंहभूपति	२५
३४. चल चल सुन्दरि शुभकर	विद्यापति	४९
३५. चामर चिकुर वदन	लोचन	४
३६. जखने मधुरिपु	"	७७
३७. जतनहु जेतओ न	कुमुदी	३४
३८. जनि हुतवह हवि	विद्यापति	१९
३९. जय जय जय नत	लोचन	७८
४०. जय जय दुर्गे दुर्गति	सदानन्द	९५
४१. जय जय भगवति जय	"	१०२
४२. जय जय भगवति भीमा	विद्यापति	९०
४३. जय जय शंकर जय	रतत	८५
४४. जय देवि दुर्गे	गंगाधर	४८
४५. जय मंगला जय मंगला	चतुरानन	२६
४६. जलद जाल कराल	लोचन	५५
४७. जाति पदुमिनि	विद्यापति	९१
४८. जोवन रूप अछल	"	५०
४९. तनु सुकुमार पयोधर	कंसनरायन	४७
५०. तोरए मोऐ गेलिहुँ	कण्ठहार	६६
५१. तोँह हमे पेम जते	जसोधर	३३
५२. दूरहि ऊरु रहल गहि	श्यामसुन्दर	९८
५३. देखहो गे माइ हे	हरिदास	२७
५४. धवल जामिनि धवल	भीषम	३६
५५. नन्दक नन्दन कदम्बक	विद्यापति	९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत	कवि	गीत सं०
५६. नमओ नमओ चण्डी	लखनचन्द राए	९२
५७. नमित अलकें	विद्यापति	१४
५८. नयन निमेष जनि	जयकृष्ण	६१
५९. नव जौवन अभिरामा	विद्यापति	५८
६०. नाव डोलाव अहीरे	भवानीनाथ	७१
६१. नीरज नयनि हे	लोचन	१४
६२. पिआ परवास आस	विद्यापति	६७
६३. पुरह पुरादित	,,	६५
६४. बांधए विकट जटा	,,	८७
६५. बारि बएस तेजि	नृप प्रतिनाथ	५१
६६. मलिन कुसुम तनु	,,	८३
६७. मलिन वसन विस	लोचन	८
६८. माघमसँ सिरपञ्चमि	विद्यापति	२९
६९. मान परीहर हे	,,	१३
७०. मासे पखें उगए	नृपसिंह	४२
७१. मृगमद पंक अलका	विद्यापति	९६
७२. यदि तोरा नहि खन नहि	,,	३२
७३. युगल शैल सिम हिमकर	गजसिंह	८०
७४. रयनि काजर वम	विद्यापति	९८
७५. रितुपति रितु रति	लोचन	१०
७६. रितुराज आज विराज	धरणीधर	७५
७७. रोपलह पहु लहु	विद्यापति	५२
७८. लता तरुअर-मण्डप	,,	१२
७९ लाखहु लता कोटि	,,	८४
८०. वदन चाँद तोर नयन	,,	६९
८१ विकट जटाचय किछु	,,	३०
८२. विदिता देवी विदिता	,,	६३
८३. विसरल ओ रे	गजसिंह	२३
८४. श्रीमुरारि पदारविन्द	,,	७६
८५. सखि मधुरिपु सन के	जीवनाथ	९४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत	कवि	गीत सं०
८६. सखिहे आज जाएब मोही	विद्यापति	७२
८७. सखिहे बालभ जितब	,,	१०३
८८. सपने आएल सखि	,,	८६
८९. सपने देखल हरि	(,,)	१८
९०. सब सखि परबोधि	सिंहभूपति	४३
९१. सरदक ससधर सम	विद्यापति	६८
९२. ससधर सहस सार	भीषम	३
९३. ससन परसे खसु	विद्यापति	७
९४. साए साए काँ लागि	गोविन्द	७९
९५. साए साए पिआके कह	कंसनाराएन	७३
९६. सा जयति सुरसरि	पूरनमल्ल	१५
९७. साँझक अतिथि भागे	चतुर चतुर्भुज	९३
९८. साँझक वेराँ जमुनाक	विद्यापति	१
९९. सानंद वदन बिहुसिआ	लोचन	६
१००. सिरिहि मिलल देहा	विद्यापति	७४
१०१. सुरत समापि सुतल	अभिञाकर	५६
१०२. सुरुज सिन्दुर विन्द	विद्यापति	५७
१०३. स्निग्ध कुञ्चित कोमलं	चन्द्रकला	१७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट २

उदाहृत गीतक कविक अनुक्रमणी

(संख्या गीतक थीक)

अनामक—५३, ६५, ७६, ७७, १०२ (कुल ५)।

अभिञ्चकर—५६।

कसनराएन —४७, ७३।

कविकण्ठहार—१६, ६६ (दे० विद्यापति)।

कविरत्तन—दे० रतनाञ्ची।

कविराज—दे० पूरन मल्ल।

कविशेखर—५ (दे० विद्यापति)।

कुमुदी—३४।

गंगाधर—४८।

गजसिंह—२३, ३५, ४० (कुल ३)।

गोविन्द—७९, ८०।

चतुर चतुर्भुज—९३।

चतुरभुंज—दे० चतुर।

चतुरानन—२६।

चन्द्रकला—१७।

जयकृष्ण—६१

जसोधर—३३।

जीवनाथ—९४।

दस अवधान—५९।

धरणीधर—७५।

नव कविशेखर—दे० जसोधर।

नृपसिंह—४२ (दे० सिंह भूपति)।

पूरनमल्ल—१५।

प्रीतिनाथ नृप—५१।

भवानीनाथ—७१।

भीषम—३, २२, ३६ (कुल ३)।

मधुसूदन—८१।

रतनाञ्ची—४६; ८५।

राजा श्रीनिवास—दे० श्रीनिवास।

लखनचन्द राए—६९, ९२।

लछमिनराएन नृप—३१।

लोचन—२, ४; ६, ८, १०, १४, ५५; ७८ (कुल ८)।

विद्यापति—१, ५, ७, ९, १२, १३, १६, १८, १९, २०, २१; २४, २९, ३०, ३२, ३७, ३८, ३९, ४१, ४४, ४५, ४९, ५०; ५२, ५४, ५७, ५८, ६०, ६३, ६४, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०; ७२; ७४; ८२, ८३, ८४, ८६; ८७, ८८; ८९; ९०, ९१, ९६, ९७, ९८, १००, १०१, १०३ (कुल ५३)।

श्यामसुन्दर—९९।

श्रीनिवासमल्ल—११।

सदानन्द—९५।

सरस कवि—२८ (दे० विद्यापति)।

सिंह भूपति—२५, ४२, ४३।

हरिदास—२७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट ३

रागरागिनीक अनुक्रमणी

अनूपा १५६
अभिरामा आसावारी १३८
~सारंगी १२४
अलान विमिश्र १८३
अहिनारी १४५
~भीमपलासी १४५
आसावरी १२५
ईमन २१०
उत्तम नाट १२८
ककुभा २७
करुणा १६७
कानरा ३९
~मिश्र राजविजय १८५
कामसूहव १५६
कामोद १०६, ४२
~केदार १०३
~नाट १९७
~मंगल १०६
कार्णाट २०९
केदार २१०
~मालव १०४
केदारा ३८
~केदार ९८
कोडार १६४
काशिक ७, ८६

खम्भावती ८४
गुणकारी २९
गुर्जरी १४२
गोपीवल्लभ १४९
गौड़मालव २९
गौड़ीय गौड़मालव १८०
गौरी २६
जयदेव देशाख ८८
जयदेवी रामकरी ९०
जोगिआ आसावरी १३०
~घनछी १७७
~मालव १२२
टंक ५७
टोड़ी २३
दंडक कोडार १६८
दंडकासावरी १३४
दीपक १०
देव कामोद १०७
देव राजविजय १८१
देश १८४
देशकरी ५४
देश देशाख ८८
~मालव ११४
देशाख १२, ८८
देशी आसावरी १ ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देशी दीपक ४०
~बराड़ी ७८
~रामकरी ९१
~सारंगी १५३
द्राविणी आसावरी १३७
धनछी ११६, १७२
धनाश्री २११, ५०
धन्या भीमपलासी १४७
नेपाल बराड़ी ८५
पंचमस्वरा धनछी १७४
पटमंजरी ३६
पहड़िया केदार १०२
~धनछी १७३
~मलारी १ ०
~मालव ११९
पूरवी २११
प्रियतमा मालव १२५
प्रीतिकरी रामकरी ९३
बंगाली १५
बराड़ी '८, ६९
बिहागर केदार ६९
बिहागरा ४३
बृहत् वियोगी मालव ११८
वेलावली ३१
भठियाल राजविजय १८८
भठिआली बराड़ी ८३
भूपाली १४१, ५६
भैरव ६
भैरवी ६३, २१
भोगिनी आसावरी १३२
मंगल राजविजय १८६
मंगली धनछी १७२
मधुमाधवी १७
मनमोद राजविजय १८७
मनोहरा आसावरी १३९
मलारी ५३
~केदार १०१
~नाट १९१
माधवीय बराड़ी ८०
मालव ४७, ११२
मालश्री ४९
मलारी २५२
मेघ १३, २१०
मैथिल गौड़मालव १८१
मोरंगिया कोडार १६६
रम्या भीमपलासी १४५
राघवीय बराड़ी ७२
राजविजय १८१
रामकरी ९०, ३४
ललिता ९६, ३५
वसन्त ११०
वसन्ता ४५
विजयपुर मालव १२०
वितत आसावरी(१७०) १२६
~भीमपलासी १४८
~मालव ११२
विभासो ४३
वियोगी कोडार १६४
~मालव ११७
शंकुक नाट १९४
शाम्भवी धनछी १७८
शारंगी मालव ११०, १२३
शुद्ध केदारा ६८
~कोडार १६९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

~नाट १९०
~मलारी १?९
~सारंगी १५१
~सूहब १५९
शोभना धनछी १७९
शोभना सारंगी १५५
श्रीमालव ११५
श्रीराग १०८,१२
श्रीविमिश्रा धनछी १७५
सम्भोगा आसावरी १३३
सरसा आसावरी १३६
सारंगी ५११
सिंघा आसावरी १२८
सिन्धु २०
सिन्धुला आसावरी १३१
सुन्दर सूहब १६२
सूहव १५७
स्मर सन्दीवन कोडारा १ ३
हिन्दोल ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi